**अब्‍दुल-बहा**

**के**

**लेखों से संकलन**

**विश्‍व न्‍याय मन्दिर के शोध प्रभाग द्वारा संकलित**

**अंग्रेजी अनुवाद**

**बहाई विश्‍व केन्‍द्र द्वारा**

**नियुक्‍त समिति और मार्जिया गेल द्वारा**

**भूमिका**

बहाई प्रकटीकरण के बारे में अब्दुल बहा द्वारा दी गई व्याख्याएँ उनके लिखित आलेखों, रिकॉर्ड किए गए उनके वचनों और उनके पत्राचारों में सुरक्षित हैं। उनकी लिखित कृतियाँ जैसे “दि सीक्रेट ऑफ डिवाइन सिविलाइजेशन”, “ए ट्रैवेलर्स नैरेटिव”, इच्छापत्र और वसीयतनामा, अंग्रेजी अनुवादों में उपलब्ध हैं। इसी तरह, उनके रिकॉर्ड किए हुए वचनों के कई संकलन भी प्रकाशित या प्रकाशनाधीन हैं जिनमें “सम आन्सर्ड क्वेश्चंस”, “मेमोरियल्स ऑफ दि फेथफुल”, “पेरिस टॉक्स” का उल्लेख किया जा सकता है। लेकिन पिछले साठ वर्षों से अमेरिका में, उनकी असंख्य पातियों का अंग्रेजी में कोई भी वृहद संकलन सामने नहीं आ सका है और अमेरिका में 1909-1916 के दौरान प्रकाशित “टैब्लेट्स ऑफ अब्दुल बहा” का हालाँकि दूसरा संस्करण भी सामने आ चुका है लेकिन अभी उसकी मुद्रित प्रतियाँ उपलब्ध नही हैं।

वर्तमान संकलन में पिछले खंडों की तुलना में एक वृहत्तर संकलन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है और इसके अध्ययन से ज्ञात हो सकेगा कि प्रिय मास्टर ने अपने पत्रों में कितने व्यापक विषयों का स्पर्श किया है। इनमें कई ऐसी पातियां भी शामिल हैं जिनका अनुवाद अब्दुल बहा के जीवनकाल में शोग़ी एफ़ेन्दी द्वारा तैयार किए गए ड्राफ्टों के आधार पर बहाई विश्व केंद्र में एक समिति द्वारा किया गया था, तथा और भी बड़ी संख्या में मार्जिया गेल द्वारा जो कि उनके पास विश्व केंद्र के संकलनों में से 19,000 से भी अधिक मूल और प्रामाणिक प्रतियों के रूप में भेजा गया था। कुछ प्रमुख पातियों, जैसे ऑगस्ट फोरेल के साथ पत्राचार अथवा हैग को लिखित पाती के एक वृहद अंश को छोड़ दिया गया है क्योंकि वे पृथक प्रकाशनों में उपलब्ध हैं।

इनमें से ज्यादातर पातियों को प्राप्त करने का आनंद और कृपा पूर्व और पश्चिम के कुछ आरंभिक धर्मानुयायियों को प्राप्त हुई थी, चाहे वे व्यक्ति रहे हों, समूह, सुगठित समितियाँ या मित्रों के समुदाय और उन दिनों में जबकि पश्चिम के उन नवजात समुदायों के लिए अंग्रेजी में उपलब्ध बहाई साहित्य की संख्या नगण्य थी, इन पातियों के अपार महत्व को सहज समझा जा सकता है।

हम विश्वास करते हैं कि प्रिय मास्टर के इन लेखों के प्रकाशन से उनके प्रेमियों के हृदय में उनके आह्वान के प्रत्युत्तर की उत्कंठा को तीव्र करने में सहायता मिलेगी और मानव एवं परमात्मा के बीच के उस विलक्षण तारतम्य के प्रति उनका बोध और अधिक गहरा होगा जिसके सर्वोत्तम उदाहरण थे स्वयं ’ईश्वर के रहस्य’ यानी अब्दुल बहा। 1892 में बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के बाद।

**कुरान के संदर्भ में:**

कुरान से सम्बन्धित फुटनोटों में सूराओं की संख्या मूल पाठ के अनुसार दी गई है जबकि आयत की संख्याएँ रॉडवेल के अनुवाद के अनुसार हैं जिनमें कई बार अरबी संख्या-क्रम से भिन्नता पाई जाती है।

**परिचय**

अब्दुल बहा (23 मई 1844-28 नवंबर 1921) बहाई धर्म के दिव्य संस्थापक बहाउल्लाह के जीवित पुत्रों में सबसे बड़े और उनके नियुक्त उत्तराधिकारी थे। हालाँकि बहाई समुदाय से बाहर उन्हें “अब्बास एफेन्दी” के नाम से जाना जाता था लेकिन बहाई लोग उन्हें अक्सर बहाउल्लाह द्वारा प्रदत्त उपाधियों -- “परम महान शाखा”, “ईश्वर के रहस्य” और “मास्टर” -- जैसे नामों से पुकारते रहे हैं। 1892 में बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के बाद, उन्होंने स्वयं को “अब्दुल बहा” के नाम से पुकारा जाना पसंद किया जिसका अर्थ है - “बहा का सेवक”।

बहाई धर्म का अभ्युदय 19वीं सदी के मध्य में ईरान में हुआ था और इसके उद्गम के मूल में एक के बाद एक आने वाले दो अवतार रहे हैं - बाब और बहाउल्लाह। जैसाकि बाब ने कहा था, उनका उद्देश्य उस अवतार के लिए मार्ग तैयार करना था “जिसे ईश्वर प्रकट करेंगे” - ईश्वर का वह प्रकटीकरण जिसकी प्रतीक्षा सभी धर्मों के अनुयायियों को रही है। इस घोषणा के बाद, सामने आने वाली यातनाओं के दौर के दरम्यान जिसमें बाब और उनके हजारों-हजार अनुयायियों को अपनी जान गंवानी पड़ी, बहाउल्लाह ने अपने रूप में उस दिव्य प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की घोषणा की।

अब्दुल बहा ने अपने बचपन में ही अपने पिता की आध्यात्मिक उच्चता पहचान ली थी, उससे भी पहले जबकि सार्वजनिक रूप से उसकी घोषणा की गई। आठ वर्ष की उम्र से ही वे बहाउल्लाह के देशनिकालों और निर्वासनों में उनके साथ रहे। अधिकारियों और लोगों से सम्पर्क के क्रम में अब्दुल बहा अक्सर अपने पिता के नायब के रूप में भूमिका निभाते थे। 1892 में उनके निधन के बाद, बहाउल्लाह के लिखित प्रावधानों के अनुसार अब्दुल बहा बहाई धर्म के प्रमुख बन गए।

बहाउल्लाह के उत्तराधिकारी और उनके लेखों के नियुक्त व्याख्याकार के रूप में अब्दुल बहा का स्वयं अपना एक उच्च आध्यात्मिक स्थान है। बहाइयों की दृष्टि में, वे बहाई धर्म के पूर्ण उदाहरण-पुरुष हैं, वे आध्यात्मिक ज्ञान से सम्पन्न हैं, यद्यपि वे अवतार नहीं हैं।

अपने महत्वपूर्ण धर्म-नेतृत्व-काल के दौरान, अब्दुल बहा ने दुनिया भर के बहाइयों के साथ पत्राचार किया था और उन्हें प्रचुर मात्रा में व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शन दिए थे। हालाँकि इस खंड में संकलित बहुत सारे पत्र व्यक्तियों को उनके विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर के रूप में लिखे गए थे किंतु उनमें निहित मार्गदर्शनों में ऐसे सर्वव्यापी तथ्य निहित हैं जिसके कारण सबको उनका अध्ययन करना चाहिए। यहाँ संकलित पत्र एवं लेख व्यापक विषयों का समावेश करते हैं और उनमें गहन आध्यात्मिक विवेक निहित है जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि पहली बार लिखे जाते समय।

**अब्दुल बहा के लेखों से संकलन**

**1**

हे दुनिया के लोगो! सत्य का सूर्य सम्पूर्ण पृथ्वी को आलोकित करने और मानव-समुदाय को आध्यात्मिक स्पंदन से भरने के लिए उदित हो गया है। सराहनीय हैं उसके फल और परिणाम, अपार हैं उस कृपा से उत्पन्न पावन प्रमाण। यह एक अमिश्रित और विशुद्ध कृपा है; यह इस विश्व और इसके लोगों के लिए प्रकाश है; यह बंधुता और समरसता है; और प्रेम एवं एकसूत्रता; यह वस्तुतः करुणा और एकता है और अजनबीपन की समाप्ति; यह संसार के सभी लोगों के साथ सम्पूर्ण सम्मान और स्वतंत्रता के साथ एकजुट होना है।

आशीर्वादित सौंदर्य कहते हैं: “तुम सब एक ही वृक्ष के फल, एक ही शाख की पत्तियाँ हो”। इस तरह उन्होंने अस्तित्व के इस संसार की तुलना एक वृक्ष और उसके सभी लोगों की उसकी पत्तियों, फल और फूलों से की है। शाखा पर बहार आनी चाहिए, फलों और पत्तियों का पल्लवित होना आवश्यक है, और इस विश्व महावृक्ष के सभी हिस्सों के आपसी सम्बन्ध पर ही पत्तियों का विकास और बहार और फल की मधुरता निर्भर है।

इसलिए, सभी मानवों को चाहिए कि वे दृढ़ता से एक-दूसरे को सहारा दें और अनंत जीवन की कामना करें और इसलिए इस नश्वर संसार में ईश्वर के प्रेमियों को चाहिए कि वे दृश्य और अदृश्य जगतों के सौम्य सम्राट द्वारा भेजी हुई कृपाएँ और आशीर्वाद बनें। उन्हें अपनी दृष्टि को पावन बना लेना चाहिए और समस्त मानवजाति को अस्तित्व के वृक्ष की पत्तियों और बहारों और फलों के रूप में देखना चाहिए। उन्हें सदा अपने बंधुओं में से किसी एक के लिए कोई दयालुतापूर्ण कार्य करने, किसी को प्रेम, करुणा, विवेकपूर्ण सहायता देने की चेष्टा करनी चाहिए। उन्हें किसी को भी अपने शत्रु के रूप में नहीं देखना चाहिए, या उनका बुरा नहीं सोचना चाहिए, बल्कि पूर्वाग्रह से मुक्त रहते हुए, कोई भी विभाजन-रेखा न खींचते हुए, सम्पूर्ण मानवजाति को अपना बंधु समझना चाहिए; विदेशी को अंतरंग, अजनबी को अपना सहचर मानना चाहिए।

इस युग में, प्रभु की दहलीज पर कृपा-प्राप्त व्यक्ति वह है जो सबको अपनी निष्ठा का प्याला पिलाता है, जो अपने शत्रुओं को भी कृपा का आभूषण प्रदान करता है और अपने पतित आततायी के लिए भी सहायता के हाथ बढ़ाता है; यह वह व्यक्ति है जो अपने घोरतम शत्रु के लिए भी एक स्नेहिल मित्र होगा। ये शिक्षाएँ हैं आशीर्वादित सौंदर्य की, ये परामर्श हैं महानतम नाम के।

हे प्रिय मित्रों! यह विश्व युद्धरत है और मानवजाति अत्यंत वेदना एवं सांसारिक संघर्ष से ग्रस्त है। घृणा की अंधेरी रात व्याप्त हो चुकी है और सद्भावना की ज्योति बुझा दी गई है। धरती के लोगों और बंधु-बांधवों ने अपने पंजों को धारदार बना लिया है और एक-दूसरे से जूझने पर पिल पड़े हैं। मानवजाति की आधारशिला ही चरमरा उठी है। हजारों घर-परिवार खानाबदोश और बेघर हो चुके हैं, और फिर भी हर साल धूलों से सनी युद्धभूमियों में हजारों-हजार लोग अपना जीवन-रक्त बहाते चले आ रहे हैं। जीवन और आनंद के शिविर ध्वस्त हो चुके हैं। सेनापति अपने सेनापतित्व के प्रदर्शन, अपने किए खून-खराबे की शेखी बघारने, हिंसा उकसाने में एक-दूसरे से होड़ करने में निमग्न हैं। उनमें से एक कहता है, “इस तलवार से मैंने लोगों के सिर कलम कर दिए।“ एक अन्य कहता है: “मैंने एक राष्ट्र को धूल-धूसरित कर दिया!” और फिर एक अन्य कहता है: “मैंने एक सरकार को ध्वस्त कर दिया!” ऐसी ही चीजों में लोग अपनी शान समझते हैं, इन्हीं बातों में उन्हें गौरव का अनुभव होता है। प्रेम - सच्चरित्रता - इनकी सर्वत्र निंदा होती है और मेलजोल एवं सत्यनिष्ठा से घृणा की जाती है।

आशीर्वादित सौंदर्य का धर्म सुरक्षा और प्रेम, सौहार्द और शांति की ओर मानवजाति का आह्वान कर रहा है; इसने धरती के उच्च स्थानों पर अपना चंदोवा स्थापित कर दिया है, और सभी राष्ट्रों को अपना आह्वान सुना दिया है। अतः, हे ईश्वर से प्रेम करने वाले लोगों, इस मूल्यवान धर्म का मोल समझो, इसकी शिक्षाओं का अनुपालन करो, इस सीधे मार्ग पर चलो, तथा लोगों को यह राह दिखाओ। अपनी आवाज बुलंद करो और प्रभु-साम्राज्य के गान गाओ। प्रेममय प्रभु के उपदेशों और परामर्शों को दूर-दूर तक फैलाओ ताकि यह दुनिया एक अलग किस्म की दुनिया बन सके और यह अंधकारमय धरती प्रकाश से नहा उठे और मानवजाति का मृत शरीर पुनर्जीवन प्राप्त कर सके; ताकि हर आत्मा ईश्वर के पावन उच्छ्वासों के माध्यम से अमरता की याचना करने लगे।

तुम्हारे तेजी से गुजरते हुए ये दिन शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे, दुनिया कहलाने वाले इस कूड़े के ढेर द्वारा प्रदत्त ये धन, ये शोहरत, ये ऐशो-आराम गायब हो जाएंगे और उनका नामो-निशान भी नहीं रहेगा। अतः, तू परमेश्वर की ओर लोगों का आह्वान कर और लोगों को आमंत्रित कर कि वे उच्च स्वर्ग के सहचरों के उदाहरण का अनुगमन करें। तू अनाथों के स्नेहिल पिता बन और असहायों के आश्रय और निर्धनों के लिए कोषालय और व्याधिग्रस्त लोगों के लिए उपचार। तू हर अत्याचार-पीड़ित का सहायक बन, लाभ-वंचित जनों का संरक्षक। हर समय तू मानवजाति के सभी सदस्यों की कोई न कोई सेवा करने के बारे में सोच। लोगों की घृणा और तिरस्कार, शत्रुता और अन्याय पर ध्यान न दे: बल्कि उससे विपरीत आचरण कर। तू सच्चे हृदय से दयालु बन, केवल बाहरी तौर पर नहीं। ईश्वर के सभी प्रियजन इस बात पर अपना ध्यान केंद्रित करें: मनुष्य के प्रति परमेश्वर की दया का स्वरूप बनना; ईश्वर की कृपा बनना। वह जिस किसी मनुष्य के पथ से गुजरे उसके प्रति कुछ भला करे, उसके लिए लाभदायक बने। वह हर किसी के चरित्र को ऊँचा उठाए और लोगों के मनो-मस्तिष्क को (ईश्वर की ओर) उन्मुख करे। इस तरह, दिव्य मार्गदर्शन का प्रकाश चमक उठेगा और परमेश्वर की कृपा समस्त मानवजाति को हिलोर उठेगी: क्योंकि प्रेम ही प्रकाश है, चाहे वह जिस किसी घर में निवास करे और घृणा ही अंधकार है, चाहे उसका बसेरा जहाँ कहीं हो। हे ईश्वर के मित्रो! तू सदा-सदा के लिए उस अंधकार को निकाल बाहर करने का जतन कर ताकि गूढ़ रहस्य प्रकट हो सके और सभी वस्तुओं का निगूढ़ सार सामने आ सके।

**2**

हे मेरे प्रभो! इस अंधकारमय रात की गहनता में, अपने हृदय की वाणी से तुझमें अपना विश्वास जमाए, तुम्हारी परिधि से प्रवाहित होती मोहक सुरभि के आनंद से रोमांचित, तुझ सर्व-गरिमामय के निकट खिंचा चला आया हूं, इन शब्दों में तुझे पुकारते हुए:

हे मेरे स्वामिन! तेरी महिमा के बखान के लिए मुझे शब्द नहीं मिलते; मैं ऐसा कोई उपाय नहीं देखता कि मेरे मानस का पंछी तेरी पावनता के उच्च साम्राज्य की ओर उड़ान भर सके; क्योंकि तू अपने सार-तत्व में उन विभूषणों से अत्युच्च परे, पावन है और अपने स्वयं के अस्तित्व में तू उन स्तुतियों की पहुँच से बहुत दूर है जो तेरे रचित जीव तुझे अर्पित करते हैं। अपने ही अस्तित्व की पावनता की परिधि में, तू उच्च लोक के ज्ञानवान सहचरों की समझ-बोध से सदा ऊपर रहा है और सदा-सर्वदा तू अपने ही यथार्थ की पवित्रता में आवृत्त रहेगा, तेरे उस उदात्त साम्राज्य के उन निवासियों के ज्ञान से परे जो तेरे नाम का महिमा-गान करते हैं।

हे मेरे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! जब तू ऐसा अगम्य है तो मैं भला कैसे तेरा स्तुति-गान या तेरा वर्णन कर सकता हूँ; तू हर वर्णन और गुणगान से परे, अपरिमेय रूप से उच्च और पावन है।

अतः, हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! मेरी इस दीन दशा, मेरी दरिद्रता, मेरी निरीहता, मेरी इस अधमता पर दया कर! मुझे अपनी कृपा और क्षमाशीलता के उदार प्याले से पान करने को दे, अपने प्रेम की मधुर सुरभि से मुझे हिल्लोरित कर, अपने ज्ञान के आलोक से मेरे अंतर्मन को पुलकित कर दे, अपनी एकता के रहस्यों से मेरी आत्मा को पावन बना, तेरी करुणा की वाटिका से प्रवाहित होने वाली मधुर बयार से मुझमें जीवन का संचार कर - जब तक कि मैं स्वयं को तेरे सिवा अन्य सभी चीजों से अनासक्त न कर लूँ और तेरी भव्यता के परिधान का छोर न थाम लूँ और उन सभी चीजों के प्रति विस्मृत न हो जाऊँ जो तेरा नहीं है और तेरे इन दिवसों में प्रवाहित होते मधुर उच्छवासों को अपना सहचर न बना लूँ और तेरी पावनता की दहलीज पर तेरे प्रति निष्ठा को न प्राप्त कर लूँ और तेरे धर्म की सेवा के लिए उठ न खड़ा होऊँ और तेरे प्रियजनों के समक्ष विनम्र न बन जाऊँ और तेरे कृपाप्राप्त जनों की उपस्थिति में शून्य मात्र न बन जाऊँ।

वस्तुतः तू है सहायक, अवलंबनदाता, उदात्त, परम उदार।

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! मैं तेरे सौंदर्य के प्रकाश के उस प्रभात के नाम पर जिसने समस्त धरती को आलोकित कर दिया है और तेरी दिव्य करुणा के नेत्रों की दृष्टि के नाम पर जिसने सभी वस्तुओं का ध्यान रखा है तथा तेरे अनुदानों के तरंगित सागर के नाम पर जिसमें हर वस्तु निमज्जित है और सभी रचित वस्तुओं के सार-तत्व पर अपने उपहारों की वर्षा करने वाले तेरी कृपा के उमड़ते बादलों के नाम पर और फिर तेरी दया की उस आभा के नाम पर जो इस संसार की रचना से पहले भी अस्तित्व में थी -- तुझसे याचना करता हूँ कि अपने चुने हुए सेवकों को निष्ठावान बनने में सहायता दे और अपने प्रियपात्रों को तेरी उदात्त दहलीज पर सेवा करने में उनका सहायक बन और अपनी सामर्थ्‍य के सर्वविजयी सैन्य-समूहों की सहायता से उन्हें विजय पाने दे तथा उच्च लोक के महान योद्धाओं के समूह द्वारा उन्हें सुदृढ़ बना।

हे मेरे स्वामी! वे तेरे द्वार पर खड़े दुर्बल जन हैं; वे तेरे दरबार में खड़े अकिंचन लोग हैं, तेरी कृपा के मोहताज, तेरी सहायता के लिए परम आवश्यकता-ग्रस्त, तेरी एकता के साम्राज्य की ओर उन्मुख, तेरे उपहारों की कृपा के लिए लालायित हैं। हे मेरे प्रभो! उनके मानसों को अपने पवित्र प्रकाश से आप्लावित कर दे; उनके हृदयों को अपनी सहायता की कृपा से पावन बना दे; उनके अंतर्मन को उन खुशियों की सुरभि से आह्लादित कर दे जो तेरे उच्च लोक के सहचरों से प्रवाहित होती है; तेरी सामर्थ्‍य के चिह्नों और संकेतों को निहार कर उनके नेत्रों को प्रखर बना; उन्हें पावनता की ध्वजाएँ तथा धरती के शिखरों पर सभी जीवों से अत्युच्च फहराती हुई पवित्रता की पताकाएँ बना; उनके शब्दों को ऐसा बना दे कि वे ठोस चट्टानों जैसे हृदयों को भी स्पंदित कर सकें। वे तेरी सेवा के लिए उठ खड़े हों और स्वयं को तेरी दिव्यता के साम्राज्य के प्रति समर्पित कर दें और अपने मुखड़े तेरी आत्मजीविता की परिधि की ओर उन्मुख कर सकें और दूर-दिगन्त तक तेरे संकेतों का प्रसार करें और तेरे प्रस्फुटित प्रकाश से आलोकित हों और तेरे निगूढ़ रहस्यों को प्रकट करें। वे सौम्य जलाशयों तथा तेरी करुणा के स्रोतों की ओर तेरे सेवकों का दिग्दर्शन करें जो कि तेरी एकता के स्वर्ग के हृदय-मध्य से प्रस्फुटित और तरंगित होते हैं। वे मुक्ति की नौका पर अनासक्ति की पाल फहरा सकें और तेरे ज्ञान के महासागरों की ओर प्रयाण करें; वे दूर-दूर तक एकता के वितान फैला सकें और उनकी सहायता से तेरी एकमेवता के साम्राज्य की ऊंचाइयों की ओर उड़ान भरें ताकि वे ऐसे सेवक बन सकें जिनकी प्रशंसा सर्वोच्च स्वर्ग के सहचर कर उठें, जिनके गुणगान स्वयं तेरे सर्वमहिमामय साम्राज्य के निवासी करने लगें; परम महान सुसमाचार को उच्च ध्वनि से मुखरित करते हुए वे अदृश्य जगत के अग्रदूतों की आवाज सुन सकें; तुझसे मिलने की उत्कंठा में वे सुबह-शाम अपने आँसू बहाते हुए, प्रकाश के प्रभात के विलक्षण दिव्य गायन गाते हुए, तेरी कृपा की अनन्त छाया से होकर गुजरने की लालसा लिए हुए, तेरा आह्वान और तेरी प्रार्थना करें - हे मेरे प्रभो जो सभी वस्तुओं से वियुक्त है।

हे मेरे प्रभो, सभी परिस्थितियों में उनकी सहायता कर, पावनता के अपने देवदूतों के माध्यम से, उनके माध्यम से जो तेरी अदृश्य सेनाएँ हैं, अपनी उन स्वर्गिक सैन्य-टुकड़ियों के द्वारा जो निम्न लोक की विशाल सेनाओं को भी परास्त कर देती हैं, हर समय उन्हें सहारा दे।

तू, वस्तुतः शक्तिशाली है, सामर्थ्‍यवान है, सबको अपने दायरे में समेटने वाला है, तू वह है जिसका साम्राज्य सभी वस्तुओं पर है।

हे पावन प्रभो! हे स्नेहिल दयालुता के स्वामी! तेरे सौन्दर्य को निहारने की उत्कट लालसा लिए और तेरी सभी विधियों के प्रति प्रेम रखते हुए, हम तेरे निवास के चारों ओर भटक रहे हैं। हम हैं बेचारे, अधम और तुच्छ। हम हैं अकिंचन: हमारे प्रति दया दिखा, हमें अपनी कृपा का दान दे; हमारी भूलों को न देख, तू हमारे अनन्त पापों को छिपाने वाला बन। हम चाहे जो भी हैं, हम तुम्हारे हैं और हम जो भी बोलते और सुनते हैं वह तुम्हारा ही गुणगान है और हमें तुम्हारे ही मुखड़े की तलाश है, हम तुम्हारे ही मार्ग का अनुगमन करते हैं। तू स्नेहिल दयालुता का स्वामी है, हम हैं पापी और पथभ्रष्ट एवं अपने ठौर से बहुत दूर। अतः, हे दया के जलधर, हमें अपनी बरखा की कुछ बूंदें दे दे। हे कृपा की बहार भरी क्यारी, हमारी ओर एक सुगंध भरी बयार भेज। हे समस्त अनुदानों के महासागर, एक बड़ी-सी तरंग हमारी ओर भी भेज दे। हे कृपा के महासूर्य! रोशनी की एक किरण भेज। हम पर दया कर, हम पर कृपा कर। तेरे सौन्दर्य की सौगन्ध! हमारे पास हमारे पापों की गठरी के सिवा और कुछ भी नहीं; हमारे पास बयान करने के लिए कोई सत्कर्म नहीं, केवल आशाएँ हैं। यदि तुम्हारा पापों को छिपाने वाला यह पर्दा हमें ढंक न दे और तुम्हारी सुरक्षा हमारा बचाव और पालन न करे तो इन असहाय व्यक्तियों के पास भला ऐसी कौन-सी सामर्थ्‍य है जो वे तुम्हारी सेवा के लिए उठ खड़े हो सकें, इन बेचारों के पास ऐसा कौन-सा सहारा है कि वे बहादुरी का कोई कारनामा दिखा सकें? तू जो कि सामर्थ्‍यवान, सर्वशक्तिमान है, हमारी सहायता कर, हम पर कृपा कर; हम मुरझाए हुए हैं, अपनी कृपा के बादलों की फुहारों से हमें तरो-ताजा कर दे; अत्यन्त निम्न हैं हम, अपनी एकता के दिवानक्षत्र की प्रखर किरणों से हमें आलोकित कर। इन प्यासी मछलियों को तू अपनी दया के महासागर में डाल दे, इस भटके हुए कारवां को तू अपनी एकमात्रता की शरण-स्थली का मार्ग दिखा; ये जो काफी दूर भटक आए हैं उन्हें अपने मार्गदर्शन के स्रोतों की ओर ले चल और जो राह भूल गए हैं उन्हें अपनी शक्ति के प्रांगण में आश्रय प्रदान कर। इन सूखे हुए ओठों को तू स्वर्ग के कृपापूर्ण और मृदुवाही जलों का आस्वाद दे, इन मृतप्रायों को अनन्त जीवन का वरदान दे। अंधों को तू देख सकने वाली आँखें दे। बहरों को सुनने योग्य और गूंगों को बोलने में सक्षम बना। तू खिन्न को स्फूर्तिमान कर दे, असावधान को विवेकवान बना दे, अहंकारियों को सजग कर और सोए हुओं को जगा दे।

तू शक्तिशाली है, दाता है, तू स्नेहमय है। तू सत्य ही दयालु है, अत्यंत महान है।

हे ईश्वर के प्रियजनों, हे इस नश्वर सेवक के सहायकों, जब सत्य के सूर्य ने समस्त अभिलाषाओं के उदय-स्थल से अपनी असीम कृपाएं बिखेरीं और अस्तित्व का यह संसार इस धृव से उस धृव तक पवित्र प्रकाश से प्रकाशित हो उठा, तो उसने ऐसी गहनता से अपनी किरणों के बाण फेंके कि उसने घुप्प अंधकार को सदा-सदा के लिए सोख लिया, जिससे कि यह धूल भरी पृथ्वी स्वर्ग की परिधियों में भी ईर्ष्‍या का विषय बन गई, और इस तुच्छ स्थली को अत्युच्च लोक का पद और गौरव प्राप्त हो गया। दूर-दूर तक मधुर सुरभि का संचार करते हुए इसपर पवित्रता का मृदुल समीर बहने लगा स्वर्ग की बासंती बयार इससे होकर और इसके ऊपर से गुजरने लगी, सभी कृपाओं के “स्रोत” से निकलकर फलदायी हवाओं का प्रवाह होने लगा जिनसे अनंत कृपाओं का संचार हो उठा। फिर इस नश्वर संसार में प्रकाशमय उषाकाल ने अपना खेमा गाड़ा जिससे समस्त सृष्टि आह्लादित हो उठी। सूखी हुई इस धरती पर अमर बसंत खिल उठा, मृतप्रायः धूल अनंत जीवन पाकर जाग उठी। फिर रहस्यमय ज्ञान के फूल खिल उठे, और ईश्वर के ज्ञान का बखान करते हुए धरती के भीतर से नए अंकुर फूट उठे। यह नाशवान विश्व ईश्वर के उदार उपहारों की झलक दिखा उठा और यह दृश्यमान संसार उन लोकों की गरिमा झलक उठा जो पहले दृष्टि से ओझल थे। ईश्वर के आह्वान की घोषणा कर दी गई, अनंत सविदा की मेज तैयार कर दी गई, ईश्वरीय प्रमाण की प्याली एक हाथ से दूसरे हाथ तक प्रदान की गई, सार्वलौकिक आमंत्रण भेज दिया गया। उसके बाद कुछ लोग स्वर्गिक मदिरा के प्रदाह से भर उठे और कुछ लोगों को इन महानतम उपहारों के अंशदान से वंचित छोड़ दिया गया। कुछ लोगों की दृष्टियों और अंतर्दृष्टियों को कृपा के प्रकाश से प्रकाशित कर दिया गया और और कुछ ऐसे भी थे जो एकता के गान सुनकर आनंद-विभोर हो उठे। ऐसे पक्षी थे जो पवित्रता की वाटिका में कलरव करने लगे, और स्वर्ग के गुलाब-तरुवर की शाखाओं पर बैठी कोकिलाएँ आत्मा की गहराई से कूक उठीं। और फिर स्वर्ग और धरती पर का भी “साम्राज्य” अलंकृत एवं सुसज्जित कर दिया गया और यह लोक उच्च स्वर्ग की ई का पात्र बन गया। लेकिन फिर भी, अफसोस..... अफसोस घोर ....अफसोस कि लापरवाह लोग अपनी असावधानी की निद्रा में निमग्न रहे और मूर्खों ने इस परम पवित्र उपहार का तिरस्कार कर दिया। जो दृष्टिहीन हैं वे अपने ही पर्दे में ओझल रहते हैं, जो बहरे हैं उन्हें इससे कोई मतलब नहीं कि क्या गुजर गया, जो मृतप्राय हैं उन्हें उसे प्राप्त करने की कोई आशा नहीं, हालाँकि उसने यह कहा है कि “वे आने वाले जीवन के प्रति निराश हैं, जैसे निष्ठाहीन लोग इस बात के प्रति निराश हैं कि कब्रों में सोए हुए लोग जाग उठेंगे।“[[1]](#footnote-1)

लेकिन तू, हे ईश्वर के प्रियजनों, अपनी ध्वनि मुखरित कर और ईश्वर को धन्यवाद दे; तू उस “परम आराध्य के सौंदर्य” का गुणगान और उसका महिमा-गान कर, क्योंकि तूने इस विशुद्धतम प्याले से आसव का पान किया है और तू इस मदिरा के आस्वाद से आह्लादित और कांतिमान हुआ है। तूने पावनता की मधुर सुरभियों की खोज की है, तूने जोसेफ के परिधान से निष्ठा की कस्तूरी-गंध प्राप्त की है। तू उसके करों से निष्ठा के मधु-ओसकणों से पोषित हुआ है जो एकमात्र प्रियतम है, तूने प्रभु के उदार सहभोज की मेज पर अमर भोज का आस्वाद पाया है। यह प्रचुरता प्रेममय परमात्मा द्वारा प्रदान की गई एक विशेष कृपा है, यह उसकी करुणा से उत्पन्न आशीर्वादों और दुर्लभ उपहारों में से है। ईशवाणी (गॉस्पेल) में उसने कहा है: “आमंत्रित तो बहुतों को किया जाता है लेकिन चुने कुछ ही जाते हैं।“[[2]](#footnote-2) अर्थात मार्गदर्शन का यह महान उपहार हालाँकि बहुतों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है लेकिन वे दुर्लभ लोग ही होते हैं जिन्हें इसे प्राप्त करने के लिए चुना जाता है। “ऐसी ही है ईश्वर की कृपा: वह जिसे चाहता है इसे देता है और ईश्वर की कृपा असीम है।“[[3]](#footnote-3)

हे ईश्वर के प्रियजनों! इस संसार के लोगों से, “संविदा की वर्तिका” के खिलाफ कठोर हवाओं का प्रवाह जारी है। निष्ठा का कोकिल विद्रोहियों के समूह से घिरा हुआ है जो घृणा के कौओं के समान हैं। परमेश्वर के सुमिरन का कपोत विवेकहीन निशाचर पक्षियों के घोर दमन-चक्र में फंसा है और ईश्वर के प्रेम की तृणभूमि में निवास करने वाला हिरण लोलुप वन्यजीवों का शिकार हो रहा है। भीषण है यह संकट, अत्यंत दुःखदायी है यह पीड़ा।

ईश्वर के प्रियतम को चाहिए कि वह पर्वतों की तरह अडिग खड़ा रहे, अभेद्य दीवार की तरह स्थिर हो। उन्हें घोर संकटों में भी अचल रहना चाहिए, कठिनतम मुसीबतों में भी उन्हें व्यथित नहीं होना चाहिए। उन्हें तो बस सर्वशक्तिमान परमेश्वर के परिधान का छोर थामे रहना चाहिए और “परम महान के सौंदर्य” पर अपनी आस्था रखनी चाहिए; उन्हें उस सहारे पर भरोसा करना चाहिए जो “प्राचीनतम साम्राज्य” से प्राप्त होता है और उदार परमात्मा की सार-संभाल और सुरक्षा पर निर्भर रहना चाहिए। उन्हें हर समय दिव्य कृपा के ओस-बूंदों से स्वयं को तरोताजा करना चाहिए और पवित्र चेतना की सांसों से हर क्षण नई शक्ति और नवजीवन प्राप्त करना चाहिए। उन्हें अपने प्रभु की सेवा के लिए उठ खड़ा होना चाहिए, और अपनी पूरी शक्ति से दूर-दूर तक उसकी पावनता के उच्छवासों का प्रसार करना चाहिए। उसके ईश्वरीय धर्म की रक्षा के लिए उसे एक सशक्त दुर्ग, “प्राचीनतम सौंदर्य” की सेनाओं के लिए एक दुर्भेद्य किला बन जाना चाहिए। उन्हें हर ओर से ईश्वरीय धर्म के भवन की पूरी निष्ठा से रक्षा करनी चाहिए; उन्हें उसके ज्योतिर्मय आकाश के प्रखर नक्षत्र बनना चाहिए। क्योंकि अंधकार की सेनाएँ हर दिशा से इस प्रभुधर्म पर आक्रमण कर रही हैं और धरती के राष्ट्र इसके स्पष्ट प्रकाश को बुझाने पर आतुर हैं। और चूंकि धरती के सभी लोग अपने आक्रमण पर तुले हुए हैं, एक क्षण के लिए भी हमारा ध्यान भला कैसे भटक सकता है?

आज के युग में तुम्हारा सबसे महत्वपूर्ण कर्त्‍तव्य है अपने चरित्र को शुद्ध बनाना, अपने व्यवहार को सही करना और अपने आचरण में सुधार लाना। ईश्वर के रचित जीवों के बीच, उस दयालु के प्रियजन को चाहिए कि वह ऐसा चरित्र और आचरण दर्शाए कि उनकी पावनता का प्रसार समस्त जगत में किया जा सके और वह मृतकों में भी नए जीवन का संचार कर सके, क्योंकि ईश्वर के प्रकटीकरण एवं उस “अगोचर के असीम प्रकाश के उदय-स्थल” का उद्देश्य लोगों की आत्माओं को शिक्षित बनाना और प्रत्येक मनुष्य के चरित्र को शुद्ध बनाना है - ताकि ये आशीर्वादित व्यक्ति, जिन्होंने स्वयं को पशु-जगत के अंधकार से मुक्त कर लिया है, ऐसे चरित्र के साथ उठ खड़े हों जो मनुष्य की वास्तविकता के आभूषण हैं। उद्देश्य यह है कि इस धरती के प्राणी स्वर्ग के लोगों की ओर उन्मुख हों और जो अंधेरे में भटक रहे हैं वे प्रकाश की दुनिया में आ सकें और जो अलग-थलग पड़े हैं वे प्रभु-साम्राज्य की अंतरंग परिधि में प्रवेश पा सकें और जो नगण्य हैं वे अनंत गरिमा के सखा बन सकें। यह वह है जिससे अंशहीन लोग को अगाध सागर का अपना अंश ग्रहण करें, और अज्ञानी ज्ञान के जीवंत निर्झर से छककर पिएँ; और टेढ़े चंगुल वाले लोग विनम्र और सहिष्णु बनें, और जिन्हें युद्ध से प्रेम है वे सच्ची आपसी शांति को पाने का प्रयास करें; यह वह है कि जिससे बर्बर एवं तीक्ष्ण चंगुल वालों को स्थायी शांति का लाभ प्राप्त होना चाहिए; जिससे दुष्टों को यह जान लेना चाहिए कि पवित्रता का एक लोक भी है, और दूषित भावना वालों को पवित्रता की नदियों का मार्ग पा लेना चाहिए।

जब तक मानवमात्र के आंतरिक अस्तित्व से इन दिव्य अनुदानों की झलक न मिलने लग जाए तब तक प्रकटावतार की कृपाएं निष्फल ही साबित होंगी और सत्य के सूर्य की चकाचैंध कर देने वाली किरणों का कोई प्रभाव ही नहीं होगा।

अतः, हे ईश्वर के प्रियतम, तू पूरे प्राणपण से उसके पवित्र विभूषणों का एक अंशदान प्राप्त करने का प्रयास कर और उसकी पावनता की कृपाओं का अपना हिस्सा ग्रहण कर - ताकि तू एकता के संकेतचिह्न, एकमेवता की ध्वजाएं बन सके और तू ऐक्य का अर्थ समझने की चेष्टा कर ताकि तू ईश्वर की इस वाटिका में अपने स्वर मुखरित कर सके और चेतना के आनंददायक गायन गा सके। तू ऐसे पंछी बन जो “उसके” प्रति अपना धन्यवाद अर्पित करते हैं और जीवन की बहार भरी अमराई में तू ऐसे मधुर गायन गा जो जानने वालों के मानस को दीप्तिमान बना कर रख दे। तू दुनिया के उच्चतम शिखरों पर अपनी पताका फहरा, ईश्वर की कृपा की पताका जो उसकी दया की हवाओं में तरंगित हो जीवन के क्षेत्र में तू इस दृश्यमान जगत के गुलाबों के बीच एक वृक्ष रोप जो ताजे और मधुर फल प्रदान कर सके।

मैं सच्चे ’शिक्षक’ की सौगंध खाकर कहता हूं कि यदि तू परमात्मा की उन सलाहों के अनुसार आचरण करेगा जिन्हें उसने अपनी ज्योतिर्मय पातियों में प्रकट किया है तो यह अंधकारमय धूल स्वर्गिक साम्राज्य की और यह अधम विश्व उस सर्व-गरिमामय के लोक की झलक दिखा उठेगा।

हे तू प्रभु के प्रियजनों! गुणगान हो उस अगोचर स्वामी का, सत्य के सूर्य की प्रस्फुटित होती कृपाएं हर ओर से तुझे घेरे हुई हैं और हर दिशा से उसकी करुणा के द्वार मुक्त खुले हुए हैं। अब इन अनुदानों से लाभ उठाने का समय आ गया है। तू इस समय का मूल्य समझ, यह अवसर तुझसे कहीं चूक न जाए। तू इस अंधकारमय विश्व की फिक्रों से बिल्कुल दूर रह और अपना परिचय उन सारभूत गुणों से झलकने दे जो प्रभु-साम्राज्य में निवास करते हैं। तभी तू यह जान सकेगा कि स्वर्गिक ’दिवानक्षत्र’ की गरिमा कितनी उदग्र है और अगोचर लोक से आने वाली कृपा के संकेत कितने चकाचैंध कर देने वाले हैं।

**3**

हे तू ईश्वर के प्रियतम! हे उसके साम्राज्य की संतानों! वस्तुतः, वस्तुतः, नए स्वर्ग और नई धरती का आविर्भाव हो चुका है। पवित्र नगरी, नव येरुशलम, स्वर्ग की एक परी के रूप में उच्चाकाश से उतर आई है, एक झीना आवरण डाले, परम सौंदर्यमयी, विशिष्ट, और धरती पर अपने प्रेमियों के साथ पुनर्मिलन के लिए प्रस्तुत। स्वर्गिक समूहों की दिव्य टुकड़ी उसके एक ही आह्वान पर साथ निकल पड़ी है जो पूरे ब्रह्मांड को चीरते हुए, उच्च स्वर से और पूरी शक्ति से यह नाद सुना गया है कि “यह ईश्वर की नगरी है, उसका अधिवास है, जिसमें उसके निर्मल और पावन सेवक रहते हैं। वह उनके साथ निवास करेगा, क्योंकि वे ही उसके जन हैं और वह है उनका स्वामी।“

उसने उनके आंसू पोंछ डाले हैं, उनकी बातियाँ जला दी हैं, उनके हृदयों को प्रकाशित किया है और उनकी आत्माओं को आनंद-विभोर कर दिया है। अब मृत्यु उन्हें अपना ग्रास नहीं बना सकती और न ही दुःख, क्रंदन और यातनाएं ही उन्हें पीड़ित कर सकती हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा अपने साम्राज्य में सिंहासनारूढ़ हो चुका है और उसने सभी वस्तुओं को नया रूप दे दिया है। यही सत्य है और उससे बड़ा सत्य क्या हो सकता है जिसकी घोषणा दिव्य संत जॉन के प्रकटीकरण द्वारा की गई हो?

वही आदि है, वही अंत है। वही है जो प्यासे को जीवन-जल का स्रोत प्रदान करेगा और ब्याधिग्रस्त को सच्चे मोक्ष की औषधि का दान देगा। ऐसी कृपा जिसकी सहायता करती हो, वस्तुतः वह ऐसा व्यक्ति है जो ईश्वर के दूतों और उसकी पावन आत्माओं से सर्वाधिक गरिमामय विरासत प्राप्त करता है। प्रभु उसका परमेश्वर होगा और वह होगा उसका परम प्रिय पुत्र।

अतः, हे ईश्वर के प्रिय और उसके चुने हुए जनों! आनंद मनाओ, और हे तुम जो ईश्वर की संतान और उसके जन हो, उस परमोच्च परमात्मा के गुणगान और उसकी महिमा के विस्तार के लिए अपनी आवाज बुलंद करो; क्योंकि उसके प्रकाश की किरणें जगमगा उठी हैं, उसके संकेत प्रकट हो चुके हैं और उसके उच्छल सागर की तरंगें सभी तटों पर अनगिनत कीमती मोती बिखेर चुकी हैं।

**4**

गुणगान हो उसका जिसने इस अस्तित्व के संसार की रचना की है और उसमें स्थित सभी चीजों का रूप सृजन किया है, उसकी स्तुति हो जिसने निष्ठावान जनों को प्रतिष्ठा के आसन[[4]](#footnote-4) तक उठाया है और जिसने अदृश्य जगत को दृश्यता के धरातल तक लाया है - और फिर भी लोग हैं कि अपनी मत्त निष्क्रियता[[5]](#footnote-5) में भटके हुए, दिग्भ्रमित हैं।

उसने उच्च दुर्गों की आधारशिलाएं रखी हैं, उसने ’गरिमा के चक्र’ का उद्घाटन किया है, इस दिवस में जो कि स्पष्टतः न्याय का दिवस है, उसने एक नई सृष्टि की रचना की है - और फिर भी असावधान लोग अपनी मद भरी निद्रा में निमग्न हैं।

बिगुल[[6]](#footnote-6) बज चुका है, मुनादी[[7]](#footnote-7) करने वाले ने अपनी मुनादी सुना दी है और धरती के सभी लोग मूर्छित हो गए हैं - लेकिन फिर भी जो मृत हैं वे अपने शरीर की कब्र में सोए पड़े हैं।

और दूसरी तुरही[[8]](#footnote-8) भी बज चुकी है, पहले विस्फोट के बाद दूसरा विस्फोट[[9]](#footnote-9) हो चुका है और भयानक मुसीबत आ पड़ी है, प्रत्येक माँ अपने दूधपीते बच्चे तक को भुला चुकी है[[10]](#footnote-10) - लेकिन फिर भी, उलझन और दिग्भ्रम के शिकार लोग सावधान हो ही नहीं रहे।

और मुर्दों के फिर से उठ खड़े होने की सुबह आ चुकी है और सीधा मार्ग खींचा जा चुका है, ’तराजू’ खड़ा कर दिया गया है और धरती पर सभी को एक जगह एकत्रित किया जा चुका है[[11]](#footnote-11) - लेकिन फिर भी लोगों को मार्ग का कोई संकेत ही नहीं मिल रहा।

प्रकाश जगमगा उठा है और उसकी प्रखरता सिनाई पर्वत पर बिखेरी जा चुकी है, और सदा-क्षमाशील परमेश्वर की वाटिकाओं से मृदुल बयार बह रही है; चेतना की मोहक सुरभि का संचार हो रहा है और कब्र में सोए हुए लोग जाग रहे हैं - लेकिन असावधान लोग फिर भी अपनी चिर समाधि में सोए पड़े हैं।

नरक की अग्नि सुलगा दी गई है और स्वर्ग को नीचे झुका दिया गया है; स्वर्गिक उद्यानों में बहार आ गई है और नए-नए जलाशय लबालब भर चुके हैं, और अलकापुरी सौन्दर्य से चमक उठी है - लेकिन जो अनभिज्ञ लोग हैं वे अभी भी अपने निरे स्वप्नों के दलदल में समाए हुए हैं।

आवरण ढलक चुका है, पर्दा उठा दिया गया है, बादल फट चुके हैं, प्रभुओं के प्रभु स्पष्ट दिख रहे हैं - फिर भी पापियों के समक्ष से यह सब बस यूं ही गुजर गया।

यह वही है जिसने तुम्हारे लिए एक नई सृष्टि[[12]](#footnote-12) की रचना की है और जिसने ऐसा दुःख[[13]](#footnote-13) उत्पन्न किया है।

जो अन्य सभी दुःखों से बढ़कर है और जिसने सभी पवित्र जनों को उच्च स्वर्ग में एकत्रित किया है। वस्तुतः इसमें उन लोगों के लिए संकेत हैं जिनके पास देखने को आँखें हैं।

और ’उसके’ निशानों में से एक है शुभ लक्षणों और आनंदप्रद भविष्यवाणियों का प्रकट होना, चिह्नों और संकेतों का प्रकट होना, अनेक एवं विविधतापूर्ण शुभ समाचारों का प्रकट होना और सदाचारी लोगों के पूर्वानुमान, वे जिन्होंने अब अपने लक्ष्य पा लिए हैं।

और उसके संकेतों में से हैं उसकी आभाएँ जो एकता के क्षितिज के ऊपर जगमगा रही हैं, उसके वे प्रकाश जो सामर्थ्‍य के दिवानक्षत्र और उसके उस एकमेव, अतुलनीय अग्रदूत द्वारा घोषित किए गए परम महान सुसमाचार से फूट रहे हैं। वस्तुतः इसमें उन लोगों के समूह के लिए एक प्रखर प्रमाण निहित है जो सचमुच ज्ञाता हैं।

उसके संकेतों में एक है उसका प्रकट होना, सबके द्वारा उसे देखा जाना, उसके द्वारा स्वयं अपना प्रमाण बनकर सामने आना और सभी क्षेत्रों के साक्षियों के बीच उसकी उपस्थिति, उन लोगों के बीच उसकी मौजूदगी जो भेड़ियों की तरह उस पर टूट पड़े थे और जिन्होंने चारों ओर से उसे घेर लिया था।

उसके संकेतों में से एक है एक से एक शक्तिशाली राष्ट्रों और सर्वविजयी राज्यों और खून के प्यासे शत्रु-समूहों द्वारा किए गए प्रहारों को उसके द्वारा झेला जाना जो हर क्षण - वह जहाँ कहीं भी रहा -- उसके विनाश पर तुले हुए थे। वस्तुतः, यह उन लोगों द्वारा गहन परीक्षण किए जाने का विषय है जो ईश्वर के चिह्नों और संकेतों पर मनन करते हैं।

उसके अन्य संकेतों में से है उसके प्रवचनों की अद्भुतता, उसकी वाणी का प्रवाह, उसकी लेखनी के प्राकट्य की तीव्रता, उसके विवेकपूर्ण शब्द, उसके श्लोक, उसके पत्र, उसके सत्संग वचन, उसके द्वारा कुरान के प्रकट और निगूढ़ दोनों ही प्रकार के आयतों के गूढ़ार्थों को प्रकट किया जाना। तेरे अपने जीवन की सौगन्ध! यह विषय उन लोगों के लिए जो इसे न्याय की आँखों से देखेंगे, उतना ही स्पष्ट है जितना कि दिन।

और पुनः, उसके संकेतों में से है उसके ज्ञान का उगता हुआ सूर्य, और उसकी कलाओं और कुशलताओं का उदित होता चन्द्रमा, और उसके कार्य-विधानों में झलकती हुई उसकी पूर्णता जिसकी साक्षी दी है अनेक राष्ट्रों के ज्ञानियों और गुण-सम्पन्न लोगों ने।

और उसके संकेतों में से है यह तथ्य कि उसका सौन्दर्य सदा ही अनुल्लंघनीय बना रहा और अपने हजारों शत्रुओं के समूहों द्वारा तीरों, बरछियों और तलवारों से आक्रमण किए जाने के बावजूद उसका मानव-मन्दिर (उसका शरीर) अक्षत रहा जबकि वह अपनी आभाओं को प्रकट करता रहा। इसमें वस्तुतः एक विलक्षण बात है और किसी भी निष्पक्ष न्यायकर्ता के लिए एक चेतावनी भी।

और उसके संकेतों में से हैं उसकी लम्बी यातनाएँ, उसके दुःख और उत्पीड़न, बेड़ियों और जंजीरों में बंधे होने पर उसकी पीड़ा और प्रतिक्षण उसकी यह पुकार “मेरे पास आओ, मेरे पास आओ, हे सदाचारियों! मेरे पास आओ, मेरे पास आओ, हे शुभ को चाहने वालों! मेरे पास आओ, मेरे पास आओ, हे प्रकाश के उदय-स्थलों!” वस्तुतः, रहस्य के द्वार उन्मुक्त खुले हुए हैं लेकिन फिर भी दुष्ट लोग व्यर्थ की नुक्ताचीनी में लगे हुए हैं।[[14]](#footnote-14)

उसके और भी संकेतों में से है उसके ’ग्रंथ’ की घोषणा, उसका निर्णायक पवित्र पाठ जिसमें उसने राजाओं को चेतावनी दी है और उसे[[15]](#footnote-15) दी गई उसकी चेतावनी जिसकी हुकूमत की ताकत पूरी दुनिया में महसूस की गई थी - और जिसका महान सिंहासन उसके कुछ ही दिनों बाद लड़खड़ा कर गिर पड़ा था - एक ऐसी सच्चाई जो पूरी दुनिया को विदित है।

और उसके संकेतों में से है उसकी गरिमा की उदात्तता, उसका महान पद, उसकी उत्तुंग गरिमा और ’कारागार’ के क्षितिज पर जगमगाता उसका सौन्दर्य: इस तरह कि लोग उसके सम्मुख नतमस्तक थे और उसकी राह से गुजरने वालों के मुखड़े विनम्र हो उठे थे। यह एक ऐसा प्रमाण है जैसाकि अतीत के युगों में कभी नहीं देखा गया था।

और उसके संकेतों में से है वे असाधारण कार्य जो वह निरंतर करता रहा, वे चमत्कार जो उसने करके दिखाए थे, उसके बादलों के अनवरत बरसने की तरह उससे अबाधित रूप से उत्पन्न विलक्षण बातें - और यहाँ तक कि अविश्वासियों द्वारा भी स्वीकार किया गया उसका शक्तिशाली प्रकाश। उसके अपने जीवन की सौगन्ध! इसकी स्पष्ट रूप से पुष्टि हुई थी, उस जीवन्त, स्वयंजीवी स्वामी की उपस्थिति का लाभ पाने वाले हर तरह के लोगों के समक्ष इस बात की झलक मिली थी।

और उसके अन्य संकेतों में से एक यह भी है कि उसके युग के सूर्य की किरणें बहुत दूर-दूर तक फैली थीं, उसके समय का चन्द्र सभी युगों के स्वर्ग में उदित हुआ था: उसके उस दिवस में जो कि सभी दिनों का सिरमौर है, क्योंकि उसके पद और उसकी शक्ति ने, उसके विज्ञानों और कलाओं ने दूर-दूर तक अपनी पहुंच बनाकर इस विश्व को चकाचैंध कर दिया है और लोगों के मनो-मस्तिष्क को आश्चर्यचकित कर डाला है।

सत्य ही, यह विषय सदा-सदा के लिए स्थायी और स्थापित हो चुका है।

**5**

विश्व का वह महान ’प्रकाश’ जो कभी समस्त मानवजाति की ऊपर जगमगाया करता था, अस्त हो चुका है, ताकि वह आभा के उस क्षितिज पर सदा-सर्वदा जगमगाता रहे जो उसकी सतत प्रकाशित गरिमा का साम्राज्य है और अब वह उच्च लोक से अपने प्रियजनों पर अपनी आभा बिखेर रहा है और उनके हृदयों और आत्माओं में अनन्त जीवन की सांस फूंक रहा है।

उसकी दिव्य दृष्टि की पाती में, जिसका प्रसार पूरे विश्व में किया जा चुका है, उसने जो पूर्वघोषणा की है उसके बारे में अपने हृदय में विचार करो। उसमें उसने कहा है: “इस पर वह विलाप करती हुई बोल उठी: ’यह समस्त विश्व और उसकी सभी वस्तुएं तेरे दुःखों पर कुरबान हो जाएँ। हे स्वर्ग और धरती के सम्राट! तुमने स्वयं को इस कारागार-नगरी अक्का के निवासियों के हाथों क्यों छोड़ दिया है? तू शीघ्र अन्य साम्राज्यों की ओर बढ़, अपने उस उच्च विश्रांति-स्थल की ओर जा जिस पर नामों के लोक के निवासियों की कभी दृष्टि भी नहीं पड़ी है’। हम मुस्कुरा उठे और कुछ भी नहीं बोले। इन परम महान शब्दों पर विचार कर, और इस निगूढ़, पावन रहस्य के उद्देश्य के बारे में सोच।“

हे उस प्रभु के प्रियजनों! सावधान, सावधान कि तू कहीं हिचके और डगमगाए नहीं। तू किसी भी भय से आक्रान्त न हो, न ही हतप्रभ और निराश हो। तू अच्छी तरह सावधान रह कि यह संकट भरा दिन तुम्हारी उत्कंठा की लपटों को मंद न कर दे और तुम्हारी कोमल आशाओं को बुझाकर न रख दे। यह युग दृढ़ता और अडिगता का युग है। धन्य हैं वे जो चट्टान की तरह अडिग और सुदृढ़ बने रहते हैं और इस झंझावात भरे दिन की आंधियों और दबावों का डटकर सामना करते हैं। उन्हें वस्तुतः ईश्वर की कृपाएँ प्राप्त होंगी, उन्हें सचमुच उसकी दिव्य सहायता प्राप्त होगी और वे सचमुच विजयी होंगे। वे मानवजाति के बीच ऐसी कांति से जगमगाएंगे जिसका गुणगान और महिमा-मंडन गरिमा के शिविर के निवासी भी कर उठेंगे। उसके परम पवित्र ग्रंथ में मुखरित यह दिव्य आह्वान उन्हीं के लिए किया गया है: “हे लोगो! जब मेरी उपस्थिति की गरिमा समेट ली जाए और मेरी वाणी का महासागर शांत हो जाए तो अपने हृदय को व्यथित मत करना। तुम्हारे बीच मेरी उपस्थिति में एक बुद्धिमत्ता छिपी है और मेरी अनुपस्थिति में भी एक अन्य ही विवेक छिपा है जिसके रहस्य को उस अतुलनीय, सर्वज्ञ परमात्मा के सिवा और कोई नहीं समझ सकता। हम अपनी महिमा के सामाज्य से तुझ पर दृष्टि डाले हुए हैं और जो कोई भी हमारे धर्म की विजय के लिए उठ खड़ा होगा उसकी सहायता हम उच्च लोक के सैन्य-समूहों और अपने प्रिय देवदूतों के माध्यम से करेंगे।“

सत्य का सूर्य, वह परम महान प्रकाश, असीमता के लोक में अमर आभा के साथ उगने के लिए इस विश्व के क्षितिज पर उदित हुआ था। अपने परम महान ग्रंथ में उसने अपने मित्रों में से दृढ़ एवं अडिग लोगों का आह्वान करते हुए कहा था: “जब मेरे सौन्दर्य का दिवानक्षत्र अस्त हो जाए और मेरे चंदोवे का स्वर्ग तेरी नजरों से ओझल हो जाए तो, हे दुनिया के लोगो! निराश मत होना। मेरे धर्म को आगे बढ़ाने और लोगों के बीच मेरी वाणी के महिमा-गान के लिए उठ खड़े हो।“

**6**

हे तू प्रभु-साम्राज्य के जनों! न जाने कितनी आत्माओं ने पूजा-उपासना में अपना पूरा जनम बिता दिया, जो मांसल दुनिया के प्रलोभनों से बचते रहे, जो प्रभु-साम्राज्य में प्रवेश पाने को तरसते रहे लेकिन फिर भी असफल रह गए, जबकि तुमने - बिना किसी कष्ट या आत्म-त्याग के - इस पुरस्कार को पाया है और उस साम्राज्य में प्रवेश को प्राप्त किया है।

यह ऐसी ही बात है कि जैसे मसीहा के युग में फरीसी और पावन लोगों को अंशदान से वंचित रहना पड़ा और बिना किसी शुद्ध उपासना-पद्धति का पालन किए, बिना किसी तप-त्याग के, पीटर, जॉन और एंड्रू को विजय मिल गई। अतः, ईश्वर का धन्यवाद कर कि उसने तेरे मस्तक पर अनन्त गरिमा का ताज रखा है और अपनी असीम कृपा का दान किया है।

वह समय आ चुका है जबकि इस कृपा के प्रति आभार-स्वरूप तुम्हें दिनानुदिन अपनी निष्ठा और दृढ़ता का विकास करना चाहिए और अपने प्रभु, उस परमात्मा के निकट से निकट आना चाहिए - इस तरह चुम्बकीय आकर्षण से बंधकर और ऐसी प्रदीप्ति के साथ कि उस ’प्रियतम’ की स्तुति में गाए हुए तेरे गानों की मधुरता ऊपर उच्च लोक के सहचरों तक जा पहुंचे और तुममें से प्रत्येक - ईश्वर की गुलाब-वाटिका के बुलबुलों की तरह - उस समूहों के स्वामी का महिमा-गान करने लगे और धरती पर रहने वाले सभी जनों का शिक्षक बन जाए।

**7**

हे अब्दुल बहा के आध्यात्मिक मित्रों! एक विश्वस्त संदेशवाहक का आगमन हुआ था और उसने इस चेतना के जगत में ईश्वर के प्रियजनों की ओर से एक संदेश सुनाया था। यह मंगलमय संदेशवाहक परम उत्कंठा की सुरभि लिए आया है और वह परमात्मा के प्रेम की जीवनदायिनी बयार बहा रहा है। उसके आकर्षण से हृदय आनन्द-मग्न होकर नाच उठे हैं और आत्माएँ प्रेम और भावोल्लास से भर उठी हैं। दिव्य एकता की गरिमा ने हृदयों और आत्माओं को इतनी गहनता से बेध डाला है कि अब सभी एक-दूसरे से स्वर्गिक बन्धनों में बंध चुके हैं और सब एक ही हृदय, एक ही आत्मा बन चुके हैं। अतः, अब चेतना के प्रतिबिम्ब और उस दिव्य की छाप हृदय के गहन मध्य में स्पष्ट और प्रखर रूप से प्रतिबिम्बित हो उठी है। ईश्वर से मेरी याचना है कि वह दिन-प्रतिदिन इन आध्यात्मिक बन्धनों को और अधिक मजबूत बनाएं और इस रहस्यमय एकता को और अधिक प्रखरता से चमकने दें जब तक कि अंत में सब ईश्वर की वाणी की शरणदायिनी छांह में एक संविदा की ध्वजा तले एकत्रित सैन्य-समूह न बन जाएं; ताकि वे अपने पूरे प्राण से तब तक डटे रहें जब तक कि विश्वव्यापी बंधुता, घनिष्ठ और प्रबल विशुद्ध प्रेम, आध्यात्मिक सम्बन्ध दुनिया के सभी हृदयों को मिलाकर एक न कर दे। तब कहीं जाकर, इस ताजगी और दीप्ति भरी कृपा के कारण, समस्त मानवजाति, एक ही गृहभूमि में एकत्रित होंगी। तभी इस धरती पर से संघर्ष और मतभेद के नामो-निशान दूर होंगे, तभी मानवजाति उस सर्वमहिमावान परमात्मा के प्रेम के पालनों में पलने लगेगी। विवाद सहमति में, मतभेद एकमतता में बदल जाएंगे। वैमनस्य की जड़ें समाप्त हो जाएंगी, आक्रमण का आधार नष्ट हो जाएगा। एकता की प्रखर किरणें सीमाओं के अंधकार को निगल जाएंगी और स्वर्गिक आभा मानव-हृदय को ईश्वर के प्रेम में पिरोई हुई खान के रूप में बदल देगी।

हे तू ईश्वर के प्रियजनों! यह वह घड़ी है जब तेरे लिए यह जरूरी है कि तुम सब धरती के सभी लोगों के साथ अत्यन्त दया और स्नेह के साथ मिलजुल कर रहो और उनके प्रति ईश्वर की महान करुणा के संकेत और चिह्न बनो। तुम्हें इस विश्व की आत्मा की तरह बनना चाहिए, मानव-पुत्रों के शरीर में प्राण की तरह। इस विलक्षण युग में, एक ऐसे समय में जबकि ’पुरातन सौन्दर्य’, वह ’महानतम नाम’, अनगिनत उपहार लिए, इस विश्व के क्षितिज पर जगमगाया है, तब ईश्वर की वाणी ने मानवजाति के अंतरतम सार-तत्व में ऐसी अद्भुत शक्ति का संचार कर दिया है कि ’उसने’ मनुष्य के गुणों को सभी प्रभावों से मुक्त कर दिया है, और अपनी सर्वविजयी शक्ति के माध्यम से लोगों को एकता के एक विशाल महासागर में एकत्रित करके रख दिया है।

अब ईश्वर के प्रेमियों के लिए वह समय आ गया है कि वे एकता की ध्वजाओं को ऊँचाइयों तक फहराएँ, इस संसार की सभाओं के बीच प्रेम और बंधुता के श्लोकों का गायन करें और सबके समक्ष इस बात की झलक दिखाएं कि ईश्वर की एक ही कृपा सबको व्याप्त किए हुए है। इस तरह पावनता के शामियाने इस धरती के शिखरों पर ताने जा सकेंगे और सभी लोगों को एकता की वाणी की सुरक्षा भरी छाया तले लाया जा सकेगा। इस महान कृपा का प्रस्फुटन इस विश्व में तब होगा जबकि ईश्वर के प्रेमीजन उसकी शिक्षाओं को आगे बढ़ाने और विश्वव्यापी प्रेम की मधुर, ताजगी भरी सुरभि का दूर-दूर तक प्रसार करने के लिए उठ खड़े होंगे।

प्रत्येक धर्मयुग में, प्रेम और बंधुता का आदेश दिया गया था लेकिन यह आदेश आपसी सहमति वाले समुदायों तक ही सीमित था, विरोधी शत्रु-समूहों तक नहीं। लेकिन, ईश्वर का गुणगान हो, इस विलक्षण युग में, ईश्वर के आदेश सीमित नहीं हैं, वे लोगों के किसी एक समूह तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सभी मित्रों को धरती पर निवास करने वाले सभी समुदायों के प्रति प्रेम और बंधुता, समझदारी और उदारता दर्शाने का आदेश दिया गया है। अब ईश्वर के प्रेमियों को चाहिए कि वे उसके इन निर्देशों को पूरा करने के लिए उठ खड़े हों: उन्हें मानवजाति की सन्तानों के लिए एक दयालु पिता के समान, युवाओं के लिए दयावान बंधुओं की तरह और वयोवृद्धों के प्रति आत्म-विरत सन्तान की तरह होना चाहिए। इसका यह अर्थ है कि तुम्हें सभी मानवों के प्रति, यहाँ तक कि अपने शत्रुओं के प्रति भी, प्रेम और मृदुलता दर्शानी चाहिए, और विशुद्ध मित्रता, खुशी और स्नेहिल दयालुता की भावना के साथ उन सबका स्वागत करना चाहिए। जब तुम्हें दूसरे के हाथों यातना और निर्दयता भोगनी पड़े तो भी उस पर विश्वास रख जब तुम्हारे साथ विद्वेष की भावना से पेश आए तो भी मैत्रीपूर्ण हृदय से प्रत्युत्तर दे। तुम पर जो तीर और भाले बरसाए जाएँ तो दर्पण की तरह प्रखर अपनी छाती खोल दे और अभिशापों, उपहासों एवं आहत करने वाले शब्दों के बदले में असीम प्रेम दर्शा। इस तरह सभी लोग महानतम नाम की शक्ति के साक्षी बन सकेंगे और प्रत्येक राष्ट्र ’पुरातन सौन्दर्य’ की सामर्थ्‍य को स्वीकार कर सकेगा और यह देख सकेगा कि उसने किस तरह मतभेदों की दीवारों को ढहा दिया है और कितनी सुनिश्चितता के साथ उसने धरती के सभी लोगों को एकता का मार्गदर्शन दिया है, कैसे उसने मनुष्य जगत को प्रकाशित करके रख दिया है और धूल की इस दुनिया को प्रकाश की लहरें बिखेरने वाला बना दिया है।

ये मनुष्य रूपी जीव बच्चों की तरह हैं, वे अधीर और बेपरवाह हैं। इन बच्चों का पालन असीम स्नेहमयी देखभाल के साथ किया जाना चाहिए और उन्हें दयालुता के आलिंगन में कोमलता से पोषित किया जाना चाहिए; ताकि वे इस अंधकारमय जगत में अपनी किरणें बिखरने वाले प्रदीप बन सकें और स्पष्ट रूप से यह जान सकें कि गरिमा के उस प्रखर मुकुट - महानतम नाम, उस पुरातन सौन्दर्य - ने अपने प्रियजनों के भ्रवों पर क्या अंकित किया है, उन्होंने उन लोगों के हृदयों में किन कृपाओं का संचार किया है जो उन्हें प्रिय हैं, मानवजाति के अंतस्तल में उन्होंने कैसा प्रेम उड़ेला है, और समस्त लोगों के बीच उन्होंने मित्रता के कैसे खजानों को प्रकट किया है।

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! अपने विश्वस्त सेवकों की सहायता कर कि उनके हृदय स्नेह और कोमलता से भर सकें। उन्हें धरती के समस्त राष्ट्रों के बीच उच्च लोक के सहचरों से आने वाले मार्गदर्शन के प्रकाश का प्रसार करने में सहायता दे। तू, वस्तुतः, उदार है, सुभद्र है, कोमल है, और है परम कृपालु।

**8**

हे अब्दुल बहा के परमप्रिय और हे उस ’कृपालु’ की सेविकाओ! यह अत्यंत प्रभात का समय है और आभा-स्वर्ग की ताजगी भरी हवाएं समस्त सृजित वस्तुओं पर प्रवाहित हो रही हैं, लेकिन उससे केवल शुद्ध हृदय वाले लोग ही स्पंदित हो सकेंगे, और केवल शुद्ध मनोभाव वाले व्यक्तियों को ही उसकी सुरभि का भान हो सकेगा। केवल समझ वाले नेत्र ही सूर्य की किरणों को देख पाते हैं; केवल सुनने वाले कान ही उच्च लोक के सहचरों के गान सुन सकते हैं। हालाँकि अपार बासन्ती बरखा, स्वर्ग के अनुदान, की फुहारें सब पर पड़ती हैं लेकिन अच्छी मिट्टी ही फलित होती है, खारी मिट्टी नहीं जिस पर कृपालुता का कोई भी परिणाम दृष्टिगोचर न हो सके।

आज आभा-साम्राज्य के कोमल और पवित्र सांसें हर भू-भाग से होकर प्रवाहित हो रही हैं लेकिन केवल पवित्र हृदय के लोग ही उसके निकट आ पाते और उसका लाभ ग्रहण कर पाते हैं। इस प्रवंचित व्यक्ति की यही आशा है कि उस ’स्वयंजीवी’ की कृपा से और ईश्वर के शब्द की प्रकट शक्ति के माध्यम से असावधान लोगों के मनो-मस्तिष्क स्पष्टता को प्राप्त करें, कि वे चेतना की निगूढ़ गुलाब-क्यारी से प्रवाहित होने वाली इन मधुर सुरभियों को जान सकें।

हे ईश्वर के सखाओं! सच्चे मित्र कुशल चिकित्सक की तरह होते हैं और ईश्वर की शिक्षाएं आरोग्यकारी मलहम जैसी हैं, मानव के अंतःकरण के लिए रामबाण की तरह। वे विचारों को स्पष्टता प्रदान करती हैं ताकि लोग उनका उच्छवास ग्रहण कर सकें। वे सोए हुओं को जगाती हैं। वे असावधानों को जागरूक बनाती हैं, बहिष्कृतों को अंशदान देती हैं और निराश लोगों को आशा।

यदि आज के इस युग में कोई व्यक्ति ईश्वर के उपदेशों और परामर्शों के अनुसार कार्य करेगा तो वह मानव मात्र के लिए दिव्य चिकित्सक की तरह होगा और इस्राफिल[[16]](#footnote-16) के तुरुप की तरह, वह इस नाशवान जगत के मृतप्राय लोगों का जीवन की ओर आह्वान करेगा; क्योंकि आभा लोक की सम्पुष्टियाँ सदा अबाधित हैं और ऐसे पुण्यवान व्यक्ति के साथ मित्रता के लिए उच्च लोक के सहचरों की अचूक सहायता सदा तत्पर रहती है। इस तरह एक खिन्न मच्छर भी पूर्ण शक्तिमान गरुड़ बन जाता है और एक दुर्बल गौरैया प्राचीन गरिमा की ऊंचाइयों में विचरण करने वाला राजसी बाज बन जाता है।

अतः अपनी तुच्छ क्षमता का विचार न कर, यह न पूछ कि तू इस कार्य के योग्य है या नहीं: अपनी आशाएँ बहाउल्लाह की सहायता और उनकी स्नेहपूर्ण दया, उनकी कृपाओं और उनके अनुदानों पर केन्द्रित कर - मेरी आत्मा उनके सखाओं पर न्योछावर हो जाए! त्याग के मैदान में उच्च प्रयासों के अश्व पर आरूढ़ हो और इस विस्तृत कर्मक्षेत्र से दिव्य कृपा का उपहार ले जा।

हे कृपालु प्रभु की सेविकाओं! इस संसार की न जाने कितनी रानियाँ इस धूल के तकिए पर सिर टिकाए इस दुनिया से विलीन हो गईं। न उनका कोई सुफल शेष रहा, न कोई अता-पता, न कोई निशान, न उनका नाम ही बचा रहा। उनके लिए और कोई कृपाएँ शेष नहीं, उनके लिए और कोई जीवन नहीं। लेकिन ईश्वर की दहलीज पर सेवा देने वाली सेविकाओं के साथ ऐसी बात नहीं। प्राचीन गरिमा के आकाश में वे दीप्तिमान तारों की तरह जगमगाई हैं, जिनकी आभाओं ने समयातीत लोकों में अपनी चमक बिखेरी है। आभा के स्वर्ग में उन्होंने अपनी इष्टतम आशाओं को फलीभूत पाया है, उस प्रभु की दिव्य सभा में उन्होंने पुनर्मिलन का मधु चखा है। ऐसी ही आत्माओं ने इस धरती पर अपने अस्तित्व का लाभ उठाया है: उन्होंने ही जीवन का फल ग्रहण किया है। और जो बाकी लोग हैं “निश्चित रूप से उनके जीवन में एक ऐसा समय आया जब वे उल्लेख न किए जाने योग्य बनकर रह गए।“

हे इस प्रवंचित व्यक्ति के प्रेमियों! तू अपने नेत्रों को पवित्र कर ले ताकि तू किसी भी व्यक्ति को स्वयं से भिन्न न समझ सके। तू किसी को भी अजनबी के रूप में न देख, बल्कि सभी मनुष्यों को मित्रवत दृष्टि से देख, क्योंकि जब तू ’अन्य’ वाली दृष्टि से देखेगा तो प्रेम और एकता का भाव आना कठिन होगा। और इस नए, विलक्षण युग में, पवित्र लेखों में कहा गया है कि हमें सभी लोगों के साथ एकता की भावना के साथ रहना चाहिए, कि हमें न तो रूखापन देखना चाहिए न अन्याय, न द्वेष, न दुश्मनी, न घृणा, बल्कि हमें पुरातन गरिमा के स्वर्ग की ओर अपनी दृष्टि डालनी चाहिए। ऐसा इसलिए क्योंकि प्रत्येक जीव ईश्वर का संकेतक है, और ईश्वर की कृपा और शक्ति से ही यह सम्भव हुआ है कि वह इस अस्तित्व के संसार में आ सका। इसलिए वे अजनबी नहीं हैं बल्कि एक परिवार के अंग हैं; वे किसी अन्य लोक के नहीं बल्कि हमारे बंधु हैं और उनके साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए।

अतः, ईश्वर के प्रेमियों को चाहिए कि वे अजनबी और मित्र दोनों ही के साथ स्नेहमयी बंधुता के साथ रहें, हर किसी के प्रति अत्यंत स्निग्ध करुणा दर्शाएं, चाहे उनकी जो भी क्षमता हो, वे कभी यह सवाल न करें कि वे प्रेम के पात्र हैं भी या नहीं। हर स्थिति में, मित्रों को चाहिए कि वे विचारवान और असीमित रूप से दयावान बनें। लोगों के विद्वेष, उनकी आक्रामकता और घृणा चाहे कितनी भी प्रबल क्यों न हो, वे उन्हें कभी पराभूत न करें। यदि अन्य लोग तुम्हारी ओर बरछियां फेंकें तो बदले में उन्हें दूध और शहद प्रदान करें; यदि वे तुम्हारे जीवन को विषाक्त बनाएं तो तू उनकी आत्माओं में मिठास घोल; यदि वे तुम्हें आहत करें तो उन्हें आराम पाने की राह दिखा; यदि वे तुम्हें घाव दें तो तू उनके कष्टों के लिए मलहम बन जा; यदि वे तुम्हें दंशित करें तो तू उनके ओठों को ताजगी से भर देने वाला प्याला प्रदान कर।

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! ये तुम्हारे निर्बल सेवक हैं; वे तुम्हारे वफादार दास और दासियाँ हैं जो तुम्हारी महान वाणी के समक्ष नतमस्तक हैं और जो तुम्हारे प्रकाश की दहलीज के आगे झुके हुए हैं, और जो तेरी उस एकमेवता के साक्षी रहे हैं जिससे ’सूर्य’ को मध्याह्न की प्रभा के बीच जगमगा दिया गया है। उन्होंने वह आह्वान सुना है जो तूने अपने निगूढ़ साम्राज्य से गुंजारित किया है और प्रेम एवं अतिशय आनन्द से प्रकम्पित हृदय से उन्होंने तेरे आह्वान का उत्तर दिया है।

हे प्रभो, उनपर अपनी समस्त करुणा उड़ेल, उनपर अपनी कृपा का समस्त जल अभिसिंचित कर। उन्हें स्वर्ग की वाटिका में सुन्दर पौधों की तरह विकसित होने दे और अपने अनुदानों के लबालब भरे बादलों से और अपनी असीम कृपा के गहन जलाशयों से तू इस वाटिका को पुष्पित होने दे और उसे सदा हराबहार, चमक-दमक से परिपूर्ण, ताजगी भरा, ज्योतिर्मय और निर्मल बनाए रख।

तू सत्य ही शक्तिशाली है, उदात्त और सामर्थ्‍यवान है, वह है जो अकेला ही स्वर्गों में और इस धरती पर अपरिवर्तनीय बना रहता है। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, तू ही है स्पष्ट संकेतों और चिह्नों से सम्पन्न ईश्वर।

**9**

हे तू जिसका हृदय ईश्वर के प्रेम से छलक रहा है! मैं इस पवित्र स्थल से तुझे सम्बोधित कर रहा हूँ, तेरे प्रति अपने पत्र से तुझे आह्लादित करने के लिए, क्योंकि यह ऐसा पत्र है जो ईश्वर की एकता में विश्वास करने वालों के दिलों को आनन्द के शिखरों तक उड़ान भरने को प्रेरित करता है।

तू ईश्वर का धन्यवाद कर कि उसने तुझे अपनी शक्ति के साम्राज्य में प्रवेश कर सकने योग्य बनाया है। बहुत ही शीघ्र एक के बाद तुझ पर तुम्हारे प्रभु की कृपाएँ अवतरित होंगी और वह तुम्हें सत्य के प्रत्येक साधक के लिए एक संकेत बनाएगा।

तू दृढ़तापूर्वक अपने प्रभु की संविदा का पालन कर और दिनानुदिन तू उसके प्रियजनों के लिए अपने प्रेम के भंडार में वृद्धि कर। उस सर्वकृपालु के सेवकों के समक्ष तू विनम्रता से झुक, ताकि तू जीवन रूपी समुद्र पर तैरती हुई शांति की नौका के ऊपर प्रेम का पाल फहरा सके। तू किसी भी बात का दुख न कर और किसी पर क्रुद्ध न हो। तेरे योग्य यही है कि तू ईश्वर की इच्छा से संतुष्ट रह, और धरती के सभी लोगों के लिए निरपवाद रूप से एक सच्चा, स्नेही और विश्वस्त मित्र बन। यह निष्ठावान लोगों का गुण है, संतों का मार्ग है, उनका चिह्न है जो ईश्वर की एकता में विश्वास करते हैं, और यही बहा के लोगों का परिधान है।

तू प्रभु को धन्यवाद दे और आभार प्रकट कर कि उसने तुझे ईश्वर का अधिकार[[17]](#footnote-17) चुकाने की अनुमति दी है। यह सत्य ही तेरे लिए उसकी ओर से एक विशेष कृपा है, अतः अपने प्रभु के ग्रंथ में अंकित इस आदेश के लिए उसका गुणगान कर - वह प्रभु जो दिवसाधिक प्राचीन है। वह वस्तुतः स्नेही है, कोमल है, सदैव दाता है।

**10**

हे तू ईश्वर की प्रिय सेविका! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है और उसकी विषय-वस्तुओं पर ध्यान दिया गया है। तूने अपने जीवन के मार्गदर्शन के लिए नियम के बारे में पूछा है।

तू ईश्वर में आस्था रख और अपनी दृष्टि उसके उदात्त साम्राज्य पर केन्द्रित रख; तू आभा-सौन्दर्य के प्रेम में पग, संविदा में दृढ़ रह; सर्वव्यापी प्रकाश के स्वर्ग की ओर उठने की लालसा रख। तू इस संसार से अनासक्त हो और उस ’सर्वोच्च’ के लोक से प्रवाहित होने वाली पावनता की मधुर सुरभियों में पुनर्जीवन प्राप्त कर। तू सबको प्रेम की ओर आह्वान करने वाला बन और समस्त मानवजाति के प्रति दयालु बन। तू मानव-पुत्रों से स्नेह कर और उनके दुःख बांट। तू शांति को बढ़ाने वाला बन। सबको अपनी बंधुता प्रदान कर, सबका विश्वासपात्र बन। तू हर किसी के प्रदाह को शांत करने वाली मलहम बन, प्रत्येक व्याधि की दवा बन। तू आत्माओं को एक करने वाला बन। तू मार्गदर्शन के श्लोकों का पाठ कर। अपने ईश्वर की उपासना में लीन रह और लोगों को सन्मार्ग दिखाने के लिए उठ खड़ी हो। अपनी वाणी को मुक्त कर और प्रभु-संदेश दे

**11**

अपने बंधुओं की सेवा प्रभु-साम्राज्य की सेवा के समान है, और गरीबों के ऊपर ध्यान रखना ईश्वर की महानतम शिक्षाओं में से एक है।

**12**

तू यह सुनिश्चित जान कि ’प्रेम’ ईश्वर के पावन धर्मयुग का एक रहस्य है, उस सर्वकृपालु द्वारा प्रकटित वस्तु है, आध्यात्मिक कृपाओं का स्रोत है। प्रेम स्वर्ग का कृपामय प्रकाश है, पवित्र चेतना का वह अनन्त उच्छवास है जो मानव आत्मा को जीवन प्रदान करता है। प्रेम मनुष्य के प्रति ईश्वर के प्रकटीकरण का कारण है, दिव्य सृष्टि के अनुसार वह वस्तुओं के यथार्थ में निहित एक महत्वपूर्ण बन्धन है। प्रेम वह माध्यम है जो इस लोक और परलोक में सच्चा आनन्द सुनिश्चित करता है। प्रेम अंधेरे में मार्ग दिखाने वाला प्रकाश है, वह जीवन्त सूत्र है जो ईश्वर और मनुष्य को जोड़ता है, जो हर प्रकाशित आत्मा की उन्नति का आश्वासन देता है। प्रेम वह महानतम विधान है जो इस शक्तिमान और स्वर्गिक चक्र का नियामक है, वह अनोखी शक्ति है जो इस भौतिक विश्व के विविध तत्वों को परस्पर जोड़ता है, वह परम चुम्बकीय शक्ति है जो स्वर्गिक परिधियों में वृत्तों की गति को निर्देशित करती है। अपनी अचूक और असीमित शक्ति से प्रेम इस विश्व में निहित रहस्यों को उद्घाटित करता है। मानवजाति की सुसज्जित काया के लिए प्रेम जीवन की चेतना है, इस नाशवान संसार में सच्ची सभ्यता का संस्थापक है और उच्च लक्ष्य से सम्पन्न प्रत्येक राष्ट्र और प्रजाति के लिए अविनाशी गरिमा प्रदान करने वाला है।

जिन किन्हीं भी लोगों को ईश्वर द्वारा यह कृपा प्राप्त हुई है उनका नाम अवश्य ही उच्च लोक के सहचरों, देवदूतों के समूह और आभा-साम्राज्य के निवासियों के द्वारा महिमा-मंडित किया जाएगा। और जो कोई भी लोग इस दिव्य प्रेम - उस सर्वकृपालु द्वारा प्रकटित इस वस्तु - से विमुख होंगे वे गम्भीर त्रुटि करने वालों में से होंगे, वे खिन्नता को प्राप्त होंगे और पूरी तरह नष्ट हो जाएंगे। ऐसे लोगों को कोई भी शरण देने से इन्कार कर देगा, वे धरती के सबसे अधम प्राणियों में से होंगे, वे अनादर और शर्म के पात्र होंगे।

हे ईश्वर के प्रियजन! ईश्वर के प्रेम का प्रकट रूप और प्रेम एवं सहमति के प्रकाश से सुसज्जित होकर धरती के स्वजनों के बीच दिव्य मार्गदर्शन के प्रदीप बनने का प्रयास कर।

इस भव्य प्रकाश को प्रकट करने वालों का आह्वान सब करते हैं।

**13**

हे प्रभु-साम्राज्य की पुत्री! तुम्हारा 5 दिसम्बर 1918 का पत्र प्राप्त हुआ। उसमें यह शुभ समाचार दिया गया था कि ईश्वर के सखा और उस कृपालु की सेविकाएँ इन गर्मियों में ग्रीन एकड़ में एकत्रित हुए हैं, वे दिन-रात प्रभु-स्मरण में निमग्न हैं, उन्होंने मानवजाति के संसार की एकता के मार्ग में अपनी सेवाएं अर्पित की हैं, सभी धर्मों के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया है, हर तरह के धार्मिक पूर्वाग्रह से दूर रहे हैं और सभी लोगों के प्रति दया दर्शाई है। दिव्य धर्मों के लिए आवश्यक है कि वे लोगों के बीच एकता और प्रेम के माध्यम बनें, विश्वव्यापी शांति की घोषणा करें, लोगों को हर तरह के पूर्वाग्रह से मुक्त करें, आनन्द का संचार करें, सभी लोगों के प्रति दयालुता दर्शाएं और हर तरह के भेदभाव को समाप्त कर दें। जैसाकि बहाउल्लाह ने मानव-जगत को सम्बोधित करते हुए कहा हैं “हे लोगों! तुम सब एक ही पेड़ के फल और एक ही शाख की पत्तियां हो”। ज्यादा से ज्यादा इतनी ही बात है कि कुछ लोग अज्ञानी हैं, उन्हें शिक्षित किए जाने की जरूरत है, कुछ लोग व्याधिग्रस्त हैं, उन्हें रोगमुक्त किया जाना चाहिए, कुछ लोग अभी भी अवयस्क हैं, उन्हें परिपक्व बनाए जाने की जरूरत है और उनके प्रति अत्यंत दया दर्शाई जानी चाहिए। बहा के लोगों का ऐसा ही आचरण होता है।

मुझे आशा है कि सभी भाई-बहन मानव-संसार के शुभचिन्तक बनेंगे।

**14**

हे तुम दोनों आशीर्वादित आत्माओं! तुम्हारे पत्र प्राप्त हुए। उनसे यह पता चला कि तुमने सत्य की खोज की है और नकल एवं अंधविश्वास से स्वयं को मुक्त किया है, यह कि तुम स्वयं अपनी आँखों से देखती हो न कि दूसरों की आँखों से, स्वयं अपने कानों से सुनती हो न कि दूसरों के कानों से और रहस्य की खोज स्वयं अपने अंतःकरण की मदद से करती हो न कि दूसरों के। नकल करने वाला व्यक्ति यह कहता है कि अमुक आदमी ने ऐसा देखा है, अमुक आदमी ने ऐसा सुना है और अमुक अंतरात्मा ने ऐसा पाया है। यानी वह दूसरों की आँख, दूसरों के कान, दूसरों की अंतरात्मा पर आश्रित होता है, न कि स्वयं के।

ईश्वर का गुणगान हो! तुमने अपनी इच्छाशक्ति दर्शाई है और तुम ’सत्य के सूर्य’ की ओर उन्मुख हुई हो। तुम्हारे हृदय का क्षेत्र ’साम्राज्य के स्वामी’ के प्रकाश से प्रकाशित हुआ है और तुम्हें सीधे मार्ग की ओर ले जाया गया है, तुम उस पथ पर अग्रसर हुई हो जो प्रभु-साम्राज्य की ओर जाता है, तुमने आभा-स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त किया है और तुमने स्वयं के लिए ’जीवन के वृक्ष’ के फल का अपना हिस्सा सुनिश्चित कर लिया है।

धन्य हो तुम! एक सुन्दर घर तुम्हारी प्रतीक्षा में है। तुम्हें शुभकामनाएं, तुम्हारी अपार प्रशंसा हो।

**15**

हे ईश्वर के प्रेम की कैद में रहने वाले! अपने प्रस्थान के समय तुमने जो पत्र लिखा था वह प्राप्त हुआ है। उससे मुझे आनन्द प्राप्त हुआ और मेरी आशा है कि तुम्हारे भीतरी नेत्र अब पूरी तरह खुल जाएंगे ताकि दिव्य रहस्यों का सार-तत्व तुम्हारे समक्ष प्रकट हो सके।

तुमने अपना पत्र एक बहुत ही आशीर्वादित वाक्य से आरम्भ किया है, यह कहते हुए कि “मैं एक ईसाई (क्रिश्चन) हूँ”। काश, सभी लोग सचमुच ईसाई होते! जुबान से ईसाई होना आसान है लेकिन सच्चा ईसाई बनना बहुत ही कठिन। ऐसा व्यक्ति वह होता है जिसके सौम्य चेहरे से ईसा मसीह (क्राइस्ट) की आभा झलकती है, और जो प्रभु-साम्राज्य की पूर्णता दर्शाता है। यह एक महान क्षण का विषय है, क्योंकि ईसाई होने का अर्थ है उसके भीतर की हर उत्कृष्टता को अंगीभूत करना। मेरी आशा है कि तुम भी एक सच्चे ईसाई बनोगे। ईश्वर का गुणगान करो कि अंततः तुमने उच्च कोटि की दृष्टि और अंतर्दृष्टि प्राप्त की है, और निष्ठा एवं दृढ़ता की भूमि में तुम्हारे पाँव पुख्ता से जमे हैं। मेरी आशा है कि अन्य लोगों को भी प्रकाशित नेत्र और सुनने योग्य कान प्राप्त होंगे और वे अनन्त जीवन को प्राप्त करेंगेः कि विविध और अलग-अलग धारा-क्षेत्रों से होकर बहने वाली ये अनेक नदियां चतुर्दिक व्याप्त महासागर की ओर अपनी राह पा लेंगी और सब एकता के उत्ताल तरंग के रूप में उमड़ती हुई आपस में मिल जाएंगी, यह कि ईश्वर की शक्ति के माध्यम से सत्य की एकता इन दिखाई पड़ने वाले अन्तरों को मिटा देगी। यही एकमात्र आवश्यकता हैः क्योंकि एकता प्राप्त कर ली जाए तो अन्य सभी समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जाएंगी।

हे प्रतिष्ठित नारी! इस गरिमामय धर्मयुग में दिव्य शिक्षाओं के अनुसार, हमें किसी को भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए और उसे नादान नहीं कहना चाहिए, यह कहते हुए कि “तुम्हें कुछ पता नहीं लेकिन मुझे मालूम है।“ बल्कि हमें दूसरों को सम्मान की दृष्टि से देखना चाहिए और कुछ भी समझाते या दर्शाते समय हमें इस तरह बोलना चाहिए कि मानों हम सत्य की खोज कर रहे हैं, यह कहते हुए कि “देखो, ये चीजें हमारे सामने हैं। आओ, हम खोजें और तय करें कि सत्य को किस रूप में पाया जा सकता है।“ शिक्षक को स्वयं को ज्ञानी और अन्य लोगों को अज्ञानी मानकर नहीं चलना चाहिए। इस तरह के विचार से अहंकार उत्पन्न होता है और अहंकार से दूसरों को प्रभावित नहीं किया जा सकता। शिक्षक को स्वयं को श्रेष्ठ नहीं समझना चाहिए, उसे अत्यंत मृदुलता, नम्रता और दयालुता से अपनी बात कहनी चाहिए क्योंकि ऐसी ही वाणी प्रभाव डालती है और आत्माओं को शिक्षित बना पाती है।

हे माननीया महिला! प्रत्येक एवं सभी अवतारों को एक ही उद्देश्य के लिए इस धरती पर भेजा गया, इसी उद्देश्य के लिए ईसा मसीह को प्रकट किया गया, इसी के लिए बहाउल्लाह ने प्रभु का आह्वान गुंजाराः वह यह कि मनुष्य का यह संसार ईश्वर का लोक बन सके, यह अधम विश्व प्रभु का साम्राज्य बन जाए, यह अंधकार प्रकाश में बदल जाए, यह शैतानी दुष्टता स्वर्ग की अच्छाइयों में बदल जाए और समस्त मानवजाति एकता, बंधुता और प्रेम से आच्छादित हो जाए, ताकि क्रमिक रूप से एकता प्रकट हो और असहमति के आधार नष्ट हो जाएँ और अनन्त जीवन, अनन्त कृपा मानव के सुफल के रूप में सामने आए।

हे प्रतिष्ठित महिला! तुम इस विश्व की ओर देखोः यहाँ एकता, आपसी आकर्षण, एकजुटता से जीवन प्राप्त होता है जबकि फूट और विसंगति मृत्यु के वाहक हैं। जब तुम सभी परिदृश्यों पर विचार करोगी तो तुम यह देखोगी कि हर रचित वस्तु का अस्तित्व अनेक तत्वों के सम्मिश्रण के कारण सम्भव हुआ है और जब तत्वों की यह एकजुटता विलीन हो जाती है और घटकों का तालमेल छिन्न-भिन्न हो जाता है तो जीवन का स्वरूप ही मिट जाता है।

हे माननीया नारी! पिछले धर्मचक्रों में, हालाँकि तालमेल स्थापित किया गया था लेकिन साधनों के अभाव के कारण मानवजाति की एकता प्राप्त नहीं की जा सकी थी। महाद्वीप एक-दूसरे से अलग-थलग पड़े थे, बल्कि एक ही महाद्वीप के राष्ट्रों के बीच सहयोग और विचारों का आदान-प्रदान लगभग असंभव था। अतः, धरती के सभी राष्ट्रों और बंधुओं के बीच अभिक्रिया, समझदारी और एकता प्राप्त नहीं की जा सकती थी। लेकिन इस वर्तमान युग में संचार के अनेक साधन उपलब्ध हैं, और धरती के पांचों महाद्वीप सही मायने में एक हो गए हैं। अब किसी के लिए भी किसी भी भूभाग की यात्रा करना, लोगों के साथ मिलना और विचारों का आदान-प्रदान करना और विभिन्न प्रकाशनों के माध्यम से अन्य लोगों की दशाओं, उनके धार्मिक मतों और विचारों से परिचित होना सरल हो गया है। इसी तरह, मानव परिवार के सभी सदस्य - चाहे लोग हों या सरकारें, गांव या शहर - अब एक-दूसरे पर पहले से अधिक निर्भर हो गए हैं। अब किसी के लिए भी आत्म-पर्याप्त होना सम्भव नहीं रह गया है क्योंकि सभी लोग और राष्ट्र एक राजनीतिक बंधन से बंध गए हैं और उद्योग-व्यापार, कृषि और शिक्षा के क्षेत्र में उनके गठबंधन दिनो-दिन और सुदृढ़ होते जा रहे हैं। अतः, आज के युग में समस्त मानवजाति की एकता प्राप्त की जा सकती है। यह वास्तव में इस विलक्षण युग के आश्चर्यों में से एक नहीं तो और क्या है। अतीत के युग इससे वंचित रहे हैं, क्योंकि यह शताब्दी - यह प्रकाशमय शताब्दी - विलक्षण एवं अभूतपूर्व गरिमा, शक्ति और आलोक से सम्पन्न है। अतः हर रोज कोई न कोई नया चमत्कार प्रकट होता है। अंत में लोग देखेंगे कि इसके प्रदीप लोगों के मध्य कितनी प्रखरता से जगमगाते हैं।

यह देखो कि इसका प्रकाश इस विश्व के अंधकारमय क्षितिज पर अब कैसे उदित होने लगा है। पहला प्रदीप है राजनीतिक परिधि में एकता जिसकी आरम्भिक रोशनी अब देखी जा सकती है। दूसरा प्रदीप है दुनिया के कारोबार में विचारों की एकता जिसकी पूर्णाहुति शीघ्र ही देखी जा सकेगी। तीसरा प्रदीप है स्वतंत्रता में एकता जो अवश्य ही घटित होगी। चौथा प्रदीप है धर्म की एकता जो कि स्वयं इस आधार की बुनियाद है और ईश्वर की शक्ति से जिसकी कांति सम्पूर्णता के साथ अपनी झलक दिखाएगी। पाँचवां प्रदीप है राष्ट्रों की एकता - वह एकता जो इस शताब्दी में दृढ़तापूर्वक स्थापित हो जाएगी और जो दुनिया के सभी देशों के लोगों को स्वयं को एक ही समान मातृभूमि के नागरिक समझने की प्रेरणा से भर देगी। छठा प्रदीप है प्रजातियों की एकता यानी धरती के सभी निवासियों को एक ही प्रजाति के बंधु-बांधवों के रूप में स्थापित करना। सातवां प्रदीप है भाषा की एकता अर्थात एक विश्वभाषा का चयन जिसमें जिसकी शिक्षा हर किसी को दी जाएगी और जिसमें हर कोई बातचीत करेगा। इनमें से प्रत्येक अवश्य ही घटित होगा क्योंकि ईश्वर के साम्राज्य की शक्ति उन्हें साकार करने में मदद देगी।

**16**

हे तुम प्रकाशित प्रियजनों और हे कृपालु परमेश्वर की सेविकाओं! एक ऐसे समय जबकि अज्ञान, स्वर्गिक विश्व की उपेक्षा, ईश्वर से एक आवरण द्वारा ढंके होने की घोर रात्रि इस पूरी धरती को आच्छादित कर चुकी है, एक प्रखर प्रभात का उदय हुआ है और पूरब के आकाश में एक उदीयमान प्रकाश प्रभासित हुआ है। उसके बाद ’सत्य के सूर्य’ का उदय हुआ और प्रभु-साम्राज्य की आभा पूर्व और पश्चिम तक बिखर उठी। जिनके पास देखने योग्य नेत्र थे वे इस शुभ समाचार से आह्लादित हो उठे और पुकार उठेः “अहा, धन्य हैं, धन्य हैं हम!” और उन्हें सभी वस्तुओं का आंतरिक यथार्थ ज्ञात हुआ, और उनके समक्ष प्रभु-साम्राज्य के रहस्य उद्घाटित हुए। फिर अपने संदेहों और कल्पनाओं से मुक्त होकर उन्होंने सत्य का प्रकाश देखा और ईश्वर के प्रेम की मदिरा का पात्र छककर वे इतने मतवाले हो गए कि वे स्वयं को और इस संसार को बिल्कुल भूल गए। आनन्द से नृत्य करते हुए वे अपने शहादत-स्थल तक तेजी से बढ़ चले और वहाँ, जहाँ लोग प्रेम पर अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं, वे अपने हृदय और मानस बलिदान कर चले।

परन्तु वे जिनके पास देखने योग्य नेत्र नहीं थे वे इस उथल-पुथल को देख आश्चर्यचकित होकर पुकार उठेः “कहाँ है प्रकाश?” और फिर यह कि “हमें कोई रोशनी नहीं दिखती! हमें कोई सूरज उगता हुआ नहीं दिखता। यहाँ कोई सत्य नहीं है। यह कपोल-कल्पना के सिवा और कुछ भी नहीं।“ वे चमगादड़ की तरह पाताल के अंधकार की ओर पलायन कर गए और वहाँ, जैसाकि उनकी समझ थी, उन्हें शांति और सुरक्षा महसूस हुई।

किन्तु यह तो अभी केवल पौ फटने का दृश्य है, और सत्य के उगते हुए वृत्त (सूर्य) की उष्मा अभी अपने चरम पर नहीं आई है। जैसे ही सूर्य मध्याह्न के आकाश में पहुंच जाएगा, उसकी अग्नि ऐसी दाहकता के साथ जल उठेगी कि धरती के नीचे रेंगने वाले जीव-जन्तु भी उद्वेलित हो उठेंगे और हालाँकि वे उस प्रकाश को देखने योग्य नहीं होंगे फिर भी उस ताप के प्रभाव से उनमें उथल-पुथल मच जाएगी।

अतः, हे ईश्वर के प्रियतम! धन्यवाद दे कि इस अरुणोदय के दिवस में तुमने ’विश्व के आलोक’ की ओर अपने मुखड़े को उन्मुख किया है और उसकी आभाओं को निहारा है। तुमने सत्य के प्रकाश का अपना अंश प्राप्त किया है, तुमने उन कृपाओं का अंशदान पाया है जो सदा अक्षुण्ण रहने वाले हैं और इसलिए इस कृपा के प्रति अपने आभारस्वरूप तू एक क्षण के लिए भी विराम न कर, तू चुपचाप बैठ मत, तू लोगों के कानों को प्रभु-साम्राज्य का सुसमाचार सुना, दूर-दिगन्त तक ईश्वर की वाणी का प्रसार कर।

अपने प्रभु के परामर्श के अनुसार आचरण करः अर्थात तू इस तरह से और ऐसे गुणों से युक्त होकर उठ खड़े हो कि तू इस संसार रूपी काया को एक जीवन्त आत्मा से सम्पन्न कर सके, और मानवजाति नामक इस किशोर बालक को प्रौढ़ बना सके। तुझसे जहाँ तक सम्भव हो सके, हर सभा में प्रेम की एक बाती जला और अपनी मृदुलता से प्रत्येक हृदय को आनंदित और प्रफुल्लित कर दे। अजनबी लोगों का वैसे ही ध्यान रख जैसे किसी अपने का, बाहर से आए लोगों को उसी स्निग्ध करुणा की झलक दिखा जो तू अपने निष्ठावान मित्रों को दिखाता है। यदि कोई तुझे आहत करने आए तो तू उससे मित्रता की कामना रख, यदि कोई तेरे हृदय को छलनी कर दे तो तू उसके घावों के लिए आराम देने वाला मलहम बन, यदि कोई तुझ पर व्यंग्य और फ़ब्ती कसे तो उससे प्रेमपूर्वक मिल। यदि कोई तुझ पर लांछना लगाए तो उसकी प्रशंसा कर, यदि वह तुझे मारक जहर दे तो बदले में उसे उत्तम मधु प्रदान कर और यदि वह तुझे जान से मार देने की धमकी दे तो उसे चिर आरोग्य देने वाला उपचार प्रदान कर। यदि वह साक्षात दुख-दर्द की प्रतिमूर्ति हो तो भी तू उसकी औषधि बन, यदि वह कांटा हो तो तू उसके लिए गुलाब और मधुर बूटी बन। कदाचित, तुम्हारे ऐसे शब्दों और आचरणों से यह अंधकारमय विश्व अंततः प्रकाशित हो जाए, यह धूलभरी पृथ्वी स्वर्ग जैसी बन जाए, यह शैतानी कारागार जैसी दुनिया परमात्मा का राजसी महल बन जाए - ताकि युद्ध और संघर्ष थम सकें और दुनिया के शिखरों पर प्रेम और विश्वास के वितान ताने जा सकें। ईश्वर की शिक्षाओं का यही सार-तत्व है, सारांश में यही है बहा के धर्मयुग की शिक्षा।

**17**

हे तू आभा-साम्राज्य के चुने हुए जनों! आतिथेयों के स्वामी उस प्रभु का गुणगान कर क्योंकि वह बादलों पर सवार होकर, अदृश्य लोक के स्वर्ग से निकल कर नीचे के इस संसार में अवतरित हुआ है - इस तरह कि पूर्व और पश्चिम ’सत्य के सूर्य’ की गरिमा से प्रकाशित हो गए और प्रभु-साम्राज्य का आह्वान गुंजरित हो गया, और स्वर्ग के सहचरों के स्वर-माधुर्य के साथ उच्च लोक के अग्रदूत ’अवतरण’ के शुभ समाचार का गायन गा उठे। उसके बाद अस्तित्व का सारा संसार आनन्द से प्रकम्पित हो उठा और फिर भी लोग, जैसाकि मसीहा ने कहा है, सोए रहेः क्योंकि प्रकटीकरण के दिवस में, जब आतिथेयों के प्रभु का अवतरण हुआ, तो उसने उन्हें अज्ञात निद्रा में निमग्न पाया। जैसाकि उसने “ईशवाणी” (गॉस्पेल) में कहा है, मेरा आगमन वैसे ही होता है जैसे कोई चोर घुसा हो और घर का मालिक बेखबर पड़ा हो।

उसने समस्त मानवजाति के बीच से तेरा चयन किया है और तुम्हारे नेत्रों को मार्गदर्शन के प्रकाश की ओर खोल दिया गया है और तुम्हारे कानों को उच्च लोक के संगीत सुनने को अभ्यस्त कर दिया गया है और तुझे अनन्त कृपा का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है, तुम्हारे हृदय और आत्मा को नवजीवन प्राप्त हुआ है। ईश्वर का धन्यवाद और उसका गुणगान कर कि अनन्त अनुदानों के हाथ से तुम्हारे मस्तक पर यह रत्न-जटित मुकुट रख दिया गया है - वह मुकुट जिसके जगमगाते हुए रत्न समय की समस्त सीमाओं से परे अपनी चमक बिखेरते रहेंगे।

इस हेतु उसे धन्यवाद देने के लिए, तू एक जोरदार प्रयास कर और अपने लिए एक अच्छे लक्ष्य का चुनाव कर। निष्ठा की शक्ति के माध्यम से तू ईश्वर की शिक्षाओं का पालन कर और अपने सभी कार्यों को उसी के विधान के अनुसार चलने दे। “निगूढ़ वचन” पढ़, उनमें निहित अर्थों पर विचार कर, उसी अनुसार आचरण कर। गहन ध्यान के साथ “तराजात” (आभूषण), “कलिमात” (स्वर्गिक वाणी), “तजल्लियात” (प्रखरता), “इशराकात” (आभा), और “बिशारत” (शुभ समाचार) की पातियों का अध्ययन कर और दिव्य शिक्षाओं में दिए गए निर्देशों के अनुसार उठ खड़े हो। इस तरह, तुझमें से हर कोई अपना प्रकाश बिखेरने वाला एक प्रदीप, लोगों को आकर्षित करने वाला एक केन्द्र बन सकता है और तुमसे मधुर सुरभि का संचार होगा, जैसे गुलाबों की क्यारी से।

गरजते हुए समुद्र की तरह नाद कर, समृद्ध बादल की तरह स्वर्गिक कृपा की अपार वर्षा कर। अपनी आवाज बुलन्द कर और आभा-साम्राज्य के गीत गा। युद्ध की अग्नि शांत कर दे, शांति की ध्वजा ऊँचाइयों तक फहरा, मानवजाति की एकता के लिए कार्य कर और यह ध्यान रख कि धर्म सभी लोगों के लिए प्रेम का मार्ग है। तू यह जान ले कि मनुष्य की संतान ईश्वर की भेड़ें हैं और वह परमेश्वर उनसे प्रेम करने वाला गड़ेरिया है, यह कि वह अपनी सभी भेड़ों पर स्नेहपूर्वक ध्यान रखता है और स्वयं अपनी हरी-भरी शस्यभूमि में से उन्हें अपना चारा प्रदान करता है और जीवन के स्रोत से उन्हें पीने को जल देता है। ऐसा है उस प्रभु का तरीका। ऐसे ही हैं उसके अनुदान। उसकी शिक्षाओं में से मानवजाति की एकता का उपदेश ऐसा ही है।

उसकी कृपाओं के द्वार उन्मुक्त खुले हुए हैं और उसके संकेत दूर देशों तक प्रकाशित हैं और सत्य की गरिमा अपनी प्रखरता बिखेर रही है। अपरिमित हैं उसकी कृपाएँ। तू इस समय का मोल समझ। अपने पूरे प्राण से प्रयास कर, अपनी आवाज बुलन्द कर और उच्च स्वर से बोल - जब तक कि यह अंधकारमय विश्व प्रकाश से न भर उठे और छायाओं की यह संकीर्ण दुनिया विस्तार न पा ले और क्षणभंगुरता की धूल का यह अम्बार स्वर्ग के अविनाशी उद्यानों को झलकाने वाले एक दर्पण में न बदल जाए और यह पृथ्वी स्वर्गिक कृपा का अपना अंशदान न प्राप्त कर ले।

तब कहीं जाकर आक्रमता विनष्ट हो सकेगी और फूट पैदा करने वाले कारण समाप्त हो सकेंगे और एकता की संरचना खड़ी की जा सकेगी - ताकि ’आशीर्वादित वृक्ष’ पूरब और पश्चिम के ऊपर अपनी छाँह फैला सके, और मानव की एकता का शामियाना ऊँचे शिखरों पर ताना जा सके और प्रेम एवं बन्धुता को संकेतित करने वाली ध्वजाएँ अपने ध्वज-दंडों से दुनिया भर में लहरा सकें - तब तक जब तक कि सत्य के सागर की तरंगें उछालें न भरने लगे और यह धरती असीमित रूप से कृपाओं के गुलाबों और मधुर बूटियों को न खिलाने लगे और वह एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक आभा के स्वर्ग में न बदल जाए।

ये ही हैं अब्दुल बहा के परामर्श। मेरी आशा है कि आतिथेयों के प्रभु के अनुदानों से तुम आध्यात्मिक सार-तत्व और मानवजाति की दीप्ति बन सकोगे, प्रेम के बन्धन से सभी हृदयों को जोड़ने वाले बन सकोगे, कि ईश्वर की वाणी की शक्ति से तुम इन्द्रिय-लालसाओं की कब्र में सोए हुए मृतकों को नवजीवन दे सकोगे, कि सत्य के सूर्य की किरणों से तुम उन लोगों की दृष्टि वापस ला सकोगे जिनके आंतरिक नेत्र अंधता के शिकार हैं, कि तुम आध्यात्मिक रूप से बीमार लोगों को आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्रदान कर सकोगे। प्रियतम परमेश्वर के अनुदानों और उसकी कृपाओं में से, मुझे तुमसे इन्हीं बातों की आशा है।

मैं सदा तुम्हारे बारे में बातें करता हूं और तुम्हारा स्मरण करता हूं। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूं और अश्रुपूरित नेत्रों से उससे याचना करता हूं कि वह तुझ पर इन सभी कृपाओं की वर्षा करे, तुम्हारे हृदयों को आह्लादित करे, और तुम्हारी आत्माओं को प्रफुल्लित करे और तुम्हें अत्यधिक आनन्द एवं स्वर्गिक उल्लास से भर दे......।

हे तू स्नेहमय प्रदाता! ये आत्माएँ प्रभु-साम्राज्य के आह्वान की ओर अग्रसर हुई हैं, और उन्होंने ’सत्य के सूर्य’ की गरिमा की ओर अपनी दृष्टि डाली है। वे प्रेम के तरोताजगी भर देने वाले आकाशों की ओर उठ चले हैं, वे तेरी प्रकृति के प्रेम से विमोहित हुए हैं और वे तेरी सुन्दरता की आराधना करते हैं। वे तेरी ओर उन्मुख हुए हैं, वे सब एक साथ तेरा ही उल्लेख करते हैं, उन्हें तेरे निवास की कामना है, और वे तेरे स्वर्गिक लोक के जलस्रोतों के लिए तृषित हैं।

तू दाता है, प्रदाता है, सदा स्नेहमय है।

**18**

हे तू जो कि देखने में सक्षम हृदय का स्वामी है! हालाँकि भौतिक रूप से तुम शारीरिक नेत्र से वंचित हो परन्तु, ईश्वर का गुणगान हो, कि तुम आध्यात्मिक दृष्टि से सम्पन्न हो। तुम्हारा हृदय देखता है और तुम्हारी चेतना सुनने में सक्षम है। शारीरिक दृष्टि तो हजारों ब्याधियों की शिकार हो सकती है और एकदिन वह नष्ट भी हो जाएगी। अतः उसे महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। लेकिन हृदय की दृष्टि प्रकाशित है। उसे दिव्य साम्राज्य का बोध है और वह उसे तलाशती है। वह अविनाशी और अनन्त है। अतः ईश्वर का गुणगान कर कि तुम्हारे हृदय के नेत्र प्रकाशित हैं और तेरे मानस की श्रवणेन्द्रियां सुनने में सक्षम हैं।

तुम्हारे द्वारा आयोजित प्रत्येक सभा जिनमें तुम्हें स्वर्गिक भावनाओं की अनुभूति होती है और यथार्थ एवं महत्व का बोध, एक क्षितिज की तरह है और वे आत्माएँ मार्गदर्शन के प्रकाश से चमकते हुए ज्योतिर्मय तारों की तरह हैं।

प्रसन्न है वह आत्मा जो इस प्रखर युग में स्वर्गिक शिक्षाओं के लिए उत्सुक है और धन्य है वह हृदय जो ईश्वर के प्रेम की ओर आकर्षित और उससे उत्प्रेरित है।

**19**

गुणगान हो उसका जिसकी आभाओं के माध्यम से धरती और आकाश प्रज्ज्वलित हो उठे हैं, जिसके सुरभिमय उच्छवासों से चुने हुए पात्रों के हृदयों को अलंकृत करने वाले पावनता के उद्यान आनन्द से प्रकम्पित हो रहे हैं, गुणगान हो उसका जिसने अपना प्रकाश बिखेरा है और जिसने क्षितिज के मुखड़े को प्रदीप्त किया है। वस्तुतः, परम क्षितिज पर ज्योतिर्मय, जगमगाते हुए, अपनी चमक बिखेरते हुए तारे प्रकट हुए। उन्होंने आभा-साम्राज्य की कृपाओं से अपनी भव्यता और चमक प्राप्त की और तब मार्गदर्शन के उन सितारों ने इस धरती पर अपने प्रकाश उड़ेल दिए।

गुणगान हो उसका जिसने इस नए युग, इस गरिमा के युग, की रूपरेखा तय की है - एक प्रगतिशील परिदृश्य की तरह जिसमें सभी वस्तुओं के यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है। अब उदार कृपाओं के बादलों की फुहारें इस धरती पर बरसने लगी हैं और स्नेहमय प्रभु के उपहार स्पष्ट रूप से प्रकट हो चुके हैं, क्योंकि गोचर और अगोचर दोनों ही लोक प्रकाशित किए जा चुके हैं, और प्रतिज्ञापित अवतार का धरती पर पदार्पण हुआ है और उस ’आराध्य’ का सौन्दर्य जगमगाया है।

उस ’विश्वव्यापी यथार्थ’, उस ’पूर्ण शब्द’, उस ’प्रकट ग्रंथ’, उस ’आभा’ को प्रणाम और उसका स्वागत जो उच्चतम स्वर्ग में उदित हुआ है, सभी राष्ट्रों के उस मार्गदर्शक का, विश्व के उस प्रकाश का - उस उच्छलित सागर का जिसकी अपार करुणा ने समस्त सृष्टि को इस तरह आप्लावित किया है कि उसकी तरंगों ने इस गोचर संसार के बालुका-तटों पर अपने प्रखर मोती बिछा दिए हैं। अब ’सत्य’ का प्राकट्य हुआ है और असत्य भाग खड़ा हुआ है। अब प्रभात का उदय हुआ है और उल्लास छा गया है, जिससे लोगों की आत्माएँ पावन हो गई हैं, उनकी चेतनाएँ पवित्र हुई हैं, उनके हृदय आनन्दित हुए हैं, उनके मनो-मस्तिष्क शुद्ध हुए हैं, उनके गुप्त विचार शुद्ध हो गए हैं, उनके अंतःकरण को पवित्र किया गया है, उनके अंतर्तम को पावन बनाया गया है: क्योंकि न्याय-दिवस सामने आ चुका है और तेरे प्रभु - उस क्षमाशील परमात्मा - की कृपाओं ने सभी वस्तुओं को आवृत्त कर लिया है। उन कांतिमान, ज्योतिर्मय सितारों को, आभा साम्राज्य के उन परिक्रमणशील राशियों को प्रणाम जो उच्चतम स्वर्ग से अपनी किरणें बिखेर रहे हैं। उन पर महिमा विराजे!

और अब, हे सम्मानित पुरुष जिसने ’परम घोषणा’ पर ध्यान दिया है, आभा साम्राज्य की अदम्य शक्ति के बल पर प्रभुधर्म की सेवा के लिए उठ खड़े हो और उच्च स्वर्ग के सहचरों से प्रवाहित होते उच्छवासों की सुरभि ग्रहण कर। इन फरीसियों को लेकर दुःखी न हो और न ही उनका दुःख कर जिन्होंने समाचार जगत में झूठी अफवाहें फैलाई हैं। यही बहा का कहना है। तू ईसा मसीह के दिनों को याद कर और उन यातनाओं को जो लोगों ने उन पर बरसाई थी और उन तमाम कष्टों और यंत्रणाओं का स्मरण कर जो उनके शिष्यों को दिए गए थे। चूंकि तुम आभा सौन्दर्य के प्रेमी हो अतः उनके प्रेम के कारण तुम्हें भी लोगों के आरोप झेलने होंगे और जो विपत्तियाँ अतीत के युगों में आ पड़ी थीं उनका तुम्हें भी सामना करना होगा। तब कहीं जाकर उसके प्रियपात्रों के मुखड़े ईश्वरीय साम्राज्य की आभा से प्रभासित हो सकेंगे और आने वाले युगों तक, समय के सभी चक्रों तक, उसकी कांति व्याप्त होगी जबकि नास्तिक लोग अपार क्षति के भागी होंगे। ऐसा ही कहा था ईसा मसीह ने : वे मेरे नाम पर तेरा उत्पीड़न करेंगे।

उन्हें इन शब्दों की याद दिलाओ और उनसे कहो: “वस्तुतः, मसीहा के मुखमंडल के प्रखर सौन्दर्य और उनकी सौम्यता के बावजूद, फरीसी लोग उसके खिलाफ उठ खड़े हुए थे और वे चिल्ला पड़े थे कि वह मसीह नहीं बल्कि ’मसीख’ (राक्षस) है क्योंकि उसने सर्वशक्तिमान परमेश्वर, सबका सम्प्रभु स्वामी, होने का दावा किया था और उनसे कहा था, ’मैं ईश्वर का पुत्र हूं और वस्तुतः अपने पुत्र, अपने शक्तिशाली बालक के अंतर्निहित अस्तित्व में, ’पिता’ स्पष्ट रूप से अपने सभी गुणों, अपनी सभी परिपूर्णताओं के साथ खड़ा है।’ उन्होंने कहा कि यह खुलेआम ईश्वर की निंदा है और ’ओल्ड टेस्टामेंट’ के स्पष्ट एवं अकाट्य पाठों के अनुसार परमात्मा की अवमानना करना है। इसलिए उन्होंने उसके खिलाफ फैसला सुनाया, यह निर्णय दिया कि उसकी हत्या कर दी जाए और उन्होंने उसे सलीब पर लटका दिया, जहाँ वह यह पुकार उठा: “हे मेरे प्रिय प्रभो! तुम कब तक मुझे इनके हवाले छोड़ रखोगे? मुझे अपने पास बुला लो, मुझे अपने निकट शरण में ले लो, मुझे अपनी गरिमा के सिंहासन के पास निवास करने दो, तुम सत्य ही प्रार्थनाओं का उत्तर देने वाले हो और हो सौम्य, दयालु। हे मेरे प्रभो! वस्तुतः यह विशाल विश्व भी मुझे अपने में समा नहीं सकता और तुम्हारे सौन्दर्य के प्रति प्रेम के निमित्त, तेरे उस उच्च लोक के प्रति उत्कंठा और तेरी पावनता की बयारों द्वारा मेरे हृदय में सुलगाई गई इस आग के कारण, मुझे इस सलीब से प्यार है। मुझे अपनी ऊँचाइयों तक उठने में सहायता दे, हे मेरे स्वामी! मुझे सहारा दे ताकि मैं तेरी पावन दहलीज तक पहुंच सकूँ। हे मेरे स्नेहमय प्रभो! तुम सत्य ही दयालु हो, परम कृपा के स्वामी! तुम सत्य ही उदार हो! तुम परम दयावान हो! तुम सत्य ही सर्वज्ञ हो! तुझ शक्तिशाली, सामर्थ्‍यवान के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है।“

फरीसी लोग उसकी (ईसा मसीह की) अवनिंदा करने और उस पर घोर पाप का आरोप लगाने की हिम्मत कभी नहीं करते बशर्ते कि वे गूढ़ रहस्यों से अनभिज्ञ नहीं होते और उसकी आभा और उसके प्रमाणों पर उन्होंने ध्यान दिया होता। यदि वे ऐसा करते तो वे उसके शब्दों को स्वीकार करते और उसके द्वारा प्रकटित श्लोकों के साक्षी बने होते, उसकी वाणी की सत्यता को स्वीकार करने वालों में से होते, उसकी ध्वजा की शरणदायिनी छाया तले उन्होंने आश्रय की याचना की होती, उसके चिह्नों और संकेतों को जाना होता और उसके आनन्ददायक सुसमाचारों से आह्लादित हुए होते।

तू यह जान कि ’दिव्य सारतत्व’ जिसे ’अगोचरों में भी अगोचर’ कहा गया है, जो वर्णनातीत और मनुष्य की बुद्धि से परे है, वह किसी भी उल्लेख, परिभाषा या संकेत, किसी भी प्रशंसा और स्तुति से परे, पावन है। ’वह वह है जो वह है’ - इस आशय से बुद्धि उसकी कभी थाह नहीं ले सकती और ’उस’ का ज्ञान पाने की कामना करने वाली आत्मा मरुस्थल में भटकने वाले यात्री की तरह है, अत्यंत भटका हुआ। “कोई भी दृष्टि उसे समा नहीं पाती किन्तु वह सभी दृष्टियों को समाए हुए हैः वह है सूक्ष्म, सर्व-सूचित।“[[18]](#footnote-18)

किन्तु जब तुम सभी वस्तुओं के अंतर्निहित तत्व और उन सबकी पृथक पहचान के बारे में विचार करोगे तो तुम्हें हर रचित वस्तु में उस दयालु प्रभु के संकेत दिखलाई पड़ेगें और अस्तित्व के समस्त सामाज्य से उसके गुणों और नामालंकरणों की फैलती हुई किरणों के दर्शन होंगे - ऐसे प्रमाणों के साथ कि दुष्ट और अज्ञानी लोगों के सिवा और कोई भी उनसे इन्कार नहीं कर सकता। तब तुम यह देख सकोगे कि यह ब्रह्माण्ड एक पत्र की तरह है जो उस प्रभु के उन निगूढ़ रहस्यों को प्रकट करता है जो सुसंरक्षित पाती में सहेज कर रखे गए हैं और सभी अस्तित्ववान अणुओं-परमाणुओं में से एक भी अणु-परमाणु ऐसा नहीं, सभी सृजित जीव-जंतुओं में से एक भी जीव ऐसा नहीं, जो उस प्रभु का गुणगान न करता हो, उसके गुणों और नामालंकरणों की महिमा की बखान न करता हो, उसकी सामर्थ्‍य की गरिमा का बयान न देता हो और उसकी एकता और करुणा की ओर सबका मार्गदर्शन न करता हो: और इसका खंडन ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता जिसके पास सुनने को कान, देखने को आँखें और स्वस्थ दिमाग है।

और जब कभी भी तुम इस सम्पूर्ण सृष्टि पर दृष्टिपात करोगे और उसके एक-एक अणु-परमाणु पर नजर डालोगे तो तुम्हें लगेगा कि ’सत्य के सूर्य’ का प्रकाश सभी वस्तुओं पर डाला गया है, वह सभी वस्तुओं के भीतर प्रकाशवान है, और वह उस ’दिवानक्षत्र’ की आभाओं, उसके रहस्यों, उसके प्रकाश के व्यापक प्रसार का वर्णन कर रहा है। पेड़ों की ओर देखो, उन पर छाई हुई बहार और उनके फलों पर, यहाँ तक कि पत्थरों पर भी। यहाँ भी तुम्हें उन पर जगमगाती, उनके अन्दर दृश्यमान और उनके माध्यम से झलकती सूर्य-किरणों के ही दर्शन होंगे।

लेकिन यदि तुम किसी प्रखर, प्रकाशित, स्वच्छ और निर्मल ’दर्पण’ की ओर देखो जिसमें वह दिव्य सौन्दर्य परावर्तित होता है तो उसमें तुम्हें वह ’सूर्य’ अपनी समस्त किरणों, अपनी पूरी उष्मा, अपने वृत्त, अपने निर्मल स्वरूप में समग्रता से जगमगाता हुआ दिखेगा। अतः, हालाँकि सूर्य की रोशनी का निर्धारित अंश अस्तित्व में विद्यमान सभी वस्तुओं को प्राप्त है और वे सब सूर्य की सत्ता का बयान करती हैं लेकिन ’गरिमा के स्रोत’ के गुणों को उनकी सम्पूर्णता के साथ झलकाता है सिर्फ वह समस्त आभामय ’विश्वव्यापी यथार्थ’, वह निर्मल ’दर्पण’ जिसके गुण उसमें प्रतिबिम्बित ’सूर्य’ के गुणों के समीचीन हैं और वह ’विश्वव्यापी यथार्थ’ है ’मनुष्य’, दिव्य अस्तित्व, चिरस्थायी सार-तत्व। “कहो, परमात्मा को पुकारो या पुकारो उस सर्वकरुणामय को, तुम जिस नाम से भी पुकारो, परम सुन्दर हैं उसके नामालंकरण।“[[19]](#footnote-19)

पिता पुत्र के भीतर है[[20]](#footnote-20) - मसीहा के इन शब्दों का यही अर्थ है। सोचो, यदि कोई निर्मल दर्पण यह घोषणा करे कि ’सत्य ही, अपने समस्त गुणों, चिह्नों और संकेतों के साथ सूर्य मेरे अन्दर जगमगा रहा है’ तो दर्पण का यह कथन झूठा या भ्रामक नहीं होगा, है न? नहीं, यह झूठा नहीं होगा, सौगन्ध उसकी जिसने उस दर्पण का सृजन किया, उसे रूप और आकार दिया और जिसने उसे उसके भीतर निहित गरिमा के अलंकरणों के अनुरूप अस्तित्ववान बनाया। गुणगान हो उसका जिसने उसका सृजन किया! स्तुति हो उसकी जिसने उसे प्रकट किया!

तो ईसा मसीह ने ऐसे ही वचन कहे थे। जब उसने लोगों से यह कहा था कि “सत्य ही, पुत्र पिता के भीतर है और पिता पुत्र के भीतर”[[21]](#footnote-21) तो उसके ऐसे शब्दों के कारण लोगों ने उसका उपहास किया था और उस पर हमले किए थे। ये बातें तुझे विदित होनी चाहिए और तुझे अपने प्रभु के रहस्यों को जानना चाहिए। जहाँ तक उस प्रभु को अस्वीकार करने वालों का सवाल है, वे ईश्वर से मानों एक आवरण के कारण ढके हुए हैं। वे न सुन पाते हैं न देख पाते हैं और न ही समझ पाते हैं। “उन्हें अपनी शिकवो-शिकायतों में निमग्न रहने के लिए छोड़ दे”।[[22]](#footnote-22) उन्हें सूखी नदियों के तटों पर भटकने दे। चरते हुए जानवरों की तरह उन्हें मोती और टहनी के बीच कोई फर्क ही नहीं मालूम। क्या उस सौम्य, करुणामय परमात्मा के रहस्यों के द्वार उनके लिए बंद नहीं कर दिए गए हैं?

तू तो इस सर्वोत्तम सुसमाचार का आनन्द मना और ईश्वर की वाणी को महिमा-मंडित करने और उस विशाल एवं सामर्थ्‍यमय भूभाग में उसकी मधुर सुरभियों को फैलाने के लिए उठ खड़ा हो। तू यह निश्चित रूप से जान कि तेरा प्रभु उच्च लोक की सेनाओं और आभा साम्राज्य के सहचरों के साथ तेरी सहायता के लिए आएगा। वे आक्रमण करेंगे और मूर्खों, अंधों की सेनाओं पर पूरी प्रबलता से टूट पड़ेंगे। बहुत ही जल्द तुम ’परम महान साम्राज्य’ से प्रस्फुटित होते अरुणोदय को देख सकोगे और उस प्रभात को जो सभी क्षेत्रों को आच्छादित कर लेगा। यह अंधकार को विच्छिन्न कर देगा और रात्रि के तिमिर का अंत हो जाएगा और निष्ठा के प्रखर भ्रुवों की जगमगाहट भर जाएगी और उस ’दिवानक्षत्र’ का उदय होगा और वह पूरे विश्व पर छा जाएगा। वह आस्थावानों के लिए आनन्द का दिन होगा और निष्ठावान लोग आह्लादित होंगे। तब कहीं जाकर ये अनादर करने वाले लोग भाग खड़े होंगे और भ्रमित जनों का नामोनिशान नहीं होगा, ठीक वैसे ही जैसे प्रभात की प्रथम किरणों के साथ ही गहनतम अंधकार विलीन हो जाता है।

तुम्हें मेरी शुभकामनाएं और सराहनाएं!

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! यह तुम्हारा प्रफुल्लित सेवक है, तेरा आध्यात्मिक भृत्य, जो तेरे निकट आया है और तेरी उपस्थिति के पास पहुंचा है। उसने अपना मुखड़ा तेरी ओर किया है, तेरी एकमेवता को स्वीकार किया है, उसने तेरे नाम पर राष्ट्रों का आह्वान किया है और, हे तू परम उदार स्वामी! वह लोगों को तेरी करुणा की प्रस्फुटित होती जलधाराओं की ओर ले चला है। जिन्होंने भी याचना की है उन्हें उसने तेरी अपार कृपा से छलकते मार्गदर्शन के प्याले से पान करने दिया है।

हे प्रभो, हर स्थिति में उसकी सहायता कर, उसे अपने सुसंरक्षित रहस्यों को सीखने की प्रेरणा दे और उस पर अपने निगूढ़ मणि-मुक्ता बिखेर। उसे अपनी स्वर्गिक सहायता के समीर से उत्तुंग किलों पर लहराती ध्वजा बना दे, उसे स्फटिक स्वच्छ जलधाराओं का स्रोत बना दे।

हे मेरे क्षमाशील स्वामी! देश-देशांतर तक अपनी रोशनी बिखेरने वाले प्रदीप की किरणों से हृदयों को प्रकाशित कर दे, और अपने लोगों के बीच जिन्हें तूने अपनी उदार कृपा का दान दिया है उनके समक्ष सभी वस्तुओं के यथार्थ प्रकट कर।

तू, वस्तुतः, शक्तिशाली, सामर्थ्‍यवान है, संरक्षक है, सबल है, दयालु है। तू सत्य ही सर्व कृपाओं का प्रभु है।

**20[[23]](#footnote-23)**

आज से दो हजार वर्ष से भी पहले जब ईसा मसीह का प्रादुर्भाव हुआ था तो हालाँकि यहूदी लोग ’उसके’ अवतरण की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे और रोज आँखों में आँसू भरकर प्रार्थना किया करते थे कि “हे ईश्वर, मसीहा के अवतार को जल्द भेजो”, लेकिन जब ’सत्य का सूर्य’ उदित हुआ तो उन्होंने उसे मानने से इन्कार कर दिया और घोरतम शत्रुता के साथ उसके खिलाफ उठ खड़े हुए और अंततः उन्होंने उस दिव्य चेतना, उस ’ईश्वर के शब्द’ को सूली पर चढ़ा दिया और जैसाकि ’ईशवाणी’ (गॉस्पेल) में अंकित है, उन्होंने उसे ’बिल्जेबब’ यानी शैतान कहकर पुकारा। इसका कारण उन्होंने यह बताया: “टोरा के स्पष्ट पाठ के अनुसार, ईसा के अवतरण की पुष्टि कतिपय संकेतों से होगी और जब तक ये संकेत प्रकट नहीं हो जाते तब तक मसीहा होने का दावा करने वाला कोई भी व्यक्ति पाखंडी ही होगा। इन संकेतों में से एक यह है कि मसीहा का आगमन किसी अज्ञात स्थान से होना चाहिए और हम सबको पता है कि इस व्यक्ति का घर नाजरथ में है और क्या नाजरथ से कोई अच्छी चीज आ भी सकती है? दूसरा संकेत यह है कि वह लोहे की एक छड़ लेकर शासन करेगा, यानी उसे तलवार से काम लेना चाहिए लेकिन इस मसीहा के पास तो लकड़ी की छड़ी भी नहीं है। एक अन्य शर्त और संकेत यह है: वह अवश्य ही डेविड के सिंहासन पर बैठेगा और वह डेविड की सम्प्रभुता स्थापित करेगा। लेकिन सिंहासन पर बैठना तो दूर की बात, उसके पास तो बैठने के लिए एक चटाई भी नहीं है। एक अन्य शर्त यह है: टोरा के सभी नियमों की घोषणा करेंगे, लेकिन इस व्यक्ति ने तो उन नियमों को खारिज ही कर दिया है और उसने ’सैबेथ डे’ की संकल्पना भी तोड़ डाली है जबकि टोरा के पाठों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जो कोई भी ईश्वर का संदेशवाहक होने की घोषणा करे और चमत्कार पैदा करे और सैबेथ डे को भंग करे उसे मौत के घाट उतार दिया जाना चाहिए। अन्य संकेतों में से एक यह है कि उसके राज्य में न्याय ऐसी उन्नत अवस्था का- सांप और चूहे एक ही बिल में और चील एवं गौरैया एक ही घोंसले में रहने लगेंगे, सिंह और हरिण एक ही तृणभूमि में विचरण करेंगे और भेड़िया तथा मेमने एक ही फब्बारे से पानी पिएंगे। लेकिन उसके समय में अन्याय और अत्याचार इतना बढ़ गया कि उन्होंने उसे सूली पर चढ़ा दिया! एक और शर्त यह है कि मसीहा के दिनों में यहूदी लोग समृद्धि प्राप्त करेंगे और दुनिया के सभी राष्ट्रों के ऊपर विजयी होंगे जबकि वे रोमनों के साम्राज्य में इस वर्तमान दौर में अत्यंत दासता और अधमता की स्थिति में जी रहे हैं। तो फिर वह टोरा में प्रतिज्ञापित मसीहा कैसे हो सकता है?”

इस तरह से उन्होंने ’सत्य के सूर्य’ के बारे में आपत्ति की जबकि ’ईश्वर की चेतना’ (ईसा मसीह) वास्तव में टोरा में प्रतिज्ञापित अवतार ही थे। लेकिन चूंकि वे इन संकेतों का अर्थ नहीं समझ सके अतः उन्होंने ’ईश्वर के शब्द’ को सूली पर चढ़ा दिया। बहाइयों का विश्वास है कि मसीहा के अवतरण में वे सभी अंकित संकेत फलीभूत हुए थे, हालाँकि उस रूप में नहीं जैसाकि यहूदियों ने समझा था क्योंकि टोरा में लिखी गई बातें प्रतीकात्मक थीं। उदाहरण के लिए, संकेतों मे से एक सम्प्रभुता या साम्राज्य के बारे में है। बहाइयों का कहना है कि ईसा मसीह का साम्राज्य एक स्वर्गिक, चिरस्थायी साम्राज्य था न कि नेपोलियन वाला साम्राज्य जो शीघ्र ही समाप्त हो जाता है। ईसा मसीह के इस साम्राज्य की स्थापना के लगभग दो हजार वर्ष हो गए और यह अब तक अक्षुण्ण है और अनन्त से अनन्त काल तक ’पवित्र अस्तित्व’ उस शाश्वत सिंहासन पर विराजमान रहेगा।

इसी तरह अन्य सभी संकेत भी प्रकट कर दिए गए लेकिन यहूदी लोग समझ नहीं सके। हालाँकि दिव्य आभा के साथ ईसा मसीह के अवतरण के समय से अब तक लगभग बीस शताब्दियाँ बीत चुकीं लेकिन यहूदी अभी भी मसीहा के आगमन के इंतजार में हैं और वे स्वयं को सच्चे और मसीहा को ही झूठा मानते हैं।

**21**

हे विशिष्ट व्यक्ति, हे सत्य के साधक! तुम्हारे 4 अप्रैल 1921 के पत्र को सप्रेम पढ़ा गया।

तार्किक प्रमाणों के आधार पर ’दिव्य अस्तित्व’ की सत्ता स्पष्ट रूप से स्थापित कर दी गई है किन्तु ईश्वरत्व का यथार्थ मानव मस्तिष्क की समझ से परे है। जब तुम सावधानीपूर्वक इस विषय पर विचार करोगे तो तुम्हें लगेगा कि निम्न धरातल कभी भी उच्च धरातल को नहीं समझ सकता। उदाहरण के लिए, जड़ जगत की वस्तुएँ जो कि अस्तित्व के निम्न धरातल पर हैं, वे कभी भी वनस्पति जगत के बारे में ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकतीं क्योंकि यह उनके लिए सर्वथा असम्भव होगा। उसी तरह, वनस्पति जगत अपना विकास चाहे जितना भी कर ले, उसे जीव-जगत के बारे में कोई भी अवधारणा नहीं हो सकती। उसके स्तर पर ऐसा कोई भी बोध प्राप्त कर सकना अकल्पनीय होगा क्योंकि जीव-जंतु पेड़-पौधों से उच्चतर चेतना के धरातल पर होते हैं : पेड़ दृष्टि और श्रवण की संकल्पना नहीं कर सकते। ऐसे ही, जीव-जगत का विकास चाहे जितना भी हो ले, वह बुद्धि के यथार्थ से कभी अवगत नहीं हो सकता जिससे सभी वस्तुओं के अंतर्निहित सत्य की खोज की जाती है और उन सच्चाइयों को समझा जाता है जो दृष्टि से परे हैं, क्योंकि जानवरों की तुलना में मनुष्य का धरातल बहुत ही ऊपर है। और हालाँकि ये सभी रचित जीव एक साथ इस परिवर्तनशील संसार में निवास करते हैं लेकिन प्रत्येक के मामले में यही सच है कि उनके स्थान और पद में जो अन्तर व्याप्त है वह उन्हें सम्पूर्ण बोध से वंचित रखता है क्योंकि निम्नतर जीव उच्चतर जीव को नहीं समझ सकता, ऐसा बोध असम्भव है।

लेकिन उच्चतर धरातल अपने से निम्न धरातल को समझता है। उदाहरण के लिए, जानवर को जड़ पदार्थों और वनस्पति के बारे में समझ होती है, मनुष्य जानवरों, वनस्पतियों और जड़ पदार्थों के धरातल के बारे में जानता है। लेकिन जड़ जगत के लिए यह सम्भव नहीं है कि वह मानव लोक के बारे में समझ सके। और बावजूद इसके कि ये सभी अस्तित्व एक साथ इस क्षणभंगुर संसार में विद्यमान हैं, निम्न स्तर के जीव उच्च स्तर के जीवों को नहीं समझ सकते।

तो फिर यह कैसे सम्भव हो सकता है कि कोई नाशवान अस्तित्व, जैसे मनुष्य, शाश्वत तत्व अर्थात दिव्य अस्तित्व को जान सके? मनुष्य और दिव्य यथार्थ के बीच उससे भी हजारों-हजार गुणा अन्तर है जितना कि वनस्पति और जंतुओं के बीच है। और मनुष्य अपने मस्तिष्क में जो कुछ भी अनुमान लगाएगा वह मानवीय स्थितियों के अनुरूप उसकी कपोल कल्पनाओं से ज्यादा कुछ नहीं होगा। वह ईश्वरीय यथार्थ का समावेश नहीं कर सकता बल्कि वह स्वयं ईश्वरीय यथार्थ में समाविष्ट है। अर्थात, मनुष्य स्वयं अपनी कल्पित अवधारणाओं को पकड़ कर चलता है लेकिन दिव्यता का यथार्थ उसकी पकड़ में नहीं आ सकताः वह स्वयं अपने आप में सभी रचित वस्तुओं को समाहित किए हुए है। मनुष्य स्वयं में जिस दिव्यता की कल्पना करता है उसका अस्तित्व सिर्फ उसके मस्तिष्क में है, यथार्थ में नहीं। इस तरह मनुष्य उस कल्पनाशील यथार्थ से बड़ा है जिसकी कल्पना करने में वह सक्षम है।

इस माटी के पंछी की कुछ सुदूरतम सीमाएँ ये हैं: अनन्त विस्तार में वह कुछ दूर तक अपने पंख फड़फड़ा सकता है लेकिन वह उच्च स्वर्ग में स्थित ’सूर्य’ तक कभी उड़ान नहीं भर सकता। लेकिन फिर भी हम उस ’दिव्य’ के अस्तित्व के बारे में तर्कपूर्ण अथवा अनुप्रेरित प्रमाणों को प्रस्तुत कर सकते हैं अर्थात वे प्रमाण जो मनुष्य की बुद्धि के लिए ग्राह्य हैं।

यह स्पष्ट है कि सभी रचित वस्तुएँ एक पूर्ण और सर्वसम्पन्न सूत्र के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, ठीक वैसे ही जैसे मानव-शरीर के विभिन्न अंग। यह देखो कि मानव-शरीर के सभी अंग और घटक किस तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इसी तरह, इस अनन्त ब्रह्मांड के सभी सदस्य भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जैसे पैर और कदम आँख और कान से जुड़े हुए हैं, कदम उठाने से पहले आँख के लिए देखना आवश्यक होता है। आँख गौर से कुछ देखे इसके पहले कान का सुनना जरूरी होता है। और मानव-शरीर का कोई भी अंग जब कमजोर होता है तो वह दूसरे अंग को भी क्षमता से वंचित कर देता है। मस्तिष्क हृदय और पेट से भी सम्बन्धित है। फेफड़ों का सम्बन्ध सभी अंगों से है। शरीर के अन्य अंगों की भी यही हालत है।

और इनमें से प्रत्येक अंग का अलग-अलग खास कार्य है। मस्तिष्क की शक्ति - चाहे हम इसे पहले से अस्तित्ववान कह लें या पारिस्थितिक - मानव-शरीर के सभी अंगों को निर्देश देती और उनका संयोजन करती है और यह देखती है कि सभी अंग या अवयव अपने खास कार्य को सही ढंग से पूरा कर रहे हों। लेकिन यदि मस्तिष्क की यह शक्ति किसी तरह से बाधित हो जाए तो सभी अंग अपने अनिवार्य कार्यों को करने में विफल रहेंगे, शरीर और उसके अंग-प्रत्यंगों की कार्य-क्षमता में भी कमी दिखने लगेगी और वह शक्ति प्रभावहीन साबित होगी।

इसी तरह से, इस असीम ब्रह्माण्ड की ओर देखोः एक सर्वव्यापी शक्ति का अस्तित्व जरूर होगा जो हर वस्तु को आच्छादित किए हुए है, जो इस अनन्त सृष्टि के सभी हिस्सों को नियमित और निर्देशित करती है। यदि वह सबका निर्देशन करने वाला, सबका संयोजन करने वाला नहीं होता तो इस ब्रह्माण्ड में कमी और त्रुटि नजर आती। यह एक बेतरतीब, सनकी संसार होता जबकि तुम देख सकते हो कि यह असीम सृष्टि पूरी सुव्यवस्था के साथ अपना कार्य करती है, इसका हर अलग-अलग हिस्सा भी पूर्ण विश्वसनीयता से अपना दायित्व पूरा करता है। उसके समस्त कार्य में कोई भी कमी दृष्टिगोचर नहीं होती। इस तरह यह स्पष्ट है कि एक सर्वव्यापी शक्ति का अस्तित्व है जो इस असीम ब्रह्माण्ड का नियमन और निर्देशन करती है। हर तर्कपूर्ण मस्तिष्क इस तथ्य को समझ सकता है।

इसके बाद, हालाँकि सभी सृजित वस्तुओं का विकास और उनमें वृद्धि होती है लेकिन वे बाहरी प्रभावों पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, सूर्य उष्मा देता है, वर्षा पोषण करती है, हवा जीवन देती है ताकि मनुष्य का विकास हो सके। इस तरह यह स्पष्ट है कि मनुष्य का शरीर बाहरी प्रभावों के अधीन है और यह कि उन प्रभावों के बिना मनुष्य का विकास सम्भव नहीं होता। और फिर उसी तरह से, वे बाहरी प्रभाव भी अन्य प्रभावों के अधीन हैं। उदाहरण के लिए, मनुष्य का विकास पानी के अस्तित्व पर निर्भर है, पानी वर्षा पर आश्रित है, वर्षा बादलों पर निर्भर है, बादल सूर्य के अस्तित्व पर आधारित हैं जो धरती और समुद्र को वाष्प के उत्सर्जन के लिए प्रेरित करता है और ये वाष्प संघनित होकर बादल बनते हैं। इस तरह ये सभी अस्तित्ववान वस्तुएँ अपना प्रभाव डालती हैं और स्वयं भी प्रभावित होती हैं। अतः, यह निर्विवाद है कि यही प्रक्रिया ’उस’ तक पहुंचती है जो सबको प्रभावित करता है और जो स्वयं किसी से प्रभावित नहीं होता ताकि इस श्रृंखला को तोड़ा जा सके। हालाँकि उस ’अस्तित्ववान’ (परमात्मा) के प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हैं किन्तु उसका आंतरिक यथार्थ किसी को ज्ञात नहीं है।

और फिर, सभी रचित वस्तुएँ सीमित हैं और यह सीमित होना स्वयं ही किसी ’असीमित’ के यथार्थ को प्रमाणित करता है, क्योंकि किसी सीमित सत्ता का अस्तित्व एक असीमित सत्ता के अस्तित्व को द्योतित करता है।

सारांश यह कि उस ’सर्वव्यापी यथार्थ’ के अस्तित्व को प्रमाणित करने वाले प्रमाण अनेक हैं। और चूंकि वह ’यथार्थ’ समयातीत है अतः वह परिवर्तनशील विश्व का नियमन करने वाली दशाओं से मुक्त है क्योंकि यदि कोई वस्तु या सत्ता परिस्थितियों और घटना-चक्रों के अधीन है तो वह परिवर्तनशील है, समयातीत नहीं। अतः जान लो कि वह दिव्यता जिसका आह्वान अन्य लोगों और समुदायों द्वारा किया जाता है वह उनकी अपनी कल्पना के दायरे में है, उससे बाहर नहीं, जबकि ’ईश्वरत्व’ का यथार्थ बोध की सभी सीमाओं से परे है।

जहाँ तक ईश्वर के पवित्र प्रकटावतारों की बात है, वे वह केन्द्रीय बिंदु हैं जहाँ उस पवित्र, पूर्व-अस्तित्ववान ’यथार्थ’ के चिह्नों, संकेतों और पूर्णताओं का उनकी सम्पूर्ण आभा के साथ प्राकट्य होता है। वे हैं अनन्त कृपा, स्वर्गिक गरिमा और उन्हीं पर निर्भर है मानवजाति का अनन्त जीवन। इसे इस तरह चित्रित कर सकते हैं : ’सत्य का सूर्य’ उस आकाश में निवास करता है जहाँ तक कोई नहीं पहुँच सकता और जो किसी भी मस्तिष्क के लिए बोधगम्य नहीं है और वह सभी रचित वस्तुओं की समझ से अत्यंत परे है। तथापि ईश्वर के पवित्र अवतार स्वच्छ और चमकते हुए दर्पण की तरह हैं जो उस ’सूर्य’ से प्रकाश की किरणें प्राप्त करता है और फिर उस गरिमा को सम्पूर्ण सृष्टि पर बिखेर देता है। उस चमकती हुई सतह पर, ’सूर्य’ अपनी सम्पूर्ण महिमा के साथ स्पष्ट रूप से प्रकट दिखता है। अतः यदि वह प्रतिबिम्बित सूर्य यह पुकार उठे कि “मैं सूर्य हूँ” तो यह सत्य ही है और यदि वह यह कहे कि “मैं सूर्य नहीं हूँ” तो यह भी सत्य ही है। और हालाँकि वह ’दिवानक्षत्र’ अपनी सम्पूर्ण गरिमा, सुन्दरता और सम्पूर्णता के साथ उस निर्मल दर्पण में स्पष्ट दिख रहा हो तो भी वह उच्च लोक के अपने महान स्थान से नीचे उतर कर नहीं आया है, वह उस दर्पण में समाहित नहीं है, बल्कि अपनी पावनता की असीम ऊँचाइयों के स्वर्ग में अक्षुण्ण रहा है और सदा रहेगा।

और पुनः, धरती के सभी जीव-जंतुओं को सूर्य की कृपा की जरूरत होती है, क्योंकि उनका अस्तित्व सूर्य की रोशनी और उष्मा पर निर्भर करता है। यदि यह धूप उन्हें न मिले तो उनका अस्तित्व ही मिट जाएगा। इसे ही कहते हैं ईश्वर के साथ होना, जैसाकि पवित्र ग्रंथों में कहा गया हैः मनुष्य के लिए जरूरी है कि वह अपने प्रभु के साथ रहे।

अतः यह स्पष्ट है कि ईश्वर का अनिवार्य यथार्थ उसकी परिपूर्णता में प्रकटित है और अपनी सम्पूर्णताओं के साथ दर्पण में प्रतिबिम्बित सूर्य एक दृश्य वस्तु है, एक ऐसा यथार्थ जो स्पष्ट रूप से ईश्वर की उदारता को दर्शाता है।

मेरी यह आशा है कि तुम एक बोध-सम्पन्न दृष्टि रखोगे, तुम्हारे पास सुनने वाले कान होंगे और तेरी दृष्टि के आगे से सभी आवरण हट जाएँगे।

**22**

हे तू ईश्वर की ओर अपने मुखड़े को उन्मुख करने वाले! अन्य सभी वस्तुओं की ओर से अपनी आँखें मूंद ले और उन्हें उस सर्व-गरिमामय के साम्राज्य की ओर खोल। जो कुछ भी तेरी कामना है वह उसी से मांग, जो कुछ भी तेरी याचना है वह उसी से कह। अपनी एक दृष्टि से वह हजारों-हजार आशाएँ देता है, अपनी एक नजर से वह हजारों-हजार असाध्य रोगों को ठीक करता है, एक इशारे से वह हर घाव पर मरहम रख देता है, एक झलक से वह हृदयों को दुःख के बंधनों से छुड़ा देता है। वह जो करता है सो करता है और हमारे पास और उपाय भी क्या है? वह अपनी इच्छानुसार कार्य करता है, उसकी जो मर्जी होती है वह निर्धारित करता है। अतः तेरे लिए बेहतर यही है कि अपने सिर को समर्पण में झुका ले और अपना पूरा भरोसा उस सर्वदयालु ईश्वर में रख।

**23**

हे तू सत्य के साधक! तुम्हारा 13 दिसम्बर 1920 का पत्र प्राप्त हुआ है।

आदम के समय से लेकर अब तक, एक के बाद एक ईश्वरीय धर्मों को प्रकट किया गया है और उनमें से प्रत्येक धर्म ने अपना समुचित कार्य पूरा किया, मानवजाति का पुनरुत्थान किया और उन्हें ज्ञान और मोक्ष प्रदान किया। उन्होंने प्रकृति-जगत के अंधकार से लोगों को मुक्ति प्रदान की और उन्हें प्रभु-साम्राज्य की प्रखरता का मार्ग दिखाया। एक के बाद एक प्रकटित प्रत्येक धर्म और विधान कुछ सदियों तक समृद्ध फलवान वृक्ष की तरह रहा और मानवजाति की प्रसन्नता उसके प्रति समर्पित रही। लेकिन सदियाँ बीत जाने पर, वह वृक्ष बूढ़ा हो गया, उसका पुष्पित-पल्लवित होना रुक गया, उन पर फलों का आना ठहर गया, अतः उसे फिर से तरोताजा करना पड़ा।

ईश्वर का धर्म एक ही धर्म है लेकिन उसे हमेशा नया रूप देना होता है। उदाहरण के लिए, हजरत मूसा को मनुष्य के पास भेजा गया और उन्होंने एक विधान स्थापित किया और मूसा के उस विधान के माध्यम से इजरायल के बच्चे अपने अज्ञान से मुक्ति पा सके और प्रकाश के लोक में प्रविष्ट हुए। उन्हें उनकी अधमता से ऊपर उठाकर कभी फीकी न पड़ने वाली गरिमा के साम्राज्य में लाया गया। लेकिन एक लम्बी अवधि बीत जाने के बाद वह कांति मंद पड़ गई, वह प्रकाश बुझने लगा, वे प्रखर दिन रात्रि में बदल गए और जब उस रात की कालिमा तीन गुणा बढ़ गई तो मसीहा का सितारा उदित हुआ ताकि एक नई गरिमा का प्रकाश विश्व पर फिर से छा जाए।

इससे हमारा तात्पर्य यह है: ईश्वर का धर्म एक है, और वह मनुष्य मात्र को शिक्षा देता है लेकिन फिर भी उसका नवीकरण जरूरी होता है। जब आप कोई पौधा रोपते हैं तो उसकी लम्बाई दिनोंदिन बढ़ती जाती है। उस पर बहार आती है, पत्ते उगते हैं और सुस्वादु फल लगते हैं। लेकिन काफी अरसे बाद, वह बूढ़ा हो जाता है और उसमें फल उत्पन्न होना बंद हो जाता है। तब ’सत्य का बागवान’ उसी पेड़ के बीज लेकर उसे शुद्ध भूमि में रोपता है और देखो, वहाँ वही पहले वाला पेड़ फिर से खड़ा हो जाता है, जैसेकि वह पहले से वहाँ मौजूद रहा हो।

तू सावधानीपूर्वक इस बात पर ध्यान दे कि अस्तित्व के इस संसार में हर वस्तु को नया रूप देना होता है। अपने चारों ओर के भौतिक संसार को देख कि उसे कैसे नया रूप दिया गया है। विचारों में परिवर्तन हुए हैं जीवन के नए तौर-तरीके अपनाए गए हैं, विज्ञान और कला की दुनिया में एक नई ऊर्जस्विता का अनुभव होता है, नए-नए आविष्कार और अनुसंधान हुए हैं, नए बोध उत्पन्न हुए हैं। तब फिर धर्म जैसी प्रबल शक्ति जो मनुष्य की परम उन्नति का निर्धारक है, अनन्त जीवन प्राप्त करने का मार्ग है, असीम उत्कृष्टता का संवर्द्धक है, वह भला नवीनता कैसे न प्राप्त करे? यह तो ईश्वर की कृपा और स्नेहिल दयालुता के अनुरूप नहीं होगा।

इसके अलावा, धर्म विश्वासों की कड़ी या परम्पराओं के किसी समूह को नहीं कहते बल्कि धर्म तो प्रभु-परमेश्वर की शिक्षाएँ हैं, वे शिक्षाएँ जो मनुष्य जाति के जीवन की मूल घटक हैं, जो मनो-मस्तिष्क में उच्च विचारों को उत्प्रेरित करती हैं, चरित्र को शुद्ध बनाती हैं और मानव की अनन्त प्रतिष्ठा की आधारशिला तैयार करती हैं।

तुम यह गौर करो: मस्तिष्क-जगत के ये प्रलाप, युद्ध और घृणा तथा राष्ट्रों के बीच द्वेष और प्रतिशोध की ये लपटें, राष्ट्रों द्वारा राष्ट्रों पर किए जाने वाले ये आक्रमण जिनके कारण इस पूरे संसार की शांति नष्ट हो गई है - क्या ईश्वर की शिक्षाओं की जीवन्त जलधारा के बिना उन्हें कम किया जा सकता है? कदापि नहीं।

 और यह स्पष्ट है: इस घोर कालिमा को प्रकाश में बदलने, प्रतिशोध, घृणा, दुर्भावना और वैमनस्य, इन अनन्त युद्धों और लड़ाइयों को धरती के सभी लोगों के बीच प्रेम और बंधुता में रूपांतरित करने के लिए एक ऐसी शक्ति की जरूरत है जो प्रकृति की शक्ति से कहीं ऊपर है। वह शक्ति पवित्र चेतना के उच्छवास और ईश्वरीय वाणी के ऊर्जस्वित प्रवाह के सिवा और कुछ भी नहीं है।

**24**

 हे आध्यात्मिक युवा! ईश्वर का गुणगान कर कि तूने आभाओं के साम्राज्य में अपना मार्ग पा लिया है और मिथ्या कल्पनाओं के आवरण को छिन्न-भिन्न कर दिया है और यह कि तुझे आंतरिक रहस्य के मूल का ज्ञान करा दिया गया है।

इन सभी लोगों ने अपने मस्तिष्क के दायरे में एक ईश्वर की परिकल्पना कर ली है और अपने लिए जो चित्र उन्होंने चित्र खींच रखा है उसी की आराधना में वे निरत हैं। तथापि उस चित्र को समझा जा सकता है, मानव मस्तिष्क उसे समझने वाला है, और निस्संदेह समझने वाला उस वस्तु से बड़ा होता है जो उसके बोध के दायरे में आ सकता है, क्योंकि कल्पना तो एक शाखा है जबकि मस्तिष्क उसकी जड़ है, और इसमें कोई दो मत नहीं कि जड़ शाखा से कहीं अधिक महान है। अतः जरा यह विचार करो कि किस तरह दुनिया के लोग अपनी ही बनाई हुई कल्पना के आगे घुटने टेक रहे हैं, किस तरह अपने ही मनो-मस्तिष्क के अन्दर उन्होंने एक सृजनकर्ता का सृजन कर लिया है और उसे वे सभी वस्तुओं का ’सिरजनहार’ कहकर पुकारते हैं - जबकि सच्चाई यह है कि वह केवल एक भ्रम है। इस तरह लोग केवल अपनी समझ की त्रुटि की उपासना में लगे हुए हैं।

लेकिन वह ’सभी तत्वों का भी सार-तत्व’, वह ’अगोचरों में भी अगोचर’ मनुष्य की सभी अटकलों से परे, पावन है और मानव-मस्तिष्क कभी भी उस तक नहीं पहुँच सकता। वह अनादि ’यथार्थ’ कभी भी क्षणभंगुर जीव के दायरे में नहीं समा सकता। उसका साम्राज्य ही अलग है और उस साम्राज्य को कोई भी ज्ञान माप नहीं सकता। वहाँ तक किसी की पहुंच नहीं हो सकती, वहाँ हर प्रवेश निषिद्ध है। कोई व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा यही कह सकता है कि उसके अस्तित्व को प्रमाणित किया जा सकता है यद्यपि उस अस्तित्व की दशाएँ अज्ञात हैं।

ऐसा एक ’तत्व’ अस्तित्व में है, इसे सभी ज्ञानियों और दार्शनिकों ने जाना-समझा है। लेकिन जब कभी उन्होंने उसके अस्तित्व के बारे में कुछ भी जानने का प्रयास किया, वे उलझन और विस्मय में पड़ गए और अंत में निराश होकर, अपनी समस्त आशाओं को ध्वस्त करते हुए वे इस जीवन से ही चले गए। क्योंकि उस ’तत्वों के भी सार-तत्व’, ’रहस्यों के भी उस परम रहस्य’ की दशा और उसके आंतरिक गूढ़ तत्व को समझने के लिए उस व्यक्ति के पास अन्य शक्ति, अन्य क्षमताएं होनी चाहिए और ऐसी शक्ति, ऐसी क्षमताएं मनुष्य की सहनशक्ति से बहुत ज्यादा होगी।

उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति के पास सुनने, स्वाद ग्रहण करने, सूंघने और स्पर्श की ऐन्द्रिक शक्तियाँ हों लेकिन उसके पास दृष्टि न हो तो वह देख नहीं सकेगा, क्योंकि दृष्टि का कार्य सुनने, स्वाद लेने, सूंघने या स्पर्श करने के द्वारा नहीं किया जा सकता। इसी तरह, मनुष्य के नियंत्रण में जो क्षमताएँ हैं उनके दम पर उस अगोचर ’यथार्थ’ को जो संशयशील लोगों के सभी संदेहों से परे और पावन है, समझ सकना मानवीय सम्भावना के दायरे से परे है। इसके लिए, अन्य क्षमताओं, अन्य ऐन्द्रिक शक्तियों की जरूरत होगी। यदि ऐसी शक्तियाँ प्राप्त हो जाएं तो मनुष्य उस लोक का कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकता है अन्यथा कभी नहीं।

**25**

हे ईश्वर की सेविका! पूर्व के इतिहासों में यह बात अंकित है कि सुकरात ने फिलिस्तीन और सीरिया की यात्रा की थी और वहाँ उसने ईश्वरीय विषयों के पंडितों से कुछ आध्यात्मिक सच्चाइयों का ज्ञान अर्जित किया और जब वह वापस यूनान लौटा तो उसने दो मान्यताओं का प्रचार कियाः पहला, ईश्वर की एकता और दूसरा, शरीर से मुक्त होने के बाद आत्मा की अमरता। यूनान के लोगों के लिए ये अवधारणाएँ अजनबी थीं और इसलिए इन बातों से उनके बीच खलबली मच गई और अंत में उन्होंने उसे जहर देकर मार डाला।

और यह प्रामाणिक बात है क्योंकि यूनानी लोग अनेक देवताओं में विश्वास करते थे और सुकरात ने यह मान्यता संस्थापित की कि ईश्वर एक है। यह यूनानी मान्यताओं से विरोधाभास था।

एकेश्वरवाद के प्रवर्तक थे अब्राहम। इस अवधारणा का मूल अब्राहम में ही मिलता है और यहाँ तक कि सुकरात के समय में भी इजरायल के पुत्रों में यह मान्यता व्याप्त थी।

लेकिन यह बात यहूदी इतिहास में नहीं मिलती। ऐसे कई तथ्य हैं जो यहूदी इतिहास में शामिल नहीं किए गए। ईसा मसीह के जीवन के सभी वृतान्त जोसेफस के इतिहास में वर्णित नहीं किए गए हैं। वह एक यहूदी था हालाँकि ईसा मसीह के समय का इतिहास उसी ने लिखा है। अतः कोई ईसा मसीह के समय की घटनाओं में इस कारण विश्वास करने से इन्कार नहीं कर सकता कि वे जोसेफस के इतिहास में वर्णित नहीं हैं।

पूर्व के इतिहासों में यह भी कहा गया है कि हिप्पोक्रेट्स ने बहुत दिनों तक टायरे नगर की यात्रा की थी और यह नगर सीरिया में है।

**26**

हे स्वर्ग के साम्राज्य के साधक! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है और उसकी विषय-वस्तु पर ध्यान दिया गया है।

ईश्वर के पवित्र प्रकटावतारों के दो महान पद होते हैं: पहला है उनका भौतिक पद और दूसरा आध्यात्मिक। दूसरे शब्दों में, उनका एक पद मनुष्य का है और दूसरा दिव्य यथार्थ का। यदि इन प्रकटावतारों को परीक्षाओं के दौर से गुजरना पड़ता है तो यह उनके मानवीय पद के दायरे में है न कि उनके दिव्य यथार्थ की परिधि में।

और फिर ये परीक्षाएँ केवल मानवजाति के दृष्टिकोण से ही उस प्रकार की हैं। अर्थात बाहर से देखने पर, पवित्र अवतारों की मानवीय दशा परीक्षाओं के अधीन हैं और जब इस प्रकार से उनकी शक्ति और सहनशीलता की अदम्य शक्ति प्रकट हो चुकी होती है तो अन्य लोगों को उससे मार्गनिर्देश मिलता है और उन्हें इस बात से अवगत कराया जाता है कि परीक्षाओं की घड़ी में स्वयं उनकी दृढ़ता और सहिष्णुता कितनी प्रबल होनी चाहिए। जरूरी है कि दिव्य शिक्षक शब्द के द्वारा भी शिक्षा प्रदान करे और आचरण द्वारा भी और इस तरह हर किसी के समक्ष सच्चाई का सीधा मार्ग उद्घाटित करे।

जहाँ तक मेरे पद की बात है तो वह है बहा के सेवक का पद: अब्दुल बहा, आभा-सौन्दर्य की दहलीज पर दासता की एक दृश्यमान अभिव्यक्ति।

**27**

अतीत के युगचक्रों में, इस अस्तित्व के संसार में ईश्वर के प्रत्येक प्रकटावतार का अपना पद था और उनमें से प्रत्येक ने मानवता के विकास में एक चरण का प्रतिनिधित्व किया था। लेकिन ’महानतम नाम’ - काश कि मेरा जीवन उनके प्रियपात्रों के लिए न्यौछावर हो जाए - का प्रकटीकरण वयस्कता के युग की, इस अस्तित्व के संसार में मनुष्य के अंतरतम यथार्थ की प्रौढ़ता की अभिव्यक्ति था, क्योंकि सूर्य प्रकाश और उष्मा का स्रोत है, आभाओं का केंद्रबिंदु और उसमें वे सभी पूर्णताएँ व्याप्त हैं जो कि इस विश्व पर चमकने वाले अन्य सितारों द्वारा प्रकट की गई थीं। तू यह प्रयास कर कि इस सूर्य के तले तुझे भी अपना गौरवमय स्थान प्राप्त हो और उसकी चकाचौंध कर देने वाली रोशनी का अंशदान तुझे भी प्राप्त हो। वस्तुतः, मैं तुझसे यह कहता हूं कि एकबार यदि तू इस उच्चता को प्राप्त कर ले तो तू संतों-महात्माओं को उसके समक्ष अत्यंत विनम्रता से नतमस्तक हुआ देख सकेगा। मृत्यु का आगमन हो उससे पहले ही तू शीघ्रता से जीवन की ओर बढ़, इससे पहले कि पतझड़ निकट आ जाए तू बसन्त की ओर तेजी से कदम बढ़ा और तुझ पर व्याधियाँ टूट पड़ें उससे पूर्व ही तू आरोग्य की ओर स्फूर्ती से चल - ताकि तू आत्मा का ऐसा चिकित्सक बन सके जो चेतना की एक सांस फूंक कर इस गरिमामय और सुप्रसिद्ध युग में हर तरह का रोग दूर कर सकता हो।

**28**

हे जीवन-तरुवर की पाती! बाइबिल में जीवन के जिस वृक्ष का उल्लेख किया गया है वह है बहाउल्लाह और प्रभु-साम्राज्य की बेटियाँ हैं उस आशीर्वादित वृक्ष की पत्तियाँ। अतः ईश्वर का धन्यवाद कर कि तू उस वृक्ष से सम्बन्धित रहा है और यह कि तू पुष्पित है, कोमल और ताजगी से भरा।

प्रभु-साम्राज्य के द्वार उन्मुक्त खोल दिए गए हैं और हर प्रियपात्र उस प्रभु के भोज की मेज पर विराजमान है और वे उस स्वर्गिक सहभोज का अपना अंशदान प्राप्त कर रहे हैं। ईश्वर की स्तुति हो कि तुम भी इस मेज पर उपस्थित हो और स्वर्ग के उदार आहार का अपना हिस्सा प्राप्त कर रहे हो। तुम ’साम्राज्य’ की सेवा कर रहे हो और तुम आभा स्वर्ग के सुमधुर आस्वाद से सुपरिचित हो।

अतः लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए अपनी पूरी शक्ति से प्रयास कर और उस रोटी में से अपना टुकड़ा ग्रहण कर जो तेरे लिए स्वर्ग से भेजा गया है। क्योंकि ईसा मसीह के शब्दों का यही अर्थ है: “मैं स्वर्ग से इस धरती पर भेजी गई जीवन्त रोटी हूँ..... जो भी इस रोटी से अपना हिस्सा ग्रहण करेगा वह सदा-सर्वदा जीवित रहेगा।“[[24]](#footnote-24)

**29**

हे तू जो कि सत्य से सम्मोहित और स्वर्गिक साम्राज्य की ओर आकर्षित है! तुम्हारा विस्तृत पत्र प्राप्त हुआ है और उससे अत्यधिक प्रसन्नता प्राप्त हुई क्योंकि वह स्पष्ट रूप से कठिन प्रयासों और उच्च उद्देश्यों को संकेतित करता है। ईश्वर की स्तुति हो, तुम लोगों का कल्याण चाहते हो, बहा के साम्राज्य के प्रति उत्कंठा रखते हो और मानवजाति को आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हो। मेरी आशा है कि इन उच्च आदर्शों के कारण हृदय के इन भलमनसाहत भरे अभिप्रायों और स्वर्ग के इन शुभ समाचारों के कारण तुम इतने ज्योतिर्मय बन जाओगे कि आने वाले सभी युगों में ईश्वर के प्रति तुम्हारे प्रेम का प्रकाश अपनी गरिमा बिखेरता रहेगा।

तुमने अपना वर्णन आध्यात्मिक प्रगति की पाठशाला में एक विद्यार्थी के रूप में किया है। तुम भाग्यशाली हो! यदि प्रगति की ये पाठशालाएं स्वर्ग के विश्वविद्यालय की ओर ले जा सकें तो ज्ञान की शाखाएँ विकसित होंगी जिनसे मानवजाति अस्तित्व की पाती की ओर ऐसे निहारेगी जैसे कि वह अनन्त रूप से खुलने वाली कोई पत्रिका हो और उस पत्रिका पर सभी रचित वस्तुएँ शब्दों और अक्षरों की तरह दिखाई देंगी। तब कहीं जाकर अर्थ के विभिन्न धरातलों के बारे में जाना-समझा जा सकेगा और तब ब्रह्माण्ड के कण-कण में ईश्वर की एकता के संकेत प्रमाणित होंगे। तब मनुष्य ’साम्राज्य के प्रभु’ की पुकार सुन सकेगा और अपनी सहायता के लिए आती हुई ’पावन चेतना’ की पुष्टियों को देख सकेगा। तब वह ऐसी सुप्रसन्नता, ऐसे आनन्दातिरेक का अनुभव करेगा कि अपनी अपार विशालता के बावजूद यह विश्व उसे समाहित नहीं कर सकेगा और वह ईश्वर के साम्राज्य की ओर प्रस्थान कर उठेगा और चेतना की परिधि की ओर शीघ्रता से बढ़ चलेगा। क्योंकि जब एकबार पंछी के पंख विकसित हो गए हों तो वह जमीन पर टिका हुआ नहीं रहता बल्कि ऊपर उच्च स्वर्ग की ओर उड़ान भर उठता है - सिवाय उन पक्षियों के जिनके पैर बांध दिए गए हों, या जिनके पंख टूट चुके हों या दलदल में जा फंसे हों।

हे तू सत्य के साधक! प्रभु-साम्राज्य का लोक एक ही लोक है। एकमात्र अन्तर यह है कि बसन्त बारम्बार लौटता है और सभी रचित वस्तुओं के बीच एक नई महान हलचल मचा देता है। मैदान और पहाड़ जीवन्त हो उठते हैं, पेड़ों के ऊपर लालित्यपूर्ण हरियाली छा जाती है और फल-पत्तियाँ और बहारें अनन्त सुकोमल सौन्दर्य से भर उठती हैं। वस्तुतः पिछले समय के सभी धर्मावतरण अपने बाद आने वाले धर्मावतरणों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। सच यह है कि वे सभी धर्मावतरण एक ही हैं लेकिन दुनिया के विकास के साथ-साथ प्रकाश का भी विकास होता है, स्वर्गिक कृपा की वर्षा का भी, और उसके बाद दिवानक्षत्र दोपहर की प्रभा के साथ चमक उठता है।

हे तू ’साम्राज्य’ के साधक! हर दिव्य प्रकटावतार इस संसार का जीवन है और हर व्याधिग्रस्त आत्मा के लिए एक निपुण चिकित्सक। यह मानव-संसार बीमार है और उस सक्षम चिकित्सक को इसका उपचार मालूम है। वह अपनी शिक्षा, सलाह और उपदेश के माध्यम से प्रत्येक पीड़ा का इलाज करता है और वे हर घाव के लिए आरोग्यकारी मलहम की तरह हैं। यह सुनिश्चित बात है कि चतुर चिकित्सक किसी भी मौसम में अपने मरीज की जरूरतों की पहचान कर सकता है और उनका उपचार कर सकता है। अतः, तू आभा सौन्दर्य की शिक्षाओं का सम्बन्ध इस वर्तमान युग की अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकताओं से जोड़ और तुम्हें लगेगा कि वे इस विश्व की रोगग्रस्त काया के लिए एक त्वरित उपचार प्रस्तुत करती हैं। वास्तव में, वे अमृत की बूंदें हैं जो अनन्त स्वास्थ्य प्रदान करती हैं।

अतीत के सुविज्ञ चिकित्सकों और उनके बाद आने वालों द्वारा जो उपचार निर्देशित किए गए थे वे सब एक समान नहीं हैं, बल्कि वे इस बात पर निर्भर हैं कि आखिर मरीज का रोग क्या है। और हालाँकि इलाज में अंतर हो सकता है किंतु उद्देश्य हमेशा यही रहता है कि मरीज को उसका स्वास्थ्य वापस पाप्त हो जाए। पिछले धर्मयुगों में, इस संसार की दुर्बल काया कठोर या प्रबल उपचार का भार झेलने में सक्षम नहीं थी। इसीलिए ईसा मसीह ने कहा थाः “मुझे तुझसे अभी और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, वे बातें जिन्हें कहना आवश्यक है, किन्तु तुम उन्हें अभी सुन नहीं सकोगे। लेकिन जब वह ’शांतिदायी चेतना’, जिसे दिव्य ’पिता’ द्वारा भेजा जाएगा, आएगा तो वह सत्य को तुम्हारे लिए सरल बना देगा।“[[25]](#footnote-25)

अतः, इस आभामय युग में, जो शिक्षाएँ कुछ लोगों तक ही सीमित थीं उन्हें सबके लिए उपलब्ध करा दिया गया है, ताकि उस ’प्रभु’ की करुणा पूरब और पश्चिम दोनों को समाहित कर सके, ताकि मानवता के विश्व की एकता अपनी सम्पूर्ण सुंदरता के साथ झलक सके और यथार्थ की चकाचैंध भरी किरणें मस्तिष्क के लोक को प्रकाश से आप्लावित कर सके।

’नए येरुशलम’ का आगमन एक स्वर्गिक विधान का सूचक है - उस विधान का जो मनुष्य की प्रसन्नता और ईश्वरीय लोक की प्रखरता की गारंटी देता है।

वास्तव में इमैनुअल[[26]](#footnote-26) ईसा मसीह के दूसरे आगमन का अग्रदूत था और ईश्वरीय साम्राज्य के पथ की ओर आह्वान करने वाला। यह स्पष्ट है कि ’अक्षर’ ’शब्द’ का ही एक सदस्य है और ’शब्द’ में उसकी यह सदस्यता इस बात का परिचायक है कि ’अक्षर’ अपने मूल्य के लिए ’शब्द’ पर आश्रित है, अर्थात उसकी गरिमा उसे ’शब्द’ से ही प्राप्त होती है। सभी ’धर्मदूत’ (एपॉस्टल) ’अक्षरों’ की तरह थे और ख्रीस्त (ईसा मसीह) स्वयं ’शब्द’ के सारतत्व थे और उस ’शब्द’ का अर्थ जो कि अनन्त कृपा है, उन ’अक्षरों’ पर अपनी आभा बिखेरता था। पुनः, चूंकि ’अक्षर’ ’शब्द’ का एक सदस्य है, अतः अपने आभ्यंतरिक अर्थ में वह ’शब्द’ के समरूप है।

हम आशा करते हैं कि तुम इस युग में इमैनुअल द्वारा की गई भविष्यवाणियों को पूरा करने की दिशा में उठ खड़े होगे। यह सुनिश्चित रूप से जान लो कि तुम इस कार्य में सफल होगे क्योंकि ’पवित्र चेतना’ की सम्पुष्टियाँ निरंतर अवतरित हो रही हैं और ’शब्द’ की शक्ति से ऐसा प्रभाव उत्पन्न होगा कि ’अक्षर’ ऐसा दर्पण बन जाएगा जिसमें वह प्रभामय ’सूर्य’ - स्वयं ’शब्द’ - परावर्तित हो उठेगा और उस ’शब्द’ की महिमा और गरिमा पूरी पृथ्वी को आलोकित कर देगी।

जहाँ तक उस स्वर्गिक ’येरुशलम’ की बात है जो विश्व तथा ईश्वर के उस ’पवित्रों में भी पवित्र’ के शिखरों पर विराजमान होने आया है ’जिसकी’ ध्वजा अब उन्नत कर दी गई है, वह अपने दायरे में सभी पूर्णताओं को समाहित किए हुए है और अतीत के सभी धर्मयुगों के समस्त ज्ञान को भी। इससे भी आगे बढ़कर, वह मानव-संतानों की एकता की अग्रघोषणा करता है। यह विश्व शांति की ध्वजा है, अनन्त जीवन की चेतना। यह ईश्वर की परिपूर्णताओं की चेतना है, सर्व-अस्तित्व की वह कृपा जो चारों ओर से आच्छादित किए हुई है, सभी सृजित वस्तुओं को विभूषित करने वाला आभूषण, समस्त मानवजाति के लिए अंतर्तम शांति का स्रोत।

पवित्र पातियों की ओर अपना ध्यान दो, तुम इशराकात, तजल्लियत, स्वर्ग के शब्द (वर्ड्स ऑफ पैराडाइज), सुसमाचार (दि ग्लैड टाइडिंग्स), तराजात, परम पावन ग्रंथ का अध्ययन करो। तब जाकर तुम्हें लगेगा कि आज के युग में ये स्वर्गिक शिक्षाएँ बीमार एवं त्रस्त विश्व के लिए उपचार की तरह हैं और मानवजाति के शरीर के घावों के लिए आरोग्यकारी मलहम। वे जीवन की चेतना हैं, मुक्ति की नौका, अनन्त गरिमा को आकर्षित करने वाले चुम्बक, मनुष्य के आंतरिक ’स्व’ को उत्प्रेरित करने वाली गत्यात्मक शक्ति।

**30**

अस्तित्व दो प्रकार के हैं: एक है ईश्वर का अस्तित्व जो कि मनुष्य की बोध-शक्ति से बाहर है। उस अगोचर, महान और अबोधगम्य का कोई कारण नहीं है लेकिन वह स्वयं सभी कारणों का कारण है। उस पुरातन का कोई आदि नहीं है और वह सबसे परे, स्वतंत्र है। अस्तित्व का दूसरा प्रकार है मानव अस्तित्व। यह एक सामान्य प्रकार का अस्तित्व है जो कि मनुष्य की समझ के दायर में है और जो प्राचीन नहीं है। वह आश्रित है और उसका एक कारण है। नाशवान वस्तु कभी अविनाशी नहीं होती और वैसे ही अविनाशी कभी नाशवान नहीं हो सकता। मनुष्य सृष्टिकर्ता नहीं हो सकता और सृष्टिकर्ता मनुष्य नहीं। सहज अंतर्निहित तत्व का रूपांतरण सम्भव नहीं है।

अस्तित्व के उस लोक में जिसे समझा जा सकता है, नाशवानता के चरण हैं: पहला चरण है जड़ जगत, उसके बाद है वनस्पति जगत। वनस्पति जगत में, जड़ जगत भी मौजूद है लेकिन उसकी अलग विषेशताएँ है - वनस्पति वाली विषेशताएँ। इसी तरह, जीव जगत में जड़ और वनस्पति जगत की विषेशताएँ मौजूद हैं और उनके अलावा जंतु जगत के गुण भी निहित हैं जैसेकि सुनने और देख सकने की क्षमता। मानव जगत में मानव जगत की विशिष्टता यानी वस्तुओं के यथार्थ को तलाशने और सार्वलौकिक सिद्धान्तों को समझ सकने वाली विवेक-बुद्धि के अलावा जड़, वनस्पति और जंतु जगत की विशेषताएँ भी पाई जाती हैं।

अतः, इस क्षणभंगुर विश्व के धरातल पर मानव सबसे परिपूर्ण प्राणी है। मनुष्य का अर्थ है सम्पूर्ण व्यक्ति जो एक ऐसे दर्पण की तरह है जिसमें दिव्य पूर्णताएँ प्रतिबिम्बित होती और झलकती हैं। उस दर्पण में प्रवेश करने के लिए, सूर्य अपनी पावनता की ऊँचाइयों से नीचे नहीं उतरता लेकिन जब दर्पण निर्मल और उस ’सत्य के सूर्य’ की ओर उन्मुख होता है तो उस ’सूर्य’ की पूर्णताएँ, उसका प्रकाश और उसकी उष्मा, उस दर्पण में प्रतिबिम्बित हो उठती हैं। ये आत्माएँ ईश्वर के दिव्य प्रकटीकरण हैं।

**31**

हे प्रिय और बुद्धिमान व्यक्ति! तुम्हारा 27 मई 1906 का पत्र प्राप्त हुआ। उसकी विषय-सामग्री अत्यंत हर्षदायक है।

तुमने यह पूछा है कि क्या यह प्रभुधर्म - यह नया और जीवन्त धर्म - इंग्लैंड के मृतप्राय धार्मिक कर्मकांडों और अनुष्ठानों की जगह ले सकता है। आज जबकि अनेक समूहों का अभ्युदय हो गया है जिनके सदस्य उच्च पदों पर आसीन धर्मविद और धर्मगुरु लोग हैं, जो कि अतीत के धर्माधिकारियों की तुलना में कहीं ज्यादा श्रेष्ठ एवं अध्यात्मविद हैं, तो क्या ऐसी स्थिति में यह नया धर्म उन लोगों को प्रभावित कर सकने और अपनी सर्व-संरक्षणकारी छाया तले उन्हें एकजुट कर सकने में सक्षम हो सकेगा?

हे प्रिय मित्र! तुम यह जान लो कि प्रत्येक युग के विशिष्ट ’व्यक्ति’ अपने युग की पूर्णताओं के अनुसार सम्पन्न होते हैं। विगत युगों में जो ’व्यक्ति’ अपने बंधुओं से श्रेष्ठ समझा गया था वह उसके अपने युग के गुणों के अनुसार था। लेकिन आभाओं के इस युग में, इस ईश्वरीय युग में, सर्वोत्तम ’पुरुष’, ’ज्योतिर्मय वृत्त’, चयनित ’व्यक्ति’ ऐसी परिपूर्णताओं और शक्ति के साथ अपनी चमक बिखेरेगा जिससे अंततः हर समुदाय, हर समूह के लोगों के मनो-मस्तिष्क चकाचैंध से भर उठेंगे। और चूंकि ऐसा व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक पूर्णताओं और स्वर्गिक उपलब्धियों में अन्य सभी लोगों से श्रेष्ठ है, और वस्तुतः दिव्य आशीर्वादों का केंद्रबिंदु और ज्योति-वृत्त की धुरी है, अतः ’वह’ सबको समाहित कर लेगा और इसमें कोई संदेह नहीं कि वह ऐसी शक्ति से चमकेगा कि वह सबको अपनी शरणदायिनी छांह तले एकत्रित कर सकेगा।

जब तुम इस विषय पर सावधानी से विचार करोगे तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि यह एक विश्वव्यापी विधान के अनुसार है जिसे हर चीज में सक्रिय देखा जा सकता हैः वह जो कि सम्पूर्ण है अंश को आकर्षित करता है, और किसी भी वृत्त में उसका केंद्र कम्पास की धुरी होता है। अब तुम उस ’चेतना’ के बारे में विचार करो: चूंकि वह आध्यात्मिक शक्ति का केंद्रबिंदु, दिव्य कृपाओं का स्रोत था, अतः आरम्भ में हालाँकि उसने कुछ ही लोगों को अपने में एकत्रित किया किन्तु बाद में अपनी सर्ववशकारी शक्ति के कारण उसे अपनी ’पावनता के शरणदायी वितान’ तले विभिन्न मत-मतान्तरों को एकजुट कर लेना था। वर्तमान की तुलना उस अतीत से करो और देखो कि कितना बड़ा अन्तर है। क्या इस तरह तुम सत्य और निश्चयात्मकता तक नहीं पहुंच सकते?

दुनिया के विभिन्न धर्मों के बीच जो अन्तर हैं वे विभिन्न विचारों के कारण हैं। जब तक मानस की विभिन्न शक्तियाँ मौजूद हैं तब तक यह भी सुनिश्चित है कि विवेक और विचारों में भी अन्तर मौजूद रहेगा। लेकिन यदि एक विश्वव्यापी बोध-शक्ति प्रस्तुत की जाए - एक ऐसी शक्ति जो बाकी सबको आच्छादित कर ले सके - तो ये विभिन्न मत-मतांतर एक ही आध्यात्मिक समरसता में विलीन हो जाएंगे और एकता परिलक्षित होगी।[[27]](#footnote-27) उदाहरण के लिए, जब ईसा का प्राकट्य हुआ था तो विभिन्न समसामयिक लोगों के दिमाग, उनके विचार, उनकी भावनात्मक अभिवृत्तियाँ एक-दूसरे से भिन्न थीं - चाहे वे रोमन रहे हों या ग्रीक, सीरियाई, इजरायली या अन्य। लेकिन जब उसकी सार्वलौकिक शक्ति का वर्चस्व कायम हुआ तो तीन सौ सालों के बाद वह क्रमशः उन विभिन्न मत-मतांतरों को अपने संरक्षण, अपने अभिशासन और एक ही बिंदु के दायरे में एकजुट करने में कामयाब हुई और सबके हृदयों में समान आध्यात्मिक भावनाओं का आलोड़न होने लगा।

यदि प्रतीकात्मक ढंग से कहें तो जब किसी सेना को अनेक कमाण्डरों के नेतृत्व में रखा जाता है जिनमें से हर एक की अलग रणनीति होती है तो स्पष्ट है कि युद्ध-रेखा पर और टुकड़ियों के संचालन में उनमें अन्तर दिखलाई पड़ेगा लेकिन जब ’सर्वोच्च कमाण्डर’ - जो युद्धकला में पूर्णतया निष्णात है - कमान संभाल लेता है तो बाकी सारी योजनाएँ समाप्त हो जाती हैं क्योंकि वह अत्यंत प्रतिभावान सेनापति सम्पूर्ण सेना को अपने नियंत्रण में ले लेता है। इसे सिर्फ एक दृष्टांत समझा जाना चाहिए न कि वास्तविक तुलना। अब यदि तुम यह कहो कि उन अन्य सेनापतियों में से प्रत्येक सैन्य कला में अत्यंत निपुण है, अत्यंत कुशल और अनुभवी है और इसलिए वह एक व्यक्ति के अधीन नहीं आएगा - चाहे वह कितना भी महान क्यों न हो - तो तुम्हारा यह कथन समुचित नहीं होगा क्योंकि उक्त परिस्थिति का घटित होना अपरिहार्य है और इसमें कोई संदेह नहीं।

ईश्वर के पवित्र प्रकटीकरणों के साथ भी यही बात है। खासतौर पर ’महानतम नाम’, ’आभा सौन्दर्य’ के साथ यही बात है। एकबार जब वे दुनिया के एकत्रित जनों के समक्ष प्रकट हो उठेंगे और चेतना के मिस्र देश (इजिप्ट) में ऐसी परम सौम्यता, मंत्रमुग्ध कर देने वाली शक्ति के साथ अपनी झलक दिखा उठेंगे तो धरती के सभी प्रेमियों को वे अपनी मधुर दासता में बांध लेंगे।

जहाँ तक उन आत्माओं की बात है जिन्होंने इस जीवन में स्वर्गिक एवं प्रखर व्यक्तित्व के रूप में जन्म लिया है किन्तु फिर भी जो संकटों और परीक्षाओं के कारण महान एवं वास्तविक लाभों से वंचित होकर इस दुनिया से कूच कर गए हैं - वास्तव में यह दुःख की बात है। यही कारण है कि ईश्वर के सार्वलौकिक प्रकटीकरण मनुष्य के समक्ष अपने मुखड़ों को प्रकट करते हैं, दुःख और विपदाएँ झेलते हैं और अपनी कुर्बानी के रूप में अपना जीवन त्याग कर चले जाते हैं ताकि ऐसे लोग, ऐसे तत्पर लोग जिनके पास क्षमता है, प्रकाश के उदय-स्थल बन सकें, और वे उन्हें अमर जीवन का वरदान दे सकें। यही सच्चा त्याग हैः स्वयं अपना निसर्ग कर देना, जैसाकि इस विश्व के जीवन के प्रति अपने त्याग-स्वरूप ईसा मसीह ने किया था।

जहाँ तक मानव-देह त्याग देने के बाद मानवजाति पर इन पवित्र अवतारों द्वारा पड़ने वाले प्रभाव और मानव-शरीर रूपी चोला छोड़कर चले जाने के बाद उनकी दया की मुख-भंगिमा का प्रश्न है, बहाइयों के लिए यह एक अकाट्य सत्य है। वस्तुतः, पवित्र प्रकटावतारों की असीम करुणा और अपार आभा इस संसार से उनके तिरोहित हो जाने के बाद ही अतिशयता से प्रवाहित होती है। ईश्वरीय शब्द की महत्ता, परमेश्वर की शक्ति का प्रकटीकरण, ईश्वर से भय खाने वाले लोगों का धर्म-परिवर्तन, अनन्त जीवन का वरदान - ये सब बातें ईसा मसीह के शहीद होने के बाद ही प्रबल रूप से प्रकट हो सकी थीं। इसी तरह, ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ के निधन के बाद उनकी कृपाएँ और भी प्रचुरता से प्रकट हुई हैं, उनका सर्वत्र फैलने आला प्रकाश और अधिक प्रखर हुआ है, प्रभु की सामर्थ्‍य के संकेत और अधिक सशक्त होकर उभरे हैं, ईश्वरीय वाणी का प्रभाव और प्रबल हुआ है और वह दिन दूर नहीं जबकि उनके यथार्थ के ’सूर्य’ की कृपाएं, उसकी गति, उष्मा और प्रखरता इस समस्त धरती को आच्छादित कर लेंगी।

उस भूभाग पर बहाई धर्म की मंद प्रगति से तू दुःखी न हो। यह तो अभी प्रभात की बेला है। जरा विचार करो कि ईसा मसीह के धर्म के मामले में कैसे तीन सौ साल गुजर गए और तब कहीं जाकर उसका महान प्रभाव प्रकट हुआ। आज इस धर्म के अभ्युदय के अभी तक साठ साल भी पूरे नहीं हुए हैं और इसके प्रकाश ने समस्त धरती को आच्छादित कर लिया है।

जहाँ तक उस ’हेल्थ सोसायटी’ का सम्बन्ध है जिसके तुम सदस्य हो, जैसे ही वह प्रभुधर्म के शरण तले आ जाएगा उसके प्रभाव में सौ गुणा बढ़ोत्तरी होगी।

तुमने यह गौर किया है कि बहाइयों के बीच अगाध प्रेम है और यह कि प्रेम ही मुख्य वस्तु है। जैसे बहाइयों के बीच प्रेम की शक्ति इतनी प्रगाढ़ हो चुकी है, और वह अन्य धर्म के लोगों की तुलना में अधिक प्रबल है, वैसे ही अन्य लोगों के साथ भी है क्योंकि प्रेम ही सभी बातों का आधार है।

जहाँ तक ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ के ग्रंथों और पातियों के अनुवाद का सवाल है, बहुत ही जल्द सभी भाषाओं में सशक्त, सुस्पष्ट और सुन्दर अनुवाद उपलब्ध हो जाएंगे। जब मूल पाठों के अनुसार उनका सुन्दर और गरिमामय अनुवाद हो जाएगा तो उनके आंतरिक अर्थ की आभाएँ देश-विदेश में अपनी प्रखरता झलकाने लगेंगी और पूरी मानवजाति के नेत्रों को प्रकाशित करके रख देंगी। अपनी ओर से यह पूरा प्रयास करो कि अनुवाद मूल पाठ के एकदम अनुरूप हों।

’आशीर्वादित सौन्दर्य’ कई अवसरों पर हाइफा की ओर अग्रसर हुए। तुम उन्हें वहां देखते थे लेकिन उस वक्त तुम उन्हें जानते नहीं थे। मेरी यह आशा है कि उनके साथ तुम्हारी सच्ची मुलाकात हो सकेगी, यानी अपने आंतरिक नेत्रों से उन्हें देखना न कि बाहरी नेत्रों से।

बहाउल्लाह की शिक्षाओं का सार-तत्व है सबको समेट लेने वाला प्रेम क्योंकि प्रेम में मानवजाति की सभी उत्तमताओं का समावेश है। यह प्रत्येक आत्मा को उन्नत करता है। यह प्रत्येक को अनन्त जीवन की विरासत प्रदान करता है। बहुत ही जल्द तुम यह देख सकोगे कि उनकी स्वर्गिक शिक्षाएं जो कि स्वयं में यथार्थ की गरिमा को समेटे हुई हैं, पूरे विश्व के आकाश को प्रकाशित करके रख देंगी।

अपने पत्र के अंत में तुमने जो संक्षिप्त प्रार्थना लिखी है वह वास्तव में मौलिक, सुन्दर और मर्मस्पर्शी है। तुम सदा इस प्रार्थना का पाठ किया करो।

**32**

हे प्रभु की सेविकाओं! इस शताब्दी में - इस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सदी में - ’उच्च लोकों का दिवानक्षत्र’, ’सत्य का प्रकाश’ मध्याह्न की प्रखर आभा के साथ जगमगा उठा है और उसकी किरणें सभी क्षेत्रों को ज्योतिर्मय कर रही हैं, क्योंकि यह ’पुरातन सौन्दर्य’ (बहाउल्लाह) का युग है, ’महानतम नाम’ की शक्ति और सामर्थ्‍य के प्रकटीकरण का युग है - मेरा जीवन उनके प्रियजनों पर बलि हो जाए!

आने वाले युगों में, हालाँकि प्रभुधर्म का विकास और उत्थान सैकड़ों गुणा होगा और ’सद्रतुल-मुन्तहां’ की छांह समस्त मानवजाति को अपनी शरण में ले लेगी किन्तु फिर भी इस वर्तमान सदी का महत्व अपनी जगह अक्षुण्ण रहेगा क्योंकि यह सदी उस ’प्रभात’ के फूटने और उस ’सूर्य’ के उदय का गवाह रही है। वस्तुतः, यह सदी ’उसके प्रकाश’ का उद्गम और उसके प्रकटीकरण का दिवास्रोत रही है। आने वाले युग और भविष्य की पीढ़ियाँ उसकी प्रखर ज्योति के प्रसार और उसके संकेतों के प्रकटीकरण का साक्षी बनेंगी।

अतः, अपना पूरा प्रयास कर ताकि तू कदाचित उसके अनुदानों का पूर्ण अंश प्राप्त कर सके।

**33**

हे ईश्वर के सेवक! हमने गौर किया है कि तुमने जनाब-ए-इब्न-अबहर को क्या लिखा है और उस श्लोक पर भी ध्यान दिया हैः “पूरे हजार वर्षों की परिसमाप्ति से पूर्व जो कोई भी ईश्वर का प्रत्यक्ष अवतार होने का दावा करेगा, वह व्यक्ति निस्संदेह झूठ बोलने वाला एक पाखंडी होगा।“

इसका यह अर्थ है कि पूरे हजार वर्षों - और वर्षों की यह गणना स्पष्ट रूप से सामान्य प्रयोग के अनुसार है जिसके लिए अलग से कोई अर्थ निकालने की जरूरत नहीं है - के समाप्त होने से पहले यदि कोई व्यक्ति ईश्वर का प्रत्यक्ष अवतार होने का दावा करे और भले ही खास चिह्नों को प्रकट करे तो भी वह व्यक्ति निस्संदेह मिथ्या और पाखंडी होगा।

इसका तात्पर्य विश्वव्यापी प्रकटावतारों से नहीं है क्योंकि यह तो पवित्र लेखों में स्पष्ट रूप से अंकित है कि शताब्दियाँ, नहीं, बल्कि हजारों वर्ष बीत जाएंगे और तब कहीं जाकर इस ’प्रकटावतार’ की तरह किसी अन्य ’प्रकटावतार’ का आविर्भाव होगा।

लेकिन यह सम्भव है कि पूरे हजार वर्षों की परिसमाप्ति के बाद, कुछ ’पवित्र आत्माओं’ को ’प्रकटीकरण’ प्रदायन की शक्ति से सम्पन्न बनाया जा सकेगा किन्तु यह कार्य किसी ’विश्वव्यापी प्रकटावतार’ के माध्यम से नहीं होगा। अतः ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ (बहाउल्लाह) के धर्मचक्र का प्रत्येक दिन वास्तव में एक वर्ष के बराबर है और उसका प्रत्येक वर्ष एक हजार वर्षों के बराबर है।

उदाहरण के लिए, सूर्य के बारे में विचार करोः एक राशि से दूसरी राशि में उसका संक्रमण अल्प अवधि के दायरे में ही होता है लेकिन बहुत समय बीत जाता है जबकि सिंह राशि में जाकर वह अपनी चरम कांति, उष्मा और गरिमा प्राप्त करता है। पुनः सिंह राशि में प्रवेश करने के लिए उसे पहले अन्य तारामण्डलों से होकर एक पूरा परिभ्रमण समाप्त करना होगा ताकि वह अपनी पूरी आभा से प्रदीप्त हो सके। अपने अन्य अवस्थानों में वह अपनी उष्मा और प्रकाश की चरमता प्रकट नहीं कर पाता।

सारांश यह है कि हजार वर्षों के समाप्त होने से पहले कोई भी व्यक्ति (दिव्य) रहस्य प्रकट करने वाला नहीं माना जा सकता। सबको यही समझना होगा कि वे आज्ञापालकों की कतार में हैं, ईश्वर की आज्ञाओं और विश्व न्याय मन्दिर के विधानों के प्रति समर्पित और आज्ञाकारी। यदि विश्व न्याय मन्दिर के आदेशों के पालन से कोई सूई के नोक भर भी विचलित हो तो वह बहिष्कृत और खारिज समझा जाएगा।

जहाँ तक “आशीर्वादित सौन्दर्य” के धर्मचक्र, ’महानतम नाम’ के युगाब्द, का सवाल है, वह एक हजार या दो हजार वर्षों तक परिसीमित नहीं है।

जब यह कहा जाता है कि हजार वर्षों की अवधि “आशीर्वादित सौन्दर्य के प्रकटीकरण” से आरम्भ होती है और उसका प्रत्येक दिन हजार वर्षों के बराबर है तो उसका अभिप्राय आशीर्वादित सौन्दर्य के धर्मचक्र का संदर्भ देना है जो कि इस प्रसंग में समय के अजन्मे विस्तार में अनेक युगों तक चलता रहेगा।

**34**

हे तू मानव-जगत की सेवा में तल्लीन रहने वाले! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ और उसकी विषय-वस्तु से हम अत्यन्त आनन्दित हुए। वह एक निर्णायक और प्रखर प्रमाण था। यह समुचित ही है कि इस प्रकाशित युग में - मानव जगत की प्रगति के इस युग में - हमें आत्म-त्याग की भावना से सम्पन्न होना चाहिए और मानवजाति की सेवा में जुट जाना चाहिए। प्रत्येक विश्वव्यापी धर्म दिव्य है और हर विशिष्ट धर्म क्षणभंगुर प्रकृति का। अतः, ईश्वर के दिव्य प्रकटावतारों के सिद्धान्त सार्वलौकिक एवं सबको समाहित करने वाले थे।

हर अपूर्ण व्यक्ति आत्म-केन्द्रित एवं केवल अपने बारे में सोचने वाला होता है। लेकिन जब उसके विचारों का थोड़ा विस्तार होता है तो वह अपने परिवार के कल्याण और उनकी सुविधा के बारे में सोचने लगता है। जब उसके विचार और अधिक विस्तृत हो जाते हैं तो वह अपने बंधु नागरिकों की प्रसन्नता के बारे में सोचने लगता है और यदि विचारों में और ज्यादा व्यापकता आ जाए तो वह अपने देश और अपनी पूरी प्रजाति का गौरव बढ़ाने पर ध्यान देगा। लेकिन विचार और दृष्टिकोण अत्यंत ही अधिक व्यापक हो जाते हैं और परिपूर्णता की दशा प्राप्त कर लेते हैं तो वह व्यक्ति सम्पूर्ण मानवजाति को गरिमा प्रदान करने के लिए उत्सुक हो उठता है। फिर वह सभी लोगों का हितैषी और सभी भूभागों का कल्याण और समृद्धि चाहने वाला व्यक्ति बन जाता है। यह पूर्णता का परिचायक है।

इस तरह, ईश्वर के दिव्य प्रकटीकरणों की एक विश्वव्यापी एवं सर्व-समावेशकारी अवधारणा थी। उन्होंने हर व्यक्ति के जीवन के लिए प्रयास किया और विश्वव्यापी शिक्षा की सेवा में निरत हुए। उनके उद्देश्यों का क्षेत्र सीमित नहीं था - नहीं, बल्कि वह विस्तृत एवं सबको समेट लेने वाला था।

अतः, तुम्हें भी हर किसी के बारे में सोचना चाहिए ताकि मनुष्य जाति को शिक्षित किया जा सके, चरित्र को मर्यादित किया जा सके और यह विश्व “स्वर्ग के उद्यान” में बदल जा सके।

सभी धर्मों और सभी प्रजातियों से सच्चा प्रेम कर और उस प्रेम को अपने आचरण-व्यवहार से झलका न कि केवल शब्दों द्वारा, क्योंकि केवल शब्दों का कोई महत्व नहीं है क्योंकि बोली में तो ज्यादातर लोग हितैषी प्रतीत होते हैं लेकिन कर्म ही श्रेयस्कर है।

**35**

हे ईश्वर के सैन्य-समूह! तुम सभी के संयुक्त हस्ताक्षर वाला पत्र प्राप्त हुआ। वह बहुत ही सुन्दर एवं प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखा गया था और उसे पढ़ना आनंददायक प्रतीत हुआ।

तुमने उपवास के महीनों के बारे में लिखा है। तुम सब भाग्यशाली हो कि तुमने ईश्वर की आज्ञा का पालन किया है और पवित्र माह में यह उपवास रखा है। यह भौतिक उपवास आध्यात्मिक उपवास का बाहरी संकेतक है। यह आत्म-नियंत्रण का प्रतीक है - स्वयं को अपनी सभी भूखों से रोक रखने, चेतना की विशेषताओं को ग्रहण करने, स्वर्ग के उच्छवासों से उत्प्रेरित होने और ईश्वरीय प्रेम की अग्नि से उद्दीप्त होने का प्रतीक।

तुम्हारे पत्र से तुम्हारी एकता और हृदयों की घनिष्ठता भी सूचित होती है। मेरी आशा है कि इस नए युग में ईश्वर द्वारा जो असीम कृपा उड़ेली गई है उसके माध्यम से पश्चिम पूरब बन जाएगा यानी ’सत्य के सूर्य’ का उदय-स्थल और पश्चिम के धर्मानुयायी उसके प्रकाश के दिवास्रोत, और ईश्वर के संकेतों को प्रकट करने वाले। वे असावधान लोगों के संदेहों से संरक्षित रहेंगे और ईश्वर के प्रमाण और उसकी संविदा में दृढ़ एवं अटल बने रहेंगे, जब तक वे सोए हुए लोगों को जगा नहीं देते, असावधानों को सजग नहीं बना देते और बहिष्कृतों को अंतःपरिधि के अभिन्न सखा नहीं बना देते और दरिद्र जनों को अपनी अनन्त करुणा का अंशदान नहीं दे देते तब तक वे रात-दिन अपना अथक प्रयास जारी रखेंगे। काश कि वे प्रभु-साम्राज्य के अग्रदूत बनें और इस निम्न जगत के निवासियों को पुकार उठें और उच्च लोक के साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए उनका आह्वान कर सकें।

हे ईश्वर की सेना! आज इस दुनिया में हर व्यक्ति अपनी ही मरुभूमि में भटक रहा है, अपनी सनक और कल्पनाओं के इशारे पर इधर-उधर डोलता हुआ, अपने निहित लोभ-लालच के पीछे भागता हुआ। धरती के सभी समुदायों के बीच, केवल ’महानतम नाम’ का यह समुदाय ही मानवीय परिकल्पनाओं से मुक्त और स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से रहित है। उन सबके बीच ये ही वे लोग हैं जो स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों से पूर्णतया मुक्त होकर, ईश्वर की शिक्षाओं का अनुगमन करते हुए, इस धूल भरी धरती को स्वर्ग में बदल देने, इस संसार को प्रभु-साम्राज्य का दर्पण बनाने, इस दुनिया को एक दूसरी ही दुनिया में परिवर्तित कर देने और समस्त मानवजाति को सच्चरित्रता एवं नई जीवन-शैली का मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित करने के एक समान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अत्यंत उत्कृष्टता से प्रयासरत हैं।

हे ईश्वर की सेना! “आशीर्वादित सौन्दर्य” - काश कि मेरा जीवन उनके प्रियजनों पर बलि हो जाए - की रक्षा और सहायता के सहारे तुम्हें हमेशा ऐसा आचरण करना चाहिए कि तुम अन्य लोगों के बीच सूर्य की तरह प्रखर और विशिष्ट दिख सको। यदि तुझमें से कोई किसी नगर में प्रविष्ट करे तो अपनी निष्ठा, प्रेम और वफादारी, ईमानदारी, सत्यवादिता और दुनिया के सभी लोगों के प्रति अपनी स्नेहमयी दयालुता के कारण सबके आकर्षण का केन्द्र बन जाए ताकि उस नगर के लोग यह पुकार उठें कि “यह व्यक्ति बेशक एक बहाई है क्योंकि उसके तौर-तरीके, उसका व्यवहार, उसका आचरण, उसके नैतिक गुण, उसका स्वभाव और चरित्र सब कुछ बहाइयों के गुणों को झलकाते हैं।“ जब तक तुम इस दर्जे तक नहीं पहुंच जाते तब तक तुम्हें ईश्वर के प्रमाण और उसकी संविदा के प्रति निष्ठावान नहीं कहा जा सकता। क्योंकि अपने अकाट्य पाठों के माध्यम से “वह” हम सबके साथ एक अनिवार्य संविदा से जुड़ा हुआ है जिसकी यह अपेक्षा है कि हम उसके पवित्र निर्देशों और परामर्शों के अनुसार आचरण करें।

हे ईश्वर की सेना! इस सर्वश्रेष्ठ युग में “महानतम नाम” के प्रभावों और पूर्णताओं को प्रकट किए जाने का वक्त आ गया है, ताकि यह निर्विवाद रूप से स्थापित किया जा सके कि यह युग बहाउल्लाह का युग है और यह युग अन्य सभी युगों से विशिष्ट है।

हे ईश्वर के सैन्य-समूह! जब कभी तुम्हें ऐसा व्यक्ति दिखाई पड़े जिसका सम्पूर्ण ध्यान प्रभुधर्म की ओर लगा हुआ है, जिसका एकमात्र उद्देश्य ईश्वर की वाणी को प्रभावी बनाना है, जो रात-दिन नेक इरादे के साथ प्रभुधर्म की सेवा में जुटा हुआ है, जिसके व्यवहार से अहंकार या स्वार्थ का लव-लेश मात्र भी नहीं झलकता हो, बल्कि जो एक दीवाने की तरह ईश्वर के प्रेम के एकान्त-क्षेत्र में विचरण कर रहा हो और केवल परमात्मा के ज्ञान रूपी प्याले से पान कर रहा हो, और जो परमेश्वर की सुमधुर सुरभि के प्रसार में पूरी तरह तल्लीन हो और प्रभु-साम्राज्य के पावन श्लोकों से मोहित हो - तू यह सुनिश्चित रूप से जान ले कि ऐसे व्यक्ति को स्वर्ग का सहारा और समर्थन प्राप्त होगा, ताकि अनन्त कृपा के आकाश से वह एक ध्रुवतारे की तरह सदा-सर्वदा अपनी कांति बिखेरता रहे। किन्तु यदि वह स्वार्थपूर्ण लालसाओं और आत्म-प्रेम की जरा भी झलक दिखाए तो उसके प्रयास व्यर्थ जाएंगे और अंततः वह खिन्नता को ही प्राप्त होगा।

हे ईश्वर की सेना! परमात्मा का गुणगान हो, बहाउल्लाह ने मानवजाति की गर्दन पर से जंजीरों को उतार फेंका और उसे दासता में बांधने वाली सभी बेड़ियों से आजाद कर दिया और उन्होंने उसे यह बतायाः तुम सब एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाख की पत्तियाँ हो, तुम समस्त मानवजाति के प्रति दयालु और स्निग्ध बनो। अजनबी लोगों के साथ भी तुम वैसा ही व्यवहार करो जैसाकि तुम मित्रों के साथ करते हो, दूसरों को भी वैसे ही खुश रखो जैसे अपनों को। दुश्मनों को अपना दोस्त समझो, असुरों को देवदूत के रूप में देखो, अत्याचारी को भी वही महान प्रेम दो जो तुम सच्चे और वफादार लोगों के प्रति झलकाते हो और खता और खुतान[[28]](#footnote-28) नामक सुगंधित नगरों के हरिणों की तरह, कर्कश भेड़ियों को भी कस्तूरी की मोहक सुरभि प्रदान करो। भयभीतों के लिए तू शरण-स्थली बन, चिन्तातुरों को आराम और विश्रांति तथा दरिद्रों के लिए आहार दे, गरीबों के लिए धन का आगार बन, दर्द से कराहते हुए लोगों के लिए आरोग्यकारी औषधि बन, बीमारों के लिए चिकित्सक और परिचारक बन और इस अस्तित्वहीन संसार में तू बंधुता, सम्मान, सहमति तथा ईश्वर के प्रति भक्ति को प्रोत्साहित कर।

 हे परमेश्वर के सैन्य-समूह! तू जोरदार प्रयास कर: कदाचित तू इस धरती को प्रकाश से आप्लावित कर ले, कदाचित माटी की यह दुनिया आभा-स्वर्ग में बदल जाए। अंधेरा घिर आया है और नृशंसता का राज्य छा गया है। मनुष्य की यह दुनिया जंगली जानवरों का अखाड़ा बनकर रह गया है - एक ऐसा क्षेत्र जहाँ अज्ञानी, असावधान लोग बहती गंगा में हाथ धो रहे हैं। लोगों की आत्माएँ लोलुप भेड़ियों और अंधे जानवरों की तरह हो गई हैं। वे प्राणघातक जहर या फिर बेकार के घास-फूस की तरह हैं - सिवाय उन थोड़े से लोगों के जो वास्तव में परोपकार के उद्देश्यों और अपने बंधु-बांधवों के कल्याण की योजनाओं में लगे हुए हैं। लेकिन तुम्हें चाहिए कि मानवजाति की सेवा के इस कार्य में अपना जीवन निसर्ग कर दो और ऐसा करके प्रसन्नता का अनुभव करो।

हे परमेश्वर की सेना! परम उदात्त दिव्यात्मा बाब ने अपना जीवन बलिदान कर दिया। “आशीर्वादित पूर्णता” (बहाउल्लाह) ने अपनी हर सांस पर अपना सैकड़ों जीवन कुर्बान किया। उन्होंने संकटों को झेला। वे यंत्रणाओं के शिकार हुए। उन्हें कैद में रखा गया। उन्हें जंजीरों में जकड़ा गया। उनका घर-बार छीनकर दूर देशों में निष्कासित कर दिया गया। और अंत में उन्होंने अपना शेष जीवन ’महानतम कारागार’ में बिताया। इसी तरह, ईश्वर से प्रेम करने वाले और इस पथ का अनुगमन करने वाले असंख्य लोगों को शहादत का मधु चखना पड़ा और उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग दिया - जीवन, धन-सम्पत्ति, परिजन और अपना सब कुछ। न जाने कितने घरों को मटियामेट कर दिया गया, कितने ठिकानों को तोड़-फोड़ दिया गया, न जाने कितने भव्य घरों को धराशायी कर दिया गया, न जाने कितने महलों को ढहा कर कब्र में बदल दिया गया। और यह सब कुछ इन कारणों से कि मनुष्य जाति को प्रकाशित किया जा रहा है, अज्ञानियों को ज्ञान से सुसज्जित किया जा रहा है, धरती के लोगों को स्वर्ग के लोगों के रूप में ढाला जा रहा है, विवाद और असहमति की जड़ों को खत्म किया जा रहा है और पूरे विश्व में शांति का साम्राज्य कायम किया जा रहा है। तू अब यह प्रयास कर कि यह कृपा अपनी झलक दिखा सके और समस्त मानव-समुदाय में इस सर्वोत्तम आशा को साकार रूप दिया जा सके।

हे ईश्वरीय सैन्य-समूह! सावधान कि तू कहीं किसी आत्मा को उत्पीड़ित न कर दे, या किसी के दिल को न दुखा दे, सावधान कि कहीं तू किसी व्यक्ति को अपनी वाणी से मर्माहत न कर दे - चाहे वह तेरा परिचित हो या अजनबी, मित्र या शत्रु। तू सबके लिए प्रार्थना कर, यह याचना कर कि सबको आशीर्वाद और क्षमा प्राप्त हो। सावधान, सावधान, तुझमें से कोई भी किसी से प्रतिशोध लेने की कामना न करे - उससे भी नहीं जो तुम्हारे खून का प्यासा हो। सावधान, सावधान, तू कहीं किसी की भावना को आहत न कर दे चाहे वह परम दुष्ट और तेरा अहित चाहने वाला क्यों न हो। तू जीवों की ओर न देख, सृष्टिकर्ता की ओर निहार। कभी कोई सुफल न देने वाले लोगों पर निगाह न डाल बल्कि ’आतिथेयों के प्रभु’ की ओर दृष्टि कर। नीचे धूल की दुनिया को न देख बल्कि ऊपर जगमगाते हुए सूरज पर दृष्टिपात कर जिसने अंधकारमय धरती के कोने-कोने को प्रकाश से चमका दिया है।

हे ईश्वरीय सैन्य-समूह! जब संकट सामने आएं तो धैर्य और शांति से काम ले। तुम्हारी यातनाएँ चाहे जितनी भी कष्टदायक क्यों न हों, तू परेशान न हो और परमात्मा की असीम कृपा में सम्पूर्ण विश्वास के साथ तू यातनाओं के बवंडर और हर दुःखदायी अग्नि-परीक्षा का बहादुरी से सामना कर।

पिछले साल अन्दर और बाहर के कई निष्ठाहीन लोगों ने, जिनमें से कई हमारे परिचित और कई अजनबी भी थे, इन बेघर निर्वासितों के खिलाफ तुर्की के सुल्तान के समक्ष कलंकित कर देने वाले आरोप प्रस्तुत किए और उन्होंने हम पर कई गम्भीर आरोप लगाए जो निराधार थे। सरकार ने दूरदर्शिता के अनुरूप आचरण करते हुए इन आरोपों की जाँच करने का निर्णय लिया और तहकीकात के लिए इस शहर में अपना एक जाँच आयोग भेजा। स्पष्ट है कि इससे हमारा बुरा चाहने वालों को प्रचुर अवसर प्राप्त हो गया और उन्होंने ऐसा तूफान उठा दिया कि लेखनी या वाणी से उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिसने देखा वही जान सकता है कि उन्होंने कैसा उपद्रव मचाया और परिणामस्वरूप दुःख का कैसा भूचाल उठ गया। और इन सबके बावजूद, इसका एकमात्र प्रत्युत्तर था पूरी तरह ईश्वर पर निर्भर होना और इस कदर शांत-सुस्थिर, आत्म-विश्वास से पूर्ण, यातनाओं को चुपचाप झेलते हुए अबाधित बने रहना कि स्थिति से अनभिज्ञ व्यक्ति को यही लगता कि हम कितने शांत मनो-मस्तिष्क के लोग, पूर्णतया प्रसन्न, खुशहाल और चैन से जीने वाले लोग हैं।

फिर कुछ ऐसा हुआ कि दोष मढ़ने वाले लोग खुद ही - जिन्होंने हमारे खिलाफ अपमानजनक आरोप लगाए थे - आरोपों की जाँच के लिए आयोग के सदस्यों के साथ मिल गए - इस तरह कि मुद्दई, गवाह और न्यायाधीश सब एक ही लोग हो गए और निष्कर्ष कुछ रहा ही नहीं। लेकिन फिर भी, सच्ची बात यह है कि तुर्की के महामहिम सुल्तान ने इन मिथ्या आरोपों, इस अवमानना, इन झूठे किस्सों और विद्वेषपूर्ण बातों पर कोई ध्यान ही नहीं दिया और उन्होंने न्याय की भावना से कार्य किया.......

हे दिव्य प्रदाता प्रभु! तुमने पश्चिम के मित्रों के ऊपर ’पवित्र चेतना’ की मधुर सुरभि का उच्छवास प्रवाहित किया है और उन्हें दिव्य मार्गदर्शन का प्रकाश दिखाया है। तुमने पश्चिम के आकाश को आलोकित किया है। जो लोग कभी दूर हो गए थे उन्हें तुमने अपने पास बुला लिया है, तुमने अजनबियों को प्रेमी मित्रों में बदल डाला है, जो सोए पड़े थे उन्हें तूने जगा दिया है, तूने असावधानों को सजग बना दिया है।

हे तू दिव्य प्रदाता! इन नेक मित्रों को तू अपनी सत्कृपा प्राप्त करने में सहायता दे और उन्हें अजनबियों और मित्रों दोनों का एक समान हितैषी बना दे। उन्हें चिर शाश्वत संसार का निवासी बना, उन्हें स्वर्गिक कृपा का अंशदान दे, उन्हें सच्चा बहाई और ईश्वर के प्रति निष्ठावान बन जाने दे, उन्हें केवल बाहर से नहीं बल्कि भीतर से रूपांतरित कर और उन्हें सत्य के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक स्थापित कर। उन्हें ईश्वरीय साम्राज्य के चिह्न और संकेत बना, इस निम्न लोक के क्षितिजों के ऊपर उन्हें प्रदीप्त सितारे बना। उन्हें मानवजाति के लिए चैन और सांत्वना बनने दे और विश्व शांति का सेवक। उन्हें अपने परामर्श की मदिरा से स्पंदित कर और यह वरदान दे कि वे सब तेरी आज्ञाओं के पथ पर चलें।

हे दिव्य प्रदाता! तेरी दहलीज के इस सेवक की सबसे उत्कट इच्छा यही है कि वह पूरब और पश्चिम के सभी मित्रों को एक-दूसरे से घनिष्ठतापूर्वक गले मिलते देख सके, यह देख सके कि मानव समाज के सभी सदस्य एक महान सम्मिलन में प्रेम से एकजुट हो गए हैं जैसे पानी की अलग-अलग बूंदें एक महासागर में जा मिली हों, उन सबको एक गुलाब-वाटिका में चहचहाते पक्षियों के रूप में देख सकें, एक महासागर के मोतियों के रूप में, एक पेड़ के पत्तों, एक सूर्य की किरणों के रूप में।

तुम सामर्थ्‍यवान हो, शक्तिशाली हो, और तुम शक्ति के परमेश्वर हो, सर्वदर्शी।

**36**

हे ईश्वर की दो कृपाप्राप्त सेविकाओं! मदर बीकर का पत्र प्राप्त हुआ है और वस्तुतः उसमें तुम दोनों के बारे में कहा गया था, इसलिए यह पत्र मैं तुम दोनों को सम्बोधित कर रहा हूँ। मुझे यह बहुत अच्छा लग रहा है कि तुम दोनों पावनहृदय एक ही मूल्यवान रत्न की तरह रह रही हो, तुम दोनों एक ही वृक्ष से फूटी हुई दो शाखाओं की तरह हो, तुम दोनों एक ही ’प्रियतम’ की आराधना में लीन हो, तुम दोनों एक ही प्रकाशमय ’सूर्य’ के लिए उत्कंठित हो।

मेरी यह आशा है कि उस क्षेत्र में निवास करने वाली ईश्वर की सभी सेविकाएँ एक असीम सागर की लहरों की तरह एक हो जाएंगी क्योंकि हालाँकि हवा के झोंकों से उन्हें भले ही अलग-अलग कर दिया गया हो किन्तु वे सब समान गहनता से एकाकार हैं।

यह कितना अच्छा होगा कि सभी मित्र प्रकाश की लहरों की तरह घनिष्ठ हो जाएँ और काश कि वे एक सुदृढ़ अनवरत रेखा में एक-दूसरे के साथ-साथ खड़े हों। क्योंकि अब अस्तित्व-जगत के ’सूर्य’ के यथार्थ की किरणों ने इस प्रकाश की उपासना करने वाले सभी लोगों को आराधना के भाव से एकजुट कर दिया है और अनन्त कृपा के माध्यम से इन किरणों ने सभी लोगों को अपनी दूर-दूर तक विस्तृत शरण-स्थली में एकत्रित कर दिया है। अतः सभी आत्माओं को एकसूत्रता में बंध जाना चाहिए और सभी हृदयों को मिल कर एक हृदय के समान बन जाना चाहिए। सभी लोग उन विविध पहचानों से मुक्त हो जाएँ जिनका जन्म लालसाओं और कामनाओं से हुआ था और ईश्वर के प्रेम की अपनी एकता में वे जीवन का एक नया मार्ग प्राप्त करें!

हे ईश्वर की तुम दो सेविकाओं! अब समय आ गया है कि तुम कोर तक छलकते हुए उदार प्यालों की तरह बन जाओ और आभा-स्वर्ग से प्रवाहित होते हुए हवा के झोंकों की तरह पूरे भूभाग पर कस्तूरी-सुरभि का प्रसार करो। स्वयं को इस संसार के जीवन से मुक्त कर लो और हर चरण पर अनस्तित्व की कामना करो, क्योंकि जब किरण सूर्य की ओर वापस लौट जाती है तो उसका अस्तित्व नहीं रहता और जब बूंद सागर में मिल जाता है तो वह विलीन हो जाता है, और जब सच्चा प्रेमी अपने ’प्रियतम’ को प्राप्त कर लेता है तो वह अपनी आत्मा को निसर्ग कर देता है।

जब तक कोई व्यक्ति त्याग की भूमि में अपने पैर नहीं रख देता तब तक उसे किसी कृपा या करुणा की प्राप्ति नहीं होती और त्याग की यह भूमि है अपने प्रति मृत हो जाने का संसार और तब कहीं जाकर जीवन्त परमात्मा की कांति जगमगा उठती है। एक शहीद का क्षेत्र अपने आप से अनासक्ति का क्षेत्र है ताकि अनन्तता का गान गुंजरित हो सके। अपने आप से अनासक्त होने का यथासम्भव प्रयास कर और स्वयं को “आभाओं की मुखमुद्रा” के प्रति आसक्त कर ले और एक बार जब तू दासता की उन ऊँचाइयों को प्राप्त कर लेगी तो तुझे हर रचित वस्तु अपनी छाया तले मिल जाएगी। यह असीम कृपा है, यह महानतम सम्प्रभुता है, यह अनन्त जीवन है। इसके सिवा अन्य सब कुछ स्पष्ट रूप से विद्रोह और घोर क्षति है।

ईश्वर का गुणगान हो, अनन्त कृपा के द्वार उन्मुक्त खोल दिए गए हैं, स्वर्गिक मेज तैयार कर दिया गया है, उस ’दयालु’ के सेवक और उसकी सेविकाएं सहभोज के लिए उपस्थित हैं। इस अनन्त आहार में से अपना अंश पाने के लिए प्रयास कर ताकि इस लोक और परलोक में तुझसे प्रेम किया जा सके और तेरा स्मरण किया जा सके।

**37**

हे अब्दुल बहा के प्रिय मित्रों! आपकी ओर से एक आशीर्वादित पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें आपने एक आध्यात्मिक सभा के चुनाव के बारे में बताया है। ईश्वर का गुणगान हो! यह सुनकर मेरा हृदय आनन्दित हुआ है कि उस क्षेत्र के मित्रों ने अत्यंत एकता, बन्धुता और प्रेम की भावना से यह नया चुनाव सम्पन्न किया है और ऐसे मित्रों को निर्वाचित करने में सफल हुए हैं जो पवित्र हृदय हैं, पावन दहलीज के प्रियपात्र हैं और मित्रों के बीच संविदा में सुदृढ़ और पक्के अनुयायी माने जाते हैं।

अब इन निर्वाचित प्रतिनिधियों को चाहिए कि वे उल्लास और आध्यात्मिकता की भावना, शुद्ध नीयत, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सुरभि के प्रति सशक्त आकर्षण और पवित्र चेतना से अच्छी तरह सहायता के साथ सेवा के लिए उठ खड़े हों। उन्हें मार्गदर्शन की ध्वजा को ऊपर उठाना चाहिए और उच्च लोक के सहचरों के समूह के सैनिकों के रूप में उन्हें ईश्वर की वाणी को उदात्त बनाना चाहिए, उसकी मधुर सुरभि को दूर देशों तक प्रसारित करें, लोगों की आत्माओं को सुशिक्षित करें और परम महान शांति को बढ़ावा दें।

सचमुच, आशीर्वादित आत्माओं का चयन हुआ है। जिस क्षण मैंने उनके नाम पढ़े, मुझे एक आध्यात्मिक रोमांच का अनुभव हुआ। ईश्वर का गुणगान हो, उस देश में ऐसे लोगों का जन्म हुआ है जो प्रभु-साम्राज्य के सेवक हैं और जो उस ’अनुपम’, ’अतुल्य’ के लिए अपना जीवन न्यौछावर करने को तैयार हैं।

हे मेरे प्रिय मित्रों! इस सभा को ईश्वर के प्रेम की आभा से प्रदीप्त करो। उसे पवित्र परिधियों के आनंदमय संगीत से गुंजरित होने दो, ईश्वर के सहभोज की मेज पर उसे ऐसे आहारों से पोषित होने दो जो ’प्रभु के भोज’ में परोसे जाते हैं। तुम सब विशुद्ध प्रफुल्लता के साथ मिलकर आओ और बैठक के प्रारम्भ में इस प्रार्थना का पाठ करो:

हे तू ’साम्राज्य’ के स्वामी! भले ही हम शरीर से यहाँ एकत्रित हुए हों किंतु हमारे मंत्रमुग्ध हृदय तुम्हारे प्रेम से संचारित हैं और हम तेरे प्रभासित मुखड़े की किरणों से परिवहित हैं। भले ही दुर्बल हैं हम किंतु हम तेरी सामर्थ्‍य और शक्ति के प्राकट्य की प्रतीक्षा करते हैं। भले ही ऐसे दरिद्र हैं हम जिनके पास न कोई वस्तु न कोई साधन है किंतु हम तेरे साम्राज्य के कोषालय से अपना धन प्राप्त करते हैं। हम भले ही बूंद भर हों किंतु तुम्हारे अतल सिंधु से अंशभाग ग्रहण करते हैं। भले हम कणमात्र हों फिर भी तेरे प्रखर ’सूर्य’ की गरिमा से चमक रहे हैं।

हे विधाता! हमारे पास अपनी सहायता भेज ताकि यहाँ एकत्रित व्यक्तियों में से हर एक प्रकाशित दीपक बन सके, उनमें से हर कोई आकर्षण का केंद्र बन सके, हर कोई स्वर्गिक लोकों की ओर आह्वान करने वाला बन सके जब तक कि हम अंततः इस निम्न जगत को तेरे स्वर्ग का प्रतिबिम्ब न बना दें।

हे मेरे प्रिय मित्रों! उन क्षेत्रों की आध्यात्मिक सभाओं के लिए यह आवश्यक है कि वे एक-दूसरे से जुड़े रहें, एक-दूसरे से पत्राचार करते रहें, पूर्व की आध्यात्मिक सभाओं से भी संवाद करते रहें और इस तरह पूरी दुनिया में एकता के संवाहक बनें।

हे आध्यात्मिक मित्रों! तुम्हारी निष्ठा ऐसी होनी चाहिए कि यदि दुष्ट लोग सभी धर्मानुयायियों को मौत के घाट उतार दें और केवल एक ही बचा रहे तो वह एक - नितान्त अकेला - धरती के सभी लोगों का सामना कर सके और परमात्मा की मधुर और पावन सुरभि को दूर-दिगन्त तक फैला सके। अतः, यदि पवित्र भूमि से तुम्हारे पास कोई भी भय उत्पन्न करने वाला समाचार, किसी भी भयावह घटना की बात, पहुंचे तो ध्यान रहे कि तुम विचलित न होना, दुःखी न होना, तुम्हारी आस्था हिले नहीं। बल्कि तुम तुरन्त उठ खड़े हो और प्रभु-साम्राज्य की सेवा में जुट जाओ।

ईश्वर की दहलीज पर खड़ा यह सेवक हमेशा संकटों से जूझता रहा। वह अभी भी संकट में है। कभी भी मुझे सुरक्षा की कहीं कोई आशा नहीं रही और मेरी सबसे उत्कट इच्छा यह है: कृपालुता से लबालब भरे शहादत के प्याले को पीना और उस मदिरा से आनन्दित होते हुए जो कि ईश्वर का सबसे बहुमूल्य उपहार है, त्याग की भूमि में अपने प्राण त्याग देना। यही मेरी महानतम आशा है, यही मेरी प्रबलतम कामना है।

हमने सुना है कि उन क्षेत्रों में इशराकात (आभाएँ), तराजात (आभूषण), बिशारात (शुभ समाचार) तजल्लियात (प्रखरताएँ) और कलिमात (स्वर्गिक शब्द) की पातियों का अनुवाद और प्रकाशन हो चुका है। इन पातियों से आपको यह आदर्श मिलेगा कि कैसा होना चाहिए और कैसे जीवन जीना चाहिए।

**38**

हे ईश्वर की सेविका जो कि परमेश्वर के प्रेम रूपी बयार में एक ताजी और सुकोमल शाखा की तरह प्रकम्पित है! मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा है जो तुम्हारे प्रचुर प्रेम, तुम्हारी गहन आस्था और अपने प्रभु के स्मरण में तुम्हारे तल्लीन होने का बयान करता है।

तू ईश्वर पर निर्भर रह। अपनी स्वयं की इच्छा को त्याग दे और उसकी इच्छा के प्रति आसक्त हो। स्वयं अपनी कामना का परित्याग कर और उसका दामन थाम ताकि तू एक आदर्श बन सके, पवित्र, आध्यात्मिक, प्रभु-साम्राज्य से सम्बन्धित और उसकी सेविकाओं में से एक।

हे सेविका, तू यह जान ले कि बहा की दृष्टि में नारियों को पुरुष के समान माना गया है और परमात्मा ने समस्त मानवजाति को अपनी ही छवि में गढ़ा है, अपना ही प्रतिबिंब बनाया है। अर्थात, स्त्री और पुरुष दोनों ही समान रूप से उस परमेश्वर के गुणों और नामालंकरणों को प्रकट करने वाले हैं और आध्यात्मिक दृष्टि से दोनों के बीच कोई अन्तर नहीं है। जो कोई ईश्वर के निकट पहुंचता है वही उनका सबसे प्रियपात्र है, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। बहा की शरणदायिनी छाया तले न जाने कितनी उत्कट और आस्थावान सेविकाओं ने पुरुष से अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित की है और धरती के अत्यंत प्रसिद्ध लोगों से भी आगे निकल गई हैं।

लेकिन स्पष्ट पाठ के अनुसार, विश्व न्याय मन्दिर पुरुषों तक सीमित है। इसमें प्रभु परमेश्वर का विवेक छिपा हुआ है जो शीघ्र ही दोपहर के सूर्य की तरह स्पष्ट प्रकट हो जाएगा।

जहाँ तक तुम लोगों का सवाल है, हे अन्य सेविकाओं जो स्वर्गिक सुरभि से विमोहित हैं, तुम पवित्र सम्मिलनों का आयोजन करो और आध्यात्मिक सभाओं की स्थापना करो, क्योंकि वे ईश्वर की मधुर सुरभियों के प्रसार, उसकी वाणी के उन्नयन, उसकी कृपा के प्रदीप को ऊपर उठाने, उसके धर्म के प्रचार-प्रसार के आधार हैं और इससे बड़ी कृपा भला और कौन-सी है? ये आध्यात्मिक सभाएँ ’ईश्वर की चेतना’ से सहायता-प्राप्त हैं। उनके संरक्षक अब्दुल बहा हैं। उनके ऊपर उनके पंखों की छाया है। इससे बढ़कर भला और कौन-सी कृपा है? ये आध्यात्मिक सभाएँ जगमगाते हुए प्रदीप और स्वर्गिक उद्यान हैं जहाँ से सभी क्षेत्रों पर पावनता की सुरभियों का प्रसार होता है, और सभी रचित वस्तुओं पर दूर देशों तक ज्ञान के प्रकाश बिखेरे जाते हैं। उनसे हर दिशा में जीवन की चेतना प्रवाहित होती है। वे, वस्तुतः, हर समय और हर स्थिति में, मनुष्य की प्रगति के सक्षम स्रोत हैं। इससे महती कृपा और कौन-सी है?

**39**

हे ईश्वर की सेविका! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें यह समाचार है कि उस शहर में एक आध्यात्मिक सभा संस्थापित की गई है।

अपनी कम संख्या पर ध्यान न दो बल्कि पवित्र हृदयों की तलाश करो। एक पवित्र आत्मा हजारों अन्य आत्माओं से बेहतर है। यदि मुट्ठीभर लोग अत्यंत शुद्धता और पावनता के साथ, अपने हृदयों को इस संसार के प्रति अनासक्त किए हुए, प्रभु-साम्राज्य की भावनाओं की अनुभूति और उस दिव्य की शक्तिमान चुम्बकीय शक्ति से उद्वेलित होकर, अपनी प्रफुल्ल बंधुता में एकीकृत भाव से, प्रेमपूर्वक एकजुट होंगे तो ऐसा सम्मिलन समस्त धरती पर अपना प्रभाव डालेगा। ऐसे लोगों के समूह की प्रकृति, उनके द्वारा उच्चारे गए शब्द, उनके कर्म, ’स्वर्ग’ के अनुदानों का द्वार खोल देंगे और अनन्त आनन्द का पूर्वास्वाद प्रदान करेंगे। स्वर्गिक लोकों के सैन्य-समूह उनकी रक्षा करेंगे और आभा-स्वर्ग के देवदूत एक-एक करके उनकी सहायता के लिए प्रकट होंगे।

“देवदूत” शब्द का मतलब है ईश्वर की सम्पुष्टियाँ और उसकी स्वर्गिक शक्तियाँ। इसी तरह, देवदूत वे आशीर्वादित जीव हैं जिन्होंने इस निम्न जगत से अपने सम्बन्धों को सर्वथा तोड़ लिया है, स्वार्थ और पार्थिव लालसाओं की बेड़ियों से मुक्त हो चुके हैं और अपने हृदयों को प्रभु के स्वर्गिक लोकों के तटों पर टिका दिया है। वे प्रभु-साम्राज्य के लोग हैं, स्वर्गिक। वे ईश्वर के जन हैं, आध्यात्मिक। वे परमेश्वर की अपार कृपा को प्रकट करने वाले हैं, उसके आध्यात्मिक अनुदानों के उदय-स्थल हैं।

हे ईश्वर की सेविका! उस प्रभु का गुणगान हो कि तुम्हारे पति को उन मधुर सुरभियों का बोध हो चुका है जो स्वर्ग के उद्यानों से प्रवाहित होती हैं। अब जबकि दिन पर दिन बीत रहे हैं, तुम्हें चाहिए कि ईश्वर के प्रेम और स्वयं अपने शुभ कर्मों के माध्यम से उसे प्रभधर्म के और करीब से करीब लाओ।

वे सैन फ्रांसिस्को[[29]](#footnote-29) में घटित वास्तव में दुःखद घटनाएँ थीं। इस प्रकार की आपदाओं के माध्यम से लोगों को जागृत होना चाहिए और इस क्षणभंगुर संसार के प्रति उनका प्रेम कम होना चाहिए। ऐसी त्रासद घटनाएँ इस निम्न जगत में ही होती हैं: यह वह प्याला है जो कटु मदिरा प्रदान करता है।

**40**

हे अब्दुल बहा के प्रियपात्र! मैंने अत्यंत आनन्द के साथ तुम्हारी रिपोर्ट पढ़ी हैं। वे सहज ही हृदय को प्रसन्न एवं आनन्दित तथा आत्मा को हर्षित करने वाले हैं। यदि सर्वदयालु परमात्मा के पावन उच्छवासों और उसकी दिव्य सम्पुष्टियों के माध्यम से यह आध्यात्मिक सभा टिकी रहती है और स्थिर एवं सुदृढ़ बनी रहती है तो उसके उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त होंगे और वे सभाएँ महान अवसर के प्रयासों में सफल होंगी।

ईश्वर के इस युग, इस पावन शताब्दी, में स्थापित आध्यात्मिक सभाएँ निर्विवाद रूप से विगत सभी युगचक्रों की तुलना में अतुलनीय और विशिष्ट हैं। क्योंकि अतीत की वे शक्तिमान सभाएँ लोगों के ताकतवर नेताओं के सहारे पर टिकी थीं जबकि ये आध्यात्मिक सभाएँ आभा-सौन्दर्य की सहायता पर आश्रित हैं। उन अन्य सभाओं के संरक्षक कोई राजकुमार, राजा या प्रधान पुरोहित हुआ करते थे, या फिर जन-समूह जबकि इन आध्यात्मिक सभाओं के रक्षक, समर्थक, सहायक, प्रेरक के रूप में हैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर।

तू वर्तमान पर निगाह न डाल बल्कि आने वाले समय पर अपनी दृष्टि केन्द्रित कर। बीज आरम्भ में चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, अंत में वह एक विशाल पेड़ बन जाता है। तू बीज की ओर न देख बल्कि पेड़ की ओर देख, उसकी बहार, पत्तियों और फलों की ओर। ईसा मसीह के दिनों के बारे में विचार करो जबकि लोगों का एक छोटा-सा जत्था उनका अनुयायी था, फिर देखो कि वह बीज कैसा महावृक्ष बन गया, उसके फलों को निहार। और अब उनसे भी बड़ी बातें घटित होंगी क्योंकि यह ’आतिथेयों के स्वामी’ का आह्वान है, यह जीवन्त प्रभु का तूर्यनाद है, यह विश्व-शांति का गान है, दुनिया के विविधतापूर्ण लोगों के बीच फहराई गई सच्चरित्रता, विश्वास और समझदारी की ध्वजा है, ’सत्य के सूर्य’ की आभा है, यह स्वयं परमेश्वर की पावनता है। महानतम धर्मयुग पूरी धरती को आच्छादित करेगा और उसकी ध्वजा तले सभी लोग एकत्रित होंगे, शरण पाएंगे। अतः इस छोटे से बीज के अपार महत्व को जान जिसे सच्चे ’बागवान’ ने, अपनी कृपा के हाथों, परमेश्वर के जोते हुए खेत में बोया है, उसे कृपाओं और अनुदान की वर्षा की फुहारों से सींचा है और अब ’सत्य के दिवानक्षत्र’ की उष्मा और प्रकाश से उसे पोषित कर रहा है।

अतः, हे ईश्वर के प्रियजनों! उसे धन्यवाद दे क्योंकि उसने तुम्हें ऐसी उदार कृपाओं का पात्र, ऐसे उपहारों को प्राप्त करने वाला बनाया है। आशीर्वादित हो तुम, इस अपार कृपा के लिए तुम्हें शुभकामनाएँ!

**41**

हे तू जो कि संविदा में सुदृढ़ और धर्मनिष्ठ है! तुमने जो पत्र ......लिखा है वह मुझे दिखाया गया है और उसमें जो राय प्रकट की गई हैं वे अत्यंत सराहनीय हैं। न्यूयॉर्क की आध्यात्मिक परामर्श सभा का यह कर्त्‍तव्‍य है कि वह शिकागो की आध्यात्मिक सभा के बिल्कुल अनुरूप हो और ये दोनों परामर्श सभाएँ मिलकर जो भी प्रकाशन और वितरण के उपयुक्त समझें उसे संयुक्त रूप से अनुमति प्रदान करें। उसके बाद उन्हें उसकी एक प्रति अक्का भी भेजनी चाहिए ताकि उसे यहाँ स्वीकृत किया जा सके और उसके बाद वह सामग्री प्रकाशन और वितरण के लिए वापस भेज दी जाएगी।

शिकागो और न्यूयॉर्क की आध्यात्मिक सभाओं के एकीकरण का सवाल अत्यंत महत्वपूर्ण है और जब वाशिंगटन में आध्यात्मिक सभा का समुचित रूप से गठन कर लिया जाए तो इन दोनों आध्यात्मिक सभाओं को उससे भी एकता का गठबंधन कर लेना चाहिए। सारांश यह कि प्रभु परमेश्वर की यही इच्छा है कि पश्चिम में ईश्वर के प्रियजन और उस सर्वदयालु की सेविकाएँ दिन-प्रतिदिन अधिक से अधिक एकता और तालमेल से रहें और जब तक यह उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता तब तक कार्य आगे नहीं बढ़ सकता। एकता और तालमेल की स्थापना के लिए आध्यात्मिक सभाएँ सामूहिक रूप से सबसे प्रभावी उपकरण हैं। यह विषय अत्यंत ही महत्वपूर्ण है, यह वह चुम्बक है जो ईश्वर की सम्पुष्टियों को आकर्षित करता है। एकबार जब मित्रों की एकता का सौन्दर्य - यह दिव्य प्रियतम - आभा-साम्राज्य के आभूषणों में अलंकृत हो जाएगा तो यह सुनिश्चित है कि बहुत ही कम समय में वे देश सर्वमहिमावान परमेश्वर के स्वर्ग बन जाएंगे और पश्चिम के क्षितिज से एकता की आभाएँ सम्पूर्ण धरती पर अपनी प्रखर किरणें बिखेर उठेंगी।

रात और दिन बिना विश्राम किए, एक पल भी आराम की कामना किए बिना, हम पूरे प्राणपण से इस मानव-संसार को ईश्वर की एकता का दर्पण बनाने के प्रयास में जुटे हुए हैं। तो फिर प्रभु के प्रियजनों को यह एकता कितनी अधिक झलकानी चाहिए? और हमारी यह चिर अभिलाषा, यह उत्कट इच्छा सिर्फ उसी दिन पूरी होगी जब ईश्वर के सच्चे मित्र आभा सौन्दर्य की शिक्षाओं के प्रसार के लिए उठ खड़े होंगे - काश कि मेरा जीवन ’उसके’ प्रेमियों पर न्योछावर हो जाए! उसकी शिक्षाओं में से एक यह है कि लोगों के हृदय में प्रेम और सद्भावना का ऐसा प्रभुत्व होना चाहिए कि लोग अजनबी को भी सुपरिचित मित्र समझें, दुष्ट को भी अपना ही मानें, अपरिचित को अपना प्रियपात्र समझें, और दुश्मन को अपना प्रिय एवं घनिष्ठ साथी। जो उन्हें मारने वाला होगा उसे वे जीवनदाता कहेंगे, जो उनसे विमुख होगा उसे वे अपने पास आने वालों में मानेंगे, जो उनके संदेश से इन्कार करेगा उसे वे उसकी सत्यता स्वीकार करने वाले के रूप में घोषित करेंगे। इसका यह अर्थ है कि समस्त मानवजाति के साथ उन्हें वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसाकि वे स्वयं से सहानुभूति रखने वालों, अपने अनुयायी बंधुओं, प्रियजनों और परिचित मित्रों के साथ करते हैं।

 यदि ऐसा प्रदीप इस विश्व-समुदाय को आलोकित करने वाला हो जाए तो तुम्हें लगेगा कि यह पूरी धरती सुवासित हो उठी है, कि यह एक आनन्ददायक अलका बन गई है और इसका मुखड़ा उच्च स्वर्ग का प्रतिबिम्ब। तब यह सम्पूर्ण विश्व सबका एक निवास-स्थल बन जाएगा, इसके विविध लोग एक ही प्रकार के हो जाएंगे, पूरब और पश्चिम के सभी राष्ट्र एक घर बन जाएंगे।

**42**

 सर्वगरिमामय परमेश्वर के लोक की सेनाओं से समर्थित हे सहकर्मियों! तुम सब धन्य हो क्योंकि तुम ईश्वर की वाणी की शरणदायिनी छाया तले एकजुट हुए हो और उसकी संविदा की गुफा में तुमने अपनी शरण पाई है, आभा-स्वर्ग में अपना घर बना कर तुमने अपने हृदयों में शांति पाई है और उन मधुर समीरणों के मृदु गायन से मुग्ध हुए हो जो उस प्रभु की स्नेहिल दयालुता के स्रोत से प्रवाहित होते हैं। तुम प्रभुधर्म की सेवा, दूर-दूर तक उसके धर्म के प्रसार, उसकी वाणी के उन्नयन और उन समस्त क्षेत्रों में पवित्रता की ध्वजा को ऊंचा लहराने के लिए उठ खड़े हुए हो।

 बहा के जीवन की सौगन्ध! निश्चित ही ’दिव्य यथार्थ’ की परम शक्ति तुम्हारे अन्दर ’पवित्र चेतना’ की उदार कृपाओं को प्रवाहित करेगी और तुम्हें ऐसा महान कार्य करने में सहायता देगी जैसाकि इन सृष्टि की आँखों ने कभी नहीं देखा है।

 हे संविदा के कुल! निश्चित ही अपने ऐसे प्रेमियों को जो कि संविदा में दृढ़ हैं आभा-सौन्दर्य ने यह वचन दिया है कि वे दृढ़तम सहायता के साथ उनके प्रयासों को मजबूत करेंगे और उसे अपनी विजयी शक्ति से सहारा देंगे। बहुत ही शीघ्र तुम यह देखोगे कि तुम्हारी प्रकाशित सभा ने लोगों के हृदयों और आत्माओं में शुभ संकेत और चिह्न छोड़ दिए हैं। तू ईश्वर के परिधान का दामन दृढ़ता से थाम और अपने सभी प्रयासों को उसकी संविदा के विकास और उसके प्रेम की अग्नि में और अधिक प्रखरता के साथ प्रज्ज्वलित होने में लगा दे ताकि तुम्हारे हृदय अब्दुल बहा के सीने से प्रस्फुटित होती सेवा-भावना के उच्छवास के आनन्द से धड़क उठें। अपने हृदयों को एक करो, अपने कदमों को सुदृढ़ करो, उन अनन्त कृपाओं पर भरोसा रखो जो आभा-साम्राज्य से तुम्हें एक के बाद एक प्रदान की जाएंगी। जब कभी तुम उस प्रकाशित सभा में एकत्रित हो, तुम यह जान लो कि बहा की आभाएँ तुम्हारे ऊपर प्रकाशित हो रही हैं। तुम्हारे लिए उचित है कि तुम सहमति के लिए प्रयास करो और एकता के सूत्र में बंधे रहो। तुम्हारे लिए उचित है कि तुम शरीर और आत्मा से एक-दूसरे के साथ गहन संवाद स्थापित करो जब तक कि तुम सप्तर्षि तारों या चमकते हुए मोतियों की माला की तरह न बन जाओ। इस तरह तुम दृढ़तापूर्वक संस्थापित होगे, इस तरह तुम्हारी वाणी विजयी होगी, तुम्हारे सितारे चमक उठेंगे और तुम्हारे हृदयों को सांत्वना मिलेगी...

जब कभी तुम परिषद के कक्ष में प्रवेश करो, ईश्वर के प्रेम से धड़कते हुए हृदय और अपनी वाणी को उसके स्मरण के सिवा अन्य सभी बातों से परे, पावन बनाते हुए इस प्रार्थना का पाठ करो ताकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर महानतम विजय प्राप्त करने में उदारतापूर्वक तुम्हें सहायता प्रदान करें:

हे परमेश्वर, मेरे प्रभु ! हम तेरे वे ही सेवक हैं जो भक्तिपूर्वक तेरे पावन मुखड़े की ओर उन्मुख हुए हैं, जिन्होंने इस महिमामय युग में तेरे अतिरिक्त अन्य सब कुछ से अपने आपको अनासक्त कर लिया है। हम इस आध्यात्मिक सभा में अपने विचारों और चिन्तन में एक बनकर उपस्थित हुए हैं और मानवजाति के बीच तेरी वाणी का यशोगान करने के लिये हमारे उद्देश्य एक हो गये हैं। हे प्रभु, हमारे परमेश्वर ! हमें अपने दिव्य मार्गदर्शन के प्रतीक चिन्ह, मनुष्यों के बीच अपने उदात्त धर्म की ध्वजाएँ और अपनी सशक्त संविदा के सेवक बना, हे हमारे परमोच्च प्रभु ! हमें अपने आभा लोक में अपनी दिव्य एकता के मूर्त रूप और सभी देशों-प्रदेशों पर जगमगाने वाले सितारे बना। प्रभो ! हमें अपनी अद्भुत कृपा की विराट तरंगों से प्रवाहित होने वाली सरितायें, अपनी दिव्य धर्म के तरूवर पर फलने वाले सुफल और स्वर्गिक उपवन में अपनी कृपा के समीर से झूमने वाले तरूवर बना। हे परमेश्वर ! हमारी आत्माओं को अपनी दिव्य एकता के छन्दों पर आश्रित कर दे, हमारे हृदयों को अपनी अनुकम्पा की बरखा से उल्लसित कर दे, जिससे कि हम समुद्र की तरंगों के समान एक दूसरे में समा जायें, कि हमारे चिन्तन, हमारे विचार, हमारी अनुभूतियाँ एक ही सत्य का रूप ले लें, जो सम्पूर्ण विश्व में एकता की भावना को मूर्त करे। तू कृपालु, परम सम्पदामयय, वरदाता, सर्वसामर्थ्‍यवान, दयामय, करूणामय है।

**43**

जो लोग साथ मिलकर परामर्श करते हैं उनके लिए मुख्य रूप से आवश्यक है शुद्ध नीयत, प्रकाशित चेतना, ईश्वर के सिवा अन्य सभी विषयों से अनासक्ति, ईश्वर की दिव्य सुरभियों के प्रति आकर्षण, ईश्वर के प्रियजनों के बीच विनम्रता की भावना, कठिनाइयों में धैर्य और संकटों को झेलने और उस प्रभु की महान दहलीज पर सेवा की भावना। यदि इन गुणों को प्राप्त करने में उन्हें उदार सहायता प्राप्त हो जाए तो बहा के अदृश्य साम्राज्य से उनके लिए विजय सुनिश्चित की जाएगी।

**44**

उसके सदस्यों को चाहिए कि[[30]](#footnote-30) वे आपस में इस तरह से परामर्श करें कि दुर्भावना या असहमति का कोई अवसर ही उत्पन्न न हो। ऐसा तब होगा जब सभी सदस्य अत्यंत स्वतंत्र होकर अपनी राय व्यक्त करेंगे और अपना पक्ष रखेंगे। यदि कोई विरोध करे तो उसे किसी भी तरह से आहत नहीं होना चाहिए क्योंकि जब तक विषयों पर पूरी तरह विचार-विमर्श नहीं होगा तब तक सही रास्ता प्रकट नहीं हो सकता। सत्य की चमकती हुई चिनगारी विभिन्न मतों के घर्षण से ही उत्पन्न होती है। यदि विचार-विमर्श के बाद, सर्वसहमति से कोई निर्णय लिया जा सके तो बहुत ही अच्छा लेकिन, भगवान न करे ऐसा हो, मतों में अंतर प्रकट होने लगे तो बहुमत की आवाज विजयी मानी जाएगी।

**45**

पहली शर्त है आध्यात्मिक सभा के सदस्यों के बीच अत्यंत प्रेम और तालमेल का होना। उन्हें एक-दूसरे के प्रति अजनबीपन से सर्वथा मुक्त हो जाना चाहिए और अपने बीच उन्हें ईश्वर की एकता झलकानी चाहिए क्योंकि वे एक ही समुद्र की लहरें, एक स्वर्ग के नक्षत्र, एक सूर्य की किरणें, एक ही अमराई के पेड़, एक ही वाटिका के फूल हैं। यदि विचारों का तालमेल और पूर्ण एकता का अभाव हो तो ऐसा सम्मिलन बिखर जाएगा और ऐसी सभा शून्य हो जाएगी। दूसरी शर्त यह है कि आध्यात्मिक सभा के सदस्य एक होकर अपने एक अध्यक्ष का चुनाव करेंगे और अपनी बैठकों और परामर्श के लिए नियमावली और मार्गदर्शक सिद्धान्त प्रलेखित करेंगे। अध्यक्ष उन नियमों-कायदों के लिए प्रभारी होगा और उन्हें लागू करेगा। अन्य सदस्यों को उनके प्रति आज्ञाकारी होना चाहिए और सतही एवं अनावश्यक बातों पर उन्हें चर्चा से बचना चाहिए। एक साथ सभा में आते समय उन्हें उच्च साम्राज्य की ओर अपने मुखड़े को उन्मुख करना चाहिए और गरिमा के साम्राज्य से सहायता मांगनी चाहिए। तत्पश्चात उन्हें अत्यन्त आस्था, सौजन्य, गरिमा, सावधानी और मर्यादा के साथ अपने विचारों को व्यक्त करना चाहिए। उन्हें हर विषय में सत्य की तलाश करनी चाहिए और अपने ही विचार पर अड़े नहीं रहना चाहिए क्योंकि अपने विचार के प्रति अड़ियलपना अंततः झड़प और विवाद की ओर ले जाएगा और सत्य छिपा ही रह जाएगा। सम्मानित सदस्यों को चाहिए कि वे पूरी स्वतंत्रता से अपने विचार व्यक्त करें और किसी को भी इस बात की अनुमति नहीं है कि वह दूसरों के विचार को तुच्छ समझे, नहीं, बल्कि उसे मर्यादा के साथ अपने विचार को व्यक्त करना चाहिए और यदि विचारों में भिन्नता पाई जाए तो बहुमत की ध्वनि विजयी मानी जाए और सभी लोग उस बहुमत के प्रति आज्ञाकारी और समर्पित रहें। इस बात की भी अनुमति नहीं है कि सम्मानित सदस्यों में से कोई भी, बैठक में या बैठक से बाहर, पहले लिए जा चुके निर्णय की आलोचना करे, भले ही वह निर्णय सही न हो, क्योंकि ऐसी आलोचना से उस निर्णय को लागू किए जाने का मार्ग अवरुद्ध होगा। संक्षेप में, जो कुछ भी तालमेल के साथ, प्रेम और शुद्ध नीयत से सुव्यवस्थित किया गया है उसका परिणाम होगा प्रकाश और यदि जरा भी अजनबीपन झलकेगा तो अंधकार-दर-अंधकार ही उसका नतीजा होगा.......यदि ऐसा मान लिया जाए तो वह सभा ईश्वर की सभा होगी, अन्यथा वह उदासीनता और अलगाव की ओर ले जाएगी जिसका जन्म शैतान से है.....यदि वे इन शर्तों को पूरा करने का प्रयास करेंगे तो ’पवित्र चेतना’ की कृपा उनके लिए सुनिश्चित होगी और ऐसी आध्यात्मिक सभा दिव्य कृपाओं का केंद्र बनेगी, दिव्य सम्पुष्टि की सेनाएँ उनकी मदद के लिए आएंगी और उन्हें दिन-प्रतिदिन चेतना का नया संचार प्राप्त होगा।

**46**

हे तू जो संविदा में सुदृढ़ है! अब्दुल बहा ऐसी किसी भी आध्यात्मिक सभा के साथ आदर्श संवाद में सतत तल्लीन हैं जिसका गठन दिव्य कृपा के माध्यम से किया गया है और जिसके सदस्य अत्यंत आस्था के साथ दिव्य साम्राज्य की ओर उन्मुख एवं संविदा में अडिग हैं। वे पूरे हृदय से उनके प्रति अनुरक्त हैं और उनके साथ वे अनन्त बंधन से बंधे हुए हैं। इस तरह, ऐसी सभा के साथ एक निष्ठापूर्ण, निरंतर और अबाधित समरूपता बनी हुई है।

मैं हर क्षण तुम्हारे लिए सहायता, कृपा और नवीन आशीर्वादों के लिए याचना करता रहता हूँ ताकि बहाउल्लाह की सम्पुष्टियाँ एक समुद्र की तरह सतत उमड़ती रहें, ’सत्य के सूर्य’ का प्रकाश तुम सब के ऊपर चमक उठे और यह कि तुम सब को सेवा में सम्पुष्टि प्राप्त हो, तुम सब कृपालुता के प्रकटीकरण बन सको और यह कि तुम में से प्रत्येक, उषाकाल में, पवित्र भूमि की ओर उन्मुख हो और पूरी गहनता के साथ आध्यात्मिक उद्भावनाओं का अनुभव प्राप्त कर सको।

**47**

हे सच्चे मित्रों! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है और उससे अत्यंत आनन्द प्राप्त हुआ। ईश्वर का गुणगान हो, तुम सबने एक मनोरंजक कार्यक्रम तैयार किया है और एक सहभोज तैयार किया है जिसे प्रत्येक उन्नीस दिनों पर मनाया जाना है। जो कोई भी सम्मिलन अत्यंत प्रेम के साथ आयोजित किया जाता है और जहां उसमें शामिल होने वाले लोग अपने मुखड़ों को ईश्वर के साम्राज्य की ओर उन्मुख करते हैं और जहाँ ईश्वर की शिक्षाओं के बारे में चर्चा होती है और जिसका परिणाम वहां उपस्थित लोगों को उन्नत बनाना होता है - वह सम्मिलन प्रभु का है और सहभोज की वह मेज स्वर्ग से अवतरित हुई है।

 मुझे आशा है कि यह सहभोज हर उन्नीस दिन में एक बार दिया जाएगा क्योंकि यह तुम सबको एक-दूसरे के करीब लाता है, यह एकता और स्नेहिल दयालुता का स्रोत है।

 तुम देख रहे हो कि यह दुनिया लगातार कैसे संघर्ष और उथल-पुथल में निमग्न है और धरती के राष्ट्र आज किस मुहाने पर आकर खड़े हैं। कदाचित, ईश्वर के प्रेमीजन मानव एकता की ध्वजा को ऊपर उठाने में सक्षम हो सकेंगे ताकि ’स्वर्ग के साम्राज्य’ का एकरंगा वितान पूरी धरती के ऊपर अपनी शरणदायिनी छाया डाल सकेगा, ताकि दुनिया के लोगों के बीच आपसी समझदारी के अभाव का लोप हो जाएगा, ताकि सभी राष्ट्र एक-दूसरे के साथ घुल-मिल जाएंगे और एक-दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार करेंगे जैसे प्रेमी अपने प्रियतम के साथ।

 तुम्हारा कर्त्‍तव्‍य है कि सभी मनुष्यों के प्रति तुम अत्यधिक दयालु बनो और प्रत्येक की भलाई की कामना करो, समाज के अभ्युत्थान के लिए कार्य करो, मृतकों में जीवन का संचार करो, बहाउल्लाह के निर्देशों के अनुसार आचरण करो और उनके पथ पर चलो - जब तक कि तुम इस मनुष्य जगत को ईश्वरीय लोक में न बदल दो।

**48**

हे पुरातन सौन्दर्य के वफादार सेवकों! प्रत्येक चक्र और धर्मयुग में, सहभोज का समर्थन किया गया है और उसे चाहा गया है, और ईश्वर के प्रेमियों के लिए मेज तैयार करने को प्रशंसनीय कार्य माना गया है। इस अतुलनीय धर्मयुग, इस सर्वाधिक उदार युग में तो यह और भी विशेष रूप से प्रशंसनीय है क्योंकि इसकी गिनती ऐसे सम्मिलनों में की जाती है जिन्हें ईश्वर की आराधना और उसके महिमा-मंडन के लिए आयोजित किया जाता है। यहां पर पवित्र ष्लोकों, स्वर्गिक छंदों और स्तुतियों का गान होता है, और हृदय स्फूर्त होकर अपनी परिधि से दूर विचरण करने लगते हैं।

प्रमुख उद्देश्य है चेतना के इन स्पंदनों को प्रज्ज्वलित करना लेकिन साथ ही यह भी स्वाभाविक बात है कि उपस्थित लोग भोजन भी ग्रहण करें ताकि शारीरिक संसार आध्यात्मिक संसार को प्रतिबिम्बित कर सके और पार्थिवता आत्मा के गुणों को धारण कर सके और जैसे यहाँ प्रचुर आध्यात्मिक आनन्द हैं वैसे ही भौतिक आनन्द भी।

धन्य हो तुम कि इस नियम का तुम इसके गूढ़ अर्थों के साथ पालन कर रहे हो और इस तरह प्रभु के मित्रों को सावधान और सजग बनाए रखते हो और उन्हें मानसिक शांति और आनन्द प्रदान करते हो।

**49**

 तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है। तुमने उन्नीस दिवसीय उत्सव के बारे में लिखा है और इससे मेरा हृदय आनन्दित हुआ। इन सम्मिलनों से ईश्वरीय मेज इस धरती पर अवतरित होती है और सर्वदयालु की सम्पुष्टियाँ प्राप्त होती हैं। मेरी आशा है कि उनके ऊपर दिव्य चेतना का उच्छ्वास प्रवाहित होगा और उपस्थित जनों में से प्रत्येक व्यक्ति महान सभाओं में, प्रवाहपूर्ण वाणी और ईश्वर के प्रेम से पूरित हृदय से, ’सत्य के सूर्य’ और उस ’दिवानक्षत्र’ के अभ्युदय का गुणगान कर उठेगा जिसने इस समस्त विश्व को आलोकित कर रखा है।

**50**

 तुमने प्रत्येक महीने आयोजित होने वाले सहभोज के बारे में पूछा है। इस सहभोज का आयोजन प्रेम और बंधुता बढ़ाने के लिए होता है, ईश्वर के स्मरण के लिए और विनीत हृदय से उससे याचना करने के लिए और लोकोपकार के कार्यों को प्रोत्साहित करने हेतु।

 अर्थात, मित्रों को चाहिए कि वे वहाँ ईश्वर के बारे में चर्चा करें, उसका गुणगान करें, प्रार्थनाओं और पवित्र श्लोकों का पाठ करें और एक-दूसरे के साथ अत्यंत स्नेह और प्रेम का व्यवहार करें।

**51**

 जहाँ तक उन्नीस दिवसीय सहभोज का प्रश्न है, यह मनो-मस्तिष्क को उत्फुल्ल करता है। यदि यह सहभोज सही तरीके से मनाया जाए तो हर उन्नीस दिन में एक बार मित्रगण स्वयं को आध्यात्मिक रूप से तरोताजा और एक अलौकिक शक्ति से सम्पन्न अनुभव करेंगे।

**52**

 हे एकमेव सत्य ईश्वर के सेवक! ईश्वर की स्तुति हो, ईश्वर के प्रेमीजन हर जगह पाए जाते हैं और उनमें से प्रत्येक ’जीवन के वृक्ष’ की छाया तले, उस प्रभु के संरक्षण में हैं। उसका वात्सल्य और उसकी स्नेहिल करुणा समुद्र की अनन्त लहरों की तरह तरंगित होती रहती है और उसके आशीर्वादों की वर्षा उसके अनन्त साम्राज्य से अनवरत होती रहती है।

 हमारी प्रार्थना यह होनी चाहिए कि उसकी कृपाओं का हमें और अधिक प्रचुर अंशदान प्राप्त हो और हमारा कर्त्‍तव्‍य यह होना चाहिए कि हम ऐसे साधनों का दामन थामें जिनसे उसकी कृपा का और अधिक पूर्ण प्रवाह सुनिश्चित हो, उसकी दिव्य सहायता का और अधिक परिमाण प्राप्त हो।

इन महानतम साधनों में से एक यह है कि मित्रों के बीच सच्ची बंधुता और स्नेहपूर्ण सहयोग की चेतना व्याप्त हो। यह कथन याद रहेः “सबसे महान तीर्थयात्रा यह है कि किसी दुःखी हृदय को प्रसन्न बनाया जाए।“

**53**

वस्तुतः, अब्दुल बहा ऐसी प्रत्येक बैठक-स्थल से ईश्वरीय प्रेम की सुरभि ग्रहण करते हैं जहाँ ईश्वर की वाणी का वाचन होता है और ऐसे प्रमाणों और तथ्यों का प्रतिपादन जिनकी किरणें पूरे विश्व में आच्छादित होती हैं और जहाँ वे ईश्वर की संविदा का उल्लंघन करने वालों के हाथों अब्दुल बहा को मिली यातनाओं का वर्णन सुनाते हैं।

हे प्रभु की सेविका! तुम राजनीति के बारे में कुछ न बोलो। तुम्हारा कर्त्‍तव्‍य आत्मा के जीवन से सम्बन्धित है क्योंकि, वस्तुतः, यही है वह जो मनुष्य को ईश्वर के लोक में आनन्द की ओर ले जाता है। धरती के राजाओं और इस दुनिया की सरकारों के बारे में अच्छी बातें कहने के सिवा तुम उनका और कोई जिक्र न करो। बल्कि अपनी वाणी को ईश्वर के सामाज्य के आशीर्वादित सुसमाचार सुनाने, ईश्वर की वाणी के प्रभाव तथा प्रभुधर्म की पवित्रता को झलकाने तक ही सीमित रखो। उन्हें शाश्वत आनन्द और आध्यात्मिक प्रसन्नताओं, ईश्वरीय गुणों के बारे में बताओ और यह कि किस तरह ’सत्य का सूर्य’ धरती के क्षितिजों के ऊपर जगमगा उठा है: उन्हें इस विश्व की काया में जीवन की चेतना के स्पंदन के बारे में बताओ।

**54**

तुमने मित्रों के सम्मिलनों के बारे में लिखा है और यह कि कैसे वे शांति और आनन्द से भरे हुए हैं। बिल्कुल, ऐसा ही है, क्योंकि जहाँ कहीं भी आध्यात्मिक मानसिकता वाले लोग एकत्रित होते हैं वहां बहाउल्लाह अपने सौन्दर्य के साथ विराजमान होते हैं। अतः यह सुनिश्चित है कि ऐसे मिलन असीम हर्ष और शांति उत्पन्न करेंगे।

आज हर किसी के लिए यही सुयोग्य है कि वे अन्य सभी बातों का उल्लेख हटा दें और अन्य सभी बातों की अनदेखी करें। उनकी कथनी, उनकी मनोदशा का सारांश यह होना चाहिएः “मेरी स्तुति और प्रार्थना के सभी शब्दों को एक ही तक सीमित रखो, मेरा समस्त जीवन अपनी दासता के सिवा और कुछ मत होने दो”। अर्थात, उन्हें अपना समग्र विचार, अपनी सम्पूर्ण वाणी प्रभुधर्म की शिक्षाओं और उसके प्रसार तक ही सीमित रखना चाहिए और सभी लोगों को ईश्वर के गुणों से स्वयं को विभूषित करने की विशेषता से सम्पन्न बनने, मानवजाति से प्रेम करने, सभी विषयों में शुद्ध और पावन बनने और निजी एवं सार्वजनिक जीवन में बेदाग बने रहने की प्रेरणा देने तक, सच्चरित्र और अनासक्त बनने, भावप्रवण और तेजस्वी बनने की प्रेरणा देने तक। केवल ईश्वर का स्मरण करने के सिवा अन्य सभी विषय त्याज्य हैं, उसके गुणगान के सिवा सभी बातें अस्तुत्य हैं। आज के युग में, यह विश्व उच्च लोक के सहचरों के इस माधुर्य की धुन पर थिरक उठेगाः “महिमा हो मेरे प्रभु की, उस सर्वगरिमामय की!” किंतु तुम यह जान लो: ईश्वर के इस गान के सिवा अन्य कोई भी गान इस विश्व को स्पंदित नहीं कर सकेगा और परमात्मा की वाटिका से गुंजारित इस कोकिल-आलाप के सिवा अन्य कोई भी माधुर्य हृदयों को विमोहित नहीं कर सकेगा। “कहाँ से आता है वह ’गायक’ जो प्रियतम के नाम का उल्लेख करता है?“

**55**

मित्रों के लिए उपयुक्त है कि वे ऐसा सम्मिलन, ऐसी बैठक आयोजित करें जहाँ वे ईश्वर का गौरव-गान कर सकें और उस पर अपनी हृदयों को केंद्रित कर सकें तथा ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ के पवित्र लेखों को पढ़ें और उनका पाठ करें - काश कि मेरी आत्मा उनके प्रेमियों पर न्योछावर हो जाए! ऐसी प्रखर सभाओं पर ’सर्वगरिमामय लोक’ के प्रकाश, ’सर्वोच्च क्षितिज’ की किरणें उत्कीर्ण होंगी क्योंकि ये स्थल मश्रिकुल-असकार, ईश्वर के स्मरण के उदय-स्थल, से कम नहीं हैं, जिनकी स्थापना - परम महान लेखनी के निर्देशानुसार - प्रत्येक ग्राम और शहर में की जानी है। .....ये आध्यात्मिक सम्मिलन अत्यंत पवित्रता और पावनता के साथ आयोजित किए जाएँ ताकि उस स्थल विशेष से ही, वहाँ की माटी और हवा से, व्यक्ति को ’पवित्र चेतना’ की मोहक सुरभि प्राप्त हो सके।

**56**

जब कभी लोगों का समुदाय किसी सम्मिलन-स्थल पर एकत्रित होगा, जब वे सब ईश्वर के महिमा-गान में निरत होंगे और एक-दूसरे से ईश्वर के रहस्यों को उजागर करेंगे तो इसमें कोई संदेह नहीं कि उन पर पवित्र चेतना का उच्छवास प्रवाहित होगा और उसका अंशदान प्रत्येक को प्राप्त होगा।

**57**

हमने सुना है कि तुम्हारे मन में समय-समय पर अपने घर को बहाई मित्रों की बैठक से सुशोभित करने का विचार है जहाँ उनमें से कुछ लोग सर्व-महिमामय प्रभु के गौरव-गान में निरत होंगे.... तू यह जान ले कि यदि तू ऐसा करे तो धरती पर बना वह घर स्वर्ग का घर बन जाएगा और पत्थरों की वह संरचना चेतना के समूह में परिवर्तित हो जाएगी।

**58**

तुमने उपासना-स्थलों और उनमें निहित कारणों के बारे में प्रश्न किया है। इस तरह के भवनों के निर्माण के पीछे यह विवेक निहित है कि एक सुनिश्चित समय में लोग यह जान लें कि यह उनके सम्मिलन की घड़ी है, सबको एक जगह एकत्रित हो जाना चाहिए और एक-दूसरे में लय होकर उन्हें प्रार्थना के कार्य में तल्लीन हो जाना चाहिए, जिसके परिणामस्वरूप इस सम्मिलन से मानव-हृदयों में एकता और स्नेह का विकास और पल्लवन होगा।

**59**

अब्दुल बहा की यह अभिलाषा बहुत दिनों से थी कि उस क्षेत्र में एक मशरिकुल-अशकार का निर्माण किया जाए। ईश्वर का गुणगान हो, मित्रों के घोर प्रयास के लिए धन्यवाद कि हाल के दिनों में इस आनन्ददायक समाचार की घोषणा की गई है। यह सेवा परमात्मा की दहलीज पर अत्यंत ही स्वीकार्य है क्योंकि मशरिकुल-अशकार ईश्वर के प्रेमियों को प्रेरणा देता है और उनके हृदयों को आनन्दित करता है, तथा उन्हें सुदृढ़ एवं धर्म में अडिग बनाता है।

यह अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है। यदि किसी सार्वजनिक स्थल पर बहाई उपासना मन्दिर के निर्माण से दुष्टों की ओर से शत्रुता भड़कती हो तो, प्रत्येक स्थान पर, सम्मिलन किसी अज्ञात स्थान पर किया जाना चाहिए। प्रत्येक गांव में भी मशरिकुल-अशकार के लिए एक स्थान सुनिश्चित किया जाना चाहिए, भले ही वह भूमिगत क्यों न हो।

ईश्वर का गुणगान हो कि तुम इस कार्य में सफल हुए हो। प्रभात-बेला में ईश्वर के सुमिरन में मन लगाओ, उसकी स्तुति और गौरव-गान के लिए उठ खड़े हो। हे सच्चरित्र जनों, धन्य हो तुम, तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त हो कि तुमने ईश्वर की स्तुति के उदय-स्थल की स्थापना की है। मैं वस्तुतः ईश्वर से यह याचना करता हूं कि वह तुम्हें घाटियों और पर्वतों के ऊपर फहराने वाली मुक्ति की ध्वजाएँ और मोक्ष की पताकाएँ बनाएं!

**60**

हालाँकि बाहर से देखने पर मशरिकुल-अशकार मात्र एक भौतिक संरचना है लेकिन उसका एक आध्यात्मिक प्रभाव है। वह हृदयों में एकता के सूत्र पिरोता है, वह लोगों की आत्माओं का एक समवेत केन्द्र है। धर्म-प्रकटीकरण के दिनों में उस प्रत्येक शहर में जहाँ मन्दिर का निर्माण हुआ वहाँ सुरक्षा, सुस्थिरता और शांति का सृजन हुआ है क्योंकि ये भवन ईश्वर के सतत महिमा-गान के लिए समर्पित किए गए और हृदयों को शांति केवल ईश्वर के गुणगान में ही प्राप्त हो सकती है। कृपालु परमात्मा की जय हो! बहाई उपासना मन्दिर रूपी भवन का जीवन के प्रत्येक चरण पर एक गहन प्रभाव पड़ता है। पूरब में, अनुभव ने इस तथ्य की सत्यता साबित की है। किसी छोटे से गाँव में यदि किसी घर को ही मशरिकुल-अशकार मान लिया गया तो उससे भी काफी प्रभाव पड़ा, तो फिर खासतौर पर निर्मित उपासना मन्दिर का कितना प्रभाव पड़ेगा!

**61**

हे प्रभो, हे तू जो उन सबको जो संविदा में सुदृढ़ रहते हैं, ’विश्व के प्रकाश’ के प्रति अपने प्रेम के निमित्त अपनी संविदा को उस मशरिकुल-अशकार के प्रति समर्पित करने की क्षमता का आशीर्वाद प्रदान करता है जो कि तेरी परिव्याप्त किरणों का दिवास्रोत है और तेरे प्रमाणों का उद्घोषक। इन धर्मपरायण, पावन और सच्चरित्र जनों को तू इस लोक और परलोक में सदा अपनी पवित्र दहलीज के पास आने में सहायता दे और परम प्रकाशमय आभाओं से उनके मुखड़ों को प्रदीप्त कर दे।

तू वस्तुतः उदार है, सदा दातार है।

**62**

हे प्रभु-साम्राज्य की मेरी अत्यंत प्यारी बेटी! तुमने डॉ. एस्लमॉन्ट को जो पत्र लिखा था उसे उनके द्वारा ’अभिलाषा भूमि’ (पवित्र भूमि) को भेज दिया गया। मैंने उसे बहुत ही ध्यान से पढ़ा। एक ओर तो मैं उससे बहुत ही भावाभिभूत हुआ क्योंकि तुमने अपने सांसारिक बन्धनों को अनासक्ति की कैंची से काट डाला है और प्रभु-साम्राज्य के पथ पर आत्म-त्याग की भावना के साथ बढ़ चली हो। दूसरी ओर, मुझे बहुत ही प्रसन्नता मिली क्योंकि उस परमप्रिय पुत्री ने अपने शरीर के अत्यंत मूल्यवान अंग को प्रभुधर्म के पथ पर न्योछावर करके आत्म-त्याग की महान चेतना का परिचय दिया है। यदि तुमने मेरी राय मांगी होती तो मैं निस्संदेह इस बात पर सहमत होता कि तुम्हें अपने सुन्दर और घुंघराले बालों का एक-एक लच्छा कटवा लेना चाहिए था या नहीं, बल्कि मैं स्वयं उन्हें तुम्हारे नाम से मशरिकुल-अशकार के लिए प्रदान करता। तुम्हारा यह कार्य आत्म-त्याग की तुम्हारी महान चेतना का एक भव्य प्रमाण है। तुमने वस्तुतः अपना जीवन न्योछावर किया है और तुम्हें प्राप्त होने वाला आध्यात्मिक पुरस्कार महान होगा। तुम आश्वस्त रहो कि तुम प्रगति करोगी और तुम्हारी दृढ़ता एवं स्थिरता में दिनों-दिन वृद्धि होती जाएगी। बहाउल्लाह की कृपाएं तुम्हें आच्छादित करेंगी और उच्च लोकों की शुभ वस्तुएँ तुम्हें बारम्बार प्रदान की जाएंगी। और भले ही यह तुम्हारा बाल ही क्यों न हो जिसका तुमने त्याग किया है, किन्तु तुम्हें ’चेतना’ से परिपूरित किया जाएगा और भले ही वह शरीर का नाशवान अंग मात्र ही क्यों न हो जिसने तुमने ईश्वर के पथ पर अर्पित किया है किन्तु तुम्हें दिव्य उपहार प्राप्त होगा, तुम्हें ’स्वर्गिक सौन्दर्य’ के दर्शन होंगे, तुम्हें अविनाशी गरिमा और अनन्त जीवन का वरदान मिलेगा।

**63**

हे आशीर्वादित आत्माओं,[[31]](#footnote-31) आपने रहमतुल्लाह को जो पत्र लिखा है उसे पढ़ा गया। उसमें अनेक एवं विविध आनन्ददायक समाचार थे, जैसेकि यह कि आस्था और संविदा में अडिगता की शक्ति के माध्यम से अनेक सम्मिलनों का आयोजन किया गया और सभी जगह प्रिय मित्र सक्रिय बने हुए हैं।

अब्दुल बहा की उत्कट इच्छा सदा से यही रही है कि उस पवित्र स्थल की मिट्टी जिसने प्रभुधर्म के आरम्भिक दिनों में कृपा की बासन्ती फुहारों से अपनी ताजगी और हरियाली प्राप्त की थी वह इस तरह फले-फूले कि प्रत्येक हृदय आनन्द से भर उठे।

ईश्वर का गुणगान हो, प्रभुधर्म की घोषणा की जा चुकी है और समस्त पूर्व और पश्चिम में उसे इस तरह प्रसारित कर दिया गया है कि कोई भी मस्तिष्क यह सोच भी न सका कि उस प्रभु की मधुर सुरभियाँ सभी क्षेत्रों में इतनी तेजी से फैल जाएंगी। यह वस्तुतः उस सदा-धन्य ’सौन्दर्य’ की परम कृपाओं से ही सम्भव है जिसकी कृपा और विजयी शक्ति बारम्बार प्राप्त होती रही है।

हाल के दिनों में एक जो अद्भुत घटना हुई है वह यह है कि अमेरिकी प्रायद्वीप के बीचों-बीच मशरिकुल-अशकार का निर्माण किया गया है और इस पवित्र मन्दिर के निर्माण के लिए आस-पास के क्षेत्रों से असंख्य लोग अपना योगदान दे रहे हैं। ऐसे ही लोगों में से मैनचेस्टर शहर की एक अत्यंत प्रतिष्ठित महिला भी है जो अपना योगदान देने के लिए प्रेरित हुई है।

उसके पास कोई भी वस्तु, कोई भी भौतिक सम्पदा नहीं थी, इसलिए उसने अपने ही हाथों अपनी उन लटों को काट डाला जो उसके सिर को शोभायमान किए हुई थीं और उन्हें उसने बेच डाला ताकि उससे प्राप्त धन से मशरिकुल-अशकार के निर्माण में योगदान दिया जा सके।

तुम यह विचार करो कि स्त्रियों की दृष्टि में घने लहराते हुए बालों से बढ़कर और कुछ भी मूल्यवान नहीं किन्तु इसके बावजूद उस अत्यन्त सम्मानित महिला ने आत्म-त्याग की अत्यन्त दुर्लभ और सुन्दर चेतना का परिचय दिया है।

और हालाँकि इसके लिए उसे कहा नहीं गया था और अब्दुल बहा ऐसे कार्य के लिए सहमत नहीं हुए होते किन्तु इससे आस्था की ऐसी उच्च और नेक चेतना प्रकट होती है कि वे इससे अत्यन्त द्रवित हुए। पश्चिमी महिलाओं की दृष्टि में बाल चाहे कितने भी मूल्यवान क्यों न हों, भले ही वे जीवन से अधिक कीमती हों, लेकिन फिर भी उसने मशरिकुल-अशकार के लिए अपने बालों को न्योछाबर कर दिया।

कहा जाता है कि ईशदूत[[32]](#footnote-32) के युग में एक बार उन्होंने अपनी यह इच्छा प्रकट की कि सेना एक खास दिशा की ओर प्रयाण करे और धर्मयुद्ध के लिए चंदा एकत्रित करने के लिए कुछ निष्ठावान लोगों को छुट्टियाँ दी गईं। एक व्यक्ति ने अपने एक हजार ऊंट दे दिए जिनमें से प्रत्येक पर अनाज लदे हुए थे, दूसरे ने उसके पास जो कुछ था उसमें से आधा दे दिया और एक तीसरे व्यक्ति ने अपना सबकुछ दान कर दिया। लेकिन एक अत्यंत बूढ़ी औरत जिसके पास कुल जमा सिर्फ मुट्ठीभर खजूर था, ईशदूत के पास आई और उनके पैरों पर उसने अपना दान प्रस्तुत कर दिया। तब उस ईश्वरीय अवतार ने - काश मेरा जीवन उन पर निसर्ग हो जाए - आज्ञा दी कि उस मुट्ठीभर खजूर को एकत्रित की गई सभी दान-सामग्रियों के ऊपर रखा जाए और इस तरह उन्होंने उसे सभी दानों से श्रेयस्कर माना। ऐसा इसलिए माना गया क्योंकि उस वयोवृद्ध महिला के पास और कोई भी भौतिक सम्पदा नहीं थी।

इसी तरह, इस सम्मानित महिला के पास अपनी बहुमूल्य लटों के सिवा दान देने के लिए और कुछ भी नहीं था जिसे उसने उदारतापूर्वक मशरिकुल-अशकार के निमित्त त्याग दिया।

विचारो और मनन करो कि प्रभुधर्म कितना समर्थ और शक्तिशाली हो गया है! पश्चिम की एक महिला ने मशरिकुल-अशकार की गरिमा के लिए अपने बाल दे दिए हैं।

नहीं, बल्कि यह समझदार लोगों के लिए एक सबक है।

और अंत में मैं नजाफाबाद के प्रियजनों से अत्यंत खुश हूँ क्योंकि प्रभुधर्म के अत्यन्त आरम्भिक काल से लेकर अब तक उनमें से प्रत्येक और सभी ने, सभी परिस्थितियों में, आत्म-त्याग की महान भावना का परिचय दिया है।

जैनुल-मुकर्रबिन ने आजीवन अपनी निष्पाप आत्मा की पूरी निष्ठा से नजाफाबाद के अनुयायियों की ओर से अपनी प्रार्थना अर्पित की हैं और उन सबके लिए ईश्वर की कृपा और उनकी दिव्य सम्पुष्टि की याचना की है।

ईश्वर का गुणगान हो कि उस कृपालु व्यक्ति की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया गया क्योंकि उसके परिणाम हर जगह उजागर हैं।

64

मशरिकुल-अशकार दुनिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्थाओं में से है और इसकी कई उप-शाखाएँ हैं। हालाँकि यह एक उपासना मन्दिर है लेकिन उसका सम्बन्ध अस्पताल, दवाखाना, यात्रियों के लिए सराय, अनाथों के लिए विद्यालय और उन्नत अध्ययन के लिए विश्वविद्यालय जैसी कई संस्थाओं से जुड़ा हुआ है। हर मशरिकुल-अशकार का सम्बन्ध इन पांच वस्तुओं से है। मेरी आशा है कि अब अमेरिका में मशरिकुल-अशकार की स्थापना हो जाएगी, और यह कि क्रमिक रूप से अस्पताल, विद्यालय, विश्वविद्यालय, दवाखाना और सराय ये सब अत्यंत ही भव्य एवं सुव्यवस्थित तरीके से काम करने लगेंगे। ये बातें प्रभु-प्रेमियों के समक्ष प्रकट कर दो ताकि वे यह समझ सकें कि “ईश्वर के स्मरण के इस उदय-स्थल” का महत्व कितना बड़ा है। मन्दिर केवल उपासना-स्थल नहीं है, बल्कि हर दृष्टि से यह एक परिपूर्ण संस्था है।

हे ईश्वर की प्रिय सेविका! काश तू यह जान पाती कि जो लोग इस संसार से अनासक्त हैं, जो सुदृढ़ता से प्रभुधर्म की ओर आकर्षित हैं, और जो प्रभु-संदेश देने में निरत हैं, बहाउल्लाह की छत्र-छाया में उनका दर्जा कितना बड़ा निर्धारित किया गया है! ऐसे मार्ग का अनुगामी होने के कारण, ऐसे ’साम्राज्य’ का यात्री होने के कारण, तू कितना आनन्दित होगी, उल्लास और आनन्दातिरेक में तू अपने डैने पसार कर स्वर्ग की ओर कैसे भाव-विह्वल उड़ान भरेगी!

जहाँ तक मेरे पत्र में प्रयुक्त शब्दावली का सम्बन्ध है, जिसमें मैंने तुम्हें प्रभुधर्म की सेवा के लिए स्वयं को समर्पित करने को कहा है, उसका तात्पर्य यह है: अपने विचारों को प्रभुधर्म का संदेश देने तक सीमित रख। दिन-रात बहाउल्लाह की शिक्षाओं, उनके परामर्शों और आदेशों के अनुसार आचरण कर। इसका मतलब विवाह का निषेध नहीं है। तू अपने पति के साथ होते हुए भी प्रभुधर्म की सेवा कर सकती है। विवाह के कारण सेवा वर्जित नहीं है। तू इन दिनों के महत्व को समझ, यह अवसर तू कहीं गंवा न दे। ईश्वर से याचना कर कि वह तुझे एक प्रकाशित वर्तिका बना दें, ताकि इस अंधकारमय विश्व में तू असंख्य लोगों का मार्गदर्शन कर सके।

65

हे तू स्वर्गिक साम्राज्य की कृपा-प्राप्त सेविका! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है। उसमें उच्च आकांक्षाओं और एक नेक लक्ष्य की बात कही गई है, जिसमें तुमने यह बताया है कि तुमने सुदूर पूर्व की यात्रा करने का निश्चय किया है और यह कि तुम कठोर मुसीबतों को झेलने के लिए तैयार हो ताकि तुम लोगों का मार्गदर्शन कर सको, और दूर-दिगन्त तक प्रभु-साम्राज्य के शुभ समाचार का प्रसार कर सको। तुम्हारे इस लक्ष्य से, हे ईश्वर की प्रिय सेविका! यह संकेतित होता है कि तुम्हारे मन में एक उच्चतम लक्ष्य है।

शुभ समाचार प्रदान करते हुए, खुलकर बोलो और कहो: विश्व के सभी लोगों का प्रतिज्ञापित अवतार प्रकट हो चुका है, क्योंकि हर व्यक्ति, हर धर्म को एक प्रतिज्ञापित अवतार की प्रतीक्षा थी और बहाउल्लाह ही वह अवतार हैं जिसकी प्रतीक्षा हर किसी को थी और इसलिए बहाउल्लाह का धर्म मानवजाति की एकता लाएगा और विश्व की ऊँचाइयों पर एकता का वितान तान दिया जाएगा और समस्त मानवजाति की विश्व-व्यापकता की ध्वजाएँ धरती के उत्तुंग शिखरों पर फहरा दी जाएंगी। जब यह महान सुसमाचार सुनाने के लिए तुम अपनी वाणी मुखरित करोगी तो यह लोगों के शिक्षण का एक माध्यम बन जाएगा।

लेकिन तुम्हारी यह प्रस्तावित यात्रा बहुत ही दूर के भूभाग की है और जब तक लोगों का एक दल उपलब्ध न हो जाए तब तक उस स्थान पर यह सुसमाचार बहुत प्रभावी नहीं होगा। यदि तू बेहतर विचार करे तो उसके बदले फारस की यात्रा कर और वापसी यात्रा में जापान और चीन की यात्रा। यह ज्यादा बेहतर प्रतीत होगा और ज्यादा रोचक भी। जो भी हो, जैसा भी सरल जान पड़े वैसा ही करो और उसका तुम्हें अनुमोदन मिलेगा।

66

हे मार्गदर्शन के प्रकाश से ज्योति की कामना करने वाले! ईश्वर का गुणगान कर कि उसने तुम्हें सत्य के प्रकाश की ओर मार्गदर्शित किया है और तुम्हें आभा-साम्राज्य में प्रवेश के लिए आमंत्रित किया है। तुम्हारी दृष्टि को प्रकाशित किया गया है और तुम्हारे हृदय को एक गुलाब-वाटिका में बदल दिया गया है। मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारी निष्ठा और आश्वस्ति का निरंतर विकास हो, सभाओं में तू एक प्रदीप की तरह जगमगाए और उन सब पर मार्गदर्शन का प्रकाश बिखेरे।

जब कभी ईश्वर के सखाओं की प्रकाशित सभा का सम्मिलन होता है, अब्दुल बहा हालाँकि अपने शरीर से वहाँ उपस्थित नहीं होते किन्तु उनकी चेतना और आत्मा वहाँ विद्यमान होती है। मैं हमेशा अमेरिका का एक यात्री हूं और निस्संदेह मैं आध्यात्मिक और प्रकाशित जनों के साथ हूँ। घनिष्ठ रूप से परस्पर जुड़े दो हृदयों के लिए दूरियाँ समाप्त हो जाती हैं और उनके अंतरंग मिलन को वे रोक नहीं सकतीं भले ही वे दो भिन्न देशों के निवासी हों। अतः, मैं तुम्हारा एक अंतरंग सखा हूं, तुम्हारी आत्मा से लयबद्ध और एकाकार।

67

हे तू प्रभु-साम्राज्य की नारी! न्यूयॉर्क से भेजा गया तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है। उसकी विषयवस्तु से बहुत ही उल्लास और आनन्द की प्राप्ति हुई है क्योंकि उससे यह संकेतित होता है कि दृढ़ इरादे और शुद्ध मनोवृत्ति के साथ तुमने पेरिस की यात्रा करने का निश्चय किया है, ताकि तू उस खामोश शहर में ईश्वर के प्रेम की अग्नि प्रदीप्त कर सके और प्रकृति के उस अंधकार के मध्य में प्रकाशित मोमबत्ती की तरह जगमगा सके। यह यात्रा अत्यंत ही उपयुक्त और प्रशंसनीय है। जब तू पेरिस पहुंचे तो मित्रों की संख्या चाहे कितनी भी कम क्यों न हो, तू अवश्य यह प्रयास करना कि वहाँ संविदा की सभा संस्थापित हो और उस संविदा की शक्ति से आत्माओं को नवजीवन प्राप्त हो सके।

पेरिस अत्यंत ही हताशा की स्थिति में है, वह निष्क्रियता की अवस्था में है और हालाँकि एक राष्ट्र के रूप में फ्रांस सक्रिय और जीवन्त है किन्तु उसकी लपटें अभी प्रस्फुटित नहीं हुई हैं। तथापि, प्रकृति-जगत ने पेरिस के ऊपर अपना वितान पूरी तरह से तान दिया है और धार्मिक भावनाओं को समाप्त कर डाला है, परन्तु संविदा की यह शक्ति शीत में जम चुकी आत्माओं को उष्मा प्रदान करेगी, हर कालिमा के ऊपर प्रकाश बिखेर देगी और प्रकृति के हाथों दास बन चुके जनों के लिए प्रभु-साम्राज्य की स्वतंत्रता सुनिश्चित करेगी।

अतः तू वर्तमान समय में दिव्य सम्पुष्टि, सच्चे उत्साह, उत्कट भावना और ईश्वर के प्रेम के ताप के साथ पेरिस में (प्रभुधर्म के लिए) उठ खड़ी हो। सिंहिनी की तरह गर्जना कर और इन थोड़े से लोगों के बीच ही सही किन्तु ऐसे अतिशय आनन्द और प्रेम की झलक दिखा कि दिव्य साम्राज्य से प्रशंसा और गरिमा अनवरत रूप से तेरे पास पहुंचे और तुझे सुदृढ़ सम्पुष्टियाँ प्राप्त हों। तू आश्वस्त रह। यदि तू तदनुसार आचरण करे और संविदा की ध्वजा फहरा उठे तो पेरिस में ज्वाला सुलग उठेगी। हमेशा बहाउल्लाह की सम्पुष्टियों के प्रति आसक्त रह और उसकी याचना कर क्योंकि उससे एक बूंद भी सागर बन जाती है और एक कीट भी (शक्तिशाली) चील में बदल जाता है।

68

हे तू जो कि संविदा और ईश्वरीय प्रमाण में सुदृढ़ है! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ और तुम्हारे आशीर्वादित नामों को एक-एक कर पढ़ा गया। पत्र की विषय-सामग्री दिव्य प्रेरणाएँ और स्पष्ट कृपाएँ थीं क्योंकि वह मित्रों की एकता और हृदयों की समरसता की सूचक थी।

आज के युग में, ईश्वर की सबसे उल्लेखनीय कृपा मित्रों के बीच एकता और तालमेल पर केन्द्रित है, ताकि यह एकता और सहमति मानव-जगत की एकसूत्रता की घोषणा का हेतु बन सके, इस विश्व को शत्रुता और प्रतिशोध के घोर अंधकार से उबार सके और ’सत्य का सूर्य’ अपनी पूर्ण प्रखरता से जगमगा उठे।

 आज दुनिया के सभी लोग स्वार्थ में निमग्न हैं और अपने ही भौतिक हितों को बढ़ावा देने के प्रयास में जुटे हुए हैं। वे आत्म-पूजा में लीन हैं, न कि दिव्य यथार्थ या मानव-जगत की आराधना में। वे पूरे प्रयास से अपने ही लाभ की प्राप्ति में जुटे हुए हैं न कि सबके कल्याण में। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे प्रकृति-संसार के दास बने बैठे हैं और दिव्य शिक्षाओं, प्रभु-साम्राज्य की उदार कृपाओं और ’सत्य के सूर्य’ के बारे में उन्हें ज्ञान ही नहीं है। लेकिन ईश्वर का गुणगान हो कि वर्तमान समय में तुम्हें यह खास कृपा प्राप्त है, तुम्हें ईश्वर ने चुना है, तुम्हें स्वर्गिक निर्देशों के बारे में बताया गया है, तुमने ईश्वर के साम्राज्य में प्रवेश प्राप्त किया है, असीम आशीर्वादों को ग्रहण किया है और ’जीवन-जल’, ईश्वरीय प्रेम की अग्नि और पवित्र चेतना से तुम्हें पावन बनाया है।

 अतः पूरे प्राण और हृदय से तू यह प्रयत्न कर कि इस दुनिया की सभा में तू सब प्रकाशित मोमबत्तियों की तरह बन, सत्य के क्षितिज पर चमकते सितारों की तरह, और तू सब प्रभु-साम्राज्य के प्रकाश का प्रसार करने का निमित्त बन, ताकि यह मानव-जगत एक स्वर्गिक लोक में बदल सके, यह अधम संसार उच्च लोक बन जाए, ईश्वर के प्रेम और दया का चंदोवा संसार के उच्चतम शिखरों पर तान दिया जा सके, मानव-आत्माएँ सत्य के महासिंधु की लहरें बन सकें, मानवता का लोक एक आशीर्वादित वृक्ष के रूप में विकसित हो जाए, एकता के श्लोकों का गायन किया जा सके और पवित्रता का मधुर आलाप उच्चतम लोक तक गुंजरित हो सके।

 मैं दिन-रात प्रभु-साम्राज्य से विनती और याचना करता रहता हूँ और तुम्हारे लिए असीम सहायता और सम्पुष्टि की प्रार्थना करता हूं। अपनी प्रवृत्तियों और क्षमताओं का विचार न करो बल्कि अपना ध्यान चरम कृपा, दिव्य अनुदान और ’पवित्र चेतना’ की शक्ति पर केन्द्रित करो उस शक्ति पर जो एक बूंद को महासागर और एक सितारे को सूर्य में बदल देती है।

 ईश्वर की स्तुति हो, उच्च लोक की सेनाएँ विजय सुनिश्चित करती हैं और ईश्वरीय साम्राज्य की शक्ति सहायता के लिए तैयार बैठी है। यदि तू प्रत्येक पल भी अपनी वाणी से धन्यवाद और आभार प्रकट करती रहे तो भी तू इन कृपाओं के प्रति कृतज्ञता के भार से उऋण नहीं हो सकती।

 विचार करो: महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के लोग जिनकी कीर्ति पूरे विश्व में व्याप्त है, इस स्वर्गिक कृपा के अभाव में बहुत ही शीघ्र वे अस्तित्व-शून्य हो जाएंगे, उनका नामो-निशान शेष नहीं रहेगा और न ही उनका कोई परिणाम या अता-पता ही बचा होगा। किन्तु चूंकि तुम्हारे ऊपर ’सत्य के सूर्य’ की प्रभाओं ने अपनी चमक बिखेरी है और तूने अनन्त जीवन प्राप्त किया है, अतः अस्तित्व के क्षितिज पर तुम सब अनवरत से जगमगाती रहोगी।

 पीटर एक मछुआरा था और मेरी मैग्डेलिन एक किसान, किन्तु चूंकि उन्हें ईसा मसीह का विशेष आशीष प्राप्त था अतः उनकी आस्था का क्षितिज ज्योतिर्मय हो गया और अभी भी इस युग में अनन्त गरिमा के आकाश से उनकी चमक प्रभासित है। इस ओहदे के लिए, योग्यता और क्षमता विचारणीय नहीं हैं, बल्कि ’सत्य के सूर्य’ की प्रखर किरणों का विचार किया जाना चाहिए जिन्होंने इन दर्पणों को चमकाया है।

 तुम सब मुझे अमेरिका आने का आमंत्रण दे रही हो। उसी तरह मैं भी उन प्रकाशित मुखड़ों को निहारने और उन सच्चे मित्रों का संग पाने के लिए लालायित हूं। लेकिन जो चुम्बकीय शक्ति मुझे उन समुद्र-तटों की ओर खींच ले जाएगी वह है मित्रों के बीच एकता और तालमेल की भावना, ईश्वर की शिक्षाओं के अनुरूप उनका व्यवहार और आचरण और उन सबकी संविदा और ईश्वरीय प्रमाण के प्रति दृढ़ता।

हे दिव्य शुभंकर! यह सभा तेरे उन मित्रों की है जो तेरे सौन्दर्य की ओर आकर्षित हुए हैं और जो तेरे प्रेम की अग्नि से प्रदीप्त हैं। इन आत्माओं को स्वर्गिक देवदूत बना दे, अपनी पवित्र चेतना के उच्छवासों से उन्हें नवजीवन प्रदान कर, उन्हें अपनी प्रवाहपूर्ण वाणी और सुदृढ़ हृदय का वरदान दे, उन पर स्वर्गिक शक्ति और दयापूर्ण संवेदनाओं का अभिसिंचन कर, उन्हें मानवजाति की एकता की घोषणा करने वाले और मनुष्य-जगत में प्रेम और सहमति का निमित्त बना, ताकि अज्ञानपूर्ण पूर्वाग्रह का संकटमय अंधकार सत्य के सूर्य के प्रकाश से छंट जाए, यह निर्जीव-सा संसार प्रकाशित हो जाए, यह भौतिक लोक अपने भीतर चेतना के विश्व की किरणों को सोख सके, ये अलग-अलग रंग एक ही रंग में विलीन हो जाएँ और स्तुति का मधुर राग तेरी पावनता के साम्राज्य तक ऊपर पहुंच सके।

वस्तुतः, तू सर्वशक्तिमान है, सामर्थ्‍यवान है।

69

 तुमने सुघटन के बारे में लिखा है। दिव्य शिक्षाएँ और बहाउल्लाह के आदेश और परामर्श स्पष्ट रूप से प्रमाणित हैं। ये प्रभु-साम्राज्य का सुघटन तैयार करते हैं और उन्हें लागू किया जाना अनिवार्य है। उनसे जरा भी विचलित होना घोर त्रुटि है।

 तुमने अमेरिका की मेरी यात्रा के बारे में लिखा है। यदि तू यह देख सके कि एक से एक व्यस्तताएँ किस तरह सामने आ रही हैं तो तुम विचार कर पाते कि यात्रा के लिए समय का सर्वथा अभाव है। इस स्थायी आवासीय स्थिति में जरा भी आराम असम्भव है। ईश्वर चाहेंगे तो मेरा विश्वास है कि बहाउल्लाह की कृपा से जैसे ही मनो-मस्तिष्क की शांति प्राप्त होगी मैं यात्रा अवश्य तय करूंगा और तुम्हें इस बारे में सूचित करूंगा।

70

हे तू प्रकाशित वर्तिका! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। उसकी विषय-सामग्री से आध्यात्मिक आनन्द की प्राप्ति हुई क्योंकि उसमें आध्यात्मिक भावनाएँ व्याप्त थीं और उससे तुम्हारे हृदय का आकर्षण, ईश्वरीय साम्राज्य के प्रति तुम्हारी आसक्ति और उसकी दिव्य शिक्षाओं के प्रति तुम्हारा प्रेम झलकता था।

वस्तुतः, तुमसे उच्च प्रयासों की झलक मिलती है, तुम्हारा उद्देश्य पावन है, तुम्हारी कामना और कुछ नहीं बल्कि ईश्वर की सत्कृपा प्राप्त करना है, तुम और कुछ नहीं बल्कि असीम कृपाएँ चाहते हो, और तुम दिव्य शिक्षाओं की घोषणा और गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यों की व्याख्या में निमग्न हो। मेरी आशा है कि बहाउल्लाह की कृपा से तुम्हारी और तुम्हारी माननीया पत्नी की दृढ़ता और अडिगता दिनोंदिन बढ़ती जाएगी ताकि उस महान धरती पर तुम दोनों दो उच्च ध्वजाएँ और दो प्रखर प्रकाश बन जाओ।

ईश्वरीय प्रेम की उस मोमबत्ती, श्रीमती मैक्सवेल, के साथ अक्टूबर महीने में उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम की व्यापक यात्रा अत्यंत स्वीकार्य होगी। मुझे आशा है कि वह पूरी तरह स्वस्थ हो जाएगी। ईश्वर की यह प्रिय सेविका अग्नि की लौ की तरह है और दिन-रात केवल ईश्वर की सेवा के बारे में ही सोचती रहती है। वर्तमान समय में, सम्पूर्ण उत्तरीय राज्यों की यात्रा करो और जाड़े की ऋतु में दक्षिण के राज्यों की ओर प्रयाण करो। तुम्हारी सेवा के अंतर्गत सभाओं में मुखरित सम्भाषण करना होना चाहिए जहाँ तुम दिव्य शिक्षाओं की घोषणा कर सको। यदि सम्भव हो तो किसी समय हवाई द्वीपसमूह की भी यात्रा करो।

जो घटनाएँ अभी गुजरी हैं उनका उल्लेख पचास वर्ष पूर्व ही बहाउल्लाह की पातियों में कर दिया गया था जो मुद्रित हो चुकी हैं और पूरे विश्व में प्रकाशित एवं प्रसारित। बहाउल्लाह की शिक्षाएँ इस युग के लिए प्रकाश हैं और इस शताब्दी के लिए चेतना। प्रत्येक सभा में उनमें से हरेक की व्याख्या करो।

पहला है, सत्य की खोज

दूसरा है, मानवजाति की एकता

तीसरा है, विश्व-शांति

चौथा है, विज्ञान और दिव्य शिक्षाओं में अनुरूपता

पाँचवा है, प्रजातीय, धार्मिक, सांसारिक एवं राजनीतिक पूर्वाग्रहों का त्याग - वे पूर्वाग्रह जो मानवजाति की आधारशिला को ही नष्ट कर देते हैं

छठा है, सच्चरित्रता और न्याय

सातवाँ है, नैतिकता को बेहतर बनाना और स्वर्गिक शिक्षा

आठवाँ है, स्त्री-पुरुष की समानता

नौवाँ है, ज्ञान और शिक्षा का प्रसार

दसवाँ है, आर्थिक प्रश्न

और इसी तरह अन्य बातें हैं। यह प्रयास कर कि लोग मार्गदर्शन की किरणें प्राप्त कर सकें और बहाउल्लाह का दामन थाम सकें।

तुमने जो पत्र संलग्न किया था, उसका अध्ययन किया गया। जब मनुष्य की आत्मा को विशिष्ट एवं पावन बना लिया जाता है तो आध्यात्मिक सूत्र उससे जुड़ जाते हैं और तब उन सूत्रों के माध्यम से हृदय को प्राप्त होने वाली संवेदनाएँ उत्पन्न होती हैं। मनुष्य का हृदय एक दर्पण की तरह है। जब उसे निर्मल कर दिया जाता है तो मानव हृदयों के बीच एक लय स्थापित हो जाती है और इस तरह आध्यात्मिक भावनाओं का जन्म होता है। यह स्वप्नों के संसार की तरह है, जब मनुष्य स्थूल वस्तुओं से अनासक्त स्थिति में होता है और चेतना-लोक का अनुभव प्राप्त करता है। कैसे आश्चर्यजनक नियम संचालित होते हैं और कैसी उल्लेखनीय खोजें होती हैं! और यह भी हो सकता है कि विस्तृत संवाद स्थापित हो जाएं.......

और, अन्ततः, मुझे आशा है कि शिकागो में मित्रगण एकसूत्रता में बंधेंगे और उस नगर को प्रकाशित कर देंगे, क्योंकि वहाँ प्रभुधर्म का उदय हुआ है और इसी से वह अन्य नगरों से वरेण्य है। अतः उसके प्रति सम्मान जताना चाहिए कि शायद, यदि ईश्वर की इच्छा हुई, तो वह सभी आध्यात्मिक उत्पीड़नों से मुक्त होगा, पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त करेगा और संविदा एवं ईश्वरीय प्रमाण का केन्द्र बन जाएगा।

71

हे ईश्वर की परमप्रिय सेविका! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ और उसकी विषय वस्तुओं से यह तथ्य ज्ञात हुआ कि मित्रगण, पूर्ण ऊर्जा और जीवन्तता के साथ, स्वर्गिक शिक्षाओं के प्रसार में जुटे हुए हैं। इस समाचार से अत्यंत उल्लास और आनन्द प्राप्त हुआ है। प्रत्येक युग की एक चेतना होती है, इस प्रकाशित युग की चेतना बहाउल्लाह की शिक्षाओं में निहित है, क्योंकि ये शिक्षाएँ मानव-जगत की एकता की आधारशिला रखती हैं और विश्वव्यापी बंधुता की घोषणा करती हैं। उनका आधार है विज्ञान और धर्म की एकता एवं सत्य की स्वतंत्र खोज। वे शिक्षाएँ इस सिद्धान्त को बढ़ावा देती हैं कि धर्म को लोगों के बीच सौहार्द, एकता और समरसता का कारण होना चाहिए। वे स्त्री-पुरुष की एकता की स्थापना करती हैं और उन आर्थिक सिद्धान्तों को प्रतिपादित करती हैं जो व्यक्तियों की प्रसन्नता के लिए हैं। ये वे शिक्षाएँ हैं जो विश्वव्यापी शिक्षा का प्रचार करती हैं ताकि हर व्यक्ति को यथासम्भव ज्ञान का अंशदान प्राप्त हो। वे धार्मिक, प्रजातीय, राजनीतिक, राष्ट्रीय एवं आर्थिक एवं ऐसे ही अन्य पूर्वाग्रहों को समाप्त और खारिज करती हैं। पत्रों और पातियों में बिखरी हुई ये शिक्षाएँ मानव-विश्व के जीवन को आलोकित करने के हेतु हैं। जो कोई भी उनका प्रसार करेगा, निश्चय ही उसे ईश्वरीय साम्राज्य की सहायता प्राप्त होगी।

गणराज्य के राष्ट्रपति, डॉ. विल्सन, निस्संदेह प्रभु-साम्राज्य की सेवा कर रहे हैं क्योंकि वे दिन-रात इस बात के लिए बेचैन हैं और प्रयासरत हैं कि सभी व्यक्तियों के अधिकार संरक्षित हों, ताकि बड़े राष्ट्रों की तरह छोटे राष्ट्र भी सच्चरित्रता और न्याय की पनाह में शांति और अमन-चैन से रह सकें। यह वास्तव में एक महान उद्देश्य है। मुझे विश्वास है कि अनुपम ’शुभंकर’ प्रभु हर स्थिति में ऐसे लोगों को सहायता और सम्पुष्टि प्रदान करेंगे।

72

हे सच्चे मित्र! ईश्वर की पाठशाला में चेतना के पाठ पढ़ो और प्रेम के ’शिक्षक’ से आभ्यंतरिक सत्य का ज्ञान प्राप्त करो। स्वर्गिक रहस्यों की खोज करो और परमेश्वर की अथाह कृपा और करुणा के बारे में बताओ।

हालाँकि विज्ञानों और कलाओं का ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य की सर्वोच्च महिमा है लेकिन वह इसी शर्त पर कि मनुष्य (के ज्ञान) की यह सरिता शक्तिमान सिंधु की ओर प्रवाहित हो और ईश्वर के पुराचीन स्रोत के भंडार से अपनी प्रेरणा प्राप्त करे। जब ऐसा होगा तो प्रत्येक शिक्षक असीम तटों वाला एक महासागर बन जाएगा और हर छात्र ज्ञान का एक प्रतिभाशाली स्रोत। अतः, जब ज्ञान-प्राप्ति का प्रयास उसके सौन्दर्य की ओर ले चले जो ’सभी ज्ञानों का परम ध्येय’ है तो वह लक्ष्य कितना महान होगा! लेकिन यदि ऐसा न हो तो एक सामान्य बूंद भी सम्भवतः अपार कृपा से मनुष्य को वंचित कर देगा, क्योंकि ज्ञान के साथ ही अभिमान और दर्प की भावना भी उपजती है और उससे त्रुटि एवं ईश्वर के प्रति उदासीनता उद्भूत होती है।

आज के विज्ञान यथार्थ की ओर ले जाने वाले पुल की तरह हैं, तब यदि वे सत्यता की ओर न ले जाएं तो एक निरर्थक भ्रम के सिवा और कुछ नहीं बचता। यदि ज्ञान उस परम महान प्रकटावतार तक पहुंचाने का साधन न बन सके तो वह और कुछ नहीं वरन एक निरर्थक वस्तु है।

तुम्हारे लिए आवश्यक है कि तुम ज्ञान-विज्ञान की विविध शाखाओं में पारंगत हो और अपने मुखड़े को उस ’प्रकट सौन्दर्य’ की ओर अभिमुख करो ताकि तुम संसार के लोगों के बीच रक्षाकारी मार्गदर्शन का संकेत बन सको और इस लोक में ज्ञान का एक प्रमुख केन्द्र जिससे बुद्धिमान लोग और उनकी बुद्धिमत्ता प्रतिबाधित हो जाए, सिवाय उनके जिन्होंने प्रकाश के साम्राज्य में पदार्पण किया है और जिन्हें ओझल एवं निगूढ़ रहस्य के बारे में पता है - वह रहस्य जो सर्वदा सुसंरक्षित है।

73

हे प्रभु-साम्राज्य की पुत्री! तुम्हारा पत्र आया है और उसकी विषयवस्तु से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि तुमने अपना समग्र विचार रहस्य के लोक से प्रकाश प्राप्त करने की ओर केन्द्रित कर लिया है। जब तक व्यक्ति के विचार बिखरे हुए होते हैं तबतक उसे कोई भी परिणाम प्राप्त नहीं होगा लेकिन यदि उसकी सोच एक निश्चित बिंदु पर आ टिके तो उसके परिणाम विलक्षण होंगे।

जब सूर्य की रोशनी को किसी सपाट दर्पण पर बिखेरी जाए तो उसकी पूरी शक्ति प्राप्त नहीं होती लेकिन जब वही प्रकाश किसी अवतल या उत्तल लेंस पर पड़ता है तो उसकी उष्मा एक बिंदु पर संकेन्द्रित होगी और वही बिंदु सर्वाधिक ताप के साथ जल उठेगी। अतः, जरूरी है कि व्यक्ति अपने विचार को एक बिंदु पर केन्द्रित करे ताकि वह एक प्रभावशाली शक्ति बन सके।

तुम रिजवान के दिन को सहभोज के साथ मनाना चाहती हो और उस दिन उपस्थित सभी लोगों को आनन्दपूर्वक पातियों के पाठ में संलग्न करना चाहती हो और तुमने मुझसे निवेदन किया है कि उस दिन पढ़े जाने के लिए मैं अपना एक पत्र भेजूं। मेरा पत्र यह है:

हे परमप्रिय! और हे सर्वदयालु परमेश्वर की सेविकाओं! यह वह दिन है जब ’सत्य का दिवानक्षत्र’ जीवन के क्षितिज पर उदित हुआ और उसकी गरिमा फैल गई और उसकी प्रखरता इतनी शक्ति से चमक उठी कि उससे अत्यंत घने और ऊँचाइयों तक जमे हुए बादल छिन्न-भिन्न हो गए, और वह विश्व के आसमान पर अपनी पूरी प्रभा से दमक उठा। इसीलिए विश्व की हर रचित वस्तुओं में तुम्हें एक नई हलचल देखने को मिल रही है।

देखो कि कैसे इस दिवस में विज्ञानों और कलाओं के दायरे अत्यंत व्यापक हो गए हैं और कितनी अद्भुत तकनीकी प्रगतियाँ हासिल की गई हैं, और मस्तिष्क की क्षमताएँ किस हद तक बढ़ गई हैं, और कैसे-कैसे विलक्षण आविष्कार सामने आए हैं!

यह युग वस्तुतः सैकड़ों युगों के समतुल्य है। यदि तुम सौ युगों के प्रतिफलों को एकत्रित करो और हमारे समय के प्रतिफलों के समूह के सामने उन्हें रख दो तो इस एक युग के परिणाम सौ युगों के परिणामों पर भारी पड़ेंगे। उदाहरण के लिए, तुम विगत युगों में लिखी गई समस्त पुस्तकों को मिला कर देख लो और उनकी तुलना हमारे इस युग में लिखी गई पुस्तकों और व्याख्याओं से करो: केवल हमारे इस युग में लिखी गई पुस्तकों की संख्या पिछले सभी युगों में लिखी गई पुस्तकों से कहीं बढ़कर है। देखो कि सभी रचित वस्तुओं के अंतःतत्व पर विश्व के ’दिवानक्षत्र’ द्वारा डाला गया प्रभाव कितना गहन है!

लेकिन अफसोस, हजारों बार अफसोस! आँखें इन बातों को देख नहीं पातीं, कान बहरे हो चुके हैं और मनो-मस्तिष्क इस महान अवदान को भुलाए बैठे हैं। अतः तुम अपने मन-प्राण से यह प्रयास करो कि तुम सोए हुओं को जगा सको, नेत्रहीनों को दृष्टि दे सको, मृतकों को पुनर्जीवित कर सको।

74

हे आभा-सौन्दर्य के सुमधुर संगीत सुनाने वाली पक्षिणी! इस नए और अद्भुत धर्मयुग में अंधविश्वासों के आवरणों को छिन्न-भिन्न कर दिया गया है और पूरब के लोगों के पूर्वाग्रहों की निंदा की गई है। पूर्व के कुछ खास देशों में, संगीत को बुरा समझा जाता था, लेकिन इस नए युग में उस ’प्रकट प्रकाश’ ने, अपनी पवित्र पातियों में, खासतौर पर इस बात की घोषणा की है कि संगीत का गायन या वादन हृदय और आत्मा के लिए आध्यात्मिक भोजन है।

संगीतकार की कला अत्यंत प्रशंसनीय कलाओं में से है, और यह वेदना-ग्रस्त हृदयों में संवेदना भरती है। अतः, हे शहनाज![[33]](#footnote-33) ईश्वर की पवित्र वाणी का मित्रों की सभाओं के मध्य विलक्षण सुर में गायन कर ताकि श्रोता दुःख और चिंता के जंजीरों से मुक्त हो सकें, उसकी आत्मा आनन्द के आवेग से भर जाए और वह गरिमा के लोक के समक्ष प्रार्थना में विनत हो जाए।

75

हृदय और आत्मा से प्रयास कर कि तू श्वेत और अश्वेत लोगों के बीच एकता और समरसता उत्पन्न कर सके और इस माध्यम से बहाई विश्व की एकता प्रमाणित कर सके जिसमें रंग के भेद के लिए कोई स्थान नहीं है बल्कि केवल हृदयों पर विचार किया जाता है। ईश्वर की स्तुति हो, मित्रों के हृदय एकाकार और परस्पर जुड़े हुए हैं, चाहे वे पूरब के हों या पश्चिम के, उत्तर के हों या दक्षिण के, चाहे वे जर्मन हों या फ्रेंच, जापानी, अमेरिकन और चाहे वे श्वेत हों, अश्वेत हों, लाल, पीली या भूरी प्रजाति के। बहाई धर्म में रंग, भौगोलिकता और प्रजाति सम्बन्धी भेदों का कोई महत्व नहीं है। इसके विपरीत, बहाई एकता इन सबको आच्छादित कर देती है और इन सभी कपोल-कल्पनाओं को समाप्त कर देती है।

76

हे तू जिसका हृदय प्रकाशित है! तुम आँख की पुतली जैसी हो, प्रकाश की साक्षात निर्झर, क्योंकि तेरे अंतर्तम अस्तित्व में ईश्वर के प्रेम ने अपनी किरणें बिखेरी हैं और तुमने अपना मुखड़ा प्रभु-साम्राज्य की ओर उन्मुख किया है।

अमेरिका में श्वेतों और अश्वेतों के बीच घोर नफ़रत है, लेकिन मेरी आशा है कि प्रभु-साम्राज्य की शक्ति इन दोनों को मित्रता के बन्धनों में बांध देगी और उनके लिए एक आरोग्यकारी मलहम साबित होगी।

वे लोगों के रंग नहीं, उनके हृदयों की ओर दृष्टि करें। यदि हृदय प्रकाश से भर जाए तो वह व्यक्ति परमात्मा की दहलीज के पास है और यदि नहीं तो वह व्यक्ति अपने ईश्वर के प्रति बेपरवाह है, चाहे वह श्वेत हो या अश्वेत।

77

हे तू ईश्वर की सम्मानित सेविका! लॉस एंजेल्स से भेजा हुआ तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। दिव्य शुभंकर को धन्यवाद दो कि तुझे सेवा में सहायता प्राप्त हुई है और तू मानव-जगत की एकता की घोषणा करने का निमित्त बनी हो, ताकि लोगों के बीच से विभेदों का अंधकार दूर हो सके, और राष्ट्रों की एकता का वितान सभी क्षेत्रों पर अपनी छत्रछाया डाल सके। ऐसी एकता के बिना अमन-चैन, शांति और विश्वव्यापी मित्रता प्राप्त करना असम्भव है। इस प्रकाशित शताब्दी में इसकी पूर्ति किए जाने की जरूरत है और यह इस युग की मांग है। हर शताब्दी में, उस शताब्दी की आवश्यकताओं के अनुरूप, ईश्वर द्वारा सम्पुष्ट एक विशेष और केन्द्रीय विषय होता है। इस प्रकाशमय युग में, वह बात जिसे ईश्वर की पुष्टि प्राप्त है वह है मानव-जगत की एकता। वह प्रत्येक व्यक्ति जो इस एकता को बढ़ावा देता है उसे सहायता और सम्पुष्टी प्राप्त होगी।

मुझे आशा है कि तुम सभाओं में मधुर स्वरों में ईश्वर का स्तुति-गान करोगी और इस तरह सबके लिए आनन्द और उल्लास का स्रोत बनोगी।

78

हे तू जिसका हृदय पवित्र, चेतना पावन, चरित्र अनुपम और मुखड़ा सौन्दर्यमय है! तुम्हारा फोटोग्राफ प्राप्त हुआ है जिसमें तुम्हारी भव्य शारीरिक यष्टि और उत्तम सौन्दर्य परिलक्षित होता है। तुम्हारा रूप-रंग सांवला लेकिन चरित्र बहुत उज्ज्वल है। तुम आँख की पुतली की तरह हो जिसका रंग गहरा होता है लेकिन फिर भी वह प्रकाश का स्रोत और इस भौतिक संसार को दर्शाने वाली है।

मैंने तुम्हें न भुलाया है और न भुलाउँगा। मैं ईश्वर से याचना करता हूँ कि वह उदारतापूर्वक तुझे लोगों के बीच अपनी कृपा का संकेतक बनाए, तुम्हारे मुखड़े को ऐसे आशीर्वादों के प्रकाश से प्रकाशित कर दे कि जिसका उस कृपालु परमेश्वर द्वारा वचन दिया गया है, और इस युग में जो पिछले सभी युगों और सदियों से विशिष्ट है, तुझे अपने प्रेम का वरदान दे।

79

हे सम्मानित व्यक्ति! मैंने तुम्हारी कृति “दि गॉस्पेल ऑफ वेल्थ”[[34]](#footnote-34) पढ़ी है और उसमें बहुतेरी मानवजाति को तसल्ली प्रदान करने वाली विषय-सामग्री पर ध्यान दिया है।

संक्षेप में, बहाउल्लाह की शिक्षाओं में स्वैच्छिक योगदान का समर्थन किया गया है और यह सम्पत्ति के समान वितरण से कहीं बड़ी चीज है। क्योंकि समान वितरण की प्रणाली को बाहर से थोपा जाएगा जबकि स्वैच्छिक योगदान स्वतंत्र इच्छा का विषय है।

मनुष्य अपनी स्वतंत्र इच्छा से किए गए शुभ कर्मों के माध्यम से पूर्णता प्राप्त करता है, न कि ऐसे नेक कामों के माध्यम से जो उस पर थोप दिए गए हैं। साझा करना व्यक्तिगत रूप से चुना गया एक नेक काम हैः अर्थात अमीरों को चाहिए कि वे गरीबों को सहायता दें, उन्हें गरीबों के लिए अपनी सम्पदा खर्च करनी चाहिए, लेकिन यह काम स्वेच्छा से होना चाहिए, इसलिए नहीं कि गरीबों ने बल-प्रयोग द्वारा इसे प्राप्त कर लिया है। बल प्रयोग का परिणाम विद्रोह और सामाजिक व्यवस्था के छिन्न-भिन्न हो जाने के रूप में सामने आता है। दूसरी ओर, स्वेच्छा से अपना अंशदान देने, अपनी स्वतंत्र इच्छा से अपना धन खर्च करने से समाज में अमन-चैन रहता है। इससे विश्व प्रकाशित होता है और इससे मानवजाति को सम्मान मिलता है।

अमेरिका में जब मैं एक शहर से दूसरे शहर की यात्रा पर था तो विभिन्न विश्वविद्यालयों, शांति सम्मेलनों और ज्ञान-संवर्द्धन के लिए बनाई गई संस्थाओं में मैंने स्वयं तुम्हारे द्वारा किए गए परोपकारी कार्यों के अच्छे परिणाम देखे हैं। इसलिए तुम्हारी ओर से मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम सदा स्वर्ग की कृपाओं और आशीर्वादों से घिरी रहो और पूरब तथा पश्चिम के देशों में लोकोपकार के अनेकों कार्यकलाप करती रहो। इस तरह तुम प्रभु-साम्राज्य में एक प्रकाशित शिखा की तरह झिलमिलाती रहो, आदर और अनन्त जीवन प्राप्त करो और अनन्तता के क्षितिज पर प्रखर सितारे की तरह चमक उठो।

80

हे तू जिसका मुखड़ा ईश्वर की ओर उन्मुख हो रहा है! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। उसकी विषय-वस्तु से यह जाहिर हुआ कि तुम्हारी इच्छा गरीबों की सेवा करने की है। इससे बेहतर इच्छा और क्या हो सकती है! जो आत्माएँ प्रभु-साम्राज्य से सम्बन्ध रखती हैं उनकी यह उत्कट इच्छा होती है कि वे गरीबों की सेवा करें, उनके साथ सहानुभूति दर्शाएं, दीन-दुःखियों के प्रति करुणा दर्शाएं और उनके जीवन को सार्थक बना सकें। धन्य हो तुम कि ऐसी अभिलाषा से सम्पन्न हो।

मेरी ओर से अपने दोनों बच्चों को मेरा अत्यंत स्नेह कहना। उनके पत्र प्राप्त हुए हैं लेकिन अभी मेरे पास समय नहीं होने के कारण मैं उन्हें अलग से पत्र लिखने में असमर्थ हूं। मेरी ओर से उन पर अत्यंत दया का संचार करना।

81

जिन व्यक्तियों ने युद्ध के दिनों में गरीबों की सेवा की है और जिन्होंने रेड क्रॉस मिशन में काम किया है, उनकी सेवाएँ ईश्वर के साम्राज्य में स्वीकार्य हैं और इस निमित्त उन्हें अनन्त जीवन का वरदान प्राप्त होगा। उन्हें यह शुभ समाचार सुनाओ।

82

हे तू जो संविदा में सुदृढ़ है! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। उस कैदी के लिए तुमने घोर प्रयास किए हैं ताकि शायद उससे कोई सुफल प्राप्त हो सके। परन्तु उसे यह बताओ: “संसार के निवासी प्रकृति की कारा में कैद हैं - एक ऐसी कारा में जो सतत और अनवरत रूप से कायम है। यदि तुम अभी एक अस्थायी कारागार की सीमाओं में कैद हो तो इसके लिए दुःख मत करो। मेरी आशा यह है कि तुम प्रकृति की कैद से मुक्ति पा सको और अनन्त जीवन के दरबार में प्रवेश कर सको। दिन-रात तू ईश्वर से प्रार्थना कर और उससे क्षमा याचना कर। ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता से हर कठिनाई का निराकरण हो जाएगा।“

83

अब्दुल बहा की ओर से अपनी माननीया पत्नी को मेरी आभा शुभकामनाएँ प्रदान करना और कहना: “कैदियों को शिक्षित-प्रशिक्षित करना और उनके प्रति दया दर्शाना अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। अतः जबकि तुमने इस दिशा में प्रयास प्रारम्भ किया है, उनमें से कई कैदियों को जागरूक बनाया है और उनके मुखड़ों को तुमने दिव्य साम्राज्य की ओर उन्मुख किया है तो यह प्रशंसनीय कार्य अत्यंत ही स्वीकार्य है। निस्संदेह तुम्हें यह प्रयास जारी रखना चाहिए। सान क्वेन्टिन के दोनों कैदियों को मेरी ओर से अतिशय स्नेह देना और उनसे कहनाः “विवेकी लोगों की दृष्टि में वह कारागार प्रशिक्षण और विकास की पाठशाला है। तुम्हें पूरे प्राणपण से यह प्रयास करना चाहिए कि तुम्हें तुम्हारे ज्ञान और चरित्र के कारण जाना जा सके।“

84

हे ईश्वर की प्रिय सेविका! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ है और उसकी विषयवस्तु पर ध्यान दिया गया है।

जन-समूह के बीच, विवाह एक शारीरिक बंधन है और ऐसा मिलन अस्थायी ही हो सकता है क्योंकि अंत में शारीरिक बिछोह का होना सुनिश्चित है।

लेकिन बहा के लोगों के बीच विवाह शरीर और आत्मा दोनों का मिलन होना चाहिए, क्योंकि यहाँ पति-पत्नी दोनों ही एक ही मदिरा से प्रदीप्त हैं, दोनों एक ही अनुपम ’मुखमंडल’ के प्रेम में पगे हैं, दोनों एक ही चेतना से जीवन्त और स्पंदित हैं, दोनों एक ही गरिमा से प्रकाशित हैं। उनके बीच का यह सम्बन्ध एक आध्यात्मिक सम्बन्ध है, अतः यह एक ऐसा बन्धन है जो सदा अक्षुण्ण रहेगा। इसी तरह, इस भौतिक संसार में भी उनका सम्बन्ध सुदृढ़ और चिरस्थायी होता है क्योंकि यदि विवाह शरीर और आत्मा इन दोनों ही स्तरों पर आधारित होता है तो ऐसा मिलन सच्चा मिलन होता है और इसलिए वह शाश्वत रहेगा। लेकिन यदि यह बन्धन केवल शारीरिक है और इससे अधिक कुछ भी नहीं तो उसका क्षणिक होना सुनिश्चित है, और एकदिन उसका बिछोह में अंत होना निर्धारित है।

इसलिए जब बहा के लोग विवाह करना चाहते हैं तो वह एकता सच्चे सम्बन्ध के रूप में होनी चाहिए, आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों ही मिलन, ताकि जीवन के हर चरण के माध्यम से और ईश्वर के सभी लोकों में, उनकी एकता स्थायी रहे, क्योंकि यह सच्ची एकता ईश्वर के प्रेम से निकली हुई प्रकांति है।

इसी तरह, जब लोग सच्चे अनुयायी बनते हैं तो एक-दूसरे के साथ उनका एक आध्यात्मिक सम्बन्ध कायम होता है और वे एक-दूसरे के प्रति अलौकिक मृदुलता दर्शाते हैं। उनमें से प्रत्येक दिव्य प्रेम की घूंट से आनन्द-विभोर होगा और उनका यह मिलन, उनका यह साहचर्य भी हमेशा रहेगा। ऐसे लोग जो स्वयं को भुला देंगे, जो स्वयं को मनुष्य की दुर्बलताओं से अलग और मानव-जगत के बन्धनों से मुक्त कर लेंगे वे निस्संदेह रूप से एकता की स्वर्गिक आभाओं से आलोकित होंगे और एक ऐसे लोक में सच्चे मिलन को प्राप्त होंगे जो अविनाशी है।

85

जहाँ तक ईश्वरीय विधान के अंतर्गत विवाह का प्रश्न है: पहले तुम किसी ऐसे व्यक्ति का चुनाव करो जो तुम्हें प्रिय है, और उसके बाद यह विषय पिता और माता की सहमति के अधीन है। तुम्हारे द्वारा चयन किए जाने से पूर्व उन्हें हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है।

86

बहाई विवाह एक-दूसरे के प्रति दो पक्षों की प्रतिबद्धता है, और उनके मनो-मस्तिष्क का पारस्परिक आकर्षण। लेकिन उनमें से प्रत्येक को चाहिए कि दूसरे के चरित्र से अवगत होने के लिए वे अत्यंत सावधानी बरतें ताकि उनके बीच का बंधनकारी समझौता सदा अक्षुण्ण रहे। उनका उद्देश्य यह होना चाहिए: सदा-सर्वदा के लिए एक-दूसरे का सखा और सहचर बनना.....

बहाइयों के बीच सच्चा विवाह यह है कि पति-पत्नी भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही रूपों में एक हों जाएँ ताकि वे सदा एक-दूसरे के आध्यात्मिक जीवन को बेहतर बना सकें और ईश्वर के सभी लोकों में सदाबहार एकता के आनन्द से भर उठें। यही है बहाई विवाह।

87

हे तू उसकी स्मृति जिसने ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए! हाल के दिनों में उस प्रकाशित पत्ती के साथ तुम्हारे विवाह का शुभ समाचार सुनने को मिला है और इससे ईश्वर के जनों के हृदयों को असीम आनन्द प्राप्त हुआ है। पूरी विनम्रता के साथ, पवित्र दहलीज पर यह अभ्यर्थना की गई है कि यह विवाह मित्रों के लिए आनन्द का संवाहक बने, कि यह अनन्त से अनन्त काल तक सबके लिए स्नेह का एक बन्धन बने और असीम लाभ एवं सुफल प्रदान करे।

अलगाव हर प्रकार के दुःख और हानि का मूल है लेकिन जीवों की एकता हमेशा अत्यंत प्रशंसनीय परिणाम उत्पन्न करती आई है। अस्तित्व के संसार में छोटे-से-छोटे कणों के युग्मन से भी परमात्मा की कृपा और करुणा का प्राकट्य होता है और अस्तित्व का यह स्तर जितना बड़ा होगा वह एकता उतनी ही महत्वपूर्ण होगी। “धन्य है वह जिसने धरती पर उत्पन्न सभी वस्तुओं की जोड़ियाँ बनाई हैं और स्वयं मनुष्यों की जोड़ियाँ और उनकी समझ से परे अन्य वस्तुओं की।“[[35]](#footnote-35) और इन सभी एकताओं से बढ़कर है मनुष्यों के बीच की एकता, विशेष तौर पर तब जबकि वह ईश्वर के प्रेम के निमित्त हो। इस तरह प्रकट होती है मूल एकता, इस तरह चेतना के दायरे में प्रेम की आधारशिला स्थापित होती है। निस्संदेह, तुम्हारा जैसा विवाह हुआ है उससे परमात्मा की अनुकम्पाएँ प्रकट होंगी। अतः हम तुम्हें शुभकामनाएँ देते हैं, तुम्हारे लिए कृपाओं का आह्वान करते हैं और ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ से याचना करते हैं कि, अपनी कृपा और सहायता के माध्यम से, वे उस विवाह-सहभोज को सबके लिए आनंददायक बनाएं और उसे स्वर्गिक सद्भाव से सुसज्जित करें।

हे मेरे प्रभु! हे मेरे परमेश्वर! ये दो उज्ज्वल चंद्रमा तेरे प्रेम के कारण परिणय सूत्र में बंधे हैं, तेरी पावन देहरी की सेवा के लिये एक हुए हैं, तेरे धर्म के कार्यों के निमित्त एकप्राण बने हैं। हे मेरे स्वामी, सर्वकृपालु प्रभु! तू इस विवाह को अपनी असीम अनुकम्पा का प्रकाश-सूत्र बना दे, हे कल्याणकर्ता, हे दाता! इन्हें अपने वरदानों की ऐसी जगमगाती किरण बना दे। कि इस महान वृक्ष से ऐसी शाखाएँ फूटें जो तेरे उपहारों की वर्षा में फलें-फूलें।

सत्य ही तू उदार है, सत्य ही तू सर्वशक्तिशाली है, सत्य ही तू दयालु है, है सर्वकृपालु!

- अब्दुल बहा

88

हे मेरी दो प्रिय सन्तानों! जैसे ही तुम्हारी एकता का समाचार मेरे पास पहुंचा, मुझे अत्यधिक आनन्द और आभार की अनुभूति हुई। परमात्मा की स्तुति हो, इन दो निष्ठावान पक्षियों ने एक ही घोंसले में शरण की कामना की है। मैं ईश्वर से याचना करता हूँ कि वे उन्हें एक सम्मानित परिवार को जन्म देने में सक्षम बनाएं क्योंकि विवाह का महत्व एक अत्यंत आशीर्वादित परिवार को जन्म देने में छिपा है ताकि अपनी समस्त सुप्रसन्नता से वे, मोमबत्तियों की तरह, इस विश्व को प्रकाशित कर सकें, क्योंकि विश्व का उत्थान मनुष्य के अस्तित्व पर निर्भर है। यदि इस संसार मे मनुष्य का अस्तित्व नहीं होता तो वह मानो एक फलहीन वृक्ष की तरह होता। मेरी आशा है कि तुम दोनों एक पेड़ के समान बन सकोगे और स्नेहमयी कृपालुता के मेघ के अनुदान से तुम ताजगी और आकर्षण प्राप्त कर सकोगे और पुष्पित एवं फलवान बन सकोगे ताकि तुम्हारा वंश सदा-सर्वदा चलता रहे।

तुझ पर उस ’परम महिमावान’ की गरिमा विराजे!

89

हे तू जो कि संविदा में अडिग है! तुम्हारा 2 मई 1919 का लिखा पत्र प्राप्त हुआ। ईश्वर का धन्यवाद कर कि परीक्षाओं की घड़ी में तू दृढ़ और अडिग बना रहा है और तूने दृढ़तापूर्वक आभा-साम्राज्य का दामन थाम रखा है। तू किसी भी कष्ट से विचलित नहीं है और न ही किसी संकट से अधीर। जब तक मनुष्य की परीक्षा नहीं ले ली जाती तब तक विशुद्ध सोने को उसकी मलिनता से अलग नहीं किया जा सकता। कष्ट वह अग्नि-परीक्षा है जिससे गुजर कर शुद्ध सोना चमक उठता है और उसके मैल एवं दोष जल कर भष्मीभूत हो जाते हैं। ईश्वर का गुणगान कर कि तू अभी इन परीक्षाओं में अडिग है और उनसे विचलित नहीं।

तुम्हारी पत्नी का भले ही तुमसे एकलयता न हो किन्तु ईश्वर का धन्यवाद कि ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ तुमसे प्रसन्न हैं और तुझे अत्यधिक कृपा और आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं। तथापि अपनी पत्नी के साथ धैर्यवान बने रहने का प्रयास करो, कदाचित उसमें परिवर्तन आ जाए और उसका हृदय प्रकाशित हो उठे। तुमने शिक्षण के लिए जो योगदान दिया है वह अत्यंत स्वीकार्य है और दिव्य साम्राज्य में अनन्त रूप से उसका उल्लेख किया जाएगा क्योंकि वह सुरभि के प्रसार और ईश्वरीय वाणी को उदात्त बनाने का कारक है।

90

हे मेरे ईश्वर! मेरे परमेश्वर! तेरी यह सेविका, अपना भरोसा तुझ पर रखकर, तेरी ओर उन्मुख हो कर, तुझसे याचना करती हुई तुझे पुकार रही है कि अपनी स्वर्गिक कृपा उस पर बरसा दे, उसके समकक्ष अपने आध्यात्मिक रहस्यों को प्रकट कर दे और उस पर अपना परमात्म प्रकाश डाल।

हे मेरे स्वामिन्! मेरे पति की आँखों को देखने की शक्ति प्रदान कर। तू उसके हृदय को अपने ज्ञान के प्रकाश से आनन्दित कर दे, तू उसका मन अपने ज्योतिर्मय सौन्दर्य की ओर आकर्षित कर ले, उसकी चेतना को अपनी भव्यता के दर्शन करा उसे उल्लसित कर दे।

 हे प्रभु! उसकी आँखों के सामने से परदा हटा दे, उस पर अपनी भरपूर कृपा की वर्षा कर, अपने प्रेम की मदिरा से उसे दीवाना बना दे, उसे अपने देवदूतों में से एक बना दे जो चलते तो धरा पर हैं लेकिन जिनकी आत्माएँ परमोच्च स्वर्गों में उड़ती हैं। उसे तेरे जनो के मध्य तेरी प्रज्ञा के प्रकाश से चमकता हुआ देदीप्यमान दीपक बना दे।

 वस्तुतः तू अनमोल, सदा कृपालु, मुक्तहस्त दाता है।

91

हे तू जिसने प्रार्थनामय भाव से स्वयं को प्रभु-साम्राज्य के समक्ष अवनत किया है! धन्य है तू क्योंकि तेरी दिव्य ’मुखमुद्रा’ के सौन्दर्य ने तेरे हृदय को आह्लादित किया है, और अंतःविवेक के प्रकाश ने उसे परिपूरित कर दिया है, और उसके भीतर ईश्वरीय साम्राज्य की प्रभा जगमगा उठी है। तू यह जान ले कि हर हाल में ईश्वर तुम्हारे साथ है, और यह कि वह इस संसार के परिवर्तनों और दुर्योगों से तुम्हारी रक्षा कर रहा है, और तुझे उसने अपनी महान अंगूर-वाटिका की सेविका बनाया है......

जहाँ तक तुम्हारे माननीय पति का प्रश्न है, तुम्हारा कर्त्‍तव्‍य है कि तुम उसके साथ अत्यंत दयालुता का व्यवहार करो, उसकी इच्छाओं का ध्यान रखो और सदा उसकी अनुषंगी बनी रहो, जब तक कि वह यह न समझ जाए कि चूंकि तुमने ईश्वरीय साम्राज्य की ओर अपना रुख किया है अतः उसके प्रति तुम्हारी मृदुलता और ईश्वर के प्रति तुम्हारे प्रेम में वृद्धि हुई है और साथ ही हर परिस्थिति में उसकी इच्छाओं के प्रति तुम्हारी परवाह में भी।

मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे तुझे अपने प्रेम में अडिग बनाए रखें और देश-विदेश के उन सभी क्षेत्रों में पवित्रता की पावन सुरभि के सदा प्रसार में सक्षम बनाएं।

92

हे ईश्वर में आस्था रखने वाले तुम दोनों! अनुपम प्रभु ने स्त्री और पुरुष को एक-दूसरे के घनिष्ठ संगी बनकर रहने के लिए रचा है, यहाँ तक कि एक आत्मा की तरह रहने के लिए। वे परस्पर एक-दूसरे के सहायक हैं, दो अंतरंग मित्र हैं, जिन्हें एक-दूसरे के कल्याण की चिंता करनी चाहिए।

यदि वे इस तरह से रहेंगे तो वे इस दुनिया से अत्यंत संतोष, आनन्द और हृदय की शांति के साथ प्रस्थान करेंगे और स्वर्गिक साम्राज्य में दिव्य कृपा और करुणा के पात्र होंगे। लेकिन यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो वे अपना जीवन घोर कटुता में गुजारेंगे, हर क्षण मृत्यु की कामना करते हुए और स्वर्गिक साम्राज्य में उनके मुख लज्जित दिखेंगे।

अतः, तू हृदय और आत्मा से एक-दूसरे के साथ एक ही घोंसले में रहने वाले दो कबूतरों की तरह निवास कर, क्योंकि यह लोक और परलोक दोनों ही में आशीर्वादित होगा।

93

हे तू ईश्वर की सेविका! वह हर नारी जो ईश्वर की सेविका बनती है उसकी गरिमा दुनिया की महारानियों से भी बढ़कर है क्योंकि उसका वास्ता ईश्वर से है, और उसका साम्राज्य अनन्त है, जबकि उन महारानियों के नाम और यश मुट्ठी भर धूल द्वारा मिटा दी जाएगी। दूसरे शब्दों में, अपनी कब्र में पहुंचते ही उनका अस्तित्व शून्य हो जाता है। जबकि दूसरी ओर, ईश्वर की सेविकाएँ युगों और पीढ़ियों के परिवर्तनों से अप्रभावित, अनन्त साम्राज्य का आनन्द प्राप्त करती हैं।

विचार करो कि ईसा मसीह के जीवनकाल से ही न जाने कितनी महारानियाँ आईं और गईं। उनमें से प्रत्येक किसी न किसी देश की साम्राज्ञी थी लेकिन अब उनका नामो-निशान मिट चुका है जबकि एक मामूली कृषक-कन्या और ईश्वर की दासी मेरी मैग्डेलिन का नाम आज भी अनन्त गरिमा के क्षितिज पर जगमगा रही है। अतः, तू परमेश्वर की सेविका बने रहने का प्रयत्न कर।

तुमने अधिवेशन की प्रशंसा की है। यह अधिवेशन भविष्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण बनेगा क्योंकि यह दिव्य साम्राज्य और मानव-जगत की सेवा में निरत है। यह विश्व-शांति की घोषणा करता है और मानवजाति की एकता की आधारशिला तैयार करता है। यह आत्माओं को धार्मिक, प्रजातीय और सांसारिक पूर्वाग्रहों से मुक्त करता है और सबको ईश्वर के एकरंग वितान की छाया तले एकत्रित करता है। अतः, तू ईश्वर का गुणगान कर कि तूने ऐसे अधिवेशन में भाग लिया है और दिव्य शिक्षाओं का श्रवण किया है।

94

हे आभा-सौन्दर्य की सेविकाओं! तुम्हारा पत्र आया है और उसे पढ़कर बहुत ही खुशी मिली। ईश्वर की स्तुति हो, धर्मानुयायी नारियों ने सम्मिलनों का आयोजन किया है जहाँ वे यह सीखेंगी कि प्रभुधर्म का शिक्षण कैसे करें, वे ईश्वरीय शिक्षाओं की मधुर सुरभियों का प्रसार करेंगी और बच्चों के प्रशिक्षण के लिए योजनाएँ बनाएँगी।

इस सम्मिलन को पूरी तरह आध्यात्मिक होना चाहिए। अर्थात विचार-विमर्शों को उन स्पष्ट एवं निर्णायक प्रमाणों तक पहुंचने पर केन्द्रित रखा जाना चाहिए कि ’सत्य के सूर्य’ का उदय हो चुका है। और उसके बाद, उपस्थिति जनों को चाहिए कि वे बालिकाओं के प्रशिक्षण के समस्त साधनों, ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं, अच्छे व्यवहार, अच्छी जीवन-शैली इत्यादि के बारे में सिखाने, अच्छे चरित्र के निर्माण, पवित्रता और दृढ़ता, अध्यवसाय, शक्ति, दृढ़संकल्प, उद्देश्य के प्रति अडिगता जैसे गुणों के विकास, घर की देखभाल, बच्चों को सुशिक्षित बनाने और जो भी बातें बालिकाओं की आवश्यकताओं के संदर्भ में खासतौर पर लागू होती हों उन पर ध्यान दें ताकि समस्त पूर्णताओं के दुर्ग और सच्चरित्रता के संरक्षण में पालित ये बालिकाएँ जब माँ बनें तो आरम्भिक शैशवावस्था से ही अपने बच्चों को चरित्रवान बना सकें और सही आचार-विचार के साथ उनका पालन कर सकें।

उन्हें उन बातों का भी अध्ययन करना चाहिए जिनसे शारीरिक स्वास्थ्य का पोषण और आरोग्य का संवर्द्धन हो सके और बच्चों को रोगों से कैसे मुक्त रखा जा सके।

जब सभी बातें इस तरह सुव्यवस्थित की जाएंगी तो प्रत्येक बच्चा आभा-स्वर्ग के उद्यान में एक अनुपम पौधे के रूप में विकसित होगा।

95

हे प्रभु की सेविकाओं! उस ज्योतिर्मय नगरी में तुम सबके द्वारा एक आध्यात्मिक सभा की स्थापना एक मांगलिक घटना है। तुम सबने घोर प्रयास किए हैं औरों से कहीं बढ़कर कोशिश की है, तुम सब पवित्र दहलीज की सेवा के लिए उठ खड़ी हुई हो और तुम्हें स्वर्गिक अनुदानों का वरदान प्राप्त हुआ है। अब तुम्हें चाहिए कि अपने सम्पूर्ण आध्यात्मिक उत्साह से उस प्रकाशित आध्यात्मिक सभा में एकत्रित हो, पवित्र लेखों का पाठ करो और प्रभु के स्मरण में निरत रहो। तुम सब उस भूमि में नारियों के मार्गदर्शन के लिए सक्रिय हो, बच्चों और किशोरियों को शिक्षित करो, ताकि माताएँ आरम्भिक अवस्था से ही अपने छोटे बच्चों को शिक्षित कर सकें, उन्हें पूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करें, अच्छे चरित्र और नैतिक गुणों के निर्माण की दिशा में उन्हें प्रेरित करें, उन्हें मानवजाति के सभी सद्गुणों की ओर मार्गदर्शित करें, कोई भी लांछन-योग्य आचरण विकसित होने से उन्हें बचाएँ और उन्हें बहाई शिक्षा के दायरे में परिपोषित करें। इस तरह ये सुकोमल शिशु ईश्वर के ज्ञान और उसके प्रेम के वक्षस्थल पर पालित हो सकेंगे। इस तरह उनका पल्लवन और विकास होगा, उन्हें सच्चरित्रता और मानवीय गरिमा, दृढ़संकल्प, परिश्रम और सहनशीलता का ज्ञान दिया जाएगा। इस तरह वे सभी बातों में अध्यवसाय, आगे बढ़ने की इच्छा, उच्च विचार, ऊंचे संकल्प, जीवन की पावनता और सच्चरित्रता इत्यादि बातें सीखेंगे और इस तरह वे जो कोई भी काम हाथ में लेंगे उसे सफल अंजाम तक पहुंचाने में सक्षम होंगे।

माताओं को यह विचार करने दिया जाना चाहिए कि जो कुछ भी बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित है वह प्रथम महत्व का विषय है। इस दिशा में उन्हें हर प्रयास करना चाहिए क्योंकि जब टहनी हरी और कोमल होती है तो उसे मनचाही दिशा में मोड़ा जा सकता है। अतः माताओं का यह दायित्व है कि अपने छोटे बच्चों का पालन वे वैसे ही करें जैसे कोई माली छोटे पौधों का ध्यान रखता है। अपने बच्चों के मन में आस्था और निश्चयात्मकता, ईश्वर का भय, विश्व के परम प्रियतम के प्रति प्रेम और सभी अच्छे गुणों और आदतों के विकास के लिए वे रात-दिन प्रयास करें। जब कभी माँ को लगे कि उसके बच्चे ने कुछ अच्छा काम किया है तो वह उसकी सराहना और प्रशंसा करे और उसके हृदय को आह्लादित करे और यदि उससे जरा भी अवांछित व्यवहार झलके तो उसे बच्चे को उचित परामर्श एवं दण्ड देना चाहिए और तर्कसंगत रूप से उसके सुधार के लिए समुचित साधन का इस्तेमाल करे, भले ही उसे झिड़क देना ही क्यों न जरूरी प्रतीत हो। लेकिन बच्चे को मारने-पीटने या उसे अपमानित करने का निषेध है क्योंकि यदि बच्चे को मारा-पीटा या शब्दों से प्रताड़ित किया गया तो वह बिल्कुल ही बिगड़ जाएगा।

96

हे सर्वदयालु की सेविकाओं! ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ का धन्यवाद कर कि तुम सबको इस अत्यंत सामर्थ्‍यमय शताब्दी, इस अत्यंत ज्योतिर्मय युग में पोषित और एकत्रित किया गया है। ऐसी उदार कृपा के लिए समुचित आभार व्यक्त करने के लिए, तुम सब ईश्वरीय संविदा में सुदृढ़तापूर्वक अडिग रहो और ईश्वर की आज्ञाओं एवं पवित्र विधान का पालन करते हुए, अपने बच्चों को शैशवावस्था से विश्वव्यापी शिक्षा का अमृत-पान कराओ और इस तरह उनका पालन-पोषण करो कि अत्यंत बाल्यावस्था से ही, उनके अंतरतम हृदय में, उनकी सहज प्रकृति में, एक ऐसी जीवन-शैली दृढ़तापूर्वक स्थापित हो सके जो सर्वथा दिव्य शिक्षाओं के अनुरूप हो।

यह इसलिए क्योंकि माताएँ प्रथम शिक्षिकाएँ होती हैं, प्रथम संरक्षक और सचमुच वे माताएँ ही हैं जो अपने नन्हे-मुन्नों के जीवन की प्रसन्नता, उनके भविष्य की महानता, शिष्टाचार के तौर-तरीके, ज्ञान और निर्णय-क्षमता, सूझ-बूझ और उनकी आस्था तय करती हैं।

97

कुछ ऐसे खास स्तम्भ हैं जिन्हें प्रभुधर्म के अडिग सहारा के रूप में स्थापित किया गया है। इनमें सबसे शक्तिशाली है ज्ञान और मस्तिष्क का उपयोग, चेतना का विस्तार और विश्व के यथार्थों एवं सर्वशक्तिमान परमेश्वर के निगूढ़ रहस्यों के बारे में अंतर्दृष्टि।

अतः, ज्ञान का संवर्द्धन ईश्वर के सभी सखाओं के लिए एक अपरिहार्य कर्त्‍तव्‍य है। उस आध्यात्मिक सभा, ईश्वर के उस धर्म-संसद का यह कर्त्‍तव्‍य है कि वह बच्चों को शिक्षित करने के लिए हर सम्भव प्रयास करे ताकि शिशु-अवस्था से ही वे बहाई सदाचार तथा ईश्वरीय मार्ग में प्रशिक्षित हों और वे नन्हे पौधों की तरह ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ के परामर्शों और सलाहों की मृदु-प्रवाही जलधारा में फल-फूल सकें।

98

यदि शिक्षक नहीं होता तो हर व्यक्ति बर्बर ही बना रह जाता और यदि गुरु नहीं होता तो बच्चे अज्ञानी ही बने रह जाते।

यही कारण है कि इस नए धर्म-चक्र में शिक्षण और प्रशिक्षण को ईश्वर के ग्रंथ में अनिवार्य बनाया गया है न कि ऐच्छिक। अर्थात पिता और माता पर यह कर्त्‍तव्‍य और दायित्व सौंपा गया है कि अपने पूरे प्रयास से वे बेटी और बेटे को प्रशिक्षित करें, ज्ञान के वक्षस्थल पर उन्हें पोषित करें और विज्ञानों और कलाओं की छाती पर उनका पालन करें। यदि वे इस बात की अवहेलना करेंगे तो कठोर प्रभु की उपस्थिति में उन्हें उत्तरदायी और अवनिंदा का पात्र समझा जाएगा।

99

तुमने बच्चों के बारे में लिखा हैः आरम्भिक काल से ही, बच्चों को दिव्य शिक्षा दी जानी चाहिए और उन्हें सतत रूप से अपने ईश्वर के स्मरण की याद दिलाई जानी चाहिए। माँ के दूध के साथ-साथ ईश्वरीय प्रेम भी उनके आंतरिक अस्तित्व को आप्लावित करे।

100

मेरी इच्छा यह है कि ये बच्चे बहाई शिक्षा प्राप्त करें ताकि इस लोक और ईश्वरीय साम्राज्य दोनों में उनकी उन्नति हो और उनके हृदय आनन्दित हो सकें।

आने वाले समय में, नैतिकता का अधःपतन हो जाएगा। अतः जरूरी है कि बच्चों को बहाई तौर-तरीके से पाला-पोसा जाए ताकि वे लोक-परलोक में प्रसन्न्नता प्राप्त कर सकें। ऐसा न होने पर वे दुःखों और विपत्तियों से घिर जाएंगे क्योंकि मनुष्य की प्रसन्नता आध्यात्मिक आचरण पर निर्भर है।

101

हे तू जिसे आत्मा की शांति प्राप्त है! ’परम पवित्र ग्रंथ’ तथा अन्य पातियों में अंकित के दिव्य पाठों में से एक यह हैः माता और पिता पर यह दायित्व है कि वे अपने बच्चों को अच्छे आचरण और पढ़ाई-लिखाई दोनों ही में प्रशिक्षित करें। पढ़ाई-लिखाई उस वांछित स्तर तक होनी चाहिए कि कोई भी बच्चा या बच्ची निरक्षर न रह जाए। यदि पिता इस कर्त्‍तव्‍य को करने से चूक जाए तो उसे अपना दायित्व निभाने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए और यदि वह फिर भी पालन न करे तो न्याय मन्दिर को चाहिए कि वह बच्चों की शिक्षा का भार अपने ऊपर ले ले ताकि किसी भी दशा में बालक या बालिका अशिक्षित न रह जाए। यह ईश्वर की कठोरतम और अपरिहार्य आज्ञाओं में से एक है जिसकी अवहेलना करने से सर्वशक्तिमान परमेश्वर का कोप प्रकट होगा।

102

हे सच्चे मित्रों! सभी मनुष्य एक पाठशाला के बच्चों की तरह हैं और ’प्रकाश के उदय-बिंदु’, दिव्य प्रकटीकरण के ’स्रोत’ विलक्षण और अनुपम शिक्षक हैं। वे ईश्वर की शिक्षा के अनुसार यथार्थ की पाठशाला में इन पुत्रों और पुत्रियों को शिक्षित बनाते और करुणा के वक्षस्थल पर पोषित करते हैं ताकि हर तरह से उनका विकास हो सके, वे प्रभु के उत्तम उपहारों और आशीर्वादों की झलक दिखा सकें और मानवीय पूर्णताओं का समावेश कर सकें, ताकि वे मानवीय प्रयत्नों की सभी विधाओं में प्रगति कर सकें - चाहे वे अंतरंग हों या बहिरंग, दृश्य या अदृश्य, भौतिक या आध्यात्मिक - जब तक कि वे इस भौतिक संसार को एक विस्तीर्ण दर्पण में न बदल दें, उस अन्य लोक को दर्शाने वाला दर्पण जिसका कभी नाश नहीं होता।

हे ईश्वर के मित्रों! चूंकि युगों में इस सर्वाधिक महत्वपूर्ण युग में ’सत्य का सूर्य’ बसन्त सम्पात के उच्चतम बिंदु पर उदित हुआ है, और इसने सभी भूभागों पर अपने किरणें बिखेरी हैं, अतः यह ऐसी स्पंदनकारी उत्तेजना उत्पन्न करेगा, अस्तित्व के संसार में वह ऐसा प्रकम्पन लाएगा, ऐसी प्रगति और वृद्धि को उत्प्रेरित करेगा और करूणा के मेघ ऐसी प्रचुर जलधाराओं की वर्षा करेंगे और खेत एवं मैदान ऐसी मधुर सुरभि वाले पौधों और बहारों से लहलहा उठेंगे कि यह तुच्छ धरती आभा साम्राज्य में बदल जाएगी और यह निम्न लोक उच्च लोक में परिणत हो जाएगा। तब यह धूलकण आसमानों की व्यापक परिधि की तरह बन जाएगा, यह मनुष्य लोक ईश्वर का राज-दरबार, मिट्टी का यह संसार ’प्रभुओं के प्रभु’ की असीम कृपाओं का दिवास्रोत बन जाएगा।

अतः, हे ईश्वर के प्रियजनों! जोरदार प्रयास कर जब तक कि तुम सब स्वयं इस प्रगति और इन सम्पुष्टियों के संकेत-चिह्न और ईश्वरीय कृपाओं का मुख्य केन्द्र, उसकी एकता के प्रकाश के दिवास्रोत, सुसभ्य जीवन के उपहारों और कृपाओं के प्रवर्द्धक न बन जाओ। तुम लोग उस भूभाग में मानवजाति की पूर्णता के अग्रणी बनो, ज्ञान की विभिन्न शाखाओं का विस्तार करो, आविष्कारों और कलाओं के क्षेत्र में सक्रिय और प्रगतिशील बनो। लोगों के आचरण सुधारने के लिए प्रयास करो और नैतिक चरित्र में इस समस्त संसार में श्रेष्ठ बनो। बच्चे जब अपनी शिशु-अवस्था में ही हों तभी से उन्हें स्वर्गिक कृपा के वक्ष से दुग्ध-पान करा, सर्वोत्कृष्टता के पालने में उनका पालन कर, उदारता के आलिंगन में उन्हें पोषित कर। उन्हें हर उपयोगी किस्म के ज्ञान का लाभ प्रदान कर। उन्हें हर तरह के नए, दुर्लभ और विलक्षण शिल्पों एवं नई कलाओं का अंशदान प्राप्त करने दे। उन्हें श्रम और प्रयास करने के लिए पालित कर और कठिनाइयाँ झेलने का अभ्यस्त बना। उन्हें यह सिखा कि वे अपने जीवन को महान उद्देष्य के लिए समर्पित करें और उन्हें ऐसे विषयों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित कर जिनसे मानवजाति को लाभ मिल सके।

103

बच्चों की शिक्षा और उनका प्रशिक्षण मानवजाति के सबसे योग्य कार्यों में से एक है और यह सर्वदयालु परमात्मा की कृपा और करुणा को आकर्षित करता है, क्योंकि शिक्षा समस्त मानवीय उत्कृष्टता का अपरिहार्य आधार है और मानव को चिरस्थायी गौरव की ऊंचाइयों तक अपना मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होती है। यदि बच्चे को उसकी शिशु अवस्था से ही प्रशिक्षित किया जाए तो वह, ’पवित्र माली’ की स्नेहिल देखभाल के माध्यम से, प्रवाहित फव्वारों के बीच स्थित नन्हे पौधे की तरह चेतना और ज्ञान के स्फटिक स्वच्छ जल का पान कर सकेगा। और निस्संदेह वह अपने लिए ’सत्य के सूर्य’ की प्रखर किरणें एकत्रित करेगा और इसकी रोशनी और उष्मा से वह जीवन की वाटिका में सदा ताजगी और निर्मलता से अपना विकास करता रहेगा।

अतः, शिक्षक को एक चिकित्सक भी होना चाहिएः अर्थात बच्चे को अनुदेशित करते समय उसे उसके दोषों का परिमार्जन करना चाहिए, उसे ज्ञान देना चाहिए और साथ ही साथ उसका इस तरह पालन करना चाहिए कि वह आध्यात्मिक स्वभाव का हो सके। शिक्षक को बच्चे के चरित्र के प्रति एक चिकित्सक बनना चाहिए, इस तरह वह मनुष्य-पुत्रों की आध्यात्मिक ब्याधियों के लिए आरोग्य प्रदान कर सकेगा।

यदि इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए भरपूर प्रयास किया जाए तो मानव-जगत अपने अन्य विभूषणों के साथ प्रकाशित हो उठेगा और उज्ज्वल प्रकाश बिखेर सकेगा। तब यह अंधकारमय जगत ज्योतिर्मय हो उठेगा और यह धरा धाम स्वर्ग में बदल जाएगा। राक्षस देवदूत बन जाएंगे, भेड़िये पशु-पालक गड़ेरियों में बदल जाएंगे, जंगली कुत्ते एकता के चरागाह में तृण चरने वाले हरिणों की तरह हो जाएंगे, बर्बर जानवर शांतिप्रिय जीवों के झुंड बन जाएंगे और चाकू जैसे तेज चंगुल वाले शिकारी पक्षी सुमधुर आलाप करने वाले कोकिलों में बदल जाएंगे।

चूंकि मनुष्य का आंतरिक यथार्थ छाया और प्रकाश के बीच एक विभाजक-रेखा है, वह स्थान जहाँ दो समुद्रों का संगम होता है,[[36]](#footnote-36) अतः अवरोह के मेहराब पर यह ऊपर के सभी स्तरों को प्राप्त करने में सक्षम है।[[37]](#footnote-37)

प्रत्येक बालक और बालिका में विश्व का प्रकाश बनने की सम्भावना है और साथ ही इस विश्व का अंधकार बनने की भी, अतः शिक्षा के प्रश्न को प्राथमिक महत्व का समझा जाना चाहिए। बच्चे की देखभाल उसकी शिशु अवस्था से ही ईश्वरीय प्रेम के वक्ष पर किया जाना चाहिए और ईश्वरीय ज्ञान की परिधि में उसका पोषण किया जाना चाहिए ताकि वह प्रकाश बिखेर सके, आध्यात्मिक रूप से विकसित हो, ज्ञान और विवेक से सम्पन्न हो और देवदूतों के समुदाय जैसी विशेषताएँ हासिल कर सके।

चूंकि तुझे यह पवित्र दायित्व दिया गया है अतः तुम्हें पूरा प्रयास करना चाहिए कि तुम उस पाठशाला को हर तरह से पूरे विश्व में प्रसिद्ध बना सको और उसे प्रभु की वाणी को उदात्त बनाने का हेतु बन सको।

104

हे ईश्वर के प्रियजनों और उस सर्वदयालु की सेविकाओं! विद्वानों के एक बड़े समुदाय की यह राय है कि विचारों में अन्तर और समझ के स्तरों में भिन्नता शिक्षा, प्रशिक्षण और संस्कृति में विभिन्नता के कारण है। अर्थात वे यह मानते हैं कि आरम्भ-बिंदु पर सभी मस्तिष्क एक समान हैं लेकिन शिक्षण और प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप मानसिक भिन्नता और बुद्धि के स्तरों में भेद प्रतिफलित होगा और यह कि ऐसी भिन्नताएँ व्यक्तित्व के अंतर्निहित घटक नहीं हैं बल्कि वे शिक्षा के परिणाम हैं। कोई भी व्यक्ति जन्मजात रूप से दूसरे से उत्कृष्ट नहीं है.......

इसी तरह, ईश्वर के प्रकटावतार भी इस बात पर सहमत हैं कि शिक्षा मानवजाति पर सबसे सशक्त प्रभाव डालती है। परन्तु वे यह भी कहते हैं कि बुद्धि के स्तर में अन्तर जन्मजात होता है, और यह तथ्य स्पष्ट है जिस पर कोई विवाद नहीं किया जा सकता क्योंकि हम देखते हैं कि एक ही उम्र, एक ही देश, एक ही प्रजाति, बल्कि एक ही परिवार के बच्चे होते हुए भी उनकी समझ और बुद्धि में अन्तर होता है। एक बड़ी तेजी से प्रगति करता है जबकि दूसरे को निर्देशों को समझने में थोड़ी देर लगती है, और कोई फिर भी बुद्धि के निम्नतम स्तर पर ही बना रहता है। किसी सीप पर आप चाहे जितना भी पालिश कर लें वह चमकते हुए मोती में नहीं बदल सकता और न ही आप किसी साधारण से कंकड़ को ऐसे रत्न में बदल सकते हैं जिसका निर्मल प्रकाश पूरे विश्व को आलोकित कर देता है। प्रशिक्षण और पोषण से खट्टे सेव और कड़वे पेड़[[38]](#footnote-38) को ’कल्पवृक्ष’[[39]](#footnote-39) में नहीं बदला जा सकता है। कहने का आशय यह कि शिक्षा मनुष्य के अंतरिक सार-तत्व को नहीं बदल सकती किन्तु अवश्य ही इसका बहुत प्रबल प्रभाव पड़ता है और इसकी शक्ति से व्यक्ति में निहित क्षमताएँ और पूर्णताएँ उजागर होती हैं। किसान द्वारा सही ढंग से उपजाए जाने पर गेहूँ का एक दाना सम्पूर्ण फसल दे सकता है, और कृषक की देखभाल में एक छोटा-सा बीज एक बहुत बड़े वृक्ष में बदल सकता है। शिक्षक के स्नेहपूर्ण प्रयासों का शुक्रिया कि प्राथमिक पाठशाला के बच्चे उपलब्धि के उच्चतम स्तरों पर पहुंच सकते हैं। वस्तुतः, उसके अभिभावकत्व में एक मामूली बच्चा भी उच्च सिंहासन पर पहुँच सकता है। यह स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होता है कि मस्तिष्कों में अपनी अंतर्निहित प्रकृति के कारण भिन्नता हो सकती है किन्तु शिक्षा की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है और वह उनके विकास में एक सशक्त प्रभाव छोड़ती है।

105

जहाँ तक मौजूदा भौतिक सभ्यता और उस दिव्य सभ्यता में, जो कि न्याय मन्दिर से उत्पन्न लाभों में से एक होगी, अन्तर का सवाल है, वह यह है: भौतिक सभ्यता अपने दण्डात्मक और प्रतिशोधात्मक कानूनों के आधार पर लोगों को आपराधिक कार्यों से रोकती है। इसके बावजूद, जैसाकि हम देख सकते हैं, एक ओर जहाँ मनुष्य को दण्ड देने और उससे प्रतिशोध लेने के कानून बनते जा रहे हैं वहीं दूसरी ओर उसे पुरस्कृत करने के लिए कोई कानून नहीं है। यूरोप और अमेरिका के सभी नगरों में, अपराधियों के लिए जेल के रूप में विशाल भवन तैयार किए गए हैं।

किन्तु दिव्य सभ्यता समाज के हर सदस्य को इस तरह प्रशिक्षित करती है कि, कुछ नगण्य लोगों को छोड़कर, कोई भी अपराध करना ही नहीं चाहेगा। अतः, हिंसक एवं प्रतिशोधात्मक उपायों से अपराध रोकना और इस तरह लोगों को प्रशिक्षित करना, उन्हें ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करना, उन्हें आध्यात्मिक बनाना कि किसी भी दण्ड या प्रतिशोध के भय के बिना वे अपराध न करें - इन दोनों ही व्यवस्थाओं में बड़ा अन्तर है। ऐसे लोग, वस्तुतः, अपराध करने के कार्य को घोर लज्जा की दृष्टि से देखेंगे और उसे ही कठोरतम दण्ड समझेंगे। उन्हें मानवीय परिपूर्णताओं से प्रेम होगा और वे ऐसे उद्देश्यों के लिए अपना जीवन समर्पित करेंगे जिनसे संसार प्रकाशित हो सके और वे ऐसे गुणों का विकास करेंगे जो ईश्वर की पवित्र दहलीज पर स्वीकार्य होंगे।

अतः, देखो कि भौतिक सभ्यता और दिव्य सभ्यता के बीच कितना बड़ा अन्तर है। भौतिक सभ्यता जोर-जबर्दस्ती और सजा देने के बल पर लोगों पर काबू पाने, समाज को हानि पहुँचाने और अपराध से उन्हें रोकने का प्रयत्न करती है जबकि दिव्य सभ्यता में व्यक्ति को इस तरह बना दिया जाता है कि दण्ड के भय के बिना ही वह आपराधिक कार्यों से बचना चाहता है, वह अपराध करने मात्र को ही घोर यंत्रणा समझता है और उत्साह एवं उमंग के साथ मानवीय सद्गुणों को प्राप्त करने, मनुष्य की प्रगति में योगदान देने और विश्व को आलोकित करने के लिए प्रतिबद्ध होता है।

106

सर्वशक्तिमान ईश्वर को प्रदान की जा सकने वाली सम्भवतः सबसे बड़ी सेवा है बच्चों - आभा-स्वर्ग के युवा पौधों - को शिक्षित और प्रशिक्षित बनाना, ताकि मुक्ति के मार्ग में ईश्वरीय करुणा से पोषित ये बच्चे, शिक्षा की सीपी में दिव्य कृपा के मोतियों की तरह विकसित होते हुए, एक दिन शाश्वत गरिमा के मुकुटमणि बन सकेंगे।

परन्तु इस सेवा के पथ पर पैर रखना बड़ा मुश्किल है, इसमें सफल होना और ज्यादा मुश्किल। मेरी आशा है कि इस अति महत्वपूर्ण कार्य के लिए तुम स्वयं को मुक्त करोगे और ईश्वर की असीम कृपा के चिह्न बनोगे ताकि पवित्र शिक्षाओं से परिपोषित ये बच्चे सर्वगौरवमय परमात्मा की वाटिकाओं में प्रवाहित होने वाली हवाओं का स्वभाव ग्रहण करते हुए विकास कर सकेंगे और दुनिया भर में अपनी सुरभि का प्रसार कर सकेंगे।

107

अब्दुल बहा यह आशा करते हैं कि गहन ज्ञान की कक्षा में निरत उन नवयुवाओं की सार-संभाल उन्हें प्रेम से प्रशिक्षित करने वाले व्यक्ति द्वारा की जाएगी। चेतना के समस्त विस्तार तक वे निगूढ़ रहस्यों को अच्छी तरह जान सकें - इतनी अच्छी तरह कि सर्वगौरवमय परमात्मा के साम्राज्य में उनमें से प्रत्येक, किसी वाणी-सम्पन्न बुलबुल की तरह, ’स्वर्गिक साम्राज्य’ के रहस्यों का बयान कर उठेगा और किसी उत्कंठ प्रेमी की तरह उस ’प्रियतम’ की चरम कामना, उसकी नितान्त आवश्यकता को प्रकट करने वाला उन्मत्त प्रेमी बन जाएगा।

108

अच्छे चरित्र को तुम्हें प्राथमिक महत्व का विषय समझना चाहिए। प्रत्येक माता-पिता का यह कर्त्‍तव्‍य है कि वे दीर्घ काल तक अपने बच्चों को उचित परामर्श देते रहें और ऐसी बातों में उनका मार्गदर्शन करते रहें जो उन्हें असीमित सम्मान की दिशा में ले जाए।

स्कूली बच्चों को तुम आरम्भिक काल से ही उच्च गुणवत्ता वाले भाषण देने की कला में प्रोत्साहित करो ताकि अपने खाली समय में वे तार्किक एवं प्रभावी वार्तालाप कर सकें और स्वयं को प्रवाह एवं स्पष्टता के साथ प्रकट कर सकें।

109

हे ईश्वर की कृपाओं के प्राप्तकर्ता! इस नए और विलक्षण युग में विज्ञानों और कलाओं की शिक्षा एक अडिग आधार है। स्पष्ट पवित्र पाठों के अनुसार, हर बच्चे को आवश्यक स्तर तक शिल्पों और कलाओं में पारंगत किया जाना चाहिए। अतः, हर शहर और गांव में स्कूलों की स्थापना की जानी चाहिए और उस शहर या गांव में रहने वाले हर बच्चे को एक अनिवार्य स्तर तक अध्ययन में निरत किया जाना चाहिए।

इस कार्य के लिए जो कोई भी व्यक्ति अपनी सहायता देगा उसे निस्संदेह स्वर्गिक दहलीज पर स्वीकार किया जाएगा और उच्च स्वर्ग के सहचर उसकी सराहना करेंगे।

चूंकि इस अति-महत्वपूर्ण लक्ष्य के लिए तुमने घोर परिश्रम किया है, मेरी आशा है कि परमात्मा तुम्हें स्पष्ट चिह्नों और संकेतों के साथ पुरस्कृत करेंगे और तुम्हारे पथ पर स्वर्गिक कृपा की दृष्टि पड़ेगी।

110

जहाँ तक विद्यालयों के संघटन की बात है: यदि सम्भव हो तो सभी बच्चे एक ही समान पोशाक पहनें भले ही कपड़े की गुणवत्ता में भिन्नता हो, हालाँकि बेहतर यही होगा कि कपड़े की गुणवत्ता भी एक समान ही हो। किन्तु यदि ऐसा न हो सके तो कोई हानि नहीं। छात्र जितने ही साफ-सुथरे होंगे उतना ही अच्छा रहेगा। वे बिल्कुल बेदाग साफ रहें। विद्यालय ऐसी जगह पर अवस्थित हो जहाँ अच्छी और स्वच्छ हवा आती हो। बच्चों को सावधानीपूर्वक प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि वे सौजन्यपूर्ण और शिष्टाचार से सम्पन्न हों। उन्हें मानवीय उपलब्धियों के सभी उत्कर्षों को प्राप्त करने के लिए सतत रूप से प्रोत्साहित और समुत्सुक किया जाना चाहिए ताकि अपनी आरम्भिक अवस्था से ही वे उन्हें ऊँचे लक्ष्य रखने, सदाचार के पथ पर चलने, पवित्र एवं पावन-चरित्र, निर्दोष होने की शिक्षा मिले और वे सभी बातों में दृढ़प्रतिज्ञ और लक्ष्यनिष्ठ होना सीख सकें। उन्हें हर बात को मामूली और दिल्लगी समझने वाला व्यक्ति नहीं बल्कि ऐसा व्यक्ति बनना चाहिए जो पूरी उत्कंठा से अपने लक्ष्य-पथ पर बढ़ता चले ताकि वे स्वयं को हर परिस्थिति में अडिग और सुदृढ़ पा सकें।

नैतिकता और अच्छे आचरण का प्रशिक्षण किताबी शिक्षा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। वह बच्चा जो निर्मल, प्रसन्न कर देने वाला, अच्छे चरित्र का और शिष्ट है वह भले ही अज्ञानी हो किन्तु ऐसे बच्चे से श्रेयस्कर है जो सभी कलाओं और विज्ञानों में पारंगत होने के बावजूद असभ्य, असंस्कृत और बुरे स्वभाव का है। इसका कारण यह है कि जो बच्चा सदाचारी है वह भले ही अज्ञानी हो किन्तु दूसरों के लिए लाभदायक है जबकि बुरे स्वभाव, बुरे व्यवहार वाला बच्चा भ्रष्ट एवं दूसरों के लिए हानिप्रद है, भले ही वह कितना ही ज्ञानी क्यों न हो। किन्तु यदि किसी बच्चे को ज्ञानवान और सदाचारी दोनों ही बनाया जाए तो यह सोने पर सुहागा है।

बच्चे नई और हरी-भरी टहनी की तरह होते हैं, उन्हें जिस दिशा में प्रशिक्षित किया जाएगा वे उसी दिशा में पल्लवित होंगे। सावधानीपूर्वक उन्हें महान आदर्शों और लक्ष्यों से सम्पन्न करो ताकि बड़े होने पर वे प्रकाशित दीपों की तरह इस दुनिया पर अपनी किरणें बिखेर सके। वे जानवरों की तरह वासनाओं से प्रदूषित, अज्ञानी और असावधान न हो जाएँ बल्कि अपना हृदय असीमित गौरव एवं मानवता की समस्त उत्कृष्टताओं को प्राप्त करने पर केन्द्रित करें।

111

हर गलत कार्य का मूल कारण है अज्ञान, अतः हमें समझ और ज्ञान के साधनों को दृढ़तापूर्वक थाम लेना चाहिए। अच्छा चरित्र अवश्य सिखाया जाना चाहिए। प्रकाश दूर-दूर तक बिखेरा जाना चाहिए ताकि मानवता की पाठशाला में सभी लोग चेतना की स्वर्गिक विशेषताएँ ग्रहण कर सकें और असंदिग्ध रूप से यह देख सकें कि दुष्ट एवं खराब चरित्र से ज्यादा वीभत्स कोई नरक नहीं, निंदनीय गुणों को दर्शाने से अधिक अंधकारमय गुहा, ज्यादा घृणास्पद यातना और कुछ भी नहीं।

व्यक्ति को इस हद तक शिक्षित किया जाना चाहिए कि वह झूठ बोलने के बजाय अपना गला कटवा लेना पसन्द करे और किसी की अवनिंदा करने अथवा क्रोध के आवेश में आने की अपेक्षा तलवार से कट जाना या भाले से बिंध जाना ज्यादा आसान समझे।

इस तरह, लालसाओं की भूख की पैदावार को भस्‍मीभूत करके मनुष्य की गरिमा और अभिमान की भावना प्रज्वलित होगी। तब ईश्वर के प्रियजनों में से प्रत्येक व्यक्ति चेतना के सद्गुणों से सम्पन्न एक प्रखर चन्द्रमा की तरह चमक उठेगा और अपने प्रभु की पवित्र दहलीज से हर व्यक्ति का सम्बन्ध कल्पनाजन्य नहीं बल्कि सुदृढ़ और वास्तविक होगा, वह भवन की आधारशिला की तरह होगा न कि उसके अग्रभाग पर की गई महज दिखावटी नक्काशी की तरह।

इसका आशय यह कि बच्चों की पाठशाला एक अत्यंत ही व्यवस्थित और अनुशासित जगह होनी चाहिए, उन्हें समग्रता से निर्देशित किया जाना चाहिए और चरित्र को उन्नत एवं परिमार्जित करने की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि, आरम्भिक अवस्था में ही, बच्चे के अंतःकरण में दिव्य आधारशिला डाली जा सके और पावनता की संरचना का निर्माण किया जा सके।

तू यह जान कि सिखाने, चरित्र निर्माण और उसके परिमार्जन, बच्चे को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने का यह कार्य अतिशय महत्वपूर्ण है क्योंकि वे ईश्वर के बुनियादी सिद्धान्त हैं।

अतः, यदि ईश्वर की इच्छा होगी तो इन आध्यात्मिक विद्यालयों से प्रकाशित बच्चे सामने आएंगे जो मानवजाति के उत्तम गुणों से विभूषित होंगे और वे अपनी प्रभा केवल फारस (अब ईरान) में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में बिखेरेंगे।

किशोरावस्था गुजर जाने के बाद व्यक्ति को शिक्षित करना और उसके चरित्र का परिमार्जन करना बहुत ही कठिन होता है। जैसाकि अनुभव से पता चलता है, उस समय तक यदि उसकी कुछ प्रवृत्तियों को सुधारने के लिए हर प्रयास किए जाएं तो भी उसका कुछ लाभ नहीं होगा। आज उसमें सम्भवतः कुछ सुधार की गुंजाइश हो सकती है लेकिन यदि कुछ दिन बीत जाएँ तो वह सब कुछ भुलाकर अपनी पिछली आदतों की ओर लौट जाएगा। अतः, सुदृढ़़ आधार की स्थापना आरम्भिक बाल्यावस्था में ही की जानी चाहिए। जब तक शाखा हरी-भरी और कोमल है तब तक उसे सीधा किया जा सकता है।

हमारा तात्पर्य यह है कि चेतना के गुण मूल एवं दिव्य आधारशिला हैं और वे मनुष्य के सच्चे सार-तत्व को विभूषित करते हैं। ईश्वर के प्रेमी को चाहिए कि इस विषय को वह अत्यंत महत्वपूर्ण समझे और उमंग तथा उत्साहपूर्वक इस दायित्व को पूरा करे।

112

इस पवित्र धर्म में अनाथ बच्चों का सवाल बहुत ही महत्वपूर्ण है। अनाथों के प्रति अत्यंत ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्हें शिक्षित-प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो उन्हें खास तौर पर बहाउल्लाह की शिक्षाएँ दी जानी चाहिए।

मैं ईश्वर से याचना करता हूं कि तुम अनाथ बच्चों के लिए एक दयालु अभिभावक बनो, उन्हें पवित्र चेतना की सुरभियों से जीवन्त बनाओ ताकि प्रौढ़ होने पर वे मानव-जगत के सच्चे सेवक बन सकें और लोगों की सभाओं में प्रखर प्रदीप की तरह जगमगाएँ।

113

हे ईश्वर की सेविका! .......माताओं को ईश्वरीय शिक्षाएँ और प्रभावी परामर्श जरूर दी जानी चाहिए और उन्हें अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए उत्सुक और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि माता अपने बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है। वही तो है जिसे अत्यन्त आरम्भावस्था में ही अपने शिशु को ईश्वरीय निष्ठा और परमात्मा के विधानों के वक्ष पर दुग्ध-पान कराना चाहिए ताकि माँ के दूध के साथ-साथ दिव्य प्रेम भी उसमें प्रविष्ट हो और जीवन की अंतिम सांस तक वह प्रेम बना रहे।

जब तक मां अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने और जीवन-मार्ग की सही दिशा दिखाने में विफल रहेगी तबतक उन्हें बाद में दिया जाने वाला प्रशिक्षण पूरी तरह कारगर नहीं हो सकेगा। आध्यात्मिक सभाओं का यह दायित्व है कि वे माताओं को बच्चों की शिक्षा के लिए एक सुनियोजित योजना उपलब्ध कराएँ जिसमें यह दर्शाया जाए कि शिशु-अवस्था से ही बच्चे की निगरानी की जानी चाहिए और उसे सिखाया जाना चाहिए। ये निर्देश एक मार्गदर्शन के रूप में सभी माताओं को अवश्य दिए जाएँ ताकि हर माता ईश्वरीय शिक्षाओं के अनुरूप अपने बच्चों का प्रशिक्षण और पालन-पोषण कर सके।

इस तरह ईश्वरीय प्रेम रूपी वाटिका के ये छोटे पौधे ’सत्य के सूर्य’ की उष्मा तले, स्वर्ग की मृदुल बासन्ती बयारों से और अपनी माँ के मार्गदर्शक हाथों से पुष्पित-पल्लवित हो सकेंगे। इस तरह, आभा-स्वर्ग में उनमें से प्रत्येक फलों के गुच्छे उत्पन्न करने वाला वृक्ष बन सकेगा और उनमें से प्रत्येक, इस नवीन और विलक्षण ऋतु में, बसन्त की उदारता के परिणामस्वरूप, समस्त सौन्दर्य और भव्यता से सम्पन्न हो सकेगा।

114

हे स्नेहिल माताओं, तू यह जान कि ईश्वर की दृष्टि में उसकी आराधना करने का सबसे उत्तम तरीका है बच्चों को शिक्षित करना और उन्हें मानवजाति की सभी परिपूर्णताओं में प्रशिक्षित करना। इससे अधिक भव्य कार्य की कल्पना नहीं की जा सकती।

115

हे तुम दोनों ईश्वर की अति प्रिय सेविकाओं! मनुष्य की वाणी जो भी बोलती है उसे कर्म द्वारा साबित करना चाहिए। यदि वह अनुयायी होने का दावा करता है तो उसे चाहिए कि वह आभा-साम्राज्य के उपदेशों के अनुसार आचरण करे।

ईश्वर का गुणगान हो कि तुम दोनों ने अपने कर्म से अपनी वाणी की सत्यता प्रदर्शित की है और प्रभु परमेश्वर की सम्पुष्टि प्राप्त की है। हर दिन के प्रथम प्रकाश के साथ तुम बहाई बच्चों को एकत्रित करती हो और उन्हें प्रार्थनाएँ एवं ईश्वर से वार्तालाप करना सिखाती हो। यह एक अत्यंत प्रशंसनीय कार्य है और यह बच्चों के हृदय को आनन्दित करता है कि उन्हें हर प्रातःकाल ईश्वर के साम्राज्य की ओर उन्मुख होना चाहिए और ईश्वर की स्तुति और उसके नाम का गुणगान करना चाहिए, एवं सुमधुर स्वर से इसका पाठ और गायन करना चाहिए।

ये बच्चे नए पौधों की तरह हैं और उन्हें प्रार्थनाएँ सिखाना ऐसा ही है जैसे उन पर बरखा की फुहारें पड़ने देना ताकि वे ताजगी और कोमलता से भर सकें और ईश्वर के प्रेम की मृदुल हवाएँ उनके ऊपर से प्रवाहित हो और वे हर्ष से झूम सकें।

आशीर्वाद और निर्मल स्वर्ग तुम्हारी प्रतीक्षा में है।

116

हे प्रभु-साम्राज्य की पुत्री! तुम्हारे पत्र प्राप्त हुए। उनकी विषय-वस्तुओं से यह ज्ञात हुआ कि तुम्हारी माँ का स्वर्गारोहण हो गया है और तुम अकेली रह गई हो। तुम्हारी इच्छा अपने पिता की सेवा करना है जो तुम्हें बहुत ही प्रिय हैं और साथ ही ईश्वरीय साम्राज्य की सेवा करना भी। तुम इस असमंजस में हो कि दोनों में से क्या किया जाए। निस्संदेह तुम्हें अपने पिता की सेवा में निरत होना चाहिए और साथ ही, जब कभी तुम्हें समय मिले, दिव्य सुरभियों का प्रसार करो।

117

हे अब्दुल बहा के प्रिय! तुम अपने पिता के पुत्र बनो और उस वृक्ष के फल बन जाओ। ऐसा बेटा बनो जो हृदय और आत्मा से उत्पन्न हुआ हो, न कि केवल मिट्टी और पानी से। सच्चा बेटा वह है जो मनुष्य के आध्यात्मिक अंश से उत्पन्न है। ईश्वर से मेरी याचना है कि तुम्हें सदा उसकी पुष्टि और सुदृढ़ता प्राप्त हो।

118

हे नन्हें बहाई बच्चों, तुम जो कि सच्ची बुद्धि और सच्चे ज्ञान की तलाश में हो! मनुष्य और जानवर में कई तरह से अन्तर किया जाता है। सबसे पहले, उसे ईश्वर की छवि में गढ़ा गया है, सर्वोत्तम प्रकाश की प्रतिकृति के रूप में, जैसाकि ’टोरा’ में कहा गया हैः “हम मनुष्य को अपनी छवि में गढ़ें, अपनी प्रतिकृति के रूप में”।[[40]](#footnote-40) यह दिव्य छवि पूर्णता के सभी संकेतों को झलकाती है, ’सत्य के सूर्य’ से व्युत्पन्न जिसके प्रकाश मानव के यथार्थों को आलोकित कर देते हैं। और पूर्णता के इन गुणों में सबसे महान हैं ज्ञान और विवेक। अतः तुम सबको रात-दिन प्रयास करते हुए, पल भर भी विश्राम किए बिना, जोरदार श्रम करना चाहिए कि तुम सभी विज्ञानों और कलाओं का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर सको ताकि ’सत्य के सूर्य’ से झलकने वाली ’दिव्य छवि’ मानव-हृदय रूपी दर्पणों को प्रकाशित कर सके।

तुम सबको अध्ययन के क्षेत्र और आंतरिक महत्ता की पाठशाला में निष्णात देखना अब्दुल बहा की उत्कट अभिलाषा है और यह कि तुममें से प्रत्येक ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी बन सको।

119

बहाई बच्चों का यह कर्त्‍तव्‍य है कि वे विज्ञानों और कलाओं का ज्ञान हासिल करने में अन्य बच्चों से आगे रहें क्योंकि उनका लालन-पालन ईश्वरीय कृपा के पालने में किया गया है।

अन्य बच्चे जो बातें एक साल में सीख सकेंगे वे बहाई बच्चे एक महीने में सीख जाएँ। अब्दुल बहा का हृदय इस प्रेम की उत्कंठा से भरा है कि बहाई युवाओं में से प्रत्येक को पूरी दुनिया में उनकी बौद्धिक उपलब्धियों के लिए जाना जाए। इसके अलावा और कोई प्रश्न नहीं है कि वे विज्ञानों और कलाओं में पारंगत होने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देंगे।

120

हे मेरे प्रिय बच्चों! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। उससे इतना आनन्द प्राप्त हुआ जिसका वर्णन लिखकर या शब्दों में नहीं किया जा सकता। ईश्वर का गुणगान हो, प्रभु-साम्राज्य की शक्ति ने ऐसे बच्चों को प्रशिक्षित किया है जो अपनी आरम्भिक बाल्यावस्था से ही बहाई शिक्षा अर्जित करना चाहते हैं ताकि वे बचपन से ही मानव-विश्व की सेवा में निरत हो सकें।

मेरी सबसे बड़ी इच्छा और अभिलाषा यह है कि बच्चों को बहाउल्लाह की शिक्षाओं के अनुरूप शिक्षित किया जाए और वे बहाई प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें ताकि तुममें से प्रत्येक इस मानव-जगत में एक प्रकाशित मोमबत्ती की तरह बन सके, मानवता की सेवा के लिए समर्पित हो सके, अपने आराम को तिलांजलि दे दे ताकि तुम सब इस सृष्टि-जगत में शांति के हेतु बन सको।

ऐसी ही है मेरी आशा तुम सबके लिए और मुझे विश्वास है कि तुम लोग प्रभु-साम्राज्य में मेरे हर्ष और उल्लास का कारण बनोगे।

121

हे तू जिसकी उम्र बहुत कम है और फिर भी जिसे अनेक मानसिक उपहार प्राप्त हैं! ऐसे न जाने कितने बच्चे हैं जो हालाँकि अभी नौजवान हैं लेकिन फिर भी परिपक्व और अच्छे विवेक से सम्पन्न हैं! न जाने कितने वयस्क लोग हैं और फिर भी अज्ञानी एवं असमंजस में पड़े हैं! प्रगति और विकास व्यक्ति की बौद्धिक और तार्किक क्षमताओं पर निर्भर है न कि इस बात पर उसकी उम्र कितनी है।

अभी बाल्यावस्था में होते हुए भी तुमने प्रभु को पहचान लिया है जबकि अनेक स्त्रियाँ उसे भुलाए बैठी हैं और उसके स्वर्गिक साम्राज्य से एक आवरण की भाँति ढंकी पड़ी हैं, उसके अनुदानों से वंचित हैं। इस विलक्षण वरदान के लिए तू अपने ईश्वर का धन्यवाद कर।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह स्वर्गिक साम्राज्य में समादृत तुम्हारी माँ को आरोग्य प्रदान करे।

 122

जहाँ तक बच्चों की शिक्षा से सम्बन्धित तुम्हारा प्रश्न हैः तुम्हारे योग्य यह है कि तुम ईश्वर के प्रेम रूपी वक्ष पर उनका पालन करो और उन्हें चेतना के विषयों की ओर उत्प्रेरित करो ताकि वे ईश्वर की ओर अभिमुख हो सकें, कि उनके तौर-तरीके सदाचार के नियमों के अनुरूप हों और उनका चरित्र अनुपम हो, कि मानवजाति की भव्यताओं और उसके प्रशंसनीय गुणों को अपना सकें, ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का गहन ज्ञान अर्जित कर सकें, कि जीवन की आरम्भिक अवस्था से ही वे आध्यात्मिक व्यक्ति बन सकें, प्रभु-साम्राज्य में निवास करने वाले हों, पावनता के मधुर उच्छवास के दीवाने हों और ऐसी शिक्षा प्राप्त कर सकें जो धार्मिक, आध्यात्मिक और स्वर्गिक साम्राज्य की हो। मैं वस्तुतः ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि वे उन्हें इसमें अच्छा परिणाम प्रदान करें।

123

हे तू जिसकी दृष्टि प्रभु-साम्राज्य की ओर है! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ और हमने यह समझा कि तुम बहाई बच्चों को शिक्षा देने के कार्य में निरत हो और यह कि ये सुकोमल बच्चे ’निगूढ़ वचन’ और प्रार्थनाएँ सीख रहे हैं और यह कि बहाई होने का क्या अर्थ है।

इन बच्चों को शिक्षित करना एक स्नेहिल माली के कार्य की तरह है जो सर्वगौरवमय परमात्मा के लहलहाते हुए मैदानों में अपने छोटे पौधों की देखभाल करता है। निस्संदेह, इसके वांछित परिणाम प्राप्त होंगे और बहाई अनिवार्य कर्त्‍तव्‍यों एवं बहाई आचरण की शिक्षा देने के संदर्भ में यह खासतौर पर सच है, क्योंकि नन्हे बच्चों को उनके हृदय और उनकी आत्मा की गहराई में इस तथ्य से परिचित कराया जाना चाहिए कि “बहाई” केवल एक नाम नहीं बल्कि एक सच्चाई है। हर बच्चे को चेतना के विषयों में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वह सभी सद्गुणों को झलका सके और प्रभुधर्म के लिए गौरव का स्रोत बन सके। अन्यथा, केवल “बहाई” नाम रख लेना और उससे कोई सुफल उत्पन्न न होना बेकार ही है।

अतः अपनी सर्वोत्तम क्षमता के साथ यह प्रयास करो कि ये बच्चे यह जानें कि बहाई वह है जो सभी पूर्णताओं को झलकाता है, कि वह एक प्रकाशित शिखा की तरह जले - न कि घोर अंधकार बन जाए और फिर भी “बहाई” नाम धारण किए रहे।

तुम इस स्कूल का नाम रखो बहाई संडे स्कूल। [[41]](#footnote-41)

124

बच्चों के लिए एक संडे स्कूल (रविवारीय विद्यालय) जिसमें बहाउल्लाह की पातियाँ और शिक्षाएँ पढ़ी जाती हैं और बच्चों के लिए ईश्वरीय वाणी का पाठ किया जाना सचमुच एक आशीर्वादित बात है। तुम्हें इस सुगठित कार्यकलाप को अनवरत रूप से चलाते रहना चाहिए और इसे महत्वपूर्ण समझना चाहिए ताकि दिनोदिन इसका विकास होता रहे और यह ’पावन चेतना’ के उच्छवासों से स्फूर्तिवान बना रहे। यदि यह कार्यकलाप सुगठित होगा तो आश्वस्त रहो कि इसके बहुत अच्छे परिणाम होंगे। लेकिन इसके लिए स्थिरता और दृढ़ता की जरूरत है अन्यथा यह कुछ दिन तो चलेगा मगर उसके बाद उसे धीरे-धीरे भुला दिया जाएगा। सतत प्रयास एक आवश्यक शर्त है। चाहे कोई भी कार्य हो उसमें स्थिरता और दृढ़ता से निस्संदेह अच्छे परिणाम हासिल होंगे, अन्यथा वह कुछ दिन चलेगा और फिर उसका क्रम टूट जाएगा।

125

शिक्षकों को बदलने का काम बहुत जल्दी-जल्दी भी नहीं होना चाहिए और न ही बहुत देर से, मध्यम मार्ग बेहतर है। जब अन्य गिरजाघरों में प्रार्थना को समय हो उस समय तुम अपनी बैठकें करो यह सुझाव देना उचित नहीं होगा, इससे अलगाव बढ़ेगा क्योंकि जिन बहाई बच्चों का खुद अपना संडे स्कूल होगा यदि वे अन्य संडे स्कूलों में भाग लेना चाहेंगे तो वे इससे वंचित रह जाएंगे। इसके अलावा, गैर-बहाई माता-पिताओं के बच्चों को भी बहाई बच्चों के स्कूल में प्रवेश देने की अनुमति है। और यदि इस स्कूल में बच्चों की जानकारी के लिए सभी धर्मों में निहित मूलभूत सिद्धान्तों की रूपरेखा प्रस्तुत की जाए तो इसमें कोई हानि नहीं।

चूंकि बच्चों की संख्या बहुत कम है अतः अलग-अलग कक्षाएँ चलाना सम्भव नहीं है और स्वाभाविक रूप से केवल एक कक्षा की ही जरूरत है। जहाँ तक बच्चों के बीच अन्तर से सम्बन्धित आखिरी प्रश्न है, वैसा ही करो जैसा तुम्हें उचित लगे।

126

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। ईश्वर की स्तुति हो कि इसने स्वास्थ्य और सुरक्षा के बारे में खुशखबरी दी और यह संकेत दिया कि तुम एक कृषि विद्यालय में प्रवेश के लिए तैयार हो। यह अत्यन्त उपयुक्त है। कृषि विज्ञान में पारंगत होने के लिए यथासम्भव प्रयास करो क्योंकि दिव्य शिक्षाओं के अनुसार विज्ञान में निपुणता और कलाओं में पूर्णता हासिल करना ईश्वर की उपासना माना जाता है। यदि कोई व्यक्ति अपनी पूरी शक्ति से विज्ञान में निपुणता और कलाओं में पूर्णता पाने के कार्य में संलग्न है तो यह मन्दिरों और गिरजाघरों में परमेश्वर की आराधना करने जैसा कार्य है। अतः, जब तुम एक कृषि विद्यालय में प्रवेश कर रहे हो और उस विज्ञान में कुशलता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हो तो तुम मानों दिन-रात उपासना के कार्य में जुटे हुए हो - वे कार्य जो सर्वशक्तिमान परमात्मा की दहलीज पर स्वीकृति-योग्य हैं। इससे बढ़कर और क्या कृपा हो सकती है कि विज्ञान को उपासना का दर्जा दिया जाए और कला को प्रभु-साम्राज्य की सेवा का!

127

हे एकमेव सत्य परमात्मा के सेवक! इस विश्वव्यापी धर्मयुग में मनुष्य की विलक्षण शिल्प-कला को ’ज्योतिर्मय सौन्दर्य’ की आराधना का दर्जा दिया गया है। यह विचार करो कि यह कितना बड़ी कृपा, कितना बड़ा वरदान है कि शिल्प-कला को उपासना समझा गया है! पहले के समयों में, माना जाता था कि ऐसी कुशलताएँ यदि दुर्भाग्य नहीं तो मूर्खता के बराबर अवश्य थीं जो मनुष्य को ईश्वर के निकट पहुंचने से रोकती हैं। लेकिन जरा अब विचार करो कि उस प्रभु के असीम अनुदानों और अपार कृपाओं ने किस तरह नरक की अग्नि को एक आनन्दित स्वर्ग में बदल दिया है, और मिट्टी की स्याह ढेर को एक प्रकाशित उद्यान में।

दुनिया के कला-शिल्पियों के लिए यह योग्य है कि वे हर क्षण पवित्र दहलीज पर कृतज्ञता के हजारों चिह्न अर्पित करें, महानतम प्रयास करें और अपने इस व्यवसाय के लिए घोर श्रम करें ताकि उनके प्रयासों से कुछ ऐसा फलित हो जिससे लोगों की आँखों को महानतम सौन्दर्य और परिपूर्णता की झलक मिल सके।

128

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। मुझे आशा है कि उस सच्चे परमेश्वर की कल्याण-भावना तुम्हारी सहायता करेगी और तुम्हें संरक्षण प्रदान करेगी और तुम सतत रूप से उस प्रभु के उल्लेख में निरत रहते हुए अपने व्यवसाय को पूर्ण करने का प्रयास करोगे। तुम्हें घोर प्रयास करना चाहिए ताकि तुम अपने व्यवसाय में विशिष्ट और उस क्षेत्र में प्रसिद्ध बन सको, क्योंकि अपने व्यवसाय में पूर्णता हासिल करने को इस करुणामय युग में ईश्वर की आराधना का दर्जा दिया गया है। और अपने व्यवसाय में निरत रहते हुए तुम उस सच्चे परमेश्वर का स्मरण कर सकते हो।

129

हे पावन और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सखाओं! सभी बातों में शुद्ध और पवित्र होना विशुद्ध आत्मा का विभूषण है और आत्म-नियंत्रित मस्तिष्क की एक अनिवार्य विशेषता। पूर्णताओं में सर्वोत्तम है हमेशा निष्कलंक रहना और स्वयं को हर दोष से मुक्त रखना। जब व्यक्ति हर ओर से शुद्ध और निर्मल बन जाता है तो वह ’प्रकट प्रकाश’ को प्रतिबिम्बित करने वाला केन्द्रबिंदु हो जाता है।

सबसे पहले तो मनुष्य की जीवन-शैली में पावनता होनी चाहिए, फिर ताजगी, स्वच्छता और चेतना की मुक्त-दशा। पहले निर्झर का पथ निर्मल होना चाहिए, तभी तो नदी की मृदुल जलधाराएँ उसमें प्रवाहित हो सकेंगी। पवित्र नेत्र प्रभु के निर्मल दर्शन का आनन्द प्राप्त करते हैं और उन्हें इस दर्शन का अर्थ ज्ञात होता है। पवित्र भावना उन सुरभियों को ग्रहण करती है जो ईश्वर की गुलाब-वाटिका से प्रवाहित होती हैं और दीप्त हृदय सत्य के सौम्य मुखड़े को प्रतिबिम्बित करेगा।

यही कारण है कि पवित्र ग्रंथों में स्वर्गिक परामर्शों की तुलना जल से की गई है, जैसाकि कुरआन में कहा गया हैः “और स्वर्ग से हम पवित्र जल भेजते हैं”[[42]](#footnote-42) जबकि ईशवाणी (गॉस्पेल) में कहा गया हैः “जब तक किसी व्यक्ति को जल और चेतना से शुद्ध नहीं कर दिया जाता तब तक वह प्रभु-साम्राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता।“[[43]](#footnote-43) अतः, यह स्पष्ट है कि ईश्वर की ओर से प्राप्त होने वाली शिक्षाएँ उसकी कृपा की स्वर्गिक फुहार है जो मानव-हृदय को पवित्र करती है।

मेरे कहने का आशय यह है कि जीवन के सभी पहलुओं में शुद्धता और पवित्रता, स्वच्छता और परिष्कार मनुष्य के पद को उदात्त बनाते हैं और उसके आंतरिक यथार्थ की प्रगति को तेज करते हैं। जैसाकि पवित्र लेखों में स्पष्ट उल्लेख है, यहाँ तक कि भौतिक संसार में भी स्वच्छता आध्यात्मिकता की ओर ले जाती है, और हालाँकि शारीरिक स्वच्छता एक भौतिक विषय है किन्तु चेतना के जीवन पर उसका सशक्त प्रभाव पड़ता है। यह एक अद्भुत रूप से मधुर सुर की तरह है, या एक मधुर संगीत की तरहः हालाँकि ध्वनि और कुछ नहीं बल्कि हवा में उत्पन्न होने वाले कम्पन हैं जो कानों के श्रवण-स्नायुओं को प्रभावित करते हैं और ये कम्पन हवा द्वारा संवाहित घटना-संयोग हैं परन्तु फिर भी किस तरह वे हमारे हृदय को छू देते हैं! विलक्षण माधुर्य चेतना के लिए डैनों की तरह हैं और वह आत्मा को आनन्द से रोमांचित कर देता है। आशय यह कि शारीरिक स्वच्छता भी मानव-आत्मा पर असर डालती है।

इस बात पर गौर करो कि स्वच्छता ईश्वर की दृष्टि में कितनी प्रसन्नतादायक है और अवतारों के पवित्र ग्रंथों में इस पर कितना विशेष जोर दिया गया है, क्योंकि पवित्र ग्रंथों में किसी भी गंदी वस्तु को खाने या उसे उपयोग में लाने से मना किया गया है। इनमें से कुछ निषेध अत्यंत कठोर और सबके लिए बाध्यकारी थे और जो कोई भी उस नियम का उल्लंघन करता था वह ईश्वर की घृणा का पात्र और धर्मानुयायियों द्वारा अभिशप्त माना जाता था। उदाहरण के लिए, कुछ चीजें इस तरह विशिष्ट रूप से निषिद्ध थीं कि उनका उपयोग करना घोर पाप समझा जाता था। इनमें से कुछ ऐसे घृण्य कार्य भी थे जिनका नाम लेना भी लज्जास्पद होगा।

परन्तु कुछ अन्य निषिद्ध वस्तुएँ भी हैं जो तुरन्त हानि नहीं पहुँचातीं लेकिन जिनके हानिकारक प्रभाव धीरे-धीरे सामने आते हैं: ऐसे कार्य भी ईश्वर को प्रिय नहीं हैं और उसकी दृष्टि में लांछनीय एवं विकर्षक हैं। हालाँकि पवित्र पाठ में इनके पूर्णतः विधान-विरुद्ध होने के बारे में प्रकट रूप से नहीं कहा गया है किन्तु शुद्धता, स्वच्छता, स्वास्थ्य की रक्षा और लत लगने से छुटकारा की दृष्टि से उनसे दूर रहना आवश्यक है।

इन लतों में शामिल है तम्बाकू की लत - तम्बाकू जो गंदी, बदबूदार, आपत्तिजनक और एक बुरी आदत है जिसकी हानि धीरे-धीरे सबके समक्ष उजागर हो जाती है। हर सुयोग्य चिकित्सक ने कहा है - और परीक्षणों से यह साबित भी हो चुका है - कि तम्बाकू के घटकों में से एक घातक जहर भी है और उसे पीने वाला अनेक रोगों का शिकार हो जाता है। यही कारण है कि स्वच्छकारिता की दृष्टि से तम्बाकू पीना घृणास्पद माना गया है।

अपने मिशन के आरम्भ में ही दिव्यात्मा बाब ने तम्बाकू का स्पष्ट रूप से निषेध किया था और एक के बाद एक सभी मित्रों ने इसका प्रयोग बंद कर दिया। किन्तु चूंकि वह ऐसा समय था जब कुछ भी छुपा लेने की अनुमति थी और धूम्रपान न करने वाले व्यक्ति को यातना, गाली-गलौज और यहाँ तक कि मृत्युदण्ड का भी पात्र बनना पड़ता था, इसलिए अपनी धर्मनिष्ठा को प्रकट न करने की गरज से वे धूम्रपान किया करते थे। बाद में ’किताब-ए-अकदस’ प्रकट की गई और चूंकि उसमें तम्बाकू पीने का खुले रूप से निषेध नहीं किया गया था इसलिए धर्मानुयायियों ने उसका त्याग नहीं किया। परन्तु ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ हमेशा उसके प्रति घृणा प्रकट किया करते थे और हालाँकि आरम्भिक दिनों में कुछ कारणों से वे थोड़ा तम्बाकू पी लेते थे किन्तु बाद में उन्होंने उसका पूरी तरह परित्याग कर दिया था और जो पवित्र आत्माएँ हर बात में उनका अनुगमन करती थीं उन्होंने भी उसे पूरी तरह त्याग दिया।

मेरे कहने का अर्थ यह है कि ईश्वर की दृष्टि में तम्बाकू का सेवन निन्दित है, घृण्य है, अत्यंत गंदी बात है, और धीरे-धीरे ही सही वह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक है। यह समय और धन का भी अपव्यय है और सेवन करने वाले व्यक्ति को एक विषाक्त वस्तु का आदी बना देता है। इसलिए जो लोग संविदा में अडिग हैं उनके लिए यह लत तर्क और अनुभव दोनों ही दृष्टियों से निंदनीय है और उसे त्याग देने से सभी लोगों के मन को चैन और शांति की प्राप्ति होगी। इसके अलावा, इसे त्याग देने से मुख दुर्गन्ध-रहित और अंगुलियाँ बेदाग रहेंगी और बाल बदबू एवं विकर्षक दुर्गंध से मुक्त रहेंगे। यह पत्र पाने के बाद मित्रगण, चाहे जैसे भी हो और कालांतर में क्रमिक रूप से ही सही, इस विनाशकारी लत को छोड़ देंगे। यही मेरी आशा है।

जहाँ तक अफीम की बात है, यह एक गंदी और अभिशप्त वस्तु है। ईश्वर हमें इसका प्रयोग करने वाले व्यक्ति को मिलने वाले दण्ड से बचाएँ। ’परम पवित्र ग्रंथ’ के स्पष्ट पाठ के अनुसार, इसका निषेध है और उसके प्रयोग की घोर निंदा की गई है। तर्क यह झलकाते हैं कि अफीम का पान एक प्रकार का उन्माद या पागलपन है और अनुभव से इस बात की पुष्टि होती है कि इसका प्रयोग करने वाला व्यक्ति मनुष्य की दुनिया से पूरी तरह कट जाता है। ईश्वर हमें ऐसे घृणास्पद कार्य को करने से बचाएं - एक ऐसा कार्य जो मनुष्य होने की आधारशिला को ही खंडहर बना कर रख देता है, और जो उपयोग करने वाले व्यक्ति को सदा-सर्वदा के लिए वंचित करके रख देता है। अफीम आत्मा को ही अपने बन्धन में जकड़ लेती है, इस तरह कि उपयोग करने वाले का अंतःकरण मर जाता है, उसका मस्तिष्क नष्ट हो जाता है, उसकी इन्द्रिय-ग्राह्यता खत्म हो जाती है। वह जीवित व्यक्ति को एक मृतक में बदल देती है। यह प्राकृतिक उष्मा को ही बुझा देती है। अफीम जितना नुकसान पहुंचाती है उससे बड़े नुकसान की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सौभाग्यशाली हैं वे जो इसका कभी नाम भी नहीं लेते, फिर जरा सोचो कितना दयनीय है वह जो इसका उपयोग करता है।

हे ईश्वर से प्रेम करने वालों! सर्वशक्तिमान परमात्मा के इस धर्म-चक्र में हिंसा और बलप्रयोग, नियंत्रण और अत्याचार की सर्वथा निंदा की गई है। तथापि, यह अनिवार्य है कि अफीम के प्रयोग को चाहे जैसे भी हो रोका जाए ताकि कदाचित मानवजाति इस परम बलवान प्लेग से मुक्ति पा सके। ऐसा न करने पर, दुःख और विपत्ति टूटे उस पर जो अपने प्रभु के प्रति अपने कर्त्‍तव्‍य से चूक गया है।[[44]](#footnote-44)

हे दिव्य कल्याण-भावना! सभी वस्तुओं में तू बहा के लोगों को शुद्धता और स्वच्छता का वरदान दे। यह अनुदान दे कि वे हर कलुष से और सभी व्यसनों से मुक्त हो जाएं। उन्हें कोई भी घृण्य कार्य करने से बचा, हर बुरी आदत की जंजीरों से उन्हें स्वतंत्र कर, ताकि वे शुद्ध और मुक्त, स्वस्थ एवं स्वच्छ जीवन जी सकें, तेरी पवित्र दहलीज पर सेवा करने के पात्र और अपने प्रभु से सम्बन्धित हो पाने के योग्य बन सकें। उन्हें मादक पेयों और तम्बाकू से मुक्त कर, उन्हें इस अफीम से बचा, उनकी रक्षा कर जो विक्षिप्त कर देने वाली वस्तु है, उन्हें पवित्रता के मधुर आस्वाद का आनन्द लेने दे, ताकि वे स्वर्गिक प्रेम के रहस्यमय प्याले से छक कर पी सकें और सर्व-गरिमामय परमात्मा के साम्राज्य के निकट आने की प्रफुल्लता को जान सकें। क्योंकि यह ऐसा ही है जैसाकि तूने कहा हैः “वह सब कुछ जो तेरे तहखाने में है वह मेरे प्रेम की प्यास नहीं बुझा सकता - हे साकी! तू चेतना की मदिरा की एक प्याली सागर की तरह भरकर ले आ!”

हे ईश्वर के प्रियजनों! अनुभव से यह ज्ञात हुआ है कि धूम्रपान, मादक पेय पदार्थों और अफीम को त्याग देने से स्वास्थ्य और स्फूर्ति, मस्तिष्क की व्यापकता और तीक्ष्णता एवं शारीरिक शक्ति पर कितना अच्छा प्रभाव पड़ता है। आज एक जन-समुदाय है जो तम्बाकू, मादक पेय वस्तुओं और अफीम का सख्त निषेध करता है। यह समुदाय शक्ति और शारीरिक साहस, सौन्दर्य और सौम्यता में अन्यों से अत्यन्त उत्कृष्ट है। उसका एक पुरुष अन्य कबीलों के दस पुरुषों का मुकाबला कर सकता है।[[45]](#footnote-45) यह बात सम्पूर्ण जन-समुदाय पर साबित हो चुकी है, उसके एक-एक सदस्य पर, कि इस समुदाय का प्रत्येक व्यक्ति हर तरह से अन्य समुदायों के व्यक्तियों से श्रेष्ठ है।

अतः तू जोरदार प्रयास कर कि वह शुद्धता और पवित्रता जिसे अब्दुल बहा सबसे बढ़कर प्रिय मानते हैं बहा के लोगों की विशिष्टता बन सके, कि हर तरह की उत्कृष्टता में ईश्वर के लोग अन्य सभी मनुष्यों से आगे रहेंगे, कि बाहर-भीतर दोनों ही से वे अन्य सबसे श्रेष्ठ होंगे कि शुद्धता, निष्कलंकता, परिष्कार और स्वास्थ्य के संरक्षण में वे सभी समझदार लोगों के सिरमौर होंगे। और यह कि दासता से मुक्ति पाकर, अपने ज्ञान, संयम के बल पर वे सभी पवित्र, मुक्त और बुद्धिमान जनों में अग्रणी होंगे।

130

हे विशिष्ट चिकित्सक! .........ईश्वर की स्तुति हो कि तुम्हारे पास दो शक्तियां हैं - एक शारीरिक आरोग्य प्रदान करने का और दूसरा आध्यात्मिक आरोग्य। मनुष्य की चेतना से सम्बन्धित विषयों का उसकी शारीरिक दशा पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, तुम्हें अपने मरीजों को प्रसन्नता, आराम और प्रफुल्लता देनी चाहिए और उसे अत्यधिक आनन्द प्रदान करना चाहिए। कई बार इससे जल्द आरोग्य प्राप्त हो जाता है। इसलिए, बीमार को इन दोनों ही शक्तियों से स्वस्थ करो। स्नायविक बीमारियों को ठीक करने में आध्यात्मिक अनुभूतियों का आश्चर्यजनक असर होता है।

131

चिकित्सा उपचार देते समय ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ की ओर उन्मुख हो और तब अपने मन की पुकार सुन। बीमार का उपचार स्वर्गिक आनन्द और आध्यात्मिक उत्फुल्लता के माध्यम से कर, अत्यन्त पीड़ित व्यक्ति को आनन्दमय शुभ बातों से स्वस्थ कर और हर जख्मी को उस परमात्मा के ज्योतिर्मय अनुदानों से आरोग्य प्रदान कर। मरीज की शैय्या के पास रहते समय उसके हृदय को प्रसन्न कर और स्वर्गिक शक्ति से उसकी चेतना को प्रफुल्लता प्रदान कर। सत्य ही, ऐसा स्वर्गिक उच्छवास प्रत्येक जर्जर होती अस्थि को स्फूर्ति प्रदान करता है और हर रुग्ण एवं बीमार की चेतना को नवजीवन देता है।

132

हालाँकि बीमारी मनुष्य के जीवन की अपरिहार्य दशाओं में से एक है परन्तु वास्तव में उसे सह पाना कठिन है। अच्छे स्वास्थ्य का वरदान सभी उपहारों में उत्तम है।

133

बीमारियों को दूर करने के दो तरीके हैं -- भौतिक साधन और आध्यात्मिक साधन। पहला साधन चिकित्सकों द्वारा उपचार के माध्यम से है, दूसरा साधन है आध्यात्मिक जनों द्वारा ईश्वर से प्रार्थना करने और उसकी ओर उन्मुख होने के माध्यम से। इन दोनों ही साधनों का अभ्यास करना चाहिए और उन्हें प्रयोग में लाया जाना चाहिए।

जो बीमारियां भौतिक कारणों से उत्पन्न होती हैं उनका उपचार चिकित्सकों द्वारा चिकित्सकीय उपचारों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जो बीमारियाँ आध्यात्मिक कारणों से हैं वे आध्यात्मिक साधनों के प्रयोग से जाती हैं। अतः ऐसी बीमारियाँ जो उत्पीड़न, डर, स्नायविक प्रभावों से उत्पन्न होती हैं वे भौतिक उपचार की अपेक्षा आध्यात्मिक उपचार से कहीं ज्यादा प्रभावी तरीके से ठीक होंगी। अतः दोनों ही प्रकार के उपचारों का अनुपालन किया जाना चाहिए - वे एक-दूसरे के विरोधाभासी नहीं हैं। इसलिए, तुम्हें भौतिक उपचार-प्रणालियों को भी अपनाना चाहिए क्योंकि वे भी ईश्वर की करुणा और कृपा से ही हमें प्राप्त हुई हैं - उस ईश्वर की कृपा से जिसने चिकित्सा विज्ञान को प्रकट एवं प्रत्यक्ष किया है ताकि उसके सेवक इन उपचार-प्रणाली से भी लाभान्वित हो सकें। साथ ही तुम्हें आध्यात्मिक उपचारों पर भी समान ध्यान देना चाहिए क्योंकि उनके परिणाम विलक्षण होते हैं।

अब यदि तुम उस सच्ची औषधि के बारे में जानना चाहो जो मनुष्य को समस्त व्याधियों से मुक्त करेगी और उसे दिव्य साम्राज्य का स्वास्थ्य प्रदान करेगी तो जान ले कि वह औषधि है ईश्वर के आदेश और उसकी शिक्षाएँ। अतः उन पर अपना ध्यान केन्द्रित कर।

134

हे तू जो ईश्वर के सौरभमय उच्छवासों की ओर आकर्षित हो ! मैंने श्रीमती लुआ गेटसिंगर को सम्बोधित तुम्हारा पत्र पढ़ा है। तुमने सत्य ही बहुत ही सावधानी से मानव-शरीर में रोगों के उत्पन्न होने के कारणों का परीक्षण किया है। निस्संदेह यह बात सही है कि पाप शारीरिक व्याधियों का एक सक्षम कारण है। यदि मानवजाति पाप और पथभ्रष्टता के कलुषों से मुक्त होती और वह प्राकृतिक, जन्मजात संतुलन के अनुसार रहती, अपनी लालसाओं का अनुगमन नहीं करती तो इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि रोग इतने प्रबल नहीं हो पाते और न ही इतनी तेजी से उनका विस्तार हो पाता।

परन्तु मनुष्य दिग्भ्रमित होकर अपनी वासना की भूख को शांत करने में अनवरत रूप से जुटा रहता है और वह सीधे-सरल आहार से संतुष्ट नहीं रहता। बल्कि उसने अपने लिए एक ऐसा यौगिक भोजन तैयार किया जिसमें कई घटक होते हैं, उसके सत्व एक-दूसरे के विरोधाभासी होते हैं। उसका पूरा ध्यान इन्हीं चीजों और दुष्टतापूर्ण एवं लज्जास्पद कार्यों में लगा रहा और उसने जीवन जीने के प्राकृतिक तरीके की मर्यादाओं और सीमाओं को त्याग दिया। इसके फलस्वरूप आक्रामक एवं विविध तरीकों के रोग उत्पन्न हुए।

जानवरों में, जहाँ तक उनके शरीर की बात है, वह उन्हीं घटकों से बना हुआ है जिनसे मानव-शरीर। लेकिन चूंकि जानवर साधारण भोजन से संतुष्ट रहते हैं और ललचाने वाले आवेगों के पीछे ज्यादा नहीं भागते और वे कोई पाप नहीं करते, इसलिए मनुष्यों की तुलना में जानवरों में बीमारियाँ कम हैं। अतः, हम यह स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि पाप और दुराग्रह रोग उत्पन्न करने वाले कितने शक्तिशाली कारक हैं। और एक बार उत्पन्न हो जाने के बाद ये रोग जटिल हो जाते हैं, उनका विस्तार होने लगता है और वे अन्य लोगों में भी फैल जाते हैं। बीमारी के आध्यात्मिक और आंतरिक कारण इस तरह के हैं।

परन्तु बीमारी का बाहरी, शारीरिक कारण है संतुलन का अभाव, अर्थात उन तत्वों के अनुपात में असंतुलन उत्पन्न हो जाना जिनसे यह मानव-शरीर बना हुआ है। उदाहरण के लिए - मनुष्य का शरीर अनेक घटक तत्वों का यौगिक है और इनमें से प्रत्येक तत्व एक निर्धारित मात्रा में मौजूद रहकर सम्पूर्ण शरीर के आवश्यक संतुलन में योगदान देता है। जब तक ये घटक तत्व सम्पूर्ण के प्राकृतिक संतुलन में बने रहते हैं - यानी किसी भी तत्व के अपने समुचित अनुपात और संतुलन में परिवर्तन नहीं होता, किसी भी तत्व का स्तर घटता या बढ़ता नहीं है - तब तक रोग के उत्पन्न होने का कोई भौतिक कारण उपस्थित नहीं होगा।

उदाहरण के लिए, शरीर में स्टार्च (कार्बोहायड्रेट) नामक तत्व का एक निश्चित मात्रा में मौजूद रहना जरूरी है और उसी तरह शर्करा (शुगर) का भी। जब तक इन दोनों में से प्रत्येक सम्पूर्ण के प्राकृतिक अनुपात में बने रहते हैं तब तक रोग के आक्रमण का कोई कारण नहीं होगा। परन्तु जब इन घटकों की प्राकृतिक या समुचित मात्रा में अन्तर आता है - यानी जब वे घट या बढ़ जाते हैं - तो यह सुनिश्चित है कि उससे रोग पैदा होने का मार्ग प्रशस्त होगा।

इस विषय पर अत्यन्त सावधानीपूर्वक अनुसंधान किए जाने की जरूरत है। बाब ने कहा था कि बहा के लोगों को चिकित्सा विज्ञान का इतने उच्च स्तर तक विकास करना चाहिए कि वे आहार के माध्यम से बीमारियों का इलाज कर सकें। इसका मूल कारण यह है कि यदि मानव-शरीर के किसी घटक तत्व में कोई असंतुलन उत्पन्न हो जाए जिससे समग्र की तुलना में उसके सापेक्षिक अनुपात में परिवर्तन हो जाए तो इस तथ्य के कारण अपरिहार्य रूप से रोगों का आक्रमण परिणामित होगा। उदाहरण के लिए, यदि स्टार्च नामक घटक में अनुचित वृद्धि हो जाए या शर्करा (शुगर) का स्तर घट जाए तो बीमारी घर कर लेगी। कुशल चिकित्सक का कार्य यह तय करना है कि मरीज के शरीर में किस घटक तत्व की कमी हो गई है और कौन-सा तत्व बढ़ गया है। जब वह इस बात का पता लगा लेता है तो उसे ऐसे आहार की अनुशंसा करनी चाहिए जिसमें घटा हुआ तत्व वांछित मात्रा में मौजूद हो ताकि शरीर का आवश्यक संतुलन फिर से स्थापित हो सके। जब मरीज के शरीर के घटक तत्वों का संतुलन फिर से कायम हो जाएगा तो वह अपने रोग से मुक्त हो जाएगा।

इसका प्रमाण यह है कि हालाँकि अन्य जीव-जंतुओं ने कभी भी चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन नहीं किया है, न ही उन्होंने रोगों या औषधियों, उपचार या चिकित्साओं के बारे में कोई शोध ही किया है किन्तु फिर भी जब उनमें से कोई बीमार हो जाता है तो प्रकृति उसे मैदानों या रेगिस्तानों में उस खास पौधे के पास भेज देती है जिसे एक बार खा लेने के बाद उस जानवर की बीमारी खत्म हो जाती है। इसकी व्याख्या यह है कि यदि, उदाहरण के लिए, जानवर के शरीर में शक्कर का घटक तत्व कम हो गया है तो प्राकृतिक नियम के अनुसार वह जानवर किसी ऐसी जड़ी-बूटी की तलाश में जुट जाता है जिसमें शक्कर की प्रचुर मात्रा हो। उसके बाद एक प्राकृतिक उत्प्रेरण, यानी भूख, के कारण वह जानवर पौधों की हजारों प्रजातियों में से उसी वनस्पति को खोज लेता और उसे खाता है जिसमें शक्कर का घटक तत्व ज्यादा मात्रा में होता है। इस तरह उसके शरीर को निर्मित करने वाले तत्वों का आवश्यक संतुलन पुनः स्थापित हो जाता है और वह जीव अपनी बीमारी से मुक्त हो जाता है।

यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर सावधानीपूर्वक अनुसंधान किए जाने की जरूरत है। जब अत्यंत कुशल चिकित्सक इस विषय का समग्रता और परिश्रम के साथ पूर्ण परीक्षण करेंगे तो यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकेगा कि रोग की उत्पत्ति शरीर के घटक तत्वों की सापेक्षिक मात्रा में बाधा आने के कारण होती है और उपचार के अंतर्गत इन सापेक्षिक मात्राओं का तालमेल बिठाना शामिल है और यह कार्य आहार के माध्यम से सम्भव किया जा सकता है।

यह सुनिश्चित है कि इस अद्भुत नए युग में चिकित्सा विज्ञान के विकास से चिकित्सक अपने मरीजों को आहार के माध्यम से स्वस्थ करने की दिशा में उन्मुख होंगे। क्योंकि दृष्टि रूपी इन्दिय, श्रवणेन्द्रिय, खाने, सूंघने, स्पर्श से सम्बन्धित इन्द्रिय - ये सब अन्तर बतलाने वाली शक्तियाँ हैं जिनका उद्देश्य है हानिकारक और लाभदायक वस्तुओं के बीच भेद बतलाना। तो क्या यह सम्भव है कि मनुष्य की सूंघने की शक्ति, वह शक्ति जो गंधों के बीच भेद करती है, किसी गंध को विकर्षक बतलाए और वह गंध मनुष्य के शरीर के लिए लाभदायक हो? हास्यास्पद! असम्भव! इसी तरह, क्या मनुष्य का शरीर, देखने की शक्ति के माध्यम से, मल का घिनौना ढेर देखकर कोई लाभ प्राप्त कर सकता है? नहीं, कदापि नहीं। इसी तरह, स्वाद का इन्द्रिय - वह विशेषता जो किसी वस्तु को स्वीकार या अस्वीकार करती है - किसी वस्तु को पसन्द न करे तो वह वस्तु निस्संदेह लाभदायक नहीं होगी और यदि आरम्भ में उससे कोई लाभ प्राप्त भी हो रहा हो तो दीर्घकाल में उससे हानि ही प्रतिपादित होगी।

और फिर इसी तरह से, जब घटक तत्व संतुलन की अवस्था में होते हैं तो इसमें कोई संदेह नहीं कि जो कुछ भी स्वाद देता हो वह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक भी होगा। देखो कि कोई जानवर किस तरह चरागाह में चर रहा होता है जहाँ सैकड़ों-हजारों किस्म की घासें और वनस्पतियाँ विद्यमान हैं और किस तरह वह अपनी घ्राण-शक्ति से पौधों की गंध को सूंघता है और स्वाद के इन्द्रिय से उसका स्वाद ग्रहण करता है और तब इन इन्द्रियों को जो स्वाद प्रियकर लगता है वह उसी का भक्षण करता है और उससे लाभान्वित होता है। यदि चयन की यह शक्ति न होती तो जीव-जन्तु एक ही दिन में मर जाते, क्योंकि कई पौधे जहरीले होते हैं और जीव-जन्तुओं को औषधि-विज्ञान का ज्ञान नहीं होता। फिर भी जरा गौर करो कि उनके पास कितना विश्वसनीय तराजू है जिसकी सहायता से वे अच्छे और हानिकारक पदार्थों के बीच अन्तर कर पाते हैं। उनके शरीर में जिस किसी घटक-तत्व की कमी हो जाती है उसकी पूर्ति के लिए वे ऐसे पौधों की तलाश और उनका उपभोग करते हैं जिनमें उस घटे हुए तत्व का प्रचुर भंडार होता है। इस तरह उनके शरीर के घटक-तत्वों का संतुलन पुनः स्थापित हो जाता है और वे रोगमुक्त हो जाते हैं।

जब कभी भी अत्यंत कुशल चिकित्सकों द्वारा आहार के माध्यम से बीमारियों के इलाज की पद्धति विकसित कर ली जाएगी और जब वे सरल आहार का प्रावधान करेंगे और जब वे लोगों को अपनी लालसाओं की भूख के पीछे दौड़ने से रोक देंगे तो यह सुनिश्चित है कि जीर्ण एवं विविधतापरक बीमारियाँ कम हो जाएंगी और मानवजाति का सामान्य स्वास्थ्य बहुत ही बेहतर हो जाएगा। ऐसा होना अपरिहार्य है। इसी तरह, मनुष्य के चरित्र, आचरण और व्यवहार में भी सर्वत्र परिवर्तन दृष्टिगोचर होंगे।

135

बहाउल्लाह के सुस्पष्ट आदेश के अनुसार, किसी भी व्यक्ति को सक्षम चिकित्सक की सलाह की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यदि मरीज स्वयं एक जाना-माना एवं विख्यात चिकित्सक हो तो भी किसी चिकित्सक की सलाह लेना आवश्यक है। संक्षेप में, मुद्दे की बात यह है कि किसी अत्यंत कुशल चिकित्सक से परामर्श करके तुम्हें अपना स्वास्थ्य सुनिश्चित करना चाहिए।

136

यह हर किसी का कर्त्‍तव्‍य है कि वह चिकित्सकीय उपचार प्राप्त करने की कोशिश करे और चिकित्सक के निर्देशों का पालन करे क्योंकि यह दिव्य अध्यादेश के अनुरूप है, परन्तु, यथार्थ में, आरोग्य देने वाला ईश्वर है।

137

हे तू अपने प्रभु की स्तुति करने वाले! मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा है जिसमें तुमने ईश्वर के कुछ विधानों को लेकर आश्चर्य प्रकट किया है, जैसे कि उन जीव-जन्तुओं के शिकार के बारे में जो निर्दोष हैं और जिन्होंने कोई गलती नहीं की है।

तुम इस बारे में आश्चर्य न करो। ब्रह्माण्ड के आंतरिक यथार्थ, उसमें निहित गुप्त विवेक, रहस्यों, आंतरिक सम्बन्धों और सबको शासित करने वाले नियमों के बारे में विचार करो। ब्रह्माण्ड का हर हिस्सा एक अत्यन्त सशक्त बन्धन द्वारा दूसरे हिस्से से जुड़ा हुआ है। इसमें किसी भी असंतुलन या शिथिलता की गुंजाइश नहीं है। सृष्टि के भौतिकलोक में, सभी चीजें या तो शिकार हैं या भक्षक, पेड़-पौधे खनिज तत्वों का भक्षण करते हैं, जीव-जन्तु पेड़-पौधों का भक्षण करते हैं, मनुष्य जीव-जन्तुओं पर आश्रित है और खनिज तत्व मनुष्य के शरीर का भक्षण करते हैं। भौतिक शरीर एक अवरोध से दूसरे अवरोध, एक जीवन से दूसरे जीवन को पार करते हैं और सभी वस्तुएँ परिवर्तन एवं रूपांतरण के अधीन हैं, सिवाय अस्तित्व के सार-तत्व के - क्योंकि वह स्थिर और अपरिवर्तनीय है और समस्त सृष्टि में हर प्रकार के जीवों की प्रजाति और हर क्षणभंगुर यथार्थ का जीवन इसी पर आधारित है।

जब भी तुम किसी सूक्ष्मदर्शी से परखोगे तो पता लगेगा कि मनुष्य जो पानी पीता है, वह जिस हवा को सांस में लेता है, तुम देखोगे कि सांस ली गई हर हवा के साथ मनुष्य ढेर सारे जीव-जन्तुओं को अपने अन्दर खींच लेता है और पानी की हर घूंट के साथ वह व्यापक किस्म के जीव-जन्तुओं को गटक जाता है। इस प्रक्रिया पर विराम लगा सकना भला किस हद तक सम्भव है? क्योंकि सभी जीव-जन्तु या तो शिकार हैं या भक्षक और जीवन का समस्त ताना-बाना ही इसी सच्चाई पर आधारित है। यदि ऐसा न हो तो सभी सृजित वस्तुओं को परस्पर समेटे रखने वाला ताना-बाना ही टूट जाएगा।

और फिर, जब कभी कोई वस्तु नष्ट होती है, क्षय होती है और वह जीवन से खण्डित हो जाती है तो उसे एक ऐसे लोक में भेज दिया जाता है जो उस लोक से कहीं बड़ा होता है जिसे वह पहले जानती थी। उदाहरण के लिए, वह खनिज जीवन को त्याग कर वनस्पति जीवन को प्राप्त करती है, उसके बाद वह वनस्पति जीवन से मुक्त होकर जन्तु जीवन को उपलब्ध होती है और फिर वह जन्तु-जीवन से ऊपर उठकर मनुष्य लोक तक पहुँचती है। यह सब ईश्वर की कृपा से है, जो है दयालु और करुणावान।

मैं ईश्वर से याचना करता हूँ कि वह तुम्हें उन रहस्यों को समझने में सहायता दें जो सृष्टि के मूल में निहित हैं और तुम्हारी एवं तुम्हारी बहन की आँखों के आगे से पर्दों को हटा दे, ताकि सुसंरक्षित रहस्य तेरे समक्ष प्रकट हो सके और निगूढ़ भेद दोपहर के सूर्य की तरह उजागर हो सके, कि वह तेरी बहन और तेरे पति को प्रभु के साम्राज्य में प्रवेश करने में सहायता दे और इस जीवन में हर किसी को पराभूत करने वाले हर रोग से तुम्हें मुक्त करे, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक।

138

हे ईश्वर के प्रिय! परमात्मा का साम्राज्य समानता और न्याय पर टिका हुआ है और साथ ही कृपा, करुणा एवं प्रत्येक जीव के प्रति दयालुता की भावनाओं पर। अतः अपने सम्पूर्ण हृदय से तू समस्त मानवजाति के साथ करुणा का व्यवहार करने का प्रयास कर - सिवाय उनके साथ जो स्वार्थ और अपने गुप्त इरादे या आत्मा की ब्याधि से ग्रस्त हैं। दयालुता किसी आततायी, धोखेबाज या चोर-उचक्के के प्रति नहीं दर्शाई जा सकती क्योंकि इससे वे अपनी भूलों के प्रति जागरूक होने के बजाय पहले की तरह अपने विकृत मार्ग पर ही चलते रहेंगे। किसी झूठे व्यक्ति के प्रति तुम चाहे जितनी भी दया दिखा लो किन्तु वह और अधिक झूठ का ही प्रश्रय लेगा क्योंकि वह तुम्हें धोखा देने में यकीन करता है, हालाँकि तुम उसे अच्छी तरह जानते-समझते हो और अपनी अत्यधिक दया भावना के कारण ही चुप रहते हो।

संक्षेप में, ईश्वर के प्रियजन को चाहिए कि वह केवल अपने बंधु-बान्धवों के साथ ही दया और करुणा का व्यवहार न करे बल्कि प्रत्येक जीव के प्रति उन्हें अत्यधिक स्नेहिल दयालुता झलकानी चाहिए। क्योंकि समस्त शारीरिक मामलों में और जहाँ तक जीव-चेतना का सम्बन्ध है, जानवर और मनुष्य दोनों में ही समान भावनाएँ होती हैं। मनुष्य ने इस सच्चाई को हृदयंगम नहीं किया है और यही कारण है कि वह जानवरों के प्रति अन्याय और क्रूरता के कार्य करता है।

और फिर भी सत्य की दृष्टि से, जहाँ तक शारीरिक संवेदनाओं की बात है, कोई अन्तर है क्या? तुम किसी मनुष्य को उत्पीड़ित करो या किसी जानवर को, दोनों में समान भावना उत्पन्न होती है। इसमें कोई अन्तर नहीं है। और वास्तव में किसी जानवर को हानि पहुंचाने के लिए हम बदतर व्यवहार करते हैं, क्योंकि मनुष्य के पास भाषा है, वह शिकायत दर्ज कर सकता है, वह चिल्ला सकता है, रो सकता है। हानि पहुँचाए जाने पर वह अधिकारियों से सुरक्षा मांग सकता है और वे उसे आक्रामक व्यक्ति से बचा सकते हैं। लेकिन बेचारा जानवर मूक है, वह न तो अपनी वेदना ही प्रकट कर सकता है और न ही अधिकारियों से शिकायत। यदि कोई व्यक्ति किसी जानवर पर हजारों अत्याचार करे तो भी वह न बोलकर उसे रोक सकता है और न ही उसे न्यायालय में घसीट सकता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम जानवरों के प्रति अत्यंत विचारशीलता का परिचय दें और उसके प्रति हम अपने मानव बंधुओं से भी अधिक दयावान बनें।

आरम्भिक अवस्था से ही अपने बच्चों को प्रशिक्षित करें कि वे जीव-जंतुओं के प्रति असीम रूप से दयालु और स्नेहपूर्ण बनें। यदि कोई जानवर बीमार हो तो बच्चों को उसे स्वस्थ करने का प्रयास करने दो, यदि वह भूखा हो तो उसे भोजन कराने दो, प्यासा हो तो उसकी प्यास बुझाने दो, यदि वह थका हुआ हो तो उन्हें आराम करने में सहायता देने दो।

अधिकतर मनुष्यों ने कोई न कोई पाप किया होता है लेकिन जानवर निर्दोष होते हैं। निश्चित रूप से, जो पाप-रहित हैं उन्हें सबसे अधिक दया और स्नेह का हकदार होना चाहिए - सभी जीव-जन्तुओं को सिवाय उनके जो हानिकारक हैं जैसे कि खून के प्यासे भेड़िए, जहरीले सांप, और ऐसे ही अन्य हानिकारक जीव। क्योंकि उनके प्रति दया दर्शाना मनुष्यों एवं अन्य जीव-जंतुओं के प्रति अन्याय है। उदाहरण के लिए, यदि आप भेड़िये के प्रति दयावान बनते हैं तो यह भेड़ के प्रति अत्याचार होगा क्योंकि एक भेड़िया भेड़ों के पूरे झुंड को नष्ट कर सकता है। अवसर मिलने पर कोई पागल कुत्ता हजारों लोगों और जानवरों को मार सकता है। इसलिए, जंगली एवं लोलुप जानवरों के प्रति दयालुता दर्शाना शांतिप्रिय जीव-जन्तुओं के प्रति निर्दयता है - इसलिए हानिकारक जानवरों से उसी तरह निपटना चाहिए। लेकिन सुशील जानवरों के प्रति अत्यधिक करुणा दर्शाई जानी चाहिए - जितना अधिक, उतना अच्छा। मृदुलता और स्नेहिल दयालुता ईश्वर के स्वर्गिक साम्राज्य के आधारभूत सिद्धान्त हैं। तुम्हें यह बात अपने मन में सावधानीपूर्वक बिठा लेनी चाहिए।

139

हे तू ईश्वर की सेविका! स्वर्गिक शुभ समाचार अत्यन्त ही सम्मान और उदारता से दिया जाना चाहिए। और जब तक कोई आत्मा ऐसे गुणों के साथ नहीं उठ खड़ी होती जो कि इन समाचारों के वाहक के लिए आवश्यक हैं, तब तक उसके शब्दों का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

हे ईश्वर की दासी! मानव चेतना में एक से एक विलक्षण शक्तियाँ हैं परन्तु उसे ’पवित्र चेतना’ द्वारा सुदृढ़ किया जाना जरूरी है। इसके सिवा तुम जो कुछ भी सुनती हो वह निरी कल्पना है। परन्तु यदि उसे पवित्र चेतना की उदार कृपा की सहायता मिल जाए तो उसकी शक्ति आश्चर्यजनक बन जाएगी। तब वह मानव चेतना यथार्थों को अनावृत करेगी और रहस्यों को उजागर। अपने हृदय को पूर्णतः पवित्र चेतना की ओर उन्मुख कर और दूसरों को भी ऐसा ही करने की प्रेरणा दे। तब तुम्हें आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिलेंगे।

हे ईश्वर की सेविका! आकाश के सितारे इस धूल के संसार पर कोई भी आध्यात्मिक प्रभाव नहीं डालते, लेकिन ब्रह्माण्ड के सभी सदस्य और उसके सभी हिस्से उस असीम अंतरिक्ष में परस्पर बहुत ही गहनता से जुड़े हुए हैं और इस संयोजन के कारण एक-दूसरे पर भौतिक प्रभाव डालते हैं। ’पवित्र चेतना’ की कृपा से बाहर, तुम मृतकों के गाने की आवाज के बारे में बताते हुए भाव समाधि (ट्रांस) या माध्यमों द्वारा तुरहियाँ बजाए जाने के प्रभाव के बारे में जो भी सुनती हो वह सीधे-सरल रूप में महज कल्पना है। लेकिन जहाँ तक ’पवित्र चेतना’ की कृपा की बात है, तुम जो चाहो उससे सम्बन्धित कर सकती हो - यह अतिशयोक्ति नहीं हो सकती। इसलिए इस बारे में तुम जो भी सुनो उस पर यकीन कर सकती हो। लेकिन जिन लोगों की बात की गई है, तुरही बजाने वाले वे लोग, वे इस कृपा से बिल्कुल ही वंचित हैं और उन्हें इस कृपा का किंचित भी अंश प्राप्त नहीं होता, उनका रास्ता भ्रम का रास्ता है।

हे ईश्वर की सेविका! प्रार्थनाओं का उत्तर ईश्वर के विश्वव्यापी प्रकटीकरणों द्वारा दिया जाता है। लेकिन जहाँ भौतिक वस्तुओं को प्राप्त करने की कामना की जाती है, यहाँ तक कि जहाँ असावधान लोगों का सम्बन्ध है, यदि वे विनम्रतापूर्वक ईश्वर की सहायता के लिए याचना करते हैं तो उनकी प्रार्थना का भी प्रभाव होता है।

हे ईश्वर की सेविका! यद्यपि ’दिव्यता’ का यथार्थ पवित्र और असीम है किन्तु रचित जीवों के उद्देश्य और उनकी आवश्यकताएँ सीमित हैं। ईश्वर की कृपा उस वर्षा की तरह है जो स्वर्ग से बरसती है। यद्यपि वर्षा का पानी किसी रूप की सीमा में बंधा हुआ नहीं है लेकिन यह जहाँ भी बरसता है वह उस जगह की विशेषताओं के अनुसार वह वहाँ की सीमाओं - उसके आयामों, उसकी रूपरेखा, उसके आकार-प्रकार - को ग्रहण कर लेता है। एक चौकोर जलाशय में जाकर वही पानी जो पहले असीमित था, अब चौकोर हो जाता है, किसी षटकोणीय जलाशय में वह षटकोण का आकार ले लेता है और अष्टकोणीय जलाशय में अष्टकोण का और इसी तरह वह अन्य रूपों को ग्रहण कर लेता है। वर्षा का अपना कोई भूगोल नहीं था, कोई सीमा नहीं थी, कोई रूप नहीं था, लेकिन पात्र की सीमाओं के अनुसार वह अपना एक रूप ग्रहण कर लेती है। इसी तरह से, प्रभु परमेश्वर का ’पवित्र सार’ असीम और अमाप्य है किन्तु उसके रचित जीवों में, उनकी अपनी सीमाओं के कारण, वह ससीम हो जाता है। इसलिए कुछ मामलों में खास व्यक्तियों की प्रार्थनाओं के अनुकूल उत्तर प्राप्त होंगे।

हे ईश्वर की सेविका! आरोग्य-याचना के लिए प्रकट की गई प्रार्थना भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार के आरोग्य के लिए है। अतः आत्मा और शरीर दोनों को स्वस्थ करने के लिए उसका पाठ करना चाहिए। यदि आरोग्य मरीज के लिए उचित है तो उसे वह अवश्य ही प्रदान किया जाएगा, किन्तु कुछ अन्य बीमार व्यक्तियों के लिए नीरोगता अन्य रोगों की वाहक हो सकती है, इसलिए उसकी प्रार्थना का सकारात्मक उत्तर देना विवेक-सम्मत नहीं है।

हे ईश्वर की सेविका! पवित्र चेतना की शक्ति भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही ब्याधियों का हरण करती है।

हे ईश्वर की सेविका! ’टोरा’ में यह अंकित हैः और मैं आशा के द्वार के लिए तुझे ’ऐकर’ की घाटी दूंगा। अक्का नगरी ही ऐकर की वह घाटी है और जिसने भी इसका अन्य रूप से अर्थान्तर किया है वह अज्ञानी है।

140

जैसा कि बाइबिल में उल्लिखित है, तुमने माउन्ट तैबूर पर मूसा, इलियास और ’स्वर्गिक पिता’ के साथ ईसा के रूपांतरण के बारे में प्रश्न किया है। इस घटना का बोध शिष्यों द्वारा आंतरिक नेत्र से किया गया था। इससे पूर्व यह एक छिपा हुआ रहस्य था और यह उनकी आध्यात्मिक खोज थी। अन्यथा, यदि इसका यह अभिप्राय है कि उन्होंने भौतिक स्वरूपों को देखा तो उस मैदान में और उस पर्वत पर पास में ही और भी कई लोग थे, वे इसे देखने में क्यों विफल रहे? और प्रभु ने उनसे ऐसा क्यों कहा कि वे अन्य लोगों से इसके बारे में न कहें? स्पष्ट है कि यह एक आध्यात्मिक अंतःप्रेरणा थी और ईश्वरीय साम्राज्य का एक परिदृष्य। इसलिए मसीहा ने इसे रहस्य ही रखने को कहा था, “तब तक जब तक कि ’मानव-पुत्र’ मृतक होकर जीवित न हो उठे”[[46]](#footnote-46) यानी जब तक ईश्वर का धर्म उदात्त नहीं बन जाता, और ईश्वर की वाणी की विजय नहीं हो जाती, और ईसामसीह का यथार्थ सामने नहीं आ जाता।

141

हे उत्कंठित ज्वाला, वह जिसमें ईश्वर के प्रति प्रेम की अग्नि धधक रही है! मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा। उसकी विषय-वस्तु से, जो बहुत ही अच्छी तरह एवं प्रवाहपूर्ण ढंग से प्रस्तुत की गई है, मेरा हृदय आनन्दित हो उठा। उससे प्रभुधर्म के प्रति तुम्हारी गहन निष्ठा, प्रभु-साम्राज्य के पथ पर परिश्रमपूर्वक तुम्हारा कदम रखना और ईश्वर के धर्म के प्रति तुम्हारी अडिगता झलकती है - क्योंकि सभी वस्तुओं में यह ईश्वर की दृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है।

ऐसे कितने लोग हैं जो प्रभु की ओर उन्मुख हुए और उसकी वाणी की सुरक्षात्मक छांह में प्रविष्ट हुए और वे पूरे विश्व में विख्यात हो गए - उदाहरण के लिए जुडॉस एस्कैरियट। और जब परीक्षा की कठोर घड़ी सामने आई और हिंसा तीव्र हो गई, तो उनके पैर रास्ते से फिसल गए और धर्म के सत्य को स्वीकार कर लेने के बाद वे उससे विमुख हो गए, उससे इन्कार कर दिया और प्रेम एवं सद्भाव से भटक कर वे घृणा और उपद्रव के पथ पर आ गये। इस तरह संकटों की शक्ति परिलक्षित हुई जो एक से एक ताकतवर स्तम्भों की भी चूलें हिला देते हैं।

जुडॉस एस्कैरियट महानतम शिष्यों में से था जिसने लोगों को ईसामसीह के पास आने का आह्वान किया था। फिर उसे लगा कि मसीह धर्मदूत पीटर के प्रति नित ज्यादा सम्मान दिखाने लगे थे, और जब मसीह ने कहा: “तुम पीटर हो और इसी चट्टान पर मैं अपना चर्च खड़ा करूंगा” तो पीटर को सम्बोधित किए गए ये शब्द और एक विशेष सम्मान के लिए पीटर को चुने जाने की बात से जुडॉस पर बड़ा असर पड़ गया और उसके हृदय में ईर्ष्‍या की अग्नि सुलग उठी। यही कारण था कि वह जो इतना निकट आ चुका था वही विमुख हो गया, और जिसने धर्म में विश्वास किया था वही इसे अस्वीकार करने वाला बन बैठा - तब तक जब तक कि वह उस भव्य प्रभु, उस प्रकट ’आभा’, को सूली पर लटकाए जाने का कारण नहीं बन गया। ईर्ष्‍या का ऐसा ही परिणाम होता है - वह मुख्य कारण जिससे मनुष्य ’सीधे रास्ते’ से परे हट जाता है। इस महान धर्म में ऐसा ही हुआ था और होगा। लेकिन इसकी कोई परवाह नहीं क्योंकि इससे अन्य लोगों में निष्ठा उत्पन्न होती है और ऐसे लोग तैयार होते हैं जो विचलित नहीं होते, जो ’प्रकट प्रकाश’ के प्रति अपने प्रेम में पहाड़ों की भाँति अडिग एवं अचल होते हैं।

सर्वदयालु परमात्मा की सेविकाओं को तू यह संदेश बता कि जब परीक्षा की घड़ी बहुत ही उग्र हो जाए तो उन्हें अविचल रहना चाहिए और बहा के प्रति अपने प्रेम में निष्ठावान। जब जाड़े की ऋतु आती है तो आंधियाँ उठती हैं, तेज हवाएँ बहती हैं, लेकिन उसके बाद अपने समस्त सौन्दर्य के साथ बसन्त का आगमन होता है मैदान और पहाड़ियाँ सुगन्धित पौधों और रत्नज्योति के सुन्दर फूलों से सुसज्जित हो जाते हैं। और तब पक्षी टहनियों पर अपने आनन्द भरे गान गुंजारित करने लगेंगे और पेड़ों के मंच से अपने लयात्मक सुरों में उपदेश देने लगेंगे। बहुत ही जल्द तुम्हें यह देखने को मिलेगा कि प्रकाश बिखर रहे हैं, उच्च लोक की पताकाएँ फहराने लगी हैं, ’सर्वदयालु’ की मोहक सुरभियाँ दूर-दूर तक फैलने लगी हैं, प्रभु-साम्राज्य के समूह नीचे उतर रहे हैं, स्वर्ग के देवदूत आगे बढ़ रहे हैं और उन सभी स्थानों पर ’पवित्र चेतना’ अपने उच्छ्वास प्रवाहित कर रही है। उस दिन तुम देखोगी कि वे लोग जो विचलित हो गए थे - स्त्री और पुरुष दोनों ही - उनकी आशाओं पर तुषारापात हो गया है और वे स्पष्ट रूप से अपना सब कुछ गंवा बैठे हैं। ’श्लोकों के प्रकटकर्ता’ ईश्वर द्वारा ऐसा ही निर्णय दिया गया है।

जहाँ तक तुम्हारा प्रश्न है, आशीर्वादित हो तुम क्योंकि तुम प्रभुधर्म में अडिग और ईश्वर की संविदा में सुदृढ़ हो। मैं ईश्वर से याचना करता हूं कि वे तुम्हें एक आध्यात्मिक आत्मा और प्रभु-साम्राज्य का जीवन प्रदान करें और तुम्हें ’जीवन के वृक्ष’ पर एक हरी-भरी और पल्लवित पत्ती बनाएँ ताकि तू ’सर्वदयालु’ की सेविकाओं की सेवा आध्यात्मिक भाव और प्रफुल्लता के साथ कर सको।

उदार परमेश्वर तुम्हें अपनी अंगूर-वाटिका में परिश्रम करने में सहायता देंगे और अपनी सेविकाओं के बीच तुम्हें एकता की चेतना के प्रसार का माध्यम बनाएंगे। परमात्मा तुम्हारे आंतरिक नेत्रों को ज्ञान के प्रकाश से देख पाने योग्य बनाएंगे, तुम्हारे पापों को क्षमा करेंगे और उन्हें शुभ कर्मों में परिवर्तित कर देंगे। वह, वस्तुतः, क्षमाशील है, दयालु है, अपरिमेय कृपा का स्वामी।

142

हे ईश्वर की प्रिय सेविका! ईश्वर की स्तुति कर क्योंकि तुम उसकी दहलीज पर कृपा-प्राप्त हो, और उसकी सामर्थ्‍य के साम्राज्य में प्रिय। तुम एक ऐसी सभा की प्रमुख हो जो कि उच्च लोक के सहचरों की निशानी, सर्व-गरिमामय लोक का प्रतिबिम्ब है। प्रार्थनामय विनम्रता और निःस्वार्थ भाव से तू अपने हृदय और अपनी आत्मा से ईश्वर के विधान को सहारा देने और उसकी मोहक सुरभियों को देश-विदेश में फैलाने का प्रयत्न कर। तू आध्यात्मिक आत्माओं की सभाओं की सच्ची अध्यक्षा और सर्वदयालु परमात्मा के लोक में रहने वाले देवदूतों की सहचरी बनने का प्रयास कर।

तुमने ’संत जॉन - एक दिव्य प्रकटीकरण’ के इक्कीसवें अध्याय के दसवें से लेकर सत्रहवें श्लोकों के बारे में पूछा है। तू यह जान कि गणितीय सिद्धान्तों के अनुसार, इस धरती के प्रखर दिवानक्षत्र के आकाश को बारह तारामंडलों में विभक्त किया गया है जिन्हें वे बारह राशियों के चिह्न बताते हैं। इसी तरह, ’सत्य का सूर्य’ पवित्रता के बारह पदों से अपना प्रकाश और अपनी उदारताएँ बिखेरता है और इन स्वर्गिक चिह्नों से तात्पर्य है वे निर्दोष एवं निष्पाप व्यक्तित्व जो पवित्रता के साक्षात स्रोत एवं ईश्वर की एकमेवता की घोषणा करने वाले उदय-बिंदु हैं।

यह विचार करो कि कैसे ’संभाषी’ (मूसा) के दिनों में बारह पवित्र जन थे जो बारह कबीलों के नेता थे और इसी तरह चेतना (ईसामसीह) के धर्मयुग में उस स्वर्गिक ’प्रकाश’ की शरणदायिनी छाया में एकत्रित बारह धर्मदूत या ’एपॉस्टल’ थे और उन ज्योतिर्मय उदय-बिंदुओं से ’सत्य का सूर्य’ वैसे ही उदित हुआ जैसे आकाश का सूर्य उदित होता है। पुनः, मुहम्मद के दिनों में गौर करो कि पवित्रता के बारह उदय-बिंदु थे, ईश्वर की पुष्टिकारी सहायता के प्रकटकर्ता। ऐसा ही होता आया है।

इसी अनुसार, दिव्य संत जॉन ने अपने स्वप्न में बारह द्वारों और बारह आधारशिलाओं के बारे में कहा है। “महान नगरी, पवित्र येरुशलम, जो ईश्वर के स्वर्ग से अवतरित हो रहा है” से तात्पर्य है ईश्वर का पवित्र विधान और यह बात अनेक पातियों में निरूपित की गई है और अभी भी अतीत के अवतारों के धर्मग्रंथों में पढ़ी जा सकती है: उदाहरण के लिए, यह कि येरुशलम को बियावान में जाते देखा जा रहा है।

इस अनुच्छेद का अर्थ यह है कि इस स्वर्गिक येरुशलम के बारह द्वार थे जिनसे होकर आशीर्वादित व्यक्ति ईश्वर की नगरी में प्रवेश करते थे। ये द्वार वे आत्माएँ थीं जो मार्गदर्शक तारों की तरह थे, ज्ञान और करुणा के प्रवेश-द्वारों की तरह। और इन द्वारों के अन्दर बारह देवदूत खड़े होते हैं। “देवदूत” से तात्पर्य है ईश्वर की संपुष्टि की शक्ति - यह कि ईश्वर की पुष्टिकारी शक्ति के प्रदीप इन आत्माओं के आले से प्रदीपित होते थे - यानी इनमें से प्रत्येक व्यक्ति को अत्यंत ही भावप्रवण संपुष्टि की सहायता प्राप्त होगी।

ये बारह द्वार पूरे विश्व को आश्वश्त किए हुए हैं, अर्थात वे सभी जीवों के लिए एक आश्रय की तरह हैं। और फिर, ये बारह द्वार ’ईश्वर की नगरी’ येरुशलम के आधार-स्तम्भ हैं और इनमें से प्रत्येक आधार-स्तम्भ के ऊपर ईसा मसीह के धर्मदूतों में से एक का नाम अंकित है। दूसरे शब्दों में, इनमें से प्रत्येक उस ’पवित्र आत्मा’ की परिपूर्णताओं, उसके शुभ समाचार और उत्कृष्टता को झलकाता है।

संक्षेप में, धर्मग्रंथ कहता है: “और जिसने भी मुझसे वार्तालाप किया उसके पास सोने की एक छड़ी थी, यानी वह पैमाना जिससे वह शहर और उसके द्वारों और उसकी मीनारों को मापता था।“ इसका अर्थ यह है कि कुछ लोग धरती पर उपजी हुई छड़ी से लोगों को मार्गदर्शित करते थे और मूसा की छड़ी की तरह उससे लोगों की देखभाल करते थे। कुछ अन्य लोग लोहे की छड़ी से लोगों को मार्गदर्शन और प्रशिक्षण देते थे, जैसा कि मुहम्मद के धर्मयुग में था। और इस वर्तमान धर्मचक्र में, चूंकि यह सबसे सामर्थ्‍यमय धर्मयुग है, लकड़ी और लोहे की छड़ को परमेश्वर के साम्राज्य के असीम खजानों से लिए गए शुद्ध सोने की छड़ में बदल दिया जाएगा और उस छड़ से लोगों को प्रशिक्षित किया जाएगा।

इस अन्तर पर जरा गौर करो: एक समय में ईश्वर की शिक्षाएँ एक छड़ी की तरह थीं और इस माध्यम से पवित्र ग्रंथों का दूर-दूर तक प्रसार किया गया, ईश्वर के नियम की घोषणा और उसके धर्म की स्थापना की गई। तब फिर एक वह समय आया जब सच्चे ’गड़ेरिये’ की छड़ लोहे की थी। और आज, इस नए और प्रकाशमय युग में, वह छड़ शुद्ध सोने की है। यह अन्तर कितना बड़ा है! अतः यह जान लो कि ईश्वर के नियम और उसकी शिक्षाओं ने इस धर्मयुग में कितनी आधारभूमि तैयार कर ली है, कैसे वे उन ऊँचाइयों तक पहुंच गए कि वे पिछले सभी धर्मयुगों से कहीं आगे बढ़ गए: सचमुच यह छड़ शुद्धतम सोना है जबकि अतीत की छड़ें लोहे और लकड़ी की थीं।

यह एक संक्षिप्त उत्तर है जिसे तुम्हारे लिए लिखा गया है, क्योंकि और अधिक समय उपलब्ध नहीं था। निश्चय ही तुम मुझे क्षमा करोगी। ईश्वर की सेविकाओं को उस स्तर तक उठना चाहिए कि वे, स्वयं और बिना किसी सहायता के, इन आंतरिक अर्थों को समझेंगी और एक-एक शब्द की विस्तार से व्याख्या करने में सक्षम होंगी - ऐसा स्तर जहाँ, उनके हृदय के अंतर्तम के सत्य से, विवेक का फव्वारा फूट उठेगा और ऐसे निर्झर की तरह बढ़ चलेगा जो अपने मूल स्रोत से निकल कर बह निकलता है।

143

हे तुम जो कि ईश्वर के साम्राज्य में मसीह की चेतना के निकट हो! सत्य ही, यह शरीर भौतिक तत्वों से बना हुआ है और हर घटित वस्तु का विघटित होना आवश्यक है। लेकिन चेतना एक तत्व है, सूक्ष्म और मृदुल, अशारीरिक, अनन्त और ईश्वरीय। इसलिए जो कोई भी ईसामसीह को उनके भौतिक शरीर में देखता है उसने व्यर्थ ही देखा है, और वह एक पर्दे की तरह उनसे ओझल हो जाएगा। लेकिन जो कोई भी उन्हें चेतना के रूप में पाने को उत्कंठित है वह दिनोंदिन आनन्द और अभिलाषा तथा ज्वलन्त प्रेम में, उनके निकट आने में, और उन्हें स्पष्ट और सरल रूप से देख पाने में अपना विकास प्राप्त करेगा। इस नए और विलक्षण युग में तुम्हारे लिए यही उपयुक्त है कि तुम ईसामसीह की चेतना को तलाशने का प्रयत्न करो।

सत्य ही, मसीहा जिस स्वर्ग में उदित हुए वह यह अनन्त आकाश नहीं था, बल्कि उनका स्वर्ग उनके दयालु प्रभु का साम्राज्य था। जैसा कि उन्होंने स्वयं ही कहा हैः “मैं स्वर्ग से उतर कर आया“[[47]](#footnote-47) और पुनः, “मानव-पुत्र स्वर्ग में है”।[[48]](#footnote-48) अतः, यह स्पष्ट है कि उनका स्वर्ग सभी दिशाओं से परे है, यह समस्त अस्तित्व को समेटे हुए है और यह स्वर्ग उनके लिए बनाया गया है जो ईश्वर की आराधना करते हैं। अपने प्रभु से यह याचना और अभ्यर्थना कर कि महिमा और सामर्थ्‍य के इस युग में वह तुम्हें उस स्वर्ग की ऊंचाइयों तक उठाएँ और तुम्हें उसके भोजन का स्वाद दें।

तू यह जान कि इस युग तक भी लोग ’ग्रंथ’ के छुपे हुए रहस्यों को उद्घाटित कर पाने में विफल रहे हैं। वे यह कल्पना करते हैं कि ईसामसीह जिन दिनों में इस धरती पर विचरण कर रहे थे उन दिनों में वे स्वर्ग से अपवर्जित थे, यह कि वे अपनी महानता की ऊँचाइयों से गिर गए थे और बाद में आकाश की उन ऊँचाइयों तक पहुंचे, उस स्वर्ग तक जो अस्तित्व में ही नहीं है, क्योंकि वह अंतरिक्ष के सिवा और कुछ नहीं। और वे पुनः बादलों पर सवार होकर उनके वहां से नीचे उतरने की प्रतीक्षा में हैं और वे यह कल्पना करते हैं कि उस असीम अंतरिक्ष में बादल हैं और यह कि वे उन पर सवार होंगे और फिर नीचे उतरेंगे। सच्चाई यह है कि बादल सिर्फ एक वाष्प है जो धरती से ऊपर उठता है और यह स्वर्ग से नीचे नहीं आता। बल्कि ईशवाणी (गॉस्पेल) में वर्णित बादल मानव-शरीर है। ऐसा इसलिए क्योंकि शरीर, बादल की तरह, मनुष्य का एक आवरण है जो उसे मसीहा के क्षितिज से उगने वाले ’सत्य के सूर्य’ को देख पाने में बाधित करता है।

मैं ईश्वर से याचना करता हूँ कि वह तुम्हारी आँखों के समक्ष अन्वेषण और बोध के द्वारों को खोल दे ताकि इस सर्वाधिक प्रकट युग में तू उसके रहस्यों से परिचित हो सके।

मैं तुमसे मिलने को अत्यन्त उत्सुक हूँ लेकिन अभी समुचित समय नहीं आया है। ईश्वर ने चाहा तो हम तुम्हें बेहतर समय के बारे में सूचित करेंगे जब तुम आनन्द-मग्न होकर आ सकोगे।

144

हे मानवजाति के प्रेमी! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ और ईश्वर की स्तुति हो, उसमें तुम्हारे स्वास्थ्य और कल्याण के बारे में बताया गया है। तुम्हारे द्वारा पिछले पत्र के दिए गए एक उत्तर से ज्ञात होता है कि तुम्हारे और तुम्हारे मित्रों के बीच स्नेह-भावना स्थापित हो रही थी।

प्रत्येक मनुष्य में व्यक्ति को केवल प्रशंसनीय बातें ही देखनी चाहिए। ऐसा किए जाने पर व्यक्ति सम्पूर्ण मानवजाति का मित्र हो सकता है। लेकिन यदि हम लोगों को दोष-दृष्टि से देखेंगे तो उनका मित्र बन पाना कठिन कार्य हो जाएगा।

ईसामसीह - इस विश्व का जीवन उन पर बलिदान हो जाए - के समय में एक बार ऐसा हुआ कि वे एक कुत्ते की लाश के पास से गुजर रहे थे - एक सड़ांध मारती हुई लाश, वीभत्स, जिसके अंग-प्रत्यंग सड़-गल रहे थे। वहाँ उपस्थित लोगों में से एक ने कहा: “कैसी घिनौनी बदबू आ रही है!” दूसरा बोलाः “ओह, कितना वीभत्स! कितना घृणित!” संक्षेप में, उनमें से हर कोई इसी तरह की बात कहे जा रहा था।

लेकिन उसके बाद ईसामसीह ने स्वयं कहा: “कुत्ते के दाँतों को देखो! कितने चमकीले और सफेद है!”

मसीहा की वह पाप को ढंकने वाली दृष्टि एक पल के लिए भी उस शव के घिनौनेपन पर नहीं टिकी। उस कुत्ते के शव का एक तत्व जो घृणा-योग्य नहीं था वह थे उसके दाँत: और ईसामसीह ने उन दाँतों के चमकीलेपन को देखा।

इसी प्रकार हमारा भी यही कर्त्‍तव्‍य है कि जब हम दूसरे लोगों पर निगाह डालें तो तो यह देखें कि उनमें उत्कृष्ट बातें क्या हैं, यह नहीं कि उनमें कमी क्या है।

ईश्वर की स्तुति हो, लक्ष्य है मानवजाति के कल्याण को बढ़ावा देना और लोगों को अपनी त्रुटियों पर विजय पाने में सहायता देना। इस अच्छी अभिवृत्ति से प्रशंसनीय परिणाम उत्पन्न होंगे।

145

तुमने आध्यात्मिक खोज के प्रश्न के बारे में लिखा है। मनुष्य की चेतना ऐसी परिव्यापक शक्ति है जो सभी वस्तुओं के यथार्थ को आवृत्त किए हुए है। तुम अपने बारे में जो कुछ भी देखते हो - मनुष्य के हस्तशिल्प के अद्भुत उत्पाद, अनुसंधान, आविष्कार और ऐसे ही अन्य प्रमाण - इनमें से प्रत्येक कभी अज्ञात लोक में छुपा हुआ रहस्य था। मानव-चेतना ने उस रहस्य पर से पर्दा उठाया और उसे अदृश्य जगत से दृश्य जगत में ले आया। उदाहरण के लिए, वाष्प की शक्ति, फोटोग्राफी और फोनोग्राफ, वायरलेस और टेलिग्राफी तथा गणित के क्षेत्र में हुए विकास: इनमें से प्रत्येक कभी एक रहस्य था, एक अत्यंत गुप्त रहस्य, लेकिन मनुष्य की चेतना ने इन रहस्यों को उद्घाटित किया और उन्हें अगोचर लोक से लाकर सबके सामने प्रकाशित करके रख दिया। इस तरह यह स्पष्ट है कि मनुष्य की चेतना सबको परिवेष्टित करने वाली शक्ति है जो इस क्षणभंगुर संसार के सुसंरक्षित रहस्यों को उजागर करते हुए सभी रचित वस्तुओं के आंतरिक सार-तत्वों पर अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करती है।

लेकिन दिव्य चेतना उन स्वर्गिक यथार्थों और सर्वव्यापी रहस्यों को अनावृत करती है जो आध्यात्मिक जगत में व्याप्त होते हैं। मेरी आशा है कि तुम इस दिव्य चेतना को प्राप्त करोगे ताकि तुम अपर लोक और इहलोक दोनों ही के रहस्यों को उजागर कर सको।

तुमने ’गॉस्पेल ऑफ जॉन’ के अध्याय 14 के श्लोक 30 के बारे में पूछा है जहाँ प्रभु यीशु मसीह कहते हैं: “अभी के बाद से मैं तुमसे ज्यादा बात नहीं करूंगा: क्योंकि इस विश्व का राजकुमार आ रहा है और मुझमें उसका कुछ नहीं है।“ इस विश्व के राजकुमार हैं ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ और ’मुझमें उसका कुछ नहीं है’ से तात्पर्य है: मेरे बाद सब मुझसे कृपा प्राप्त करेंगे लेकिन वह मुझसे स्वतंत्र है और वह मुझसे कृपा प्राप्त नहीं करेगा। अर्थात वह मेरी किसी भी कृपा से परे, स्वयं समृद्ध है।

जहाँ तक मानव का रूप त्याग देने के बाद आत्मा द्वारा की गई खोजों का सवाल है, निश्चित रूप से वह लोक बोधों और अन्वेषणों का जगत है, क्योंकि बीच में पड़ा हुआ पर्दा उठा दिया जाएगा और मानव की चेतना उन सभी आत्माओं पर दृष्टि डाल सकेगी जो उससे ऊपर, उससे नीचे और उसके समकक्ष हैं। यह भ्रूण में स्थित मानव-जीव की दशा के समान है जहाँ उसकी आँखों पर आवरण होता है और सभी वस्तुएँ उससे ओझल होती हैं। लेकिन जब वह जन्म लेकर गर्भाशय के उस संसार से बाहर आता है और इस जीवन में प्रवेश करता है तो उस भ्रूण के संसार की तुलना में वह इसे बोधों और अन्वेषणों की एक नई दुनिया पाता है और सभी वस्तुओं को वह अपने बाहरी नेत्रों से देखता है। इसी तरह, इस जीवन को अलविदा कहने के बाद, उस लोक में वह सब कुछ देख पाएगा जो यहाँ उसकी नजरों से ओझल थे: लेकिन वहां वह सभी वस्तुओं को अपने आंतरिक नेत्र से देख और समझ पाएगा। वहाँ वह अपने बंधु-बान्धवों और साथियों को निहारेगा, उन्हें जो पद में उससे उच्च हैं और उन्हें भी जो उससे निम्न हैं। उस सर्वोच्च लोक में आत्माओं की समानता का यह अर्थ है: विश्वासियों की आत्माएँ जब पहली बार इस पार्थिव संसार में प्रकट होती हैं तो वे समान होती हैं और उनमें से प्रत्येक शुद्ध एवं पावन होती हैं। लेकिन इस अपर लोक में, वे एक-दूसरे से भिन्न होने लगेंगी। कुछ को उच्चतम पद प्राप्त होगा, कुछ मध्य में रहेंगी और कुछ अस्तित्व के निम्नतम धरातल पर होंगी। उनके अस्तित्व के आरम्भ के समय उनका दर्जा समान होता है किन्तु निधन के बाद उनमें अन्तर प्रकट होता है।

तुमने सेयर के बारे में लिखा है। सेयर गैलिली में नाजरथ के पास एक स्थान है।

जहाँ तक अध्याय 19 के 25वें से लेकर 27वें श्लोकों में जॉब के इस कथन की बात है कि “मैं जानता हूं कि मेरा मुक्तिदाता जीवित है और यह कि वह बाद के दिनों में धरती पर खड़ा होगा”, इसका अर्थ यह हैः मैं लज्जित नहीं होऊँगा, मेरा एक जीवनदाता और एक अभिभावक और मेरा सहायक और संरक्षक अंत में प्रकट होगा। और भले ही मेरा मांस दुर्बल एवं कीड़ों से ढंका होगा किन्तु फिर भी मैं आरोग्य प्राप्त करूंगा और अपनी इन्हीं आँखों से मैं उसे निहारूंगा जो मेरी अंतर्दृष्टि है। जॉब ने यह तब कहा था जब उन्होंने उसे दुर्वचन कहे थे और वह स्वयं भी उन संकटों पर विलाप कर उठा था कि उसके संकटों ने उसे तोड़ डाला था। और जब बीमारी के घोर आक्रमण के बाद उसका शरीर कीड़ों से ढंक गया था तो भी वह अपने बारे में उन्हें यह बता रहा था कि वह फिर भी पूर्ण आरोग्य को प्राप्त करेगा और यह कि अपने इसी शरीर में, अपनी ही आँखों से, वह अपने मुक्तिदाता को निहारेगा।

जहाँ तक अध्याय 12 में संत जॉन के प्रकटीकरण में संदर्भित स्त्री का प्रश्न है जो बियावान में भाग गई थी और स्वर्ग में महान विलक्षण बातें सामने आई थीं - वह सूर्य से आवृत स्त्री जिसके पांव तले चन्द्रमा था: उस स्त्री का अर्थ है ईश्वर का नियम। क्योंकि पवित्र ग्रंथों की शब्दावली के अनुसार, यह ’ईश्वरीय विधान’ के संदर्भ में है और वह स्त्री इसका प्रतीक है। और दो नक्षत्र, सूर्य और चन्द्रमा, दो सिंहासन हैं - तुर्की और पर्शिया की - ये दोनों जो कि ईश्वर के विधान के नियमाधीन हैं। सूर्य पर्शिया साम्राज्य का प्रतीक है और चन्द्रमा, यानी अर्द्धचन्द्र, तुर्की के साम्राज्य का। बारह-स्तरीय मुकुट बारह इमामों का प्रतीक है जिन्होंने, धर्मदूतों की तरह, ईश्वर के धर्म को सहारा दिया। नवजात ’शिशु’ उस ’आराध्य’ का सौन्दर्य है जो ईश्वर के विधान से उत्पन्न है।[[49]](#footnote-49) उसके बाद वह कहता है कि वह स्त्री बियावान में चली गई, अर्थात ईश्वर के नियम को फिलिस्तीन से बाहर हिजाज के रेगिस्तान में ले जाया गया जहाँ वह 1260 वर्षों तक रहा - यानी प्रतिज्ञापित ’शिशु’ के जन्म लेने तक। और जैसा कि ज्ञात है, पवित्र ग्रंथों में हर दिन की गिनती एक वर्ष के रूप में की जाती है।

146

हे ईश्वर के प्रेम से प्रज्ज्वलित सेविका! मैंने तुम्हारे सुन्दर पत्र पर विचार किया है, और उस महान नगर में तुम्हारे सुरक्षित पहुंचने के लिए ईश्वर के प्रति आभार प्रकट किया है। परमेश्वर की अचूक सहायता द्वारा मैं उससे यह याचना करता हूं कि तुम्हारी इस वापसी को वह महान प्रभाव उत्पन्न करने वाला बनाएँ। ऐसी बात सिर्फ तभी घटित हो सकती है जब तुम स्वयं को इस संसार की सभी आसक्तियों से मुक्त कर लो और पवित्रता का वस्त्र धारण कर लो, जब तुम अपने सभी विचार और वचनों को ईश्वर के स्मरण और उसकी स्तुति, देश-विदेश में उसकी मोहक सुरभियों के प्रसार और धर्मपरायणता के कार्यों पर केन्द्रित रखो, और जब तुम स्वयं को असावधानों को जागरूक बनाने और अंधों को नेत्र देने, बहरों को सुनने की शक्ति देने, गूंगों को वाणी देने और चेतना की शक्ति द्वारा मृतकों में जीवन का संचार करने के लिए समर्पित कर दो।

क्योंकि जैसा कि ईसामसीह ने गॉस्पेल में उनके बारे में कहा, लोग अंधे हैं, वे बहरे हैं, वे मूक हैं और उन्होंने कहा: “मैं उन्हें आरोग्य दूंगा।“

अपनी दुर्बल माता के प्रति तुम दयालु और करुणावान बनो और उसे प्रभु-साम्राज्य की बात बताओ ताकि उनका हृदय आनन्दित हो सके।

मिस फोर्ड को मेरा अभिवादन देना। उन्हें यह शुभ समाचार सुनाना कि ये दिन ईश्वर के साम्राज्य के दिवस हैं। उनसे यह कहना: अपने महान उद्देश्यों के कारण तुम धन्य हो, अपने नेक कार्यों के लिए तुम धन्य हो, अपने आध्यात्मिक स्वभाव के कारण तुम धन्य हो। तेरे इन उद्देश्यों और गुणों एवं कर्मों के कारण मैं वस्तुतः तुझसे प्रेम करता हूँ। आगे उससे यह भी कहना: मसीहा को याद रख और धरती पर उनके दिनों को और उनके निरादर को, उनकी यातनाओं को और कैसे लोगों ने उन पर ध्यान नहीं दिया। याद रखो कि यहूदियों ने कैसे उनका मजाक उड़ाया, उनका उपहास किया और कहा: “हे यहूदियों के राजा! तुझे शांति प्राप्त हो, हे राजाधिराज!” कैसे उन्होंने यह कहा कि वह पागल है और कहा कि वह जिसे सूली पर लटका दिया गया है उसका धर्म भला विश्व के पूरब और पश्चिम में कैसे फैल सकता है। उस समय किसी ने उनका अनुसरण नहीं किया, सिवाय कुछ लोगों के जिनमें शामिल थे मछुआरे, बढ़ई और कुछ सीधे-सरल लोग। अफसोस, अफसोस है ऐसी मतिभ्रष्टता पर!

और देखो कि उसके बाद क्या हुआ: उनकी शक्तिशाली ध्वजाएँ कैसे पलट गई और उनकी जगह ’उसकी’ (ईसामसीह की) उदात्त ध्वजा लहरा उठी, कैसे मान और अभिमान के स्वर्ग के सभी प्रकाशमान सितारे बुझ गए, कैसे वे उस पश्चिम में जाकर डूब गए जहाँ सब कुछ ओझल हो जाता है - जबकि ’उसका’ ज्योतिर्मय वृत्त युगों और शताब्दियों के गुजर जाने के बाद भी अमत्र्य गरिमा के आसमानों से आज भी जगमगा रहा है। अतः तू जिनके पास देखने को नेत्र हैं, इससे शिक्षा ग्रहण कर। बहुत ही शीघ्र तुम्हें इससे भी बड़ी बातें देखने को मिलेंगी।

तू यह जान कि यदि सभी शक्तियाँ सम्मिलित हो जाएँ तो भी उनमें विश्व शांति की स्थापना की शक्ति नहीं है और न ही इन अनवरत युद्धों की बेला में प्रभुत्व स्थापित करने वाले साम्राज्यों को रोक पाने की। लेकिन बहुत ही जल्द स्वर्ग की शक्ति, पवित्र चेतना का साम्राज्य, उच्च शिखरों पर प्रेम और शांति की पताका फहरायेगा और गरिमा एवं सामर्थ्‍य के किलों पर ये पताकाएँ ईश्वर की कृपा से प्रवाहित होने वाली हवाओं में लहरा उठेंगी।

श्रीमती फ्लोरेंस को मेरा अभिवादन देना और कहना: विभिन्न धर्मसभाएँ अपने विश्वास के आधार से ही हिल गई हैं और उन्होंने ऐसी मान्यताओं को अपना रखा है जिनका ईश्वर की निगाह में कोई महत्व नहीं है। वे बिल्कुल फारसियों की तरह हैं जो प्रार्थना भी करते थे और उपवास भी रखते थे और अंत में उन्होंने ईसामसीह को मृत्युदण्ड दे दिया। ईश्वर के जीवन की सौगन्ध! यह बड़ी अजीब बात है।

जहाँ तक तेरा सम्बन्ध है, हे ईश्वर की सेविका, मृदुलतापूर्वक ईश्वर से यह सम्भाषण कर और उससे कह:

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! मेरे लिए सभी विषयों से अनासक्ति के प्याले को भर दे और अपनी आभाओं एवं अनुदानों की सभा में मुझे तुझसे प्रेम करने की मदिरा से उत्फुल्ल कर। मुझे लालसाओं और कामनाओं के आक्रमण से मुक्त कर, मुझे इस संसार की बेड़ियों से छुड़ा, मुझे आनन्द-विह्वलता के साथ अपने स्वर्गिक लोक की ओर आकर्षित कर और अपनी पवित्रता के उच्छवासों से मुझे अपनी सेविकाओं के मध्य ताजगी प्रदान कर।

हे प्रभो, अपने अनुदानों की प्रभाओं से मेरे मुखड़े को प्रदीप्त कर, मेरे नेत्रों को अपनी सर्वदमनकारी सामर्थ्‍य के संकेतों के निरखने से प्रकाशित कर दे, मेरे हृदय को अपने उस ज्ञान की गरिमा से उत्फुल्ल कर जो सभी वस्तुओं को आश्वश्त किए हुए है, मेरी आत्मा को तू अतिशय प्रफुल्लता के जीवन्तकारी शुभ समाचारों से आनन्द-मग्न बना, हे तू इस लोक के सम्राट और उच्च लोक के सम्राट, हे तू साम्राज्य और सामर्थ्‍य के प्रभु, ताकि में देश-विदेश में तेरे चिह्नों और संकेतों का प्रसार कर सकूं और तेरे धर्म की घोषणा कर सकूं और तेरी शिक्षाओं को आगे बढ़ा सकूं और तेरे विधानों को पूरा कर सकूं और तेरी वाणी को उदात्त बना सकूं।

तू, सत्य ही, शक्तिशाली है, सदा-दातार, सक्षम, सर्वशक्तिमान है।

जहाँ तक प्रभुधर्म की शिक्षा की बुनियादी बातों का सवाल है, तू यह जान कि ईश्वर का संदेश देने का कार्य केवल अच्छे कार्यों और आध्यात्मिक गुणों से ही सम्भव है, ऐसी वाणी के माध्यम से जो स्फटिक की तरह स्पष्ट है और वह व्यक्ति जो शिक्षण कर रहा है उसके मुखड़े पर प्रसन्नता की झलक होनी चाहिए। यह आवश्यक है कि शिक्षण के कर्म उसकी वाणी की सत्यता को झलकाएँ। जो कोई भी दूर-दूर तक ईश्वर की मोहक सुरभि का प्रसार करता है उसकी ऐसी ही स्थिति है और जो कोई भी धर्म के प्रति निष्ठावान है उसके ये ही गुण हैं।

जब ईश्वर तुझे इस स्थिति को प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा तो तू आश्वस्त रह कि वह तुझे सत्य की वाणी से भी प्रेरित करेगा और तुम्हें पवित्र चेतना के उच्छवासों के माध्यम से बोलने की शक्ति देगा।

147

ईसा मसीह के समय की विगत घटनाओं के बारे में विचार करो, और वर्तमान घटनाएँ स्पष्ट एवं प्रकट हो जाएंगी।

148

हे ईश्वरीय साम्राज्य के बेटों और बेटियों! आभार भरे हृदय से, चेतना के पखेरू केवल उच्च स्वर्ग में उड़ान भरने और विलक्षण कला के साथ अपना गान सुनाने को प्रयत्नशील रहते हैं। लेकिन निरीह केंचुओं को केवल धरती के अन्दर सुरंग बनाना ही पसन्द है और उसकी गहराइयों में पहुँचने के लिए वे कितना घोर संघर्ष करते हैं! धरती के बेटे भी इसी तरह से हैं। उनका उच्चतम लक्ष्य है इस लुप्त होते संसार, इस मृत्युमय जीवन में अनवरत रहने के साधनों का विकास करते जाना और वो भी इस तथ्य के बावजूद कि हजारों दुःख और चिन्ताएँ उन्हें सिर से पैर तक जकड़े हुए हैं और पलक झपकने तक की देर तक भी वे कभी संकट से सुरक्षित नहीं और अचानक आने वाली मौत से भी उनका कोई बचाव नहीं। इसलिए, कुछ ही दिनों बाद उनका नामो-निशान पूरी तरह मिट जाता है, उनका अता-पता बताने वाली कोई निशानी नहीं रह जाती और उनके बारे में न ही कभी एक शब्द सुनने को मिलता है।

अतः तू बहाउल्लाह की स्तुति में निरत हो जा, क्योंकि यह उन्हीं की कृपा और सहायता है कि तुम सब ’साम्राज्य’ के पुत्र और पुत्रियाँ बन पाए हो। यह उन्हीं का वरदान है कि तुम सब सत्य की शस्यभूमि में गान करने वाले बन गये हो और तुम सबने उस गरिमा की ऊंचाइयों तक उड़ान भरी है जो सदा शाश्वत है। तुमने एक ऐसे लोक में अपना स्थान बनाया है जो अविनाशी है, तुम पर ’पवित्र चेतना’ के उच्छवास प्रवाहित हुए हैं, तुम्हें नया जीवन प्राप्त हुआ है, तुम सबने ईश्वर की दहलीज पर प्रवेश प्राप्त किया है।

अतः, अत्यंत आनन्द से तू सब आध्यात्मिक सभाओं की स्थापना कर और प्रभु की स्तुति और महिमा-गान तथा उसे पावन और परम महान कहने में निरत हो। सहायता के लिए अपनी विनम्र पुकार उस सर्व-गरिमामय के लोक तक गुंजरित कर, और हर क्षण अनगिनत आभार प्रकट कर कि तूने यह असीमित कृपा और अपार दया प्राप्त की है।

149

हे तू जिसके पास देखने को नेत्र हैं! तुम जो देख रहे हो वह निरा सत्य है और उसका सम्बन्ध स्वप्न के लोक से है।

फूल की कली से सुगन्ध अंतरंग रूप से जुड़ी हुई और उसमें सम्मिश्रित है और कली जैसे ही खिल जाती है उसकी मधुर सुरभि दूर-दूर तक फैल जाती है। शाक अपने फल के बिना नहीं होता, भले ही वह ऐसा दिखाई देता है, क्योंकि ईश्वर के इस उद्यान में हर पौधा अपना प्रभाव डालता है और उसकी अपनी विशेषताएँ होती हैं और अपनी सुगन्ध से आनन्दित हर पौधा सैकड़ों पंखुड़ियों वाले गुलाब के समान है। तू इसके बारे में आश्वस्त रह। हालाँकि किसी किताब के पन्ने उन पर अंकित शब्दों और अर्थों के बारे में कुछ नहीं जानते लेकिन इन शब्दों से उनके सम्बन्धित होने के कारण मित्रगण उन्हें आदरपूर्वक एक हाथ से दूसरे हाथ में सौंपते हैं। और फिर, यह सम्बन्ध विशुद्धतम कृपा है।

जब मनुष्य की आत्मा धूल के इस चलायमान ढेर से उड़ान भरेगी और ईश्वर के लोक में उठ जाएगी तो सभी पर्दे गिर जाएंगे और यथार्थ सामने आएंगे और वे सभी बातें जो पहले अज्ञात थीं वे स्पष्ट हो जाएंगी और निगूढ़ सच्चाइयाँ समझ में आ जाएंगी।

विचार करो कि कैसे कोई जीव भ्रूण के संसार में कानों से बहरा और आँखों से अंधा था और वह बोल नहीं सकता था, कैसे वह सभी बोधों से वंचित था। लेकिन उस अंधकारमय दुनिया से बाहर आते ही जब वह इस प्रकाशमय जगत में प्रवेश करता है तो उसकी आँखें देखती हैं, उसके कान सुनने लगते हैं, उसकी जीभ बोलने लगती है। इसी तरह जब वह इस नाशवान संसार से ईश्वर के साम्राज्य में प्रवेश करेगा तो वह चेतना के संसार में जन्म लेगा, तब उसके बोध की आँखें खुल जाएंगी, उसकी आत्मा के कान सुनने लगेंगे और वे सभी सच्चाइयाँ जो पहले उसके लिए अज्ञात थीं वे साफ और स्पष्ट हो जाएंगी।

किसी रास्ते से गुजरता हुआ जागरूक यात्री अपनी खोजी हुई वस्तुओं का अवश्य ही स्मरण रखेगा बशर्ते कि कोई दुर्घटना न हो जाए और उसकी स्मृति का लोप न हो जाए।

150

हे ईश्वर के प्रेम की अग्नि से प्रदीप्त सेविका! तू इस निम्न जगत की समस्याओं और उसके संकटों से दुःखी न हो, न ही तू सुख-चैन के दिनों में खुशी मना, क्योंकि दोनों ही गुजर जाने वाले हैं। यह वर्तमान जीवन एक उमड़ती हुई तरंग की तरह है, या एक मरीचिका की तरह, या फिर बदलती हुई छायाओं की तरह। क्या मरु-मरीचिका कभी ताजगी देने वाले जल की तरह हो सकती है? नहीं, प्रभुओं के प्रभु की सौगन्ध! कभी भी सच्चाई और वह जो सच्चाई जैसी प्रतीत होती है एक नहीं हो सकती, और कल्पना एवं यथार्थ के बीच, सत्य और भ्रम के बीच, बहुत बड़ा अन्तर है।

तू यह जान कि ईश्वर का साम्राज्य वास्तविक जगत है और यह निम्न लोक उसकी केवल एक छाया मात्र है। छाया का अपना कोई जीवन नहीं होता। उसका अस्तित्व केवल एक भ्रम है और इससे अधिक कुछ नहीं। यह पानी में प्रतिबिम्बित छवि की तरह है और आँखों को दिखाई देने वाले चित्रों की तरह।

ईश्वर पर भरोसा रख। उसका गुणगान कर और अपने मन में सतत उसका सुमिरन कर। वह, सत्य ही, संकटों को चैन में बदल देता है, और दुःख को सांत्वना में और संघर्ष को शांति में। वस्तुतः, उसका साम्राज्य सभी वस्तुओं पर है।

यदि तुम मेरे शब्दों पर ध्यान देती हो तो स्वयं को क्षणभंगुर वस्तुओं की बेड़ियों से मुक्त कर। नहीं, बल्कि हर परिस्थिति में अपने स्नेही प्रभु को धन्यवाद दे और अपने सभी मामले उसी की इच्छा पर छोड़ दे जो उसकी मर्जी के अनुसार कार्य करती है। लोक और परलोक दोनों में, वस्तुतः, यही तेरे लिए बेहतर है।

151

हे ईश्वर की एकता के विश्वासी! तू यह जान कि ’सर्वदयालु’ के प्रेम के सिवा आत्मा के लिए और कुछ भी लाभदायक नहीं, प्रभु के लोक से प्रकाशित होने वाली आभा के सिवा कुछ भी किसी हृदय को प्रकाशित नहीं करती।

तू अन्य सब चिन्ताओं को छोड़ दे, अन्य सभी स्मरणों को विस्मृत हो जाने दे। अपने विचारों को तू उसी तक सीमित रख जो मनुष्य की आत्मा को स्वर्गिक कृपा के स्वर्ग तक ऊँचा उठा सके और जो ’साम्राज्य’ के सभी पक्षियों को ’उच्चतम क्षितिज’, इस चलायमान संसार में अनन्त सम्मान के केन्द्रबिंदु, तक उड़ान भरने के लिए अपने पंख फड़फड़ाने को प्रोत्साहित करे।

152

जहाँ तक किसी हत्यारे की आत्मा का प्रश्न है और यह कि उसे क्या सजा मिलेगी, यह उत्तर दिया गया कि हत्यारे को अपने अपराध की क्षतिपूर्ति देनी होगी: अर्थात यदि वे उस हत्यारे को मृत्युदंड देते हैं तो उसकी मृत्यु उसके अपराध की क्षतिपूर्ति होगी और मृत्यु के बाद, ईश्वर अपने न्याय में उसे दूसरा दण्ड नहीं देंगे क्योंकि दिव्य न्याय इसकी अनुमति नहीं देगा।

153

हे ईश्वर की सेविका! इस युग में, ईश्वर के प्रति उसकी उदारताओं के लिए आभार प्रकट करना एक प्रकाशमय हृदय धारण करने और चेतना की प्रेरणाओं के प्रति आत्मा को ग्रहणशील बनाए रखने में निहित है। यही आभार का सारांश है।

जहाँ तक मौखिक या लिखित रूप से धन्यवाद अर्पित करने का प्रश्न है, हालाँकि यह सचमुच स्वीकार्य है किन्तु आभार प्रकट करने की उपरोक्त विधि की तुलना में यह कमतर और अवास्तविक है, क्योंकि आवश्यक बात है चेतना का अंतरंग होना, हृदय की गहराइयों से आभार प्रकट होना। मेरी आशा है कि तुम्हें यह कृपा प्राप्त होगी।

जहाँ तक किसी में क्षमता का अभाव होने और ’पुनरुत्थान के दिन’ उसके अयोग्य होने का सवाल है, इससे किसी व्यक्ति के लिए अनुदानों और उपहारों के द्वार बंद नहीं किए जाते, क्योंकि यह ’न्याय का दिन’ नहीं बल्कि ’करुणा का दिवस’ है जबकि न्याय का अर्थ है व्यक्ति को वह देना जिसका वह पात्र है। अतः तू अपनी क्षमता का स्तर न देख बल्कि बहाउल्लाह की असीम कृपाओं पर दृष्टि डाल, उनकी उदारता सबको समेट लेने वाली है और उनकी कृपा परम है।

मैं ईश्वर से याचना करता हूं कि उसकी सहायता और शक्ति से तू प्रवाहपूर्ण वाणी, बोध-सम्पन्नता, शक्ति और कुशलता के साथ ’टोराह’ के आंतरिक अर्थों की शिक्षा दे सके। अपना मुखड़ा ईश्वर के साम्राज्य की ओर केन्द्रित कर, ’पवित्र चेतना’ के अनुदानों की याचना कर, बोल, और ’चेतना’ की सम्पुष्टि तुझे अवश्‍य प्राप्त होगी।

जहाँ तक उस शक्तिशाली सौरवृत्त की बात है जिसे तूने स्वप्न में देखा, वह ’प्रतिज्ञापित अवतार’ थे और उसकी फैलती हुई किरणें उनकी कृपाएँ थीं और अपार जल से भरे हुए जलाशयों की पारदर्शी सतह शुद्ध एवं दोषरहित हृदयों की सूचक है, जबकि उठती हुई तरंगें उन हृदयों की महान उत्कंठा और इस तथ्य की परिचायक हैं कि वे उद्वेलित और भाव-संवलित हुए थे, अर्थात वे तरंगें चेतना की हलचल और आत्मा की पवित्र प्रेरणाएँ हैं। तू ईश्वर का गुणगान कर कि स्वप्न-लोक में तूने ऐसे प्रकटीकरण देखे।

किसी व्यक्ति द्वारा अपने ’स्व’ को पूरी तरह भुला देने का क्या अर्थ है इस संदर्भ के विषय में: इसका आशय यह है कि उसे सच्चे अर्थ में त्याग करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए अर्थात उसे मानवीय दशा के आवेगों को मिटा देना चाहिए और ऐसे लक्षणों से मुक्त हो जाना चाहिए हो निंदनीय हैं और जो धरती पर के इस जीवन के घोर अधकार के अंश हैं - यह नहीं कि उसे अपने शारीरिक स्वास्थ्य को खराब कर लेना चाहिए और अपने शरीर को दुर्बल।

मैं पवित्र दहलीज पर विनम्रता और उत्कंठा से अभ्यर्थना करता हूं कि तुम्हारी माँ और तुम्हारी प्यारी बहनों एवं सम्बन्धियों को स्वर्गिक आशीर्वाद एवं दिव्य क्षमा प्राप्त हो। मैं विशेष रूप से तुम्हारे मंगेतर की ओर से प्रार्थना करता हूँ जो अचानक इस लोक से दिवंगत हो चुका है।

154

हे तू प्रभु-साम्राज्य के पुत्र! अत्यंत ही सुखद शैली में लिखे गए तुम्हारे मनोहर पत्रों से हमारे हृदय आनन्दित हुए। जब कोई गीत ’साम्राज्य’ का होता है तो उससे आत्मा प्रफुल्लित होती है।

तू ईश्वर का गुणगान कर कि ’उसकी’ वाणी के उत्थान और ’उसके’ साम्राज्य की पवित्र सुरभि का दूर-दूर तक प्रसार करने के उद्देश्य से तूने उस देश[[50]](#footnote-50) की यात्रा की है और तू स्वर्ग की वाटिका में एक माली के रूप में अपनी सेवा दे रहा है। बहुत ही जल्द तुम्हारे प्रयास सफलता से सुशोभित होंगे।

हे तू ईश्वरीय साम्राज्य के पुत्र! सभी वस्तुएँ लाभदायक हैं बशर्ते कि उनमें ईश्वर का प्रेम शामिल हो, और उसके प्रेम के बिना सभी वस्तुएँ हानिकारक हैं और वे मनुष्य तथा उस ’साम्राज्य’ के स्वामी के बीच एक पर्दा बन जाती हैं। किन्तु जब उसका प्रेम विद्यमान होता है तो हर कटुता मधुरता में बदल जाती है और हर कृपा से प्राकृतिक आनन्द की प्राप्ति होती है। उदाहरण के लिए, कोई भी कर्णप्रिय माधुर्य ईश्वर के प्रेम में पगे हुए हृदय में जीवन की विशुद्ध चेतना की अनुभूति उत्पन्न करता है जबकि ऐन्द्रिक सुखों में लिप्त व्यक्ति में वह लालसा की मलिनता भर देता है और ज्ञान की वह हर शाखा जो ईश्वर के प्रेम से जुड़ी हुई है, स्वीकार्य एवं प्रशंसा के योग्य है, लेकिन उसके प्रेम से वियुक्त होकर ज्ञान बंजर बन जाता है - बल्कि वह उन्माद उत्पन्न करने वाला है। हर प्रकार का ज्ञान, हर विज्ञान, एक पेड़ की तरह है: यदि उसका फल ईश्वर का प्रेम है तो वह एक आशीर्वादित वृक्ष है, किन्तु यदि ऐसा नहीं तो वह बस एक सूखी हुई लकड़ी है जिससे केवल आग सुलगाई जा सकती है।

हे तू ईश्वर के वफादार सेवक और हे तू मानवों के आध्यात्मिक आरोग्यदाता! जब कभी तुम किसी रोगी को देखो तो अपना मुखड़ा स्वर्गिक साम्राज्य के प्रभु की ओर उन्मुख करो, पवित्र चेतना से सहायता की याचना करो और तब उस बीमारी को स्वस्थ करो।

155

हे तू ईश्वर की प्रेमाग्नि! तुमने जो लिखा है उससे अपार आनन्द प्राप्त हुआ, क्योंकि तुम्हारा पत्र एक फुलबगिया जैसा था जिससे आंतरिक अर्थों के गुलाबों ने दूर-दूर तक ईश्वर के प्रेम की मधुर सांसों का प्रसार कर दिया। इसी तरह से, मेरे उत्तर वर्षा की फुहारों और ओस की बूंदों की तरह कारगर होंगे जिनसे तेरे हृदय के उद्यान में पुष्पित इन आध्यात्मिक पौधों को उससे भी अधिक ताजगी एवं लालित्यपूर्ण सौन्दर्य प्राप्त होगा जितना कि शब्दों द्वारा वर्णन किया जा सकता है।

तुमने उन पीड़ादायी परीक्षाओं के बारे में लिखा है जिनसे तुम घिरी हुई हो। निष्ठावान आत्मा के लिए, परीक्षा की घड़ी ईश्वर की कृपा और करुणा से कम कुछ भी नहीं, क्योंकि जो बहादुर होते हैं वे कष्ट की भूमि में प्रचंड युद्ध की ओर प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ते हैं जबकि कायर, डर से छिपते हुए, कांप और हिल जाते हैं। इसी तरह, कोई निपुण छात्र जिसने बड़ी ही क्षमता के साथ अपने विषयों में महारत हासिल की है और उन्हें अच्छी तरह याद कर लिया है, वह परीक्षा के दिन अपने परीक्षकों के समक्ष प्रसन्नतापूर्वक अपनी कुशलता का प्रदर्शन करेगा। और इसी तरह, विशुद्ध सोना परख करने वाले की आग से निकल कर विलक्षण रूप से अपनी चमक दिखाएगा।

अतः, यह स्पष्ट है कि पवित्र आत्माओं के लिए संकट और परीक्षाएँ ईश्वर की कृपा और करुणा के स्वरूप हैं जबकि दुर्बल लोगों के लिए वे अनपेक्षित और आकस्मिक मुसीबतें हैं।

जैसा कि तुमने लिखा है, ये परीक्षाएँ हृदय के दर्पण से स्वार्थ के दाग-धब्बों को साफ करती हैं - तब तक जब तक कि ’सत्य का सूर्य’ उनपर अपनी किरणें नहीं बिखेर सकता, क्योंकि स्वार्थ से बड़ा अवरोधक कोई पर्दा नहीं है और वह पर्दा चाहे कितना ही झीना क्यों न हो, अंततः वह व्यक्ति को पूरी तरह अवरोधित कर देगा और उसे अनन्त कृपा के उसके अंश से वंचित कर देगा।

हे प्रभु की आनन्द-मग्न सेविका! जब धर्मानुयायी, स्त्री और पुरुष, मेरे विचार के नेत्रों से गुजरते हैं तो मैं ईश्वर के प्रेम की अग्नि से स्वयं में एक गर्माहट महसूस करता हूँ, और मैं प्रार्थना करता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमात्मा इन पवित्र आत्माओं को अपने अदृश्य समूहों के माध्यम से सहायता देंगे। प्रभु की स्तुति हो कि इस सर्वाधिक महान, पवित्र एवं आशीर्वादित युग में उसके सभी प्रकटावतारों की भविष्यवाणियाँ अब स्पष्ट रूप से पूरी हो गई हैं।

हे परमात्मा की आनन्दित सेविका! निकटता वस्तुतः आत्मा की होती है न कि शरीर की और जिस सहायता की याचना की जाती है और जो सहायता आती है वह भौतिक न होकर आध्यात्मिक होती है। तथापि मेरी यह आशा है कि तुम हर दृष्टि से निकटता प्राप्त करोगी। ईश्वर की कृपाएँ किसी पवित्र आत्मा को वैसे ही आच्छादित करेगी जैसे सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा और तारों के प्रकाश को आच्छादित करता है। तू इस विषय में आश्वस्त रह।

तू सभी धर्मानुयायियों पर, स्त्रियों और पुरुषों पर समान रूप से, अब्दुल बहा की ओर से पावनता के सौरभमय उच्छवास प्रवाहित कर। उन सबको प्रेरित कर और प्रोत्साहित कर कि वे देश-विदेश में प्रभु की मोहक सुरभि का प्रसार करें।

156

हे तू पवित्र दहलीज के सेवक! ईश्वर के प्रति तुम्हारे प्रेम से प्रेरित तुम्हारी लेखनी से जो भी प्रवाहित हुआ है उसे हमने पढ़ा है और तुम्हारे पत्र की विषय-वस्तु हमें बहुत ही आनन्ददायक लगी। मेरी आशा है कि ईश्वर की कृपा से, उस सर्वदयालु के उच्छ्वास हमेशा तुम्हें नवीनता और ताजगी प्रदान करते रहेंगे।

तुमने पुनर्जन्म के बारे में लिखा है। पुनर्जन्म में विश्वास एक ऐसी चीज है जो प्रायः सभी राष्ट्रों के प्राचीन इतिहास में पाई जाती है और यूनान के दार्शनिकों, रोमन संतों, प्राचीन मिस्रवासियों और महान असीरियनों द्वारा भी उसका समर्थन किया गया है। लेकिन ऐसे अंधविश्वास और ऐसी बातें ईश्वर की दृष्टि में अनर्गल हैं।

पुनर्जन्म में विश्वास करने वालों की एक बड़ी दलील यह थी कि ईश्वर के न्याय के अनुसार हर किसी को अपना फल चखना होगा: उदाहरण के लिए, जब मनुष्य किसी संकट में पड़ जाता है तो ऐसा उसके द्वारा किए गए किसी गलत कर्म के कारण है। लेकिन ऐसे बच्चे का उदाहरण लें जो अभी माँ के गर्भ में ही है, उसका भ्रूण एक नया भ्रूण है, और वह बच्चा अंधा है, लंगड़ा है, दोषपूर्ण है - आखिर ऐसे बच्चे ने कौन सा पाप किया है कि उसे ऐसे कष्ट का पात्र होना पड़ा? उनका उत्तर यह होता है कि हालाँकि बाहरी तौर से देखने पर उस शिशु ने, जो अभी गर्भ में ही है, कोई पाप नहीं किया है - लेकिन अपने पिछले जन्म में उसने कुछ गलत किया था और इसलिए उसे इस दंड का भागी होना पड़ा।

लेकिन इन लोगों ने निम्नांकित तथ्य की अवहेलना की है। यदि सृष्टि का विकास एक ही नियम से हुआ है तो सबको आच्छादित करने वाली उस ’शक्ति’ ने स्वयं को महसूस किया जा सकना कैसे सम्भव बनाया? फिर सर्वशक्तिमान परमेश्वर वह कैसे हो सकता है जो “जैसा चाहता है करता है और जैसी उसकी इच्छा होती है वैसा निर्धारित करता है”?[[51]](#footnote-51)

संक्षेप में कहें तो पवित्र ग्रन्थों में वास्तव में वापस लौटने का उल्लेख किया गया है किन्तु इसका आशय गुणों, अवस्थाओं, प्रभावों, पूर्णताओं और प्रत्येक परिस्थिति विशेष में आवर्तित होने वाले प्रकाशों के आंतरिक यथार्थों से है। यह संदर्भ विशिष्ट, वैयक्तिक आत्माओं या पहचान के बारे में नहीं है।

उदाहरण के लिए, यह कहा जा सकता है कि इस लैम्प की रोशनी पिछली रात की रोशनी की वापसी है, या यह कि इस साल बगीचे में पिछले साल का गुलाब लौट आया है। यह संदर्भ व्यक्तिगत यथार्थ, निर्धारित पहचान, उस दूसरे गुलाब के विशिष्ट अस्तित्व के बारे में नहीं है, बल्कि इसका यह अर्थ है कि उस दूसरे प्रकाश, उस दूसरे फूल के विशिष्ट लक्षण अब इस प्रकाश या इस फूल में विद्यमान हैं। वे पूर्णताएँ, अर्थात, उस पिछली बसन्त ऋतु की वही भव्यता, वही उपहार, इस साल फिर से लौट आए हैं। उदाहरण के लिए, हम कहते हैं कि यह फल पिछले साल जैसा ही है, लेकिन हम केवल लालित्य, बहार और ताजगी और उसकी मधुरता के बारे में सोच रहे होते हैं, क्योंकि यह स्पष्ट है कि यथार्थ के उस अभेद्य केन्द्र, उस विशिष्ट पहचान, की कभी वापसी नहीं हो सकती।

इस अधोलोक में अपने प्रवास के दौरान ईश्वर के ’पवित्र जनों’ को कभी कौन-सी शांति, आराम और तसल्ली प्राप्त हो सकी थी कि वे वापस लौटने और बार-बार यह जिन्दगी जीने की कामना करें? क्या इन पीड़ाओं, कष्टों, शारीरिक प्रहारों, इन घोर आपदाओं को एक ही बार झेल लेना पर्याप्त नहीं है कि वे इस संसार के जीवन में बार-बार आने की इच्छा करें? यह प्याला कोई इतना मधुर नहीं था कि कोई इसे दोबारा पीना चाहे।

इसलिए, आभा सौन्दर्य के प्रेमी इसके सिवा और किसी भी पुरस्कार की कामना नहीं करते कि वे उस पद को प्राप्त करें जहाँ वे गरिमा के लोक में ’उसके’ मुखड़े को निहार सकें, और उन ऊंचाइयों तक पहुँचने की उत्कंठा के रेगिस्तान पर चलने के सिवा वे अन्य किसी भी पथ पर विचरण नहीं करते। वे ऐसी शांति और सांत्वना चाहते हैं जो शाश्वत हो, और ऐसे अनुदान जो सांसारिक मस्तिष्क की समझ से परे, पावन हैं।

जब तुम बोधपूर्ण नेत्र से देखोगे तो यह गौर करोगे कि इस धूल भरी धरती पर हर कोई कष्ट भोग रहा है। यहाँ कोई भी व्यक्ति अपने पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों की पुरस्कृति के रूप में चैन से नहीं है और न ही कोई इतना आनन्दित है कि वह विगत कष्ट का फल प्राप्त करता हुआ दिखे। और यदि मानव जीवन, अपने आध्यात्मिक अस्तित्व के साथ, इस धरती के विस्तार तक ही सीमित होता तो इस सृष्टि का फल ही क्या होता? वस्तुतः, स्वयं ’दिव्यता’ के क्या परिणाम और प्रभाव होते? यदि ऐसी अवधारणा सच होती तो सभी रचित वस्तुएँ, सभी आश्रित यथार्थ और अस्तित्व का यह पूरा संसार ही अर्थहीन हो जाता। ईश्वर न करे कि कोई ऐसी दंतकथा और घोर त्रुटि में विश्वास करे।

ठीक वैसे ही जैसे गर्भाशय के जीवन के परिणाम और फल उस अंधकारमय, संकीर्ण स्थान में नहीं पाए जाते बल्कि जब वह शिशु इस व्यापक धरती पर स्थानांतरित होता है तभी उस पूर्व लोक के विकास और उसकी वृद्धि के लाभ और उपयोग उजागर होते हैं वैसे ही पुरस्कार और दण्ड, स्वर्ग और नरक, इस वर्तमान जीवन में किए गए कार्यों के दण्ड और उससे मुक्ति उस अन्य लोक में प्रकटित होंगे। और जैसे यदि गर्भ में मनुष्य का जीवन उसी गर्भलोक तक सीमित होता तो वहाँ उसके अस्तित्व का कोई अर्थ या प्रासंगिकता ही नहीं होती उसी तरह यदि इस लोक का जीवन, यहाँ किए गए कर्म और उनके फल, यदि उस अन्य लोक में फलीभूत न हों तो यह समस्त प्रक्रिया ही तर्कहीन और मूर्खतापूर्ण हो जाएगी।

अतः तू यह जान कि प्रभु परमेश्वर के पास अनेक अगोचर लोक हैं जिनकी थाह पाने की आशा मानव-बुद्धि कभी नहीं कर सकती और न ही मनुष्य का मस्तिष्क उन्हें समझ ही सकता है। जब तुम अपने आध्यात्मिक बोध का माध्यम इस सांसारिक जीवन की कलुषताओं से निर्मल कर लोगे तभी तुम पावनता की उन सुरभियों का उच्छवास ले सकोगे जो उस स्वर्गिक भूमि की आनन्दित वाटिकाओं से प्रवाहित होती हैं।

वह गरिमा जिसे परमेश्वर ने उन लोगों की समझ से परे, पावन बनाया है जो ’उसके’ प्रति लापरवाह हैं और जिसे उसने उन लोगों से छुपा कर रखा है जो ’उसके’ प्रति अभिमान दर्शाते हैं, तुझ पर विराजे और उन सब पर जो ’सर्व-गरिमामय’ के साम्राज्य की ओर उन्मुख होते और उसपर दृष्टि डालते हैं।

157

हे तुम लोग जो अत्यंत आकर्षित हो! हे तुम लोग जो विचारवान हो! हे तुम लोग जो ईश्वर के साम्राज्य की ओर प्रगतिशील हो! वस्तुतः, मैं अपने सम्पूर्ण हृदय और आत्मा से और समग्र विनम्रता के साथ प्रभु परमेश्वर से विनती करता हूं कि वे तुम सबको मार्गदर्शन की ध्वजाएं, सच्चरित्रता की पताकाएँ, बोध और ज्ञान के स्रोत बनाएं ताकि तेरे माध्यम से वे साधकों को सीधे मार्ग की ओर ले जा सकें और इस परम शक्तिशाली युग में सत्य के प्रशस्त पथ पर उनका नेतृत्व कर सकें।

हे ईश्वर के प्रियजनों! तू यह जान कि यह दुनिया बालू पर उभरती मरीचिका की तरह है जिसे प्यासे लोग भूल से पानी समझ बैठते हैं। इस संसार की मदिरा रेगिस्तान पर के भाप की तरह है, इसकी दया और करुणा केवल संघर्ष और मुसीबत है, इसके द्वारा प्रदान की जाने वाली विश्रान्ति केवल दुःख और थकान है। इसे उन्हीं लोगों के लिए छोड़ दे जिनके लिए यह है और अपने मुखड़ों को अपने प्रभु, उस सर्व-करुणामय की ओर उन्मुख कर ताकि तुम्हारे मस्तिष्कों को आकर्षित करने और तुम्हारी आत्माओं को निर्मल बनाने और तुम्हारी आँखों को चैन देने के लिए उसकी करुणा और कृपा तुझपर अपनी उदीयमान आभाएँ बिखेर सके और तेरे लिए एक स्वर्गिक मेज भेजी जा सके, और तुम्हारा प्रभु तुम्हें आशीर्वाद दे, और तुम्हारे वक्षों को आनन्दित करने तुझपर अपने वैभव की वर्षा कर सके और तुम्हारे हृदय में आनन्द से भर दे।

हे ईश्वर के प्रियजनों! क्या ईश्वर के सिवा और कोई दाता है? अपनी दया के लिए वह जिसे चाहता चुनता है। बहुत ही जल्द वह तुम्हारे समक्ष अपने ज्ञान के द्वारों को खोल देगा और तुम्हारे हृदयों को अपने प्रेम से आप्लावित कर देगा। अपनी पावनता की मृदुल बयारों से वह तुम्हारी आत्माओं को प्रफुल्लित करेगा और अपनी ज्योतियों की आभाओं से तुम्हारे मुखड़ों को प्रदीप्त कर देगा और सभी लोगों के बीच तुम्हारे स्मरण को उदात्त बनाएगा। तुम्हारा प्रभु सचमुच करुणावान है, दयालु है।

अपने अदृश्य समूहों के साथ वह तुम्हारी सहायता के लिए आएगा और उच्च लोक के समूहों में से प्रेरणा की सेनाओं के साथ तुम्हें सहारा देगा, उच्चतम स्वर्ग से वह तेरे पास मोहक सुरभियाँ भेजेगा और तेरे ऊपर उच्च लोक के सहचरों की गुलाब-वाटिकाओं से प्रवाहित होने वाली सांसों का संचार करेगा। तुम्हारे हृदयों में वह जीवन की चेतना की सांस फूंकेगा, तुम्हें मुक्ति की ’नौका’ में प्रवेश देगा और तुम्हारे समक्ष अपने स्पष्ट चिह्नों और संकेतों को प्रकट करेगा। यह वस्तुतः अपार कृपा है। वस्तुतः यह ऐसी विजय है जिससे कोई इन्कार नहीं कर सकता।

158

मेरे प्रिय ब्रेकवेल के निधन से तू शोक-संतप्त न हो क्योंकि वह आभा-स्वर्ग में आभाओं की गुलाब-वाटिका में जाग उठा है, अपने सामर्थ्‍यमय स्वामी की करुणा के आश्रय में है और अपनी उच्च आवाज से वह पुकार रहा हैः “आह कि मेरे लोग यह जान पाते कि मेरे स्वामी ने कितनी उदारतापूर्वक मुझे क्षमा किया है और मुझे उन लोगों में से बनाया है जो ’उसका’ सान्निध्य प्राप्त कर चुके हैं।“[[52]](#footnote-52)

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

तुम्हारा सुन्दर मुखड़ा अब किधर है? कहाँ है तुम्हारी प्रवाहपूर्ण वाणी? तुम्हारा वह स्पष्ट ललाट किधर है? परमात्मा को अर्पित तेरे गुणगान किधर हैं?

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

ईश्वर के प्रेम से प्रदीप्त तेरी अग्नि कहाँ है? ’उसके’ पावन उच्छवासों पर तेरी आनन्द-विह्वलता कहाँ है? परमात्मा को अर्पित तेरी स्तुतियाँ कहाँ हैं? उसके धर्म के लिए तेरा उठ खड़ा होना कहाँ है?

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

कहाँ हैं तुम्हारे सुन्दर नेत्र? तेरे मुस्कुराते अधर? तेरे राजसी गाल? तेरा भव्य स्वरूप?

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

तुमने यह भौतिक संसार छोड़ दिया है और प्रभु-साम्राज्य तक उठ गए हो, तुम अदृश्य लोक की भव्यता तक पहुंच गए हो और तुमने स्वयं को उस लोक के स्वामी की दहलीज पर अर्पित कर दिया है।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

तुमने अपने शरीर रूपी प्रदीप को त्याग दिया है, उस शीशे को जो तेरा मानवीय रूप था, जो तेरे पार्थिव तत्व थे, जो इस अधोलोक के जीवन का मार्ग था।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

तुमने उच्च लोक के सहचरों के प्रदीप के भीतर एक शिखा प्रज्ज्वलित की है, तुमने आभा-स्वर्ग में अपने कदम रखे हैं, तुमने ’आशीर्वादित वृक्ष’ की छाया तले अपना आश्रय पाया है, तुमने स्वर्गों के स्वर्ग में ’उसका’ सत्संग प्राप्त किया है।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

अब तुम ’स्वर्ग’ के एक पंछी हो, तुमने अपने पार्थिव घोंसले को त्याग दिया है और अपने प्रभु के साम्राज्य में पावनता के उद्यान की ओर उड़ान भरी है। तुम एक ऐसे पद तक उठ गए हो जो प्रकाश से भरा हुआ है।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

तुम्हारा गीत अब एक पक्षी के कलरव के तरह है, तुम अपने प्रभु की करुणा के श्लोक के गायन में निमग्न हो, वह जो कि सदा क्षमा देता है। तुम एक आभार भरे सेवक थे, तभी तो तुम इस अतिशय आनन्द को प्राप्त हुए हो।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

सत्य ही, तुम्हारे प्रभु ने अपनी स्नेह-भावना के कारण तेरा चयन किया है और तुझे अपनी पावनता के परिसरों का मार्ग दिखाया है, तुम्हें अपने अंतरंग सहचरों की वाटिका में प्रवेश दिलाया है और तुम्हें अपने सौन्दर्य को निहारने का आशीर्वाद प्रदान किया है।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

तुमने अनन्त जीवन प्राप्त किया है, ऐसी उदारता प्राप्त की है जो कभी चूकती नहीं, एक ऐसा जीवन पाया है जो तुझे अत्यंत प्रिय होगा, और प्रचुर कृपा प्राप्त की है।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

तुम अलौकिक आकाश के एक सितारे, उच्च स्वर्ग के देवदूतों के बीच एक प्रदीप, परम उदात्त ’साम्राज्य’ में एक जीवन्त चेतना बन गए हो और अनन्तता के सिंहासन पर जा विराजे हो।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

मैं ईश्वर से याचना करता हूं कि तुम्हें अपने और निकट लाए, और दृढ़ता से तुम्हें थाम लें, अपनी उपस्थिति की निकटता से तुम्हारे हृदय को प्रफुल्लित करें, तुम्हें प्रकाश तथा और अधिक प्रकाश से भर दें, तुम्हें और अधिक सौन्दर्य प्रदान करें और तुम्हें शक्ति और महान गरिमा से सुसज्जित करें।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

मैं हर समय तुम्हें याद करता हूँ। मैं तुझे कभी भूलूंगा नहीं। मैं रात-दिन तुम्हारे लिए प्रार्थना करता हूँ, मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से अपनी आँखों के सामने देखता हूं, जैसे कि दिन के प्रकाश में।

हे ब्रेकवेल, हे मेरे प्रिय!

159

जहाँ तक तुम्हारा यह प्रश्न है, क्या बिना किसी अपवाद के हर आत्मा को अनन्त जीवन प्राप्त होगा? तू यह जान कि अमरता उन आत्माओं को प्राप्त है जिनमें ईश्वर की ओर से जीवन की चेतना फूंक दी गई है। उनके सिवा अन्य सभी निष्प्राण हैं - वे मस्त हैं, जैसा कि ईसामसीह ने भी ’गॉस्पेल’ के पाठ में बताया है। वे जिनके नेत्र ईश्वर ने खोल दिए हैं वे लोगों की आत्माओं को ऐसी अवस्थाओं में देखेंगे जो इस शरीर से विमुक्त होने के बाद वे प्राप्त करेंगे। वे जीवित जनों को अपने प्रभु के परिसर में जीवन्त देखेंगे और मस्तकों को नरक की निम्नतम गहराइयों में पड़े हुए।

तू यह जान कि हर आत्मा की रूप-रचना ईश्वर की प्रकृति के अनुसार की गई है और उनमें से प्रत्येक जन्म के समय शुद्ध और पवित्र है। लेकिन बाद में, इस संसार के पापों या पुण्यों से उनकी संलिप्तता के अनुसार व्यक्तियों में भिन्नता आ जाती है। हालाँकि अपने प्राकृतिक रूप में सभी रचित जीवों को क्षमताओं की विविधता के कारण अलग-अलग पद या स्थान प्रदान किए गए हैं किन्तु हर व्यक्ति जन्म के समय शुद्ध और पवित्र होता है और मलिनता तो बाद में ही उत्पन्न होती है।

और फिर, हालाँकि जीवों के स्तर भिन्न-भिन्न हैं किन्तु सभी अच्छे हैं। मानव शरीर पर ध्यान दो, उसके अंगों, अवयवों, उसकी आँख, उसके कान, गंध और स्वाद के इन्द्रियों, हाथों, नाखूनों आदि पर गौर करो। इन सभी अंगों में भिन्नता होने के बावजूद, इनमें से प्रत्येक अपनी सीमा में एक संसक्त समग्र के रूप में अपनी भूमिका निभाता है। यदि उनमें से कोई भी विफल हो जाए तो उसका स्वस्थ होना आवश्यक होता है और यदि कोई उपचार न हो तो उस अंग को हटा देना जरूरी हो जाता है।

160

हे तू ईश्वर की निष्ठावान और वफादार सेविका! मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा है। तुम सचमुच ईश्वरीय साम्राज्य के प्रति आसक्त हो और ’सर्व-गरिमामय क्षितिज’ के प्रति समर्पित। मैं ईश्वर से उसकी उदारता के नाम पर याचना करता हूं कि वह दिन-प्रतिदिन तुझे अपने प्रेम की अग्नि में और अधिक प्रखरता से प्रदीप्त होने में सहायता दे।

ऐसा लगता है कि तुम इस संशय में पड़ी थी कि लिखना चाहिए या प्रभुधर्म की शिक्षा देनी चाहिए। प्रभुधर्म की शिक्षा देना आवश्यक है और वर्तमान समय में तुम्हारे लिए शिक्षण ज्यादा बेहतर होगा। जब कभी तुम्हें अवसर प्राप्त हो, अपनी वाणी को मुक्त करो और मानवजाति का मार्गदर्शन करो।

तुमने ज्ञान-प्राप्ति के बारे में प्रश्न किया है: तू ईश्वर के ग्रंथों और पातियों को पढ़ और इस धर्म के सत्य को झलकाने वाले लेखों को। उनमें ’इकान’ भी शामिल है जिसका अंग्रेजी में अनुवाद हो चुका है और मिर्जा अबुल-फजल की कृतियों को, तथा धर्मानुयायियों में से ही ऐसे अन्य लोग की रचनाओं को। आने वाले दिनों में और भी भारी संख्या में पवित्र पातियों और पवित्र लेखों के अनुवाद किए जाएंगे और तुम्हें उनको भी पढ़ना चाहिए। इसी तरह, तू ईश्वर से यह प्रार्थना कर कि उनके प्रेम का चुम्बक तुम्हारे पास ’उसके’ ज्ञान को खींच लाए। जब कोई आत्मा सभी वस्तुओं में पवित्र, शुद्ध और निष्कलंक हो जाती है तो उसकी आँखों के सामने ईश्वर के ज्ञान के द्वार उन्मुक्त खोल दिए जाएंगे।

तुमने ईश्वर की प्रिय सेविका श्रीमती गुडॉल के बारे में लिखा है। वह ईश्वर से आह्लादित आत्मा सचमुच हर समय प्रभुधर्म की सेवा में निरत है, और स्वर्गिक आभाओं का दूर-दूर तक प्रसार करने के लिए वह हरसम्भव प्रयास कर रही है। यदि वह इस मार्ग पर चलती रही तो आने वाले समय में बड़े परिणाम परिलक्षित होंगे। मुख्य बात है आस्थावान और अडिग बने रहना और अंत तक प्रयास करते रहना। मेरी आशा है कि प्रभु की सेविकाओं के महान प्रयासों से वे उपत्यकाएँ और उस महासागर[[53]](#footnote-53) का तट ईश्वर के प्रेम से ऐसा प्रज्ज्वलित हो उठेंगे कि वे धरती के ओर-छोर तक अपनी किरणें बिखेरने लगेंगे।

तुमने यह पूछा है कि ईश्वर के साम्राज्य के अवतरण के साथ हर आत्मा की रक्षा हुई है अथवा नहीं। ’सत्य का सूर्य’ अपनी आभा के साथ समस्त विश्व पर जगमगा उठा है और उसका ज्योतिर्मय होकर उदित होना मानव की मुक्ति और उसका अनन्त जीवन है - लेकिन सिर्फ वही रक्षित है जिसने अपनी समझ के नेत्रों को व्यापक रूप से खोल लिया है और उस गरिमा को निहारा है।

इसी तरह, तुमने यह पूछा है कि क्या इस बहाई धर्मयुग में अंततः वह जो आध्यात्मिक है विजयी होगा या नहीं। यह सुनिश्चित है कि आध्यात्मिकता भौतिकवाद को पराजित कर देगी और यह कि दिव्य शिक्षा के माध्यम से सामान्य रूप से मानवजाति जीवन के सभी क्षेत्रों में अपार प्रगति करेगी - सिवाय उन लोगों के जो अंधे, बहरे, गूंगे और मृतप्राय हैं। ऐसे लोग भला प्रकाश को कैसे समझ सकेंगे? हालाँकि सूर्य की किरणें धरती के अंधकारतम कोनों को भी प्रकाशित करती हैं किन्तु जो अंधे हैं उन्हें उस गरिमा का कोई अंशदान प्राप्त नहीं हो सकता, और हालाँकि स्वर्गिक करुणा की वर्षा पूरी धरती पर घोर रूप से बरसती है किन्तु बंजर धरती पर उगने वाले फूल और पौधे कभी लहलहा नहीं सकेंगे।

 161

हे तू जिसे स्वर्गिक साम्राज्य की तलाश है! यह संसार मनुष्य के शरीर की तरह है, और ईश्वरीय साम्राज्य जीवन की आत्मा की भाँति है। देखो कि मनुष्य के शरीर का भौतिक विश्व कितना अंधकारमय और संकीर्ण है और कैसे वह व्याधियों और बीमारियों का शिकार है। दूसरी ओर, मानव की आत्मा का लोक कितना प्रखर और ताजगी भरा है। इस दृष्टांत से तू यह निर्णय कर कि ’साम्राज्य’ का लोक किस तरह से नीचे प्रकाशित हुआ है और किस तरह उसके नियम-कानून इस नीचे के जगत में क्रियाशील किए गए हैं। हालाँकि आत्मा दिखाई नहीं पड़ती लेकिन फिर भी उसकी आज्ञाएँ मानव शरीर के लोक पर प्रकाश की किरणों की तरह अपनी चमक बिखेरती हैं। इसी तरह, हालाँकि स्वर्ग का साम्राज्य इन बुद्धिहीन लोगों की दृष्टि से ओझल है, लेकिन जो आंतरिक दृष्टि से देखता है, यह दिन की तरह स्पष्ट है।

अतः तू सदा उसी ’साम्राज्य’ में निवास कर और इस निम्न लोक को भुला दे। तू आत्मा की उद्भावनाओं में इस तरह निमग्न हो जा कि मनुष्य के लोक में कुछ भी तुझे उससे विकर्शित न कर सके।

162

हे तू अब्दुल बहा के प्रिय मित्रो! मुझे हर समय तुम्हारे शुभ समाचार की प्रतीक्षा रहती है और मैं यह सुनने को उत्कंठित रहता हूं कि तुम सब दिनो-दिन प्रगति कर रहे हो और मार्गदर्शन के प्रकाश से सदा ज्यादा से ज्यादा प्रकाशित होते जा रहे हो।

बहाउल्लाह के आशीर्वाद तटरहित महासागर की तरह हैं और अनन्त जीवन भी उसका एक ओसकण मात्र है। उस महासागर की तरंगें मित्रों के हृदयों से निरंतर टकरा रही हैं और उन तरंगों से चेतना के स्फुरण और आत्मा की उत्कंठ धड़कनें आती रहती हैं, तब तक जब तक कि हृदय समर्पित नहीं हो जाता और चाहे-अनचाहे ’साम्राज्य के प्रभु’ की प्रार्थना की ओर सविनय उन्मुख नहीं हो जाता। इसलिए तुम सब तो बस यही कर सकते हो कि अपने आंतरिक ’स्व’ से स्वयं को मुक्त कर लो ताकि तुम हर क्षण ’सत्य के सूर्य’ की नई आभाएं प्रतिबिम्बित कर सको।

तुम सब अब्दुल बहा के हृदय में निवास करते हो और प्रत्येक सांस के साथ मैं अपना मुखड़ा एकता की दहलीज की ओर उन्मुख करता हूँ और तुममें से प्रत्येक के लिए आशीर्वाद मांगता हूँ।

163

हे सत्य के तुम दोनों साधक! तुम्हारे पत्र प्राप्त हुए और उसकी विषयवस्तु पर ध्यान दिया गया। जहाँ तक तुम्हारे द्वारा पहले भेजे गए पत्रों का प्रश्न है, वे सभी प्राप्त नहीं हुए हैं, जबकि कुछ पत्र यहाँ ऐसे समय में मिले जबकि अन्यायियों की निर्दयता इतनी बढ़ चुकी थी कि उत्तर दे पाना सम्भव नहीं था। अब तुम्हारा वर्तमान पत्र यहाँ पर है और हम इसका उत्तर दे पाने में समर्थ हुए हैं। और अत्यंत व्यस्तता के बावजूद मैं इसका उत्तर लिखने को तत्पर हुआ हूँ ताकि तुम दोनों यह जान सको कि तुम हमारे प्रियजनों में से हो और तुम्हें ’प्रभु-साम्राज्य’ में स्वीकार भी किया गया है।

तथापि तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में ही दिया जा सकता है क्योंकि विस्तृत उत्तर के लिए समय नहीं है। पहले प्रश्न का उत्तर: शरीर से वियुक्त हो जाने के बाद, ’साम्राज्य’ के बच्चों की आत्माएँ अनन्त जीवन के लोक की ओर उठ जाती हैं। लेकिन यदि तुम लोग स्थान के बारे में पूछो तो जान लो कि अस्तित्व का संसार एक ही विश्व है हालाँकि उसके दर्जे विभिन्न और विशिष्ट हैं। उदाहरण के लिए, जड़ जगत की अपनी अलग धरातल है, लेकिन उस जड़ अस्तित्व को वनस्पति साम्राज्य के बारे में कुछ भी पता नहीं है और वह वस्तुतः, अपनी आंतरिक जिह्वा से, ऐसे किसी साम्राज्य के होने से इन्कार करता है। इसी तरह, वनस्पति जगत को जंतु जगत के बारे में कोई ज्ञान नहीं है, वह उसके प्रति बिल्कुल ही असावधान और ज्ञानरहित है, क्योंकि जंतु का स्थान पेड़-पौधों से ऊँचा है, और जीव जगत पेड़-पौधों से ओझल है और वे आंतरिक रूप से उस जगत के अस्तित्व से इन्कार करते हैं। किन्तु इसके बावजूद, जीव-जंतु, वनस्पति और जड़ पदार्थ एक ही संसार में साथ-साथ रहते हैं। ठीक इसी तरह से, जीव-जंतु मानव मस्तिष्क की उस शक्ति से बिल्कुल ही अनभिज्ञ हैं जो विश्व भर के विचारों को आत्मसात कर लेती है और सृष्टि के रहस्यों को खोलकर रख देती है - इस तरह कि पूर्व में रहने वाला कोई इन्सान पश्चिम के लिए योजनाएँ बना सकता है, रहस्यों को खोल सकता है, यूरोपीय महाद्वीप में रहते हुए भी अमेरिका का अन्वेषण कर सकता है, धरती पर स्थित होते हुए भी आकाश के नक्षत्रों के आंतरिक यथार्थों को खोल सकता है। जीव जगत मानव मस्तिष्क की इस अन्वेषणात्मक शक्ति से, उस शक्ति से जो सूक्ष्म एवं विश्वव्यापी विचारों को हृदयंगम कर सकती है, बिल्कुल ही अनभिज्ञ रहता है और वस्तुतः उसके अस्तित्व से ही इन्कार करता है।

इसी तरह से, धरती के निवासी ’साम्राज्य’ के संसार से बिल्कुल ही अनभिज्ञ हैं और उसके अस्तित्व से इन्कार करते हैं। उदाहरण के लिए वे यह पूछते हैं कि “कहाँ है वह साम्राज्य? कहाँ है उस साम्राज्य का प्रभु?” ये लोग जड़ पदार्थों और पेड़-पौधों की तरह हैं जिन्हें जीव-जंतुओं और मनुष्य के लोक के बारे में कुछ भी पता नहीं है, वे न उन्हें देख पाते हैं न उसकी तलाश कर पाते हैं। लेकिन फिर भी जड़ पदार्थ और पेड़-पौधे, जीव-जंतु और मनुष्य अस्तित्व के इसी एक लोक में साथ-साथ विद्यमान हैं।

जहाँ तक दूसरे प्रश्न का सवाल हैः ईश्वर द्वारा दिए गए संकट और उसकी परीक्षाएँ इसी लोक में हैं, ’प्रभु-साम्राज्य’ के लोक में नहीं।

तीसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि उस परलोक में मानव का यथार्थ कोई भी भौतिक स्वरूप ग्रहण नहीं करता, बल्कि वह स्वर्गिक रूप प्राप्त करता है जो कि उस स्वर्गिक लोक के तत्वों से बना होता है।

और चौथे प्रश्न के उत्तर के रूप में: ’सत्य के सूर्य’ का केंद्र अलौकिक लोक में है - ईश्वर के साम्राज्य में। जो आत्माएँ पवित्र और पावन हैं उनके तात्विक ढांचों का विलय हो जाने के बाद वे ईश्वर के लोक की ओर प्रयाण कर जाते हैं, और वह लोक इसी लोक के भीतर है। लेकिने इस लोक के लोग उस लोक से अनभिज्ञ हैं, और जड़ पदार्थों एवं पेड़-पौधों की तरह हैं जिन्हें जीव-जगत और मानव-जगत के बारे में कुछ भी पता नहीं है।

पांचवें प्रश्न का उत्तर यह हैः बहाउल्लाह ने मानवजाति की एकता का वितान तान दिया है। जो कोई भी इस वितान तले शरण की कामना करता है, वह निश्चित रूप से अन्य सभी निवास-स्थलों से निकल आएगा।

और जहाँ तक छठे प्रश्न की बात हैः यदि किसी एक बिंदु या अन्य पर, दो विरोधाभासी समूहों में कोई विभेद प्रकट होता है तो उन्हें उस समस्या के समाधान के लिए ’संविदा के केन्द्र’ का संदर्भ ग्रहण करना चाहिए।

और सातवें प्रश्न के सम्बन्ध में: बहाउल्लाह का प्रकटीकरण समस्त मानवजाति के लिए किया गया है और उन्होंने सभी को ईश्वर की मेज पर, दिव्य कृपा के भोज में, आमंत्रित किया है। लेकिन आज उस मेज के पास बैठने वाले ज्यादातर लोग गरीब हैं और इसीलिए ईसामसीह ने कहा था कि धन्य हैं वे जो गरीब हैं, क्योंकि अमीरी अमीर व्यक्ति को प्रभु-साम्राज्य में प्रवेश करने से रोक देती है।[[54]](#footnote-54) और उन्होंने पुनः कहा है, ”अमीर व्यक्ति के ईश्वर के साम्राज्य में प्रवेश कर पाने की तुलना में ऊँट का सुई की छेद से निकल जाना सरल है। किन्तु यदि इस संसार की धन-दौलत, सांसारिक चमक-दमक और शोहरत, उसमें उसके प्रवेश को बाधित न कर सकें तो ऐसे अमीर व्यक्ति को पवित्र दहलीज पर कृपा प्राप्त होगी और ’साम्राज्य का स्वामी’ उसे स्वीकार करेगा।

संक्षेप में, बहाउल्लाह दुनिया के सभी लोगों को शिक्षित बनाने के लिए प्रकट हुए हैं। वे पूरे विश्व के शिक्षक हैं, चाहे वे अमीर हों या गरीब, वे काले हों या गोरे, वे पूर्व के हों या पश्चिम के, उत्तर या दक्षिण के।

अक्का की यात्रा पर आने वालों में से कुछ ने आगे बढ़कर काफी कुछ प्रयास किया है। वे प्रकाशहीन मोमबत्ती थे, उन्हें जला दिया गया। वे मुरझाए हुए थे, वे खिलने लगे। वे मृतप्राय थे उन्हें नवजीवन दिया गया और वे अपार आनन्द के समाचारों के साथ अपने घर लौटे। जबकि अन्य लोग यहां से केवल गुजरे, उन्होंने केवल भ्रमण किया।

हे तुम दोनों जो ’साम्राज्य’ की ओर अत्यधिक आकर्षित हो, तुम दोनों ईश्वर को धन्यवाद दो कि तुमने अपने घर को एक बहाई केन्द्र और मित्रों के लिए एक सम्मिलन-स्थल बनाया है।

164

हे तुम दोनों निष्ठावान और आश्वस्त जनो, तुम्हारा पत्र मिला। परमेश्वर की स्तुति हो कि यह शुभ समाचारों से भरा था। कैलिफोर्निया ईश्वर की शिक्षाओं की घोषणा के लिए तत्पर है। मुझे आशा है कि तुम दोनों पूरे मन-प्राण से प्रयास करोगी कि मधुर सुरभि नासा-रध्रों में भर जाए:

श्रीमती चेज को मेरा आदरपूर्ण अभिवादन सुनाते हुए कहना: “श्रीमान चेज सत्य के क्षितिज के ऊपर झिलमिलाते हुए एक सितारे हैं, लेकिन अभी यह सितारा बादलों की ओट में है। शीघ्र ही ये बादल छँट जाएँगे और उस तारे की दीप्ति पूरे कैलिफोर्निया राज्य को जगमगा कर रख देगी। तुम इस उदार कृपा की सराहना करो कि तुम उनकी पत्नी और जीवन-संगिनी बनी हो।“

प्रत्येक वर्ष उस आशीर्वादित आत्मा के निधन की बरसी[[55]](#footnote-55) पर मित्रों को उनकी समाधि पर अवश्य जाना चाहिए और अत्यंत दीनता एवं विनम्रता से समग्र आदर-भावना के साथ उनकी समाधि पर माल्यार्पण करना चाहिए और पूरा दिन शांतिपूर्वक प्रार्थना में बिताना चाहिए, और अपने मुखड़ों को ’संकेतों के साम्राज्य’ की ओर उन्मुख करना चाहिए, तथा उस स्मरणीय व्यक्तित्व के गुणों का उल्लेख और उसकी प्रशंसा करनी चाहिए।

165

हे मेरे ईश्वर! मेरे परमेश्वर! सत्य ही तुम्हारे इस सेवक ने, तेरी दिव्य सर्वोच्चता की गरिमा के सम्मुख विनीत, तेरी एकता के द्वार पर दीनतापूर्वक खड़ा, तुझमें और तेरे श्लोकों में अपनी आस्था रखी है, तेरी वाणी को प्रमाणित किया है, तेरे प्रेम की अग्नि से प्रदीप्त हुआ है, तेरे ज्ञान के महासागर की गहराइयों में निमग्न हुआ है, तेरी मृदुल बयारों की ओर आकर्षित हुआ है, तुझ पर निर्भर हुआ है, अपने मुखड़े को तेरी ओर उन्मुख किया है, तेरे प्रति अपनी विनम्र प्रार्थनाएँ अर्पित की हैं, और तेरी क्षमाशीलता का आश्वासन प्राप्त किया है। उसने यह भौतिक जीवन त्याग दिया है और तुझसे मिलन की कृपा की उत्कंठा लिए, अमरता के साम्राज्य की ओर उड़ चला है।

हे प्रभो, उसके पद को गरिमामय बना, उसे अपनी सर्वोच्च करुणा के शिविर में आश्रय प्रदान कर, उसे अपने गरिमामय स्वर्ग में प्रवेश करने दे, और अपनी महान गुलाब-वाटिका में उसके अस्तित्व को शाश्वत कर ताकि वह रहस्यों के लोक में प्रकाश के सागर में डुबकी ले सके।

तू सत्य ही परम उदार है, शक्तिशाली है, क्षमादाता है, प्रदाता है।

हे तू आश्वस्त जन, हे ईश्वर की सेविका! अपने सम्मानित पति के निधन पर शोक न कर। सत्य ही उसने शक्तिशाली ’सम्राट’ की उपस्थिति में, सत्य के आसन के पास, अपने प्रभु से मिलन को प्राप्त किया है। यह न सोच कि तूने उसे खो दिया है।

आवरण उठा दिया जाएगा और तू ’परमोच्च प्रांगण’ में उसके मुखड़े को प्रभासित देख सकोगी। जैसाकि उस उदात्त परमेश्वर ने कहा हैः “उसे हम निश्चित रूप से एक प्रफुल्लित जीवन की स्फूर्ति से भर देंगे।“ अतः सर्वाधिक महत्व इस प्रथम सृष्टि को नहीं दिया जाना चाहिए बल्कि भविष्य के जीवन को।

166

हे बहा के सेवक! ईश्वर के पथ पर आत्म-बलिदानी बनो और आभा-सौन्दर्य के प्रेम के आकाश की ओर उड़ान भरो क्योंकि प्रेम से अनुप्राणित कोई भी कार्य परिधि से केंद्र की ओर, अंतरिक्ष से ब्रह्माण्ड के ’दिवानक्षत्र’ की ओर, जाता है। शायद तुम्हें यह कठिन लगता है किन्तु मैं तुझसे कहता हूं कि ऐसा नहीं होगा, क्योंकि जब अनुप्रेरक और मार्गदर्शक शक्ति आकर्षण का दिव्य बल बन जाता है तो उसकी सहायता से समय और स्थान की सीमाओं को तेजी और आसानी से पार कर लेना सम्भव हो जाता है। बहा के लोगों पर महिमा विराजे!

167

 तुमने भाग्य, पूर्वनियति और इच्छा के बारे में सवाल किया है। भाग्य और पूर्वनियति की रचना वस्तुओं के यथार्थ में विद्यमान आवश्यक एवं अपरिहार्य सम्बन्धों से हुई है। सभी अस्तित्ववान वस्तुओं के यथार्थ में ये सम्बन्ध सृष्टि की शक्ति के माध्यम से डाले गए हैं और हर घटना इसी अनिवार्य सम्बन्ध का परिणाम है। उदाहरण के लिए, ईश्वर ने सूर्य और इस धरती के बीच एक सम्बन्ध स्थापित किया है कि सूर्य की किरणों से प्रकाश आना चाहिए और धरती को फसल उत्पन्न करना चाहिए। ये सम्बन्ध पूर्वनियति का निर्माण करते हैं और अस्तित्व के धरातल पर उनका प्रकट होना भाग्य है। इच्छा वह सक्रिय शक्ति है जो इन सम्बन्धों और घटनाओं को नियंत्रित करती है। भाग्य और पूर्वनियति की व्याख्या का यही प्रतीक है। ज्यादा विस्तृत व्याख्या के लिए मेरे पास अभी समय नहीं है। इसपर विचार करो, भाग्य, पूर्वनियति और इच्छा का यथार्थ प्रकट हो जाएगा।

168

 हे तू ’प्रभु-साम्राज्य’ की महिला! ईश्वर का धन्यवाद कर कि इस युग में, बहाउल्लाह के इस धर्मयुग में, तुम्हें जागृत किया गया है और तुम्हें ’सर्वसमूहों के स्वामी’ के प्रकटीकरण से अवगत कराया गया है। दुनिया के सभी लोग प्रकृति की कब्रों के नीचे दफन हैं, या वे सोए पड़े हैं, असावधान एवं अनभिज्ञ हैं। जैसाकि ईसामसीह ने कहा है, “मैं आ सकता हूं, तब जब तुम असावधान रहोगे। ’मानव-पुत्र’ का आगमन किसी घर में एक चोर के आगमन की तरह होगा जिससे वह घर का स्वामी बिल्कुल ही अनभिज्ञ रहेगा।“

 संक्षेप में, मेरी आशा यह है कि बहाउल्लाह की उदार कृपाओं से तुम दिन-प्रतिदिन प्रभु-साम्राज्य में उन्नत्ति करोगी, कि तुम एक स्वर्गिक देवदूत बनोगी, पवित्र चेतना की सांसों से सम्पुष्टि प्राप्त करोगी, और एक ऐसी संरचना तैयार करोगी जो सदा-सदा के लिए अडिग एवं सुदृढ़ बनी रहेगी....

 ये दिन बहुत ही बहुमूल्य हैं। इस वर्तमान अवसर को गंवाओ मत और एक ऐसा प्रदीप जलाओ जो कभी बुझ न सके और जो मानव-जगत को प्रकाशित करते हुए अनवरत रूप से अपना प्रकाश बिखेरता रहे!

169

 हे तू दो धैर्यवान आत्माएँ! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। उस प्रिय युवा की मृत्यु और तुमसे उसके बिछोह की बात सुनकर अत्यन्त दुःख और वेदना का अनुभव हुआ क्योंकि अत्यन्त नवयुवा अवस्था और यौवन के आरम्भ में ही वह स्वर्गिक निविड़ की ओर उड़ गया। लेकिन वह इस दुख भरी शरण-स्थली से मुक्त हो गया है और उसने ’प्रभु-साम्राज्य’ के अनन्त नीड़ की ओर अपना मुखड़ा कर लिया है और इस अंधकारमय एवं संकीर्ण संसार से मुक्ति पाकर वह प्रकाश के पावन लोक की ओर बढ़ चला है - इसी में हमारे हृदय की सांत्वना है।

 ऐसी हृदय-विदारक घटनाओं के पीछे अकाट्य दिव्य विवेक छिपा होता है। यह ऐसा ही है जैसेकि कोई दयालु माली किसी कोमल पौधे को परिसीमित स्थान से विस्तृत खुले क्षेत्र में जाकर रोप दे। इस तरह का स्थानांतरण न तो किसी मुरझाने का कारण होता है और न ही उस पौधे के घट जाने या उसके नष्ट होने का। नहीं, बल्कि इसके विपरीत इसके कारण वह पौधा बढ़ता एवं पल्लवित होता है, ताजगी एवं लालित्य प्राप्त करता है, हरा-भरा और फलवान बनता है। यह छिपा हुआ रहस्य माली को भली-भाँति ज्ञात है लेकिन जिन्हें इस कृपा के बारे में पता नहीं है वे यह मान लेते हैं कि माली ने क्रुद्ध होकर उस पौधे को उखाड़ डाला है। तथापि जिन्हें इस बात का ज्ञान है उनके समक्ष यह निगूढ़ तथ्य उजागर हो जाता है और इस पूर्वनियत निर्णय को कृपालुता समझा जाता है। इसलिए, निष्ठा के उस पंछी के आरोहण से दुःखी और खिन्न न हो, बल्कि सभी परिस्थितियों में उस युवा के लिए प्रार्थना करो, उसके लिए क्षमा-याचना करो और उसके पद को उन्नत बनाए जाने की अभ्यर्थना करो।

 मुझे आशा है कि तुम्हें अत्यधिक धैर्य, शांति और समर्पण-भाव की प्राप्ति होगी और मैं एकता की दहलीज पर क्षमा की याचना करते हुए अनुनय एवं प्रार्थना करता हूं। परमात्मा की असीम कृपाओं से मेरी यही आशा है कि निष्ठा के उद्यान के इस कपोत को अपनी शरण प्रदान करेगा और उसे ’सर्वोच्च प्रांगण’ की शाखा पर निवास प्रदान करेगा ताकि वह ’नामों और अलंकरणों के प्रभु’ की स्तुति और महिमा का उत्तम माधुर्य के साथ गान कर सके।

170

 हे प्रभु-साम्राज्य की साधिका! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। तुमने अपने ऊपर टूट पड़ी गम्भीर विपत्ति के बारे में लिखा है - अपने प्रिय पति की मृत्यु के बारे में। वह सम्मानित व्यक्ति इस संसार के तनाव और दबाव से इतना उत्पीड़ित था कि उसकी सबसे बड़ी इच्छा इससे मुक्ति पाने की थी। ऐसा ही है यह नाशवान संसारिक पीड़ाओं और कष्टों का आगार। लोग अज्ञान के कारण ही इससे जुड़े रहते हैं, क्योंकि किसी भी व्यक्ति को इस संसार में चैन नहीं मिल सकता, चाहे वह कोई सम्राट हो या अत्यंत दीन सामान्य व्यक्ति। यदि यह जीवन आज किसी को मधुरता का एक प्याला प्रदान करे तो कल उसे सैकड़ों कटुता से भरे प्याले मिलेंगे। ऐसी है इस दुनिया की हालत। अतः जो बुद्धिमान व्यक्ति है वह स्वयं को इस नाशवान जीवन से आसक्त नहीं करता और इस पर निर्भर नहीं होता। कुछ क्षणों में तो वह बड़ी उत्कंठा से मृत्यु की कामना करता है ताकि इस तरह वह इन दुःखों और उत्पीड़नों से मुक्त हो सके। इस तरह यह देखा जाता है कि कुछ लोग, वेदना के अत्यधिक दबाव में आकर, आत्महत्या कर बैठते हैं।

 जहाँ तक तुम्हारे पति की बात है, आश्वस्त रहो। वह क्षमाशीलता के महासिंधु में निमग्न होगा और कृपालुता एवं उदारता पाने का अधिकारी होगा। तू यह घोर प्रयास कर कि उसके बच्चे को बहाई प्रशिक्षण दे ताकि प्रौढ़ होने पर वह दयालु बन सके, प्रकाशित और स्वर्गिक बन सके।

171

हे तू ईश्वर की प्रिय सेविका, हालाँकि पुत्र का खो जाना सचमुच ही हृदय-विदारक और मनुष्य की सहनशक्ति की सीमा से परे होता है लेकिन जिसे ज्ञान और समझ है वह इस बात को लेकर आश्वस्त रहती है कि उसका बेटा खोया नहीं है बल्कि इस संसार से दूसरे संसार में चला गया है और दिव्य लोक में वह उसे प्राप्त कर लेगी। वह पुनर्मिलन अनन्त काल के लिए होगा जबकि इस दुनिया में बिछोह अवश्यंभावी है और उसके साथ जुड़ा है घोर दुःख।

स्तुति हो परमात्मा की कि तुझे धर्म के प्रति निष्ठा प्राप्त है, तूने अपना मुखड़ा अनन्त साम्राज्य की ओर उन्मुख किया है और तू एक स्वर्गिक लोक के अस्तित्व में विश्वास रखती है। अतः तू खिन्न न हो, तू म्लान न हो, आह न भर, न विलाप कर और रो मत, क्योंकि शोक और विलाप दिव्य लोक में उसकी आत्मा को बहुत ही प्रभावित करेंगे।

वह प्यारा बच्चा अगोचर लोक से तुझे पुकारते हुए कह रहा हैः “हे दयालु माँ, दिव्य विधाता का धन्यवाद हो कि मैं एक छोटे और अंधकारमय पिंजरे से मुक्त कर दिया गया हूं और, शस्य-भूमि के चिड़ियों की तरह, मैंने दिव्य लोक की ओर उड़ान भरी है - एक ऐसे लोक की ओर जो विस्तृत है, प्रकाशित है, जो सदा प्रफुल्ल और आनन्द से पूरित है। इसलिए, हे माँ, विलाप न कर और दुःख न हो, मैं बिछुड़ा हुआ नहीं हूँ, न ही मुझे नष्ट-विनष्ट किया गया है। मैंने केवल नाशवान चोले को त्याग दिया है और अपनी ध्वजा आध्यात्मिक लोक में उन्नत की है। इस बिछोह के बाद है अनन्त सहजीवन। प्रभु के उच्च लोक में तुम मुझे प्राप्त करोगी, प्रकाश के महासिंधु में निमग्न।“

172

ईश्वर का गुणगान हो कि तुम्हारा हृदय परमात्मा के स्मरण में निमग्न है, तुम्हारी आत्मा परमेश्वर के सुसमाचार से आह्लादित है और तुम प्रार्थना में मग्न हो। प्रार्थना की स्थिति सबसे उत्तम स्थिति है क्योंकि उस समय मनुष्य ईश्वर से जुड़ा होता है। वस्तुतः, प्रार्थना जीवन प्रदान करती है, खास तौर पर तब जब वह एकान्त में और ऐसे समय में अर्पित की जाती हो जब व्यक्ति अपनी दैनिक चिन्ताओं से मुक्त हो, जैसे अर्द्धरात्रि के समय।

173

वे लोग जो इस युग में दिव्य साम्राज्य में प्रवेश करते हैं और अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं वे हालाँकि भौतिक रूप से धरती पर निवास करते हैं किन्तु वास्तव में वे स्वर्गिक लोक में उड़ान भरते हैं। उनके शरीर धरती पर टिके हो सकते हैं लेकिन उनकी चेतना अंतरिक्ष की विषालता में यात्रा करती है। क्योंकि जब विचार व्यापक एवं प्रकाशित हो जाते हैं तो उन्हें उड़ान की शक्ति मिल जाती है और वे ईश्वर के साम्राज्य में पहुँच जाते हैं।

174

हे अब्दुल बहा के आध्यात्मिक साथियो! आपने जो पत्र लिखा है उसे पढ़ा गया। उसकी विषयवस्तु बहुत ही आनंददायक थी जिससे प्रभुधर्म में आपकी दृढ़ता एवं अडिगता परिलक्षित होती है।

वह आध्यात्मिक सभा सर्व कृपाओं के प्रभु की शरणदायिनी छाया तले स्थित है और मेरी आशा है कि, जैसाकि उस संस्था के उपयुक्त है, वह पवित्र चेतना के उच्छ्वासों से कृपा प्राप्त करेगी और स्फूर्तिमान बनेगी। उस दिन तुम सब ईश्वर से और अधिक प्रेम करोगे और उस चिर शाश्वत ’सौन्दर्य’ से, उसके प्रति जो विश्व का ’प्रकाश’ है और अधिक दृढ़ता से आसक्त होगे। ईश्वर के प्रति प्रेम और आध्यात्मिक आकर्षण के निमित्त, मानव-हृदय को निर्मल एवं पावन बनाओ और उसे पवित्रता का निष्कलंक परिधान पहनाओ और जैसे ही हृदय पूरी तरह प्रभु के प्रति आसक्त हो जाएगा, और ’आशीर्वादित पूर्णता’ से बंध जाएगा, तो परमात्मा की कृपा प्रकट होगी।

यह प्रेम कोई भौतिक प्रेम नहीं, बल्कि आत्मा का प्रेम है। और जिन आत्माओं का आंतरिक अस्तित्व ईश्वर के प्रेम के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है वे प्रकाश की फैलती हुई किरणों की तरह हो जाती हैं, और शुभ्र एवं निर्मल आकाश में वे पावनता के सितारों की चमक उठती हैं। क्योंकि सच्चा प्रेम, वास्तविक प्रेम, ईश्वर का प्रेम है और यह लोगों की अवधारणाओं और कल्पनाओं से परे, पावन है।

ईश्वर का प्रत्येक प्रेमी पवित्रता का सार-तत्व बन जाए, पावनता का प्राण बन जाए, ताकि हर देश में वे अपनी निर्मलता, मुक्त चेतना और विनीतता के लिए प्रसिद्ध हो जाएँ। वे ईश्वर के प्रति प्रेम के अनन्त प्याले की घूंट से आनंदित हों, और स्वर्ग के मदिरा-कोष से पान करके उत्फुल्ल हों। वे ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ को निहारें और उस मिलन की उष्मा और प्रफुल्लता का अनुभव करें, और आश्चर्य तथा विस्मय से भाव-विह्वल बनें। यही है निष्ठावानों का पद, यही है वफादारों की राह, यही है वह दीप्ति जो उनके मुखड़ों पर प्रभासित होती है जो परमात्मा के निकट हैं।

अतः ईश्वर के सखाओं को चाहिए कि वे अत्यधिक पावनता के साथ, एकमत होकर, एक-दूसरे के साथ एकता का भाव लिए हुए पूरे प्राण से इस तरह उठ खड़े हों कि वे एक अस्तित्व और एक आत्मा बन जाएँ। ऐसे धरातल पर भौतिक शरीर की कोई भूमिका नहीं होती, बल्कि चेतना का साम्राज्य होता है, और जब उसकी शक्ति सभी वस्तुओं को आच्छादित कर देती है तभी आध्यात्मिक एकता प्राप्त होती है। अपनी एकता को पूर्णतम रूप में प्राप्त करने के लिए तू रात-दिन प्रयास कर। तुम्हारे विचार तुम्हारे अपने आध्यात्मिक विकास पर केन्द्रित हों, और अन्य लोगों के दोषों के प्रति अपनी आँखें मूंद ले। शुद्ध एवं अच्छे कर्मों, विनय एवं नम्रता झलकाते हुए, तू इस तरह कार्य कर कि तू दूसरों को जागृत कर सके।

किसी भी व्यक्ति को आहत देखना अब्दुल बहा की कदापि इच्छा नहीं है और न ही वे किसी को दुःखी करेंगे, क्योंकि मनुष्य को इससे बेहतर कोई उपहार प्राप्त नहीं हो सकता कि वह दूसरे के हृदय को आनंदित करे। मैं ईश्वर से याचना करता हूं कि स्वर्ग के देवदूतों की तरह तू आनंद का संवाहक बने।

175

भौतिक आकर्षण समाप्त हो जाएगा, गुलाबों की जगह बच जाएँगे सिर्फ कांटे, और सुन्दरता एवं यौवन कुछ दिन रहकर विलीन हो जाएँगे। लेकिन वह जो कि सदा अविनाशी रहेगा वह है उस ’एकमेव सत्य का सौन्दर्य’, क्योंकि उसकी आभा कभी नष्ट नहीं होती और उसकी गरिमा सदा अक्षुण्ण रहती है। उसका सम्मोहन सर्वशक्तिशाली है और उसका आकर्षण असीम। अतः धन्य है वह मुखड़ा जो ’परम प्रियतम के प्रकाश’ की आभा प्रतिबिम्बित करता है! प्रभु का गुणगान हो, तुम इस आलोक से आलोकित हो, तुमने सच्चे ज्ञान का मोती प्राप्त किया है और तुमने ’सत्य की वाणी’ गुंजारित की है।

176

हे तू जो ईश्वरीय साम्राज्य की ओर आकर्षित है! हरेक को किसी न किसी वस्तु की तलाश है और हर किसी की कोई न कोई अभिलाषा है, और वह दिन-रात उस लक्ष्य को पाने के लिए प्रयासरत रहता है। किसी को धन की लालसा है तो कोई अन्य गौरव हासिल करने के लिए प्यासा है। अन्य किसी को नाम कमाने की इच्छा है अथवा कला, सुख-समृद्धि या ऐसी ही अन्य किसी वस्तु की। लेकिन अंततः हर किसी के लिए हताश और निराश होना ही बदा है। उनमें से हर कोई अपना सबकुछ अपने पीछे छोड़ जाता है और वे खाली हाथ परलोक सिधार जाते हैं। उनका सारा श्रम व्यर्थ जाता है। वे सब धूल में मिल जाएँगे, अपना सबकुछ खोकर, हताश और निराश होकर, घोर खिन्नता के साथ।

 लेकिन प्रभु की स्तुति हो, तुम एक ऐसे कार्य में निरत हो जो तुम्हारे लिए एक ऐसा लाभ सुनिश्चित करता है जो सदा अक्षुण्ण रहेगा। वह वस्तु कुछ और नहीं बल्कि ईश्वरीय साम्राज्य की ओर तुम्हारा आकर्षण है, तुम्हारी धर्मनिष्ठा है, तेरा ज्ञान है, तेरे हृदय का प्रज्ञावान होना है, और दिव्य शिक्षाओं को उन्नत करने का तुम्हारा उत्कट प्रयास है।

 निस्संदेह, यह एक अविनाशी उपहार है, यह उच्च लोक से प्राप्त सम्पदा का खजाना है।

177

 हे स्वर्गिक प्रेम की ज्वलंत लौ! तेरा हृदय परमात्मा के प्रेम से इतना प्रदीप्त है कि इसकी उष्मा और कांति का आभास हजारों मील दूर से भी हो सकता है। नाशवान हाथों से प्रदीप्त की गई अग्नि की रोशनी और उष्मा एक छोटे-से स्थान तक सीमित होती है, लेकिन जिस पावन लपट को परमात्मा के हाथ से प्रज्ज्वलित किया गया है वह यदि पूरब में भी जले तो वह पश्चिम को प्रदीप्त कर देगी और उत्तर-दक्षिण दोनों को अपनी उष्मा से भर देगी। नहीं, बल्कि वह इस संसार से भी ऊपर उठकर अत्यंत ताप भरी ज्वाला से प्रकाशित होकर उच्च लोक तक जाएगी और अनन्त गरिमा के साम्राज्य को भी अपने प्रखर आलोक से भर देगी।

 ऐसा स्वर्गिक उपहार पाकर तू धन्य है। धन्य है तू कि तुझे उस प्रभु के दिव्य अनुदानों की कृपा प्राप्त हुई है।

 ईश्वर की गरिमा तुझपर विराजे और उन सब पर जो उसकी इच्छा और उसकी पावन संविदा की मूठ को कसकर पकड़े हुए हैं।

178

 हे ईश्वर की सेविका! तुम्हारा 9 दिसंबर 1918 का पत्र प्राप्त हुआ। उसकी विषयवस्तु पढ़ी गई। ईश्वर पर से अपना विश्वास न उठने दो। हमेशा आशावान रहो क्योंकि मनुष्य के प्रति ईश्वर की कृपा का प्रवाह कभी रुकता नहीं। एक दृष्टि से देखने पर उसमें कमी प्रतीत होती है किन्तु दूसरी दृष्टि से वह परिपूर्ण होता है। हर परिस्थिति में, मनुष्य परमात्मा के आशीर्वादों के महासिंधु में निमग्न होता है। अतः तू कदापि हताश न हो, बल्कि अपनी आशा में अडिग रह।

 मित्रों के सम्मिलन में उपस्थित होना खासतौर पर इसलिए है कि उन्हें सजग, सावधान, स्नेहपूर्ण और दिव्य साम्राज्य के प्रति आकर्षित बनाया जा सके।

 यदि फिल्सबर्ग, मोंटाना, की यात्रा करने की तुम्हारे मन में पूर्ण और उत्कट अभिलाषा है तो तुम्हें इसकी अनुमति दी जाती है कि कदाचित तुम उन खनिकों (माइनर्स) के समूह के बीच एक प्रदीप जला सको और उन्हें जागृत एवं सावधान बना सको ताकि वे परमात्मा की ओर उन्मुख हो सकें और दिव्य साम्राज्य की कृपा से अपना अंशदान प्राप्त कर सकें।

179

 ’प्रभु-साम्राज्य’ की ओर उन्मुख होने का यथासम्भव प्रयास कर, ताकि तू अंतर्निहित साहस और आदर्श शक्ति प्राप्त कर सके।

180

 मुझे आशा है कि इस निम्न लोक में तुम्हें स्वर्गिक प्रकाश प्राप्त होगा, तुम आत्माओं को प्रकृति के अंधकार से मुक्त करोगी क्योंकि वह जंतु-साम्राज्य है और उन्हें मानव साम्राज्य में उच्च पदों तक पहुँचने में सहायता दोगी। आज सभी लोग प्रकृति-संसार में डूबे हुए हैं। इसीलिए तुम्हें ईर्ष्‍या, लोभ-लालच, अस्तित्व के संघर्ष, धोखेबाजी, क्रूरता, अत्याचार, विवाद, संघर्ष, रक्तपात, लूट-खसोट, इत्यादि देखने को मिल रहे हैं - वे सभी चीजें जो प्रकृति के संसार से उत्पन्न हैं। ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो इस अंधकार से मुक्त हो सके हैं, जो प्रकृति के जगत से उठकर मनुष्य के संसार तक आ पाए हैं, जिन्होंने दिव्य शिक्षाओं का अनुसरण किया है, जिन्होंने मानव लोक की सेवा की है, जो ज्योतिर्मय हैं, दयालु और प्रकाशित हैं और जो एक गुलाब-वाटिका की तरह हैं। घोर प्रयास कर कि तू देवता बन सके, ईश्वरीय गुणों से विभूषित हो सके, प्रकाशित और दयालु हो, ताकि तू सभी आसक्तियों से मुक्त हो सके और अपने हृदय से अनुपम प्रभु के साम्राज्य से जुड़ सके। यह एक बहाई कृपा है और यह स्वर्गिक प्रकाश है।

181

 जहाँ तक ’निगूढ़ वचन’ के इस कथन का प्रश्न है कि मनुष्य अपने स्व को त्याग दे, इसका अर्थ यह है कि वह अपनी अमर्यादित इच्छाओं, स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों और अपने मानवीय ’स्व’ के प्रलोभनों का त्याग कर दे और चेतना के पावन उच्छ्वासों को पाने का प्रयत्न करे और अपने उच्चतर ’स्व’ की इच्छाओं का अनुसरण करे और सर्व-गौरवमय के सौन्दर्य पर दृष्टि केन्द्रित किए हुए, स्वयं को त्याग के महासिंधु में निमज्जित कर ले।

 जहाँ तक ’निगूढ़ वचन’ में पारान पर्वत पर स्थापित की गई संविदा का सवाल है, यह इस बात का सूचक है कि परमात्मा की दृष्टि में अतीत, वर्तमान और भविष्य सब एक समान हैं जबकि मनुष्य की दृष्टि में अतीत वह है जो बीत चुका है, वर्तमान वह है जो अभी बीत रहा है और भविष्य आशा की परिधि में है। और ईश्वर के विधान का यह एक बुनियादी सिद्धान्त है कि प्रत्येक धर्मसंदेशवाहक के उद्देश्यकाल में वह सभी अनुयायियों के साथ एक संविदा स्थापित करता है - एक ऐसी संविदा जो उस धर्मकाल के अंत तक रहती है, उस प्रतिज्ञापित दिवस तक जब तक उस धर्मकाल के आरम्भ में नियत ’पुरुष’ को प्रकट नहीं किया जाता। मूसा के बारे में विचार करो जिन्होंने ईश्वर से वार्तालाप किया था। सत्य ही, सिनाय पर्वत पर मूसा ने मसीहा के बारे में उन सब लोगों के साथ एक संविदा स्थापित की जो मसीहा के काल में रहेंगे। और जहाँ तक संविदा का प्रश्न है जो कि समय से परे है, हालाँकि वे लोग मूसा के अवतरण के कई सदियों बाद सामने आए, किन्तु वे मूसा के साथ मौजूद थे। लेकिन यहूदी लोग इसके प्रति असावधान थे और उन्होंने इसे याद नहीं रखा, और इस कारण उन्हें स्पष्ट रूप से घोर नुकसान उठाना पड़ा।

अरबी ’निगूढ़ वचन’ के इस संदर्भ के विषय में कि मनुष्य को अपने आप से अनासक्त हो जाना चाहिए, यहाँ भी यही अर्थ है कि इस तेजी से चलायमान जीवन में उसे स्वयं अपने लिए किसी वस्तु की कामना नहीं करनी चाहिए, बल्कि अपने आत्म को उसे परे हटा देना चाहिए, अर्थात प्रभु के आगमन के समय उसे शहादत के पथ पर अपने स्व और अपनी समस्त चिंताओं का त्याग कर देना चाहिए।

182

हे तू संविदा और ईश्वरीय प्रमाण के प्रति अच्छी तरह आसक्त! इस युग में, सर्व-गौरवमय के लोकों से जहाँ गरिमा और स्तुति का प्रशस्ति-नाद उठता है, उच्च लोक के सहचर तुझपर अपनी दृष्टि केन्द्रित करते हैं। जब कभी उनकी दृष्टि उन लोगों के सम्मिलनों पर पड़ती है जो संविदा और प्रमाण में सुदृढ़ हैं तो वे यह पुकार उठते हैं, “शुभ समाचार, शुभ समाचार!” उसके बाद, आह्लादित होकर, वे अपनी आवाज बुलन्द करते हैं और पुकार उठते हैं, “हे तू आध्यात्मिक सम्मिलन! हे ईश्वर की सभा! धन्य हो तुम! शुभ समाचार प्राप्त हो तुझे! तेरे मुखड़े ज्योतिर्मय हों और तुम्हें आनन्द ही आनन्द मिले, क्योंकि तुम सभी लोकों के ’प्रियतम’ की संविदा से आसक्त हो, तुम उसके प्रमाण की मदिरा लिए प्रदीप्त हो। तुमने ’दिवसाधिक प्राचीन’ के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट की है, तुमने वफादारी के प्याले से छक कर पिया है। तुमने प्रभुधर्म की रक्षा और उसका बचाव किया है, तुम उसकी वाणी को विभक्त करने के कारण नहीं बने हो, तुमने उसके धर्म का शीश नहीं झुकाया है बल्कि उसके पावन नाम को महिमान्वित करने का प्रयास किया है, तुमने आशीर्वादित धर्म को लोगों के उपहास का पात्र नहीं होने दिया है। तुमने ’निर्धारित पद’ को झुकने नहीं दिया है और न ही तूने ’प्राधिकार के केंद्र’ की साख पर बट्टा लगाने या उसे उपहास अथवा यातना का पात्र बनने देने की इच्छा की है। तूने ’वाणी’ को एक और अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयास किया है। तुम दया के द्वारों से होकर गुजरे हो। तुमने ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ को बिसराया नहीं है, उसे विस्मृत नहीं होने दिया है।“

तुझ पर गरिमा विराजती है।

183

हे तू प्रभु-साम्राज्य की पुत्री! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। यह दिव्य बुलबुल के स्वर-माधुर्य की तरह था जिसका गान हृदयों को आनंदित कर देता है। ऐसा इसलिए कि उसकी विषयवस्तु से निष्ठा, आश्वस्ति एवं संविदा तथा ईश्वरीय प्रमाण में दृढ़ता परिलक्षित होती है। वर्तमान समय में अस्तित्व के संसार की गतिमान शक्ति संविदा की शक्ति है जो एक धमनी की तरह इस नाशवान संसार के शरीर में धड़कती है और बहाई एकता की रक्षा करती है।

बहाई लोगों को मानवजाति की एकता स्थापित करने के लिए कहा गया है, यदि वे एक बिंदु के चारों ओर एक नहीं हो सकते तो वे मानवजाति की एकता भला कैसे ला सकेंगे?

यह संविदा और प्रमाण स्थापित करने के पीछे ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ का उद्देश्य था अस्तित्व के सभी जीवों को एक बिंदु पर एकत्रित करना ताकि विचारहीन लोग, जो प्रत्येक धर्मयुग और हर पीढ़ी में विवाद के कारण रहे हैं, धर्म का अवमूल्यन न कर सकें। इसलिए उन्होंने यह आदेश दिया है कि ’संविदा के केंद्र’ से जो कुछ भी प्रकट होता है वह सही है और उसे ’उनका’ संरक्षण और उनकी कृपा प्राप्त है, जबकि अन्य सब कुछ त्रुटिपूर्ण है।

ईश्वर की स्तुति हो, तुम संविदा और ईश्वरीय प्रमाण में अडिग हो।

184

हे आशीर्वादित जनो! लॉस ऐंजेल्स में कुछ लोगों द्वारा मित्रों की आस्था को डिगा देने के बार-बार घोर प्रयास किए जाने के मद्देनजर, हालाँकि तुम लोग कठिन परीक्षा के दौर से गुजर रहे हो लेकिन फिर भी तुम बहाउल्लाह की उदारता की रक्षा भरी दृष्टि में हो और देवदूतों के सैन्य-समूह तुम्हारी सहायता कर रहे हैं।

अतः, सुनिश्चित कदमों से आगे बढ़ो और दिव्य सुरभियों के प्रसार, ईश्वरीय वचन को गौरवान्वित करने और संविदा में अडिग होने के कार्य में अत्यंत आश्वस्ति और आत्म-विश्वास के साथ जुट जाओ। तुम लोग आश्वस्त रहो कि यदि कोई व्यक्ति पूर्ण अध्यवसाय के साथ उठ खड़ा होगा और प्रभु-साम्राज्य की आवाज बुलन्द करेगा और दृढ़तापूर्वक संविदा का प्रसार करेगा तो भले ही वह मामूली चींटी ही क्यों न हो, उसे भयावह हाथी को भी मैदान से खदेड़ भगाने की क्षमता से भर दिया जाएगा, और यदि वह एक तुच्छ फतिंगा भी होगा तो भी वह रक्त-लोलुप गीध के पंखों को टुकड़े-टुकड़े करके रख देगा।

अतः प्रयास कर कि तू पवित्र शब्दों की शक्ति से संदेहों और भूलों की सेनाओं को तितर-बितर कर दे। यही मेरा प्रबोधन है और यही मेरा परामर्श है। किसी से भी लड़ो मत और हर तरह के विवाद से बचो। ईश्वर के शब्द का उच्चार करो। यदि वह व्यक्ति स्वीकार कर ले तो अपना चाहा हुआ मकसद पूरा हो गया और यदि वह विमुख हो जाए तो उसे उसी पर और ईश्वर के भरोसे छोड़ दे।

जो संविदा में सुदृढ़ है उनकी यही विशेषता है।

185

हे परमदयालु के मित्रो और सेविकाओ! लॉस ऐंजेल्स की आध्यात्मिक सभा से एक पत्र प्राप्त हुआ है। वह इस तथ्य की ओर संकेत करता था कि कैलिफोर्निया में आशीर्वादित धर्मानुयायी एक अडिग पर्वत की तरह हिंसा का झंझावात झेल रहे हैं और आशीर्वादित वृक्षों की भाँति उनकी जड़ें संविदा की मिट्टी में जमी हैं और वे अत्यंत अटल तथा दृढ़ हैं। अतः यह आशा की जाती है कि ’सत्य के सूर्य’ के आशीर्वादों से दिन-प्रतिदिन उनकी दृढ़ता और अडिगता बढ़ती जाएगी। प्रत्येक धर्मयुग की परीक्षा उस धर्म की महानता के प्रत्यक्ष अनुपात में होती है और चूँकि आज से पहले, ’सर्वोच्च लेखनी’ द्वारा लिखित, ऐसी प्रत्यक्ष संविदा कभी स्थापित नहीं की गई थी, इसलिए ये परीक्षाएँ आनुपातिक रूप से ज्यादा कठोर हैं। ये परीक्षाएँ दुर्बल आत्माओं को विचलित कर देती हैं लेकिन जो दृढ़ हैं वे उनसे प्रभावित नहीं होते। अत्याचारियों के ये सितम समुद्र की झाग से बढ़कर और कुछ नहीं हैं जो कि इसके अविभाज्य लक्षणों में से एक है। लेकिन संविदा का महासिंधु तरंगित होगा और वह मृतकों की काया को अपने तट पर छोड़ आएगा, क्योंकि वह उन्हें अपने पास नहीं रख सकता। इस तरह यह देखा जाता है कि संविदा का महासिंधु तब तक तरंगित होता है जब तक वह मृत देहों को - यानी उन आत्माओं को जो ईश्वरीय चेतना से वंचित हैं और जो स्वार्थ एवं लालसा में निमग्न हैं और नेतृत्व के लिए लालायित हैं - तट पर नहीं पटक आता। समुद्र का यह झाग ज्यादा देर टिकेगा नहीं और शीघ्र ही वह बिखरकर ओझल हो जाएगा जबकि संविदा का महासिंधु अनन्त रूप से तरंगित होता रहेगा, गर्जना करता रहेगा........

सृष्टि के आरम्भिक दिनों से लेकर अब तक, सभी दिव्य धर्मयुगों में, ऐसी सुदृढ़ और सुस्पष्ट संविदा कभी स्थापित नहीं की गई थी। इस तथ्य के मद्देनजर, क्या इस झाग के लिए यह सम्भव है कि वह संविदा के समुद्र की सतह पर बना रहे? नहीं, ईश्वर की सौगन्ध! ये उल्लंघनकर्ता लोग स्वयं अपनी ही प्रतिष्ठा दांव पर लगा रहे हैं, अपनी ही आधार-शिलाओं को नेस्तनाबूद कर रहे हैं और उन खुशामदपरस्त लोगों का समर्थन पाकर इतरा रहे हैं जो दुर्बल लोगों की निष्ठा को डिगाने की जुगत में भिड़े हुए हैं। लेकिन उनकी इन कारगुजारियों से कुछ भी सिद्ध होने वाला नहीं है। यह एक मरीचिका है, जल नहीं झाग है, समुद्र नहीं कुहासा है, कोई बादल नहीं भ्रम है, सच्चाई नहीं। यह सब तुम लोग शीघ्र ही देख लोगे।

 ईश्वर की स्तुति हो कि तुम सब अटल एवं सुदृढ़ हो। आभारी रहो कि आशीर्वादित वृक्षों की तरह तुम्हारी जड़ें संविदा की मिट्टी में दृढ़ता से जमी हुई हैं। यह सुनिश्चित है कि जो भी सुदृढ़ है वह विकसित होगा, नए फलों को उत्पन्न करेगा और उसकी ताजगी एवं कृपा में निरंतर वृद्धि होती रहेगी। बहाउल्लाह के सभी लेखों पर मनन करो, चाहे वे पत्र हों या प्रार्थनाएँ, और निश्चय ही तुम्हारे सामने ऐसे हजारों अनुच्छेद आएंगे जिनमें बहाउल्लाह की प्रार्थना है: “हे परमेश्वर! संविदा तोड़ने वालों को निष्फल कर दो और ईश्वरीय प्रमाण को प्रताड़ित करने वालों को पराजय का मुँह दिखाओ, और जो कोई भी उसमें अडिग तथा सुदृढ़ बना रहेगा, वह एकमेवता की दहलीज पर कृपा-प्राप्त जन है।“ ऐसी बातें और प्रार्थनाएँ ढेर सारी हैं, उनका अवलोकन करो और तुम जान जाओगे।

 कभी भी खिन्न मत हो। तुम हिंसा से जितने ही उन्मथित होगे, तुम्हारी दृढ़ता और अडिगता उतनी ही मजबूत होगी, और आश्वस्त हो जाओ कि दिव्य सेनाओं की विजय होगी क्योंकि वे आभा-साम्राज्य की विजय के प्रति आश्वस्त हैं। सभी क्षेत्रों में अडिगता और दृढ़ता की ध्वजाएँ ऊँची उठ रही हैं जबकि उल्लंघन का झंडा झुका जा रहा है, क्योंकि ऐसे दुर्बल लोग बहुत ही कम हैं जो चापलूसी और उन उल्लंघनकर्ताओं की भ्रामक दलीलों से प्रभावित हो जाते हों जो बाहरी तौरपर पूरी सावधानी से दृढ़ता झलका रहे हैं लेकिन बीतर ही भीतर लोगों को भड़काने में निरत हैं। भड़काने वालों के नेताओं में से कुछ ही ऐसे हैं जो बाहरी तौरपर उल्लंघन करने वालों के रूप में सामने आए हों। बाकी लोग, छुपे-रुस्तम तरीकों से, लोगों को छल रहे हैं, क्योंकि बाहरी तौर पर वे संविदा के प्रति अपनी दृढ़ता का दावा करते हैं लेकिन जब सुनने वाले लोग मिल जाते हैं तो वे चुपके से उनके कानों में विद्रोह के बीज बो देते हैं। उन सबका मामला जुडास एस्कारियेट और उसके अनुयायियों द्वारा किए गए संविदा-भंजन से मिलता-जुलता है। जरा विचार करो, क्या उनके बाद, उनका कोई नतीजा निकला या उनका नामो-निशान भी है? उसके अनुयायियों द्वारा कोई भी नाम नहीं छोड़ा गया है और हालाँकि कई यहूदी उसकी तरफदारी में आगे आए थे लेकिन उसका अनुयायी कोई नहीं रहा। धर्मदूतों में अग्रणी इस जुडास एस्कारियेट ने चांदी के तीस सिक्कों के बदले ईसा को छल दिया। सावधान, हे बोध-सम्पन्न लोगो!

वर्तमान समय में ये तुच्छ उल्लंघनकर्ता उस अपार धन-राशि के बदले में जिसकी याचना उन्होंने हर अप्रत्यक्ष तरीके से की है, ’संविदा के केंद्र’ के साथ अवश्य ही विश्वासघात करेंगे। बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के तीस वर्ष बीत चुके हैं, और उस समय भी इन अतिक्रामकों ने पूरी ताकत से प्रयास किया है। आखिर क्या मिला उन्हें? सभी परिस्थितियों में, वे लोग जो संविदा में अडिग रहे हैं, विजयी हुए हैं, जबकि अतिक्रामकों को पराजय, निराशा और तिरस्कार का सामना करना पड़ा है। अब्दुल बहा के निधन के बाद, उनका नामो-निशान भी नहीं रहेगा। ये लोग इस बात से अनजान हैं कि उनका क्या होने वाला है और उन्हें अपने मंसूबों पर घमण्ड है।

संक्षेप में, हे ईश्वर के सखाओ और उस दयावान की सेविकाओ! दिव्य कृपा के हाथों ने तुम्हारे मस्तक पर रत्न-जटित मुकुट रख दिए हैं जिसके बहुमूल्य रत्न अनन्त काल तक सभी भूभागों पर चमकते रहेंगे। इस उदारता की सराहना करो, स्तुति और आभार प्रकट करो, और दिव्य शिक्षाओं की घोषणा में जुट जाओ, क्योंकि यह जीवन की चेतना है और मुक्ति का साधन।

186

हे तू जो संविदा में सुदृढ़ है! तुम्हारे पास से लगातार तीन पत्र प्राप्त हुए हैं। उनकी विषयवस्तुओं से यह ज्ञात हुआ कि क्लीवलैंड में संविदा तोड़ने वालों की दूषित सांसों से हृदय खिन्न हैं और मित्रों के बीच सौहार्द में कमी आई है। भव्य परमात्मा! सैकड़ों बार यह बात कही गई कि अतिक्रामकों ने जाल बिछा रखा है और वे हर माध्यम से मित्रों के बीच मतभेद उत्पन्न करने पर उतारू हैं ताकि इस विभेद के बूते संविदा का उल्लंघन किया जा सके। तो फिर इस चेतावनी के बावजूद, मित्रों ने इस स्पष्ट कथन की अनदेखी कैसे कर दी?

मुद्दे की बात स्पष्ट, सीधी और संक्षिप्त है। बहाउल्लाह या तो बुद्धिमान एवं सर्वदर्शी थे और जानते थे कि क्या होने वाला है अथवा वे अनभिज्ञ और भूल में थे। अपनी सर्वोच्च लेखनी के माध्यम से, सभी बहाइयों के साथ - सर्वप्रथम अगसानों, फिर अफनानों और फिर अपने सगे-सम्बन्धियों के साथ - उन्होंने एक सुदृढ़ संविदा और वसीयत स्थापित की और उन्हें यह आदेश दिया कि वे उनकी आज्ञाओं का पालन करें और उनकी ओर उन्मुख हों। अपनी सर्वोच्च लेखनी से उन्होंने यह स्पष्ट घोषणा की थी कि ’किताब-ए-अकदस’ के निम्नांकित श्लोक में वर्णित व्यक्ति ’परम महान शाखा’ है:

“जब मेरी उपस्थिति का महासागर शांत हो जाए और मेरे ’प्रकटीकरण का ग्रंथ’ परिसमाप्त हो जाए तो अपने मुखड़ों को ’उसकी’ ओर उन्मुख करना जिसे ईश्वर ने इसी उद्देश्य के लिए रचा है और जो इस ’प्राचीन मूल’ से फूटी हुई शाखा है।“ संक्षेप में इसका अर्थ यह हैः कि मेरे निधन के बाद अगसानों, अफनानों और सगा-सम्बंधियों एवं ईश्वर के सभी मित्रों का यह कर्तव्य है कि वे ’प्राचीन मूल’ से फूटी हुई शाखा की ओर उन्मुख हों।

’किताब-ए-अकदस’ में वे यह भी स्पष्ट रूप से कहते हैं: “हे दुनिया के लोगो! जब ’रहस्यमय कपोत’ अपने ’गुणगान के अभयारण्य’ से उड़कर अपने सुदूर लक्ष्य, अपने प्रच्छन्न आवास को प्राप्त कर चुका होगा तब जो कुछ भी ’ग्रंथ’ में तुम्हें ज्ञात न हो सके उसके लिए तुम उसका निर्देश पाना जो इस शक्तिमान ’वृक्ष’ से शाखा बनकर फूटा है।“ दुनिया के लोगों को सम्बोधित करते हुए वे कहते हैं: जब ’रहस्यमय कपोत’ अपनी स्तुति-वाटिका से उड़ान भरकर अपने ’परम उच्च’ और ’अगोचर पद’ के लोक को चला जाए - अर्थात जब ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ इस नाशवान संसार से अदृश्य लोक की ओर उन्मुख हो जाएँ - तो जो कुछ भी ’ग्रंथ’ में तेरी समझ में न आए उसके लिए उससे निर्देश प्राप्त करो जो इस ’प्राचीन मूल’ से प्रशाखित हुआ है। अर्थात वह जो कहेगा वह सच होगा।

और ’संविदा की पुस्तक’ में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि इस श्लोक का केंद्र, वह “जो इस प्राचीन मूल से प्रशाखित हुआ है”, ’परम महान शाखा’ है। और उन्होंने सभी अगसानों, अफसानों, सगे-सम्बन्धियों और बहाइयों को यह आदेश दिया कि वे ’उसकी’ ओर उन्मुख हों। अब, या तो कोई यह कह सकता है कि ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ ने गलती की है, या उनकी आज्ञा का पालन होना चाहिए। लोगों के आज्ञा-पालन के लिए अब्दुल बहा के पास इसके सिवा और कोई आज्ञा नहीं है कि वे ईश्वर की सुरभियों का प्रसार करें, उसकी वाणी को उदात्त बनाएँ, मानव-जगत की एकता की घोषणा करें, विश्वशांति स्थापित करने का प्रयास करें और ऐसे ही ईश्वर की अन्य आज्ञाओं का पालन करें। ये दिव्य आज्ञाएँ हैं और ये अब्दुल बहा से सम्बन्धित नहीं हैं। जो कोई चाहे इन्हें स्वीकार करे और जो कोई इनसे इन्कार करना चाहे वह अपनी इच्छा का अनुसरण करे।

इन उपद्रवकारियों में से कुछ लोग, नाना प्रकार के तिकड़मों के माध्यम से, नेतृत्व पाने की चाहत रखते हैं और इस पद को पाने के लिए वे मित्रों के बीच संदेह के बीच बो रहे हैं ताकि वे मतभेद उत्पन्न कर सकें और इन मतभेदों के कारण वे अपना एक अलग खेमा बना सकें। लेकिन ईश्वर के मित्रों को सजग होना चाहिए और उन्हें यह जानना चाहिए कि इस तरह संदेह फैलाने के पीछे व्यक्तिगत लालसाएँ और नेतृत्व पाने की अभिलाषाएँ हैं।

बहाई एकता में फूट मत पड़ने दो और जान लो कि ईश्वर की संविदा में आस्था के बिना यह एकता बनाए नहीं रखी जा सकती।

तुम्हारे मन में यात्रा करने की अभिलाषा है ताकि तुम ईश्वर की सुरभियों का प्रसार कर सको। यह अत्यंत ही उपयुक्त है। निस्संदेह, दिव्य सम्पुष्टियाँ तुझे सहायता प्रदान करेंगी और संविदा एवं वसीयत की शक्ति तुम्हारी विजय सुनिश्चित करेगी।

187

हे तू जो संविदा में सुदृढ़ है! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। तुमने अधिवेशन (कन्वेंशन) के बारे में अपनी संतुष्टि प्रकट की है और कहा है कि यह सम्मिलन प्रभुधर्म के उन्नयन और ईश्वरीय वाणी की शक्ति को झलकाने का कारण बना। प्रभुधर्म की महानता इन विभेदों को समाप्त कर देगी और उसकी तुलना मानव-शरीर के स्वास्थ्य से की जा सकती है। जब स्वास्थ्य प्राप्त होता है तो सारी बीमारियाँ और कमजोरियाँ दूर हो जाती हैं। हमारी यह आशा है कि विरोध का लेश मात्र भी नहीं रहेगा, लेकिन अमेरिका में कुछ मित्र अपनी नई-नई महत्वाकांक्षाओं को लेकर अधीर हैं और चुपके-चुपके अथवा खुलेआम रूप से ऐसा कुछ देखना चाहते हैं जिससे मतभेद उत्पन्न हो सके।

 ईश्वर की स्तुति हो, बहाउल्लाह के धर्म में ऐसे सभी द्वार बंद हैं क्योंकि प्राधिकार के एक विशेष केंद्र की नियुक्ति कर दी गई है - एक ऐसे ’केंद्र’ की जो कठिनाइयों का निराकरण करता है और सभी मतभेदों को दूर कर देता है और जो कुछ भी उसके द्वारा प्रस्तावित है उसे स्वीकार किया जाना चाहिए और जो उसका उल्लंघन करता है उसे अस्वीकार कर दिया जाता है। लेकिन वह विश्व न्याय मन्दिर, जो कि विधानमण्डल है, उसकी स्थापना अभी नहीं की गई है।

 इस तरह यह देखा जाता है कि मतभेद का कोई भी कारण नहीं रहने दिया गया है, लेकिन भौतिक इच्छाएँ मतभेदों का कारण बनती हैं और संविदा तोड़ने वालों के साथ भी यही बात है। ये लोग संविदा की वैधता में कोई संदेह नहीं रखते लेकिन उनके स्वार्थपूर्ण इरादे उन्हें इस दिशा में घसीट लाए हैं। ऐसा नहीं कि उन्हें पता न हो कि वे क्या कर रहे हैं - उन्हें पूरी तरह ज्ञात है लेकिन फिर भी वे विरोध करते हैं।

 संक्षेप में, संविदा का महासिंधु विशाल और गर्जमान है। यह विरोध के झागों को किनारे पर रख आता है और इसलिए तुम आश्वस्त रहो। मशरिकुल-अज़कार के विकास के कार्य में संलग्न हो जाओ और दिव्य सुरभियों के प्रसार का साधन जुटाओ। इसके सिवा और किसी भी कार्य में मत जुटो, क्योंकि इससे तुम्हारा ध्यान बंटेगा और कार्य की प्रगति नहीं होगी।

188

 हे अब्दुल बहा के अत्यंत प्रियजनो! बहुत दिनों के बाद मेरे आंतरिक कानों को कुछ खास क्षेत्रों से माधुर्यपूर्ण संवाद प्राप्त हुए हैं, या मेरा हृदय आह्लादित हुआ है और यह सब कुछ इसके बावजूद कि तुम लोग सदा मेरे विचारों में रहे हो और मेरी दृष्टि के समक्ष स्पष्ट रूप से विद्यमान रहे हो। तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम की परिपूर्ण मदिरा से मेरा हृदय आप्लावित है और तुम्हें देख सकने की मेरी उत्कट अभिलाषा मेरी धमनियों से चेतना बनकर उमड़ रही है। इससे स्पष्ट है कि मेरा दुःख कितना बड़ा है। इस समय और विपदाओं की इस पूरी आंधी के दौरान जिसकी तरंगें आसमान छूने लगी हैं, चारों ओर से मुझ पर निर्ममतापूर्वक और निरंतर बरछियाँ फेंकी जा रही हैं, और इस पवित्र भूमि में हर क्षण डराबनी खबरें आ रही हैं और हर दिन एक आतंक मचा हुआ है। ’विद्रोह की धुरी’ ने यह सोचा था कि संविदा और वसीयत को अवनत और नेस्तनाबूद करने के लिए सिर्फ उसके अड़ियल विद्रोह से काम चल जाएगा। उसने सोचा कि इतने से ही धर्मपरायण लोग ’पवित्र इच्छापत्र’ से विमुख हो जाएंगे। इसलिए उसने दूर-दूर तक अपने संदेह की पुस्तिकाएँ भेजीं और नाना प्रकार के कुचक्र रचे। अब वह यह चिल्लाएगा कि ईश्वर का भवन ध्वस्त कर दिया गया और उसके दिव्य आदेश निरस्त हो चुके हैं। और इस तरह, संविदा और वसीयत भी विनष्ट हो गई। उसके बाद फिर वह यह आह भरता फिरेगा कि उसे कैदी बना लिया गया और उसे रात-दिन भूखा-प्यासा रखा गया। अगले दिन वह फिर कोलाहल मचाएगा, यह कहते हुए कि ईश्वर की एकता से इन्कार कर दिया गया है क्योंकि एक हजार वर्षों की परिसमाप्ति से पूर्व ही एक अन्य धर्म-प्रकटीकरण की घोषणा कर दी गई है।

 जब उसने यह देखा की उसकी निन्दाएँ बेअसर रहीं तो उसने क्रमशः लोगों को भड़काने की योजना बनाई। वह उपद्रव भड़काने लगा और उसने हर दरवाजे पर दस्तक दी। सरकारी अधिकारियों के सामने वह झूठे दोषारोपण लगाने लगा। वह कुछ विदेशियों से मिला, उनका अंतरंग बन गया और उनके साथ मिलकर उसने एक दस्तावेज तैयार किया और उसे सुल्तान के सामने प्रस्तुत किया जिससे अधिकारियों में खलबली मच गई। कलंकित कर देने वाले अनेक आरोपों में से एक यह था कि इस बदकिस्मत ने विद्रोह का झंडा बुलन्द किया था - वह झंडा जिस पर लिखा था ’या बहा-उल-आभा’ - और उसे लेकर गांव-गांव, शहर-शहर गया था, यहाँ तक कि रेगिस्तानी कबीलों तक और सभी निवासियों को इस झंडे तले एकत्रित होने का आह्वान सुनाया था।

 हे मेरे परमेश्वर! ऐसा करने का विचार मेरे मन में भी न आए, यही शरण चाहता हूं क्योंकि यह बहाउल्लाह की समस्त आज्ञाओं के प्रतिकूल है - एक ऐसा काम है जो सचमुच इतनी बड़ी गलती होगी कि जिसे घोर पापी के सिवा और कोई नहीं करेगा। क्योंकि, हे ईश्वर! तुमने हमें राजाओं और शासकों की आज्ञाओं का पालन करने का आदेश दिया है।

 उसके दूसरे मिथ्यारोपों में से एक यह था कि कार्मेल पर्वत पर बनी समाधि एक दुर्ग है जिसे मैंने बहुत ही मजबूत और अभेद्य बनाया है - वो भी तब जब उस निर्माणाधीन भवन में मात्र छः कमरे हैं - और मैंने उसे ’ज्योतिर्मय मदीना’ का नाम दिया था और पवित्र समाधि को ’महिमावान मक्का’[[56]](#footnote-56) के नाम से विभूषित किया था। उसके बाद भी उसकी निंदाओं में से एक यह भी था कि मैंने एक स्वतंत्र सम्प्रभुता स्थापित कर ली थी और यह कि - ईश्वर न करे! ईश्वर न करे! ईश्वर न करे! - कि मैंने सभी धर्मानुयायियों को इस घोर गलती में शामिल होने का आह्वान किया था। हे मेरे प्रभो! कितना घोर है यह अपमान!

उसके बाद भी वह यह दावा करता है कि चूँकि ’पवित्र समाधि’ दुनिया भर से आने वाले तीर्थयात्रियों का केंद्र बन गया था, इसलिए इससे सरकार और लोगों की घोर क्षति होगी। वह जो कि ’विद्रोह की धुरी’ है, यह कहता है कि इन तमाम बातों में उसका कोई हाथ नहीं है, कि वह सुन्नी लोगों का सुन्नी है और अबू-बकर तथा उमर का समर्पित अनुयायी है, और बहाउल्लाह को वह केवल एक पवित्र व्यक्ति एवं रहस्यवादी मानता है। उसका कहना है कि यह सारी कारगुजारी इस प्रवंचित व्यक्ति की है।

संक्षेप में, सुल्तान द्वारा एक जांच आयोग बैठाया गया। ईश्वर करे कि उसके साम्राज्य की गरिमा अक्षुण्ण हो! वह आयोग यहाँ की यात्रा पर आया और आते ही वह आरोपियों में से एक के घर गया। फिर उन्होंने उस समूह को बुलाया जिसने मेरे भाई के साथ मिलकर आरोपों का वह पुलिन्दा तैयार किया था और उनसे यह पूछा कि क्या उनमें कोई सच्चाई है। समूह ने अपने दस्तावेज की विषयवस्तुओं का खुलासा किया और कहा कि उन्होंने जो कुछ भी बताया था वह सत्य के सिवा और कुछ भी नहीं है और फिर उन्होंने कुछ और भी आरोप जड़े। इस तरह, एक ही समय में वे वादी भी थे, गवाह भी और न्यायाधीश भी।

आयोग अब खलीफा कार्यालय वापस लौट गया है, और उस शहर से हर दिन बड़ी भयावह खबरें आ रही हैं। किन्तु, ईश्वर का गुणगान हो, अब्दुल बहा शांत और अबाधित हैं। इस अवमानना के कारण मेरे मन में किसी के प्रति दुर्भावना नहीं है। मैंने अपने सभी मामलों को ’उसकी’ ही अदम्य इच्छा के अधीन कर दिया है और मैं, वस्तुतः अत्यन्त खुशी से, अपने प्राणों का बलिदान करने का इंतजार कर रहा हूं कि जो कुछ भी दुःखद कष्ट मेरे लिए बदा हो मैं उसके लिए तैयार बैठा हूँ। ईश्वर की स्तुति हो कि प्रिय धर्मानुयायी भी ईश्वर की इच्छा को स्वीकार करते हैं और उसके प्रति समर्पित हैं, उससे संतुष्ट हैं, हर्षित भाव से उन्हें वह मंजूर है और वे धन्यवाद अर्पित करते हैं।

’विद्रोह की धुरी’ ने यह सोच रखा था कि यदि एक बार मुझ प्रवंचित का रक्त बह गया, एक बार जैसे ही मुझे किसी रेगिस्तान में छोड़ आया गया या भूमध्यसागर में डुबा दिया गया - मेरा कोई नामो-निशान नहीं रह जाए, किसी को मेरा अता-पता न लगे - तो अंततः उसे एक ऐसा मैदान मिल जाएगा जहाँ वह अपना घोड़ा भगा सकेगा और अपने झूठ, अपने संदेहों के हथौड़े से वह अपनी महत्वाकांक्षा के पोलो बॉल को जोर से मारकर अपना पुरस्कार जीत ले जाएगा।

लेकिन हुआ इससे कहीं विपरीत! क्योंकि यदि निष्ठा की मधुर कस्तूरी-सुगन्ध न रहे और अपने पीछे अपना कोई निशान न छोड़ जाए तो भी विद्रोह की दुर्गन्ध के पीछे कौन दौड़ेगा? और यदि स्वर्ग की हिरण को कुत्ते और भेड़िए नोच कर भी खा जाएँ तो भी लोलुप भेड़िये के पीछे कौन भागेगा? यदि ’रहस्यमय कोकिल’ का दिन समाप्त भी हो जाए तो भी कर्कष कौए का कांव-कांव कौन सुनेगा? ऐसा मान लेना कितना खोखला होगा! ऐसी कल्पना भी कितनी मूर्खतापूर्ण है! “उनके कार्य रेगिस्तान में भाप की तरह हैं जिसे प्यासा पानी समझ लेता है, लेकिन जब वह उसके निकट आता है तो कुछ भी हाथ नहीं लगता!”[[57]](#footnote-57)

हे ईश्वर के प्रियजनो! अडिग बनो, तुम्हारा हृदय अविचलित हो, और ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ की सहायता की शक्ति से, तुम सब अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित रहो। ईश्वर के धर्म की सेवा करो। दुनिया के सभी लोगों का सामना तुम बहा के लोगों की स्थिरता और सहिष्णुता के साथ करो, ताकि सब लोग चकित रह जाएँ और पूछें कि ऐसा कैसे है कि तुम्हारे हृदय आत्म-विश्वास और निष्ठा के स्रोत हैं और ईश्वर के प्रेम से समृद्ध खान की तरह! तुम लोग ऐसे बन जाओ कि तुम पवित्र भूमि में घटित हो रही इन दुःखद घटनाओं के कारण कभी विफल या विचलित न हो, ये भयावह घटनाएँ तुम्हें निराश न कर दें। और यदि सभी धर्मानुयायियों को तलवार के घाट उतार दिया जाए और यदि एक ही बचा रह जाए तो वह एक भी प्रभु के नाम पर पुकार उठे और उसके शुभ समाचार सुनाए, वह एक ही व्यक्ति उठे और धरती के सभी लोगों का सामना करे।

इस ’प्रकाशित स्थल’ पर घटित हो रही दुःखद घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित मत करो। ’पवित्र भूमि’ सदा संकट में रही है और यहाँ संकटों के ज्वार सदा उमड़ते आए हैं, क्योंकि यह उच्च पुकार अब पूरी दुनिया में सुन ली गई है और इसकी ख्याति धरती के ओर-छोर तक पहुँच चुकी है। यही कारण है कि बाहर और भीतर दोनों ही तरफ के दुश्मन चुपके-चुपके, बड़ी चालाकी से, निंदा के प्रसार की दिशा में उन्मुख हो गए हैं। स्पष्ट है कि ऐसी जगह पर खतरा मंडराएगा ही, क्योंकि यहाँ कोई बचाव करने वाला नहीं है, कोई उठ खड़ा होने वाला नहीं है और न ही इस संकट के समय हमारी तरफदारी करने वाला: यहाँ तो बस कुछ ही लोग हैं जो बेघर हैं, बेचारे हैं, अपने ही गढ़ में कैद हैं। उनके साथ कोई योद्धा नहीं, उनके लिए कहीं कोई सहायता नहीं, झूठों के उन तीरों, निंदा की उन बरछियों का सामना करने वाला कोई नहीं जो उनकी ओर उछाले जा रहे हैं, ईश्वर के सिवा कोई नहीं।

तुम्हारे लिए उपयुक्त यह है कि तुम उन सभी परम प्रियजनों के बारे में विचार करो जो त्याग के पावन क्षेत्र की ओर शीघ्रता से बढ़ चले, वे मूल्यवान आत्माएँ जिन्होंने अपने जीवन उत्सर्ग कर दिए। याद करो कि पवित्र लहू का कैसा फव्वारा बह निकल, कितने सच्चरित्र हृदय उस रक्त में समा गए, कितने वक्षों को आततायियों के भालों का निशाना बनाया गया, कितनी पवित्र देहों के चीथड़े कर दिए गए। तो फिर अपने आप को बचाने के बारे में सोचना भी हमारे लिए कैसे सही हो सकता है! किसी अजनबी या अपनों की कृपा की मोहताजी और समझौते की ललक! नहीं, बल्कि क्या हमें उन सच्चरित्रों के मार्ग पर नहीं चलना चाहिए और उन महान लोगों का अनुसरण नहीं करना चाहिए जो हमसे पहले इस पथ से जा चुके हैं?

ये क्षणभंगुर दिन समाप्त हो जाएँगे, यह वर्तमान जीवन हमारी दृष्टि से ओझल हो जाएगा, इस संसार के गुलाबों की ताजगी और सुंदरता अक्षुण्ण नहीं रहेगी, इन पार्थिव विजयों और खुशियों का उद्यान मुरझा जाएगा। जीवन की बसन्त ऋतु मरण के पतझड़ में बदल जाएगी, राजमहलों के ज्योतिर्मय उल्लास की जगह कब्र के भीतर का चांदनी-रहित अंधकार छा जाएगा। इसलिए इनमें से कुछ भी हमारे प्रेम के योग्य नहीं है और जो बुद्धिमान लोग हैं वे इनसे आसक्त नहीं होंगे।

 जिसके पास ज्ञान और शक्ति है वह इनकी जगह स्वर्ग की गरिमा और आध्यात्मिक विशिष्टता की तलाश करेगा और उस जीवन की जो अविनाशी है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर की पवित्र दहलीज के निकट पहुंचने को उत्कंठित रहता है, क्योंकि इस तेजी से चलायमान संसार रूपी सराय में ईश्वर का बंदा मतवाला होकर सोया नहीं रहेगा, न ही वह एक क्षण के लिए भी चैन की सांस लेगा और न ही इस पार्थिव जीवन के प्रति आसक्ति का दाग स्वयं पर लगने देगा।

 नहीं, बल्कि मित्र लोग मार्गदर्शन के उच्च आकाश के सितारे हैं, दिव्य कृपा के नभ के स्वर्गिक नक्षत्र हैं जो अपनी पूरी शक्ति से अंधकार को दूर भगाते हैं। वे घृणा और वैमनस्य के आधारों को ध्वस्त करते हैं। वे संसार और इसके लोगों के लिए बस एक ही इच्छा रखते हैं, शांति और कल्याण। उनके माध्यम से युद्ध और आक्रामत के गढ़ों को तोड़ा जाता है। अपने लक्ष्य के प्रति उनके मन में सच्चाई और ईमानदार व्यवहार और मैत्री भावना होती है और अत्यंत विद्वेषपूर्ण शत्रु के प्रति भी उनमें दया होती है, जब तक कि एकदिन वे छल-छद्म के इस कारागार, इस संसार, को अत्यंत विश्वास के महल में और घृणा तथा वैमनस्य की इस कालकोठरी को परमात्मा के स्वर्ग में नहीं बदल देते।

हे प्रिय मित्रो! इस संसार को ’प्रभु-साम्राज्य’ का प्रतिबिम्ब बनाने के लिए पूरे प्राण से प्रयास करो, ताकि यह निम्न जगत ईश्वर के संसार के आशीर्वादों से भर जाए, ताकि उच्च लोक के समूहों की आवाजें स्तुति के गहन निनाद से गूंज उठें और बहाउल्लाह की कृपाओं और उनके अनुदानों के चिह्न एवं संकेत समस्त धरती को आच्छादित कर दें।

जनाब-ए-अमीन ने आप सम्मानित लोगों और ज्ञान-सम्पन्न नारियों के लिए अत्यधिक प्रशंसा के भाव व्यक्त किए थे, आपमें से प्रत्येक का नाम और गुणगान किया था, आपने जो दृढ़ता और स्थिरता दिखाई है उसके बारे में उन्होंने यह कहते हुए विस्तार से बताया था कि, ईश्वर का गुणगान हो, पूरे फारस में स्त्री-पुरुष एकजुट, धर्मपथ पर सुदृढ़, अडिग हैं - एक ठोस संरचना के रूप में - और यह कि प्रभु की मधुर सुरभियों को देश-विदेश में प्रसारित करने के कार्य में आप सब प्रेम और हर्ष के साथ संलग्न हैं।

ये अत्यन्त प्रसन्न करने वाले समाचार थे, खासतौर पर तब जबकि वे मुझे इस घोर संकट के दिनों में प्राप्त हुए हैं। क्योंकि मुझ प्रवंचित की सबसे बड़ी इच्छा यही है कि मित्र लोग आध्यात्मिक हृदय के हों, उनके मस्तिष्क ज्ञान-सम्पन्न हों, और जब यह कृपा मुझे प्राप्त हो जाए तो संकट चाहे कितना भी दुःखदायी क्यों न हो, फिर भी वह मेरे ऊपर प्रचुर वर्षा की तरह बरसती उदार अनुकम्पा ही है।

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! तुम देखते हो कि मैं अत्यंत पीड़ा के महासागर में डूबा हुआ हूं, अन्याय की ज्वालाओं से चिपका हुआ हूँ, और रात्रि के अंधकार में रुदन कर रहा हूँ। निद्रा से विहीन मैं अपनी शैय्या पर कराहता और करबटें बदलता रहता हूँ, मेरी आँखें निष्ठा और विश्वास के प्रभात-प्रकाश को देखने के लिए लालायित हैं। मैं एक मछली की तरह तड़पता हूँ जो बालू के ऊपर छटपटाती है और तब जिसके भीतरी अंग-प्रत्यंग आग की तरह जल रहे होते हैं। फिर भी मेरी दृष्टि प्रत्येक ओर से तेरे ही अनुदानों के प्रकट होने के लिए लालायित रहती है।

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! अन्य स्थानों में रहने वाले धर्मानुयायियों को अपनी अपार कृपा का अंशदान ग्रहण कर दे, अपनी अचूक सहायता और कृपा से, सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले अपने ऐसे प्रियजनों को मुक्ति प्रदान कर जो अपने शत्रु की क्रूर निर्ममता पर आहें भर रहा हो। हे प्रभो, वे तेरे प्रेम के कैदी हैं, तेरे सैन्य-दलों के बन्दी हैं। वे तेरे मार्गदर्शन के आकाश में उड़ान भरने वाले पंछी हैं, वे महामत्स्य हैं जो तेरे अनुदानों के महासिंधु में तैर रहे हैं, वे तारे हैं जो तेरे उपहारों के क्षितिज पर टिमटिमा रहे हैं। वे तेरे विधान के दुर्ग के संरक्षक हैं। वे लोगों के बीच तेरे स्मरण के ध्वज हैं। वे तेरी दिव्य करुणा के गहन कूप हैं, तेरी कृपाओं के फव्वारे हैं, तेरी कृपा के निर्झर-स्रोत हैं।

उन्हें सदा अपने सर्व-संरक्षक नेत्रों की रखवाली में रहने दे। उन्हें अपनी वाणी को उदात्त बनाने में सहायता दे, उनके हृदयों को अपने प्रेम में सुस्थिर रख, उनके कंधों को सशक्त कर ताकि वे अच्छी तरह तेरी सेवा कर सकें, सेवा के कार्य में उनकी शक्तियों को सुदृढ़ कर।

उनके माध्यम से तू दूर-दिगन्त तक अपनी मधुर सुरभियों का प्रसार कर, उनके माध्यम से अपने पवित्र लेख का विस्तार होने दे, उनके माध्यम से अपने वचनों को ज्ञात करा, उनके माध्यम से अपने शब्दों को पूर्ण कर, उनके माध्यम से अपनी कृपा उड़ेल।

तू सत्य ही सामर्थ्‍यवान है, शक्तिशाली है। तू सत्य ही सौम्य है, करुणावान है।

189

आज हर बुद्धिमान, जागरूक एवं दूरदर्शितापूर्ण व्यक्ति जाग गया है और उसके समक्ष भविष्य के रहस्य उजागर हो गए हैं जो यह दर्शाते हैं कि संविदा की शक्ति के सिवा और कुछ भी मानवजाति के हृदय को स्पंदित एवं आंदोलित करने में सक्षम नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे कि सभी धर्मों में ’नए एवं प्राचीन प्रमाणों’ (न्यू ऐंड ओल्ड टेस्टामेंट्स) ने ईसा मसीह के धर्म की घोषणा की और जो मानव जगत की काया को स्फूर्त कर देने वाली शक्ति थीं। जिस पेड़ की जड़ है वह फल देने वाला बनेगा लेकिन जिसकी जड़ ही नहीं है वह चाहे कितना ही मजबूत और ऊँचा क्यों न हो वह अंततः सूख जाएगा, नष्ट हो जाएगा और एक ऐसा कुंदा बनकर रह जाएगा जो सिर्फ आग में जला दिए जाने योग्य है।

ईश्वर की संविदा एक विशाल और अथाह महासिंधु की तरह है। एक लहर उठेगी और जो भी झाग इकट्ठे हो गए हैं उन्हें उठाकर किनारे पर फेंक आएगी।

ईश्वर का गुणगान हो कि सजग लोगों की सबसे बड़ी इच्छा ईश्वर की वाणी को उदात्त बनाना और दिव्य सुरभियों का प्रसार करना है। निस्संदेह, यह एक सुदृढ़ और सुरक्षित आधार है।

अब, प्रभात की तरह, ’सत्य के सूर्य’ का प्रकाश देश-विदेश तक बिखेर दिया गया है। यह प्रयास अवश्य किया जाना चाहिए कि सोई हुई आत्माओं को जगाया जाए, असावधान लोग जागरूक हो जाएँ और यह कि दिव्य शिक्षाएँ जो कि इस युग की चेतना का निर्माण करती हैं, उनकी गूंज दुनिया भर के लोगों के कानों तक पहुंच जाए, समाचार जगत में उसका प्रसार किया जाए और लोगों की सभा में उन्हें दीप्त एवं प्रवाहपूर्ण वाणी से प्रस्तुत किया जाए।

व्यक्ति का आचरण पॉल के आचरण की तरह होना चाहिए और उसकी आस्था पीटर की तरह। यह कस्तूरी-सुगंधित बयार दुनिया के लोगों के नथुनों में सुरभि भर देगी और यह चेतना मृतकों को नवोत्थान प्रदान करेगी।

(संविदा के) उल्लंघन की घोर दुर्गन्ध ने प्रभुधर्म की आगे की प्रगति को अस्थायी रूप से रोक दिया है, अन्यथा दिव्य शिक्षाएं, सूर्य की किरणों की तरह, तुरन्त फैल जातीं और सभी क्षेत्रों को आच्छादित कर देतीं।

तुम अब्दुल बहा के सम्बोधनों को, जिनका तुमने संकलन किया है, मुद्रित और प्रकाशित कराने का इरादा रखते हो। यह वस्तुतः बहुत ही सराहनीय है। यह सेवा तुम्हें आभा-साम्राज्य में प्रकाशित मुखमंडल प्राप्त करने में सहायक होगी और तुम्हें पूरब और पश्चिम के मित्रों की प्रशंसा का पात्र बना देगी। लेकिन यह कार्य बड़ी ही सावधानी से किया जाना चाहिए ताकि सही पाठ प्रस्तुत किया जा सके और वह पिछले अनुवादकों द्वारा किए गए सभी विचलनों और दोषों से मुक्त रह सके।

190

हे मेरे ईश्वर, देखता है तू मुझे विनम्रता से अवनत, तेरी आज्ञाओ के समक्ष अपना शीश झुकाए हुए, तेरी प्रभुसत्ता के प्रति समर्पित, तेरे साम्राज्य की शक्ति से प्रकम्पित, तेरे कोप से बचते हुए, तेरी कृपा की याचना करते हुए, तेरी क्षमाशीलता पर आश्रित, तेरे रौद्र रूप से थरथर कांपते हुए। मैं धड़कते हृदय से, अश्रु-प्रवाह के साथ और उत्कंठ आत्मा लिए हुए, और सभी वस्तुओं से पूर्णतः अनासक्त, तुझसे विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि अपने सभी लोकों में अपने प्रेमियों को प्रकाश की किरणों जैसा बना दे, और अपने चुने हुए सेवकों को तू अपनी वाणी को उदात्त बनाने में सहायक बन, ताकि उनके मुखड़े आभा से प्रदीप्त और सौन्दर्यपूर्ण हो जाएँ, उनके हृदय रहस्यों से भर जाएँ और यह कि हर आत्मा अपने पाप का बोझ उतार फेंके। अतः आक्रामक से उनकी रक्षा कर, उससे जो एक निर्लज्ज एवं ईशनिंदक कुकर्मी बन चुका है।

सत्य ही, तुम्हारे प्रेमी प्यासे हैं, उन्हें उदारता और कृपा के निर्झर-स्रोत तक ले चल। सत्य ही, वे भूखे हैं, उनके पास स्वर्गिक भोज की मेज भेज दे। वास्तव में, वे निर्वस्त्र हैं, उन्हें ज्ञान और सीख के परिधान पहना।

वे शूरवीर हैं, हे मेरे प्रभो, उन्हें युद्धभूमि तक ले चल। मार्गदर्शक हैं वे, उन्हें तर्कों और प्रमाणों के साथ बोलने में सक्षम बना। वे प्रबन्ध-कुशल सेवक हैं, उन्हें सबको वह प्याला प्रदान करने योग्य बना जो निश्चयात्मकता की मदिरा से लबालब भरा है। हे मेरे ईश्वर, उन्हें सुन्दर वाटिकाओं में सुमधुर गायन करने वाले गायक बना, उन्हें गहन झाड़ियों में विश्राम करने वाले सिंह बना, उन्हें अथाह गहराइयों में गोते खाने वाला महामत्स्य बना।

तू, वस्तुतः वह है जो अपार कृपा का स्वामी है। तुझ शक्तिशाली, सामर्थ्यवान, सदा-दातार के सिवा और कोई परमेश्वर नहीं है।

हे मेरे आध्यात्मिक मित्रो! पिछले कुछ दिनों से कुछ ज्यादा ही दबाव की स्थिति रही है और लोहे के सीखचों जैसे प्रतिबंध हैं। मुझ बेचारे प्रवंचित को एकदम ही अकेला छोड़ दिया गया, क्योंकि सभी रास्ते बाधित थे। मित्रों को मुझ तक पहुंचने नहीं दिया जा रहा था, निष्ठावानों को बंद कर दिया गया था, दुश्मनों ने मुझे घेर रखा था, नजर रखने वाले लोग दुष्ट, हिंसक और दुस्साहसी थे। हर क्षण एक नई यातना। हर सांस के साथ एक नई वेदना। अपने और अजनबी दोनों आक्रामक। सच कहें तो कभी प्रेम प्रदर्शित करने वाले और अब निष्ठावान एवं निर्मम हो चुके लोग मुझे परेशान करने में दुश्मनों से भी बदतर थे। अब्दुल बहा की रक्षा करने वाला कोई नहीं था, कोई सहायता देने वाला नहीं, कोई रक्षक नहीं, मित्र नहीं, विजेता नहीं। मैं एक तटहीन समुद्र में डूबता जा रहा था और मेरे कानों में आ रही थीं सिर्फ निष्ठाहीनों की कौओं जैसी कर्कश आवाजें।

हर प्रभात के साथ अंधकार ही अंधकार। शाम हुई तो निर्दय अत्याचार। और कभी एक क्षण की भी शांति नहीं, बरछियों से हुए रक्त-लगे घावों पर कोई मलहम नहीं। क्षण-प्रतिक्षण फेज्जां के रेगिस्तान में मुझे निर्वासित किए जाने की खबर। घंटे-दर-घंटे मुझे अथाह समुद्र में फेंक दिए जाने की बात। कभी वे यह कहते थे कि ये बेघर आवारे अंततः नष्ट-विनष्ट हो गए और कभी यह कि सलीब का इस्तेमाल फिर किया जाएगा। मेरी इस दुर्बल कद-काठी को गोलियों और तीरों का निशाना बनाया जाना था, या फिर, इस कमजोर शरीर को तलवार से टुकड़े-टुकड़े किए जाने थे।

हमारे विदेशी परिचित खुशी से फूले नहीं समा रहे थे और हमारे धोखेवाज दोस्त प्रसन्न हो रहे थे। कोई कहता था: “धन्य हो परमात्मा, हमारा सपना पूरा हुआ” और दूसरा बोलता था: “ईश्वर का धन्यवाद, हमारे भाले को छाती मिल गई।“

इस कैदी पर कष्टों का ऐसा सैलाब उमड़ा जैसे भारी वर्षा की फुहारें, और दुष्टों की विजयों की मानो बाढ़ आ गई। तिस पर भी, अब्दुल बहा प्रसन्न और शांत तथा सर्वदयालु परमात्मा की कृपा पर निर्भर रहे। वह दुःख, वह वेदना सभी खुशियों का स्वर्ग था, वे जंजीरें स्वर्ग के सिंहासन पर बैठे सम्राट की गलहार थीं। ईश्वर की इच्छा से संतुष्ट, पूर्णतः समर्पित, मेरा हृदय जो कुछ भी मेरे भाग्य में बदा था उस पर समर्पित हो गया, मैं खुश था। मुझे जिस साथी का वरदान मिला था वह था मेरा परम आनन्द।

अंततः एक ऐसा समय आया जब मित्रों को सांत्वना देना कठिन होने लगा, उन्होंने सारी आशाएँ त्याग दीं। और तब कहीं जाकर प्रभात फूटा और सब पर अनन्त प्रकाश का सैलाब उमड़ा। बादलों का अम्बार छंट गया और कुहरा फट गया। उसी क्षण बेड़ियाँ गिर गईं, जंजीरें इस बेघर व्यक्ति के गले से खुलकर दुश्मन के गले में बंध गईं। वे दुःसह कष्ट चैन में तब्दील हो गए और ईश्वर की उदार कृपाओं के क्षितिज पर आशा के सूर्य का उदय हुआ। यह सब कुछ हुआ परमात्मा की कृपा से, उसकी अनुकम्पाओं से।

और फिर भी, एक दृष्टिकोण से, यह मुसाफिर खिन्न और उदास था। आने वाले समय में मुझे किस पीड़ा से चैन की तलाश थी? किस मनचाही मुराद के पा लेने के समाचार से मुझे खुशी मिल सकती थी? अब और कोई अत्याचार नहीं था और कोई कष्ट नहीं, और कोई त्रासद घटनाएँ नहीं और कोई उत्पीड़न नहीं। इस तेजी से गुजरते हुए संसार में मेरी एकमात्र खुशी थी ईश्वर के पथरीले पथ पर चलना और कठिन परीक्षाओं एवं भौतिक दुःखों को झेलना। क्योंकि यदि ऐसा न हुआ तो यह पार्थिव जीवन बंजर और निष्फल ही साबित होगा और इससे मृत्यु ही बेहतर होगी। अस्तित्व का वृक्ष कोई फल उत्पन्न नहीं करेगा, इस जीवन के बीज बोये हुए क्षेत्र में कोई पैदावार ही नहीं होगी। इसलिए मेरी आशा है कि एक बार फिर कोई परिस्थिति मेरी पीड़ा के प्याले को लबालब भर देगी और वह सौन्दर्यमय ’प्रेम’, वह आत्माओ का ’हंता’ देखने वालों को एकबार फिर चमत्कृत करके रख देगा। तभी यह हृदय आनंदित होगा, तभी यह आत्मा आशीर्वादित होगी।

हे दिव्य मंगलदाता! अपने प्रेमियों के होठों तक वेदना से लबालब भरी एक प्याली उठा। तेरे पथ की उत्कंठा रखने वालों के लिए मधुरता को एक विषदंश की तरह बना और विष को शहद जैसा मधुर। हमारे मस्तकों को भालों की नोकों पर आभूषण के लिए सुसज्जित कर। तू हमारे हृदयों को निर्मम तीरों और बरछियों के लक्ष्य बना। तू इस मुरझाई हुई आत्मा को शहादत की भूमि में जीवन-दान दे, तू इस म्लान हृदय को अन्याय की घूंट पीने को दे और इस तरह वह फिर से तरो-ताजा हो जाए। उसे अपनी ’शाश्वत संविदा’ की मदिरा से मतवाला कर दे, उसे इस प्याले को ऊँचा उठाए हर्ष से विभोर हो जाने वाला बना दे। उसे अपना जीवन एक तरफ उत्सर्ग कर देने में सहायक बन, यह वरदान दे कि तेरे निमित्त वह बलि हो जाए।

तू सामर्थ्‍यवान है, शक्तिशाली है। तू ज्ञाता है, द्रष्टा है, सुनने वाला है।

191

हे तू जिसने संविदा के पथ पर घोर कष्ट झेले हैं! पीड़ा और यातना जब प्रभु के पथ पर सही जाती हैं, उसके पथ पर जो जिसके चिह्न प्रत्यक्ष हैं, तो वह केवल कृपा और करुणा होती है। कष्ट दया-स्वरूप होता है और दुःख ईश्वर से प्राप्त एक उपहार। विष जीभ पर शक्कर प्रतीत होता है और क्रोध आत्मा को पोषण देने वाली दयालुता।

अतः धन्यवाद दे तू उस स्नेहिल विधाता को जिसने तुझे ये घोर कष्ट दिए हैं जो कि विशुद्ध उदारता है।

यदि अब्राहम की तरह मुझे लपटों से भी पड़े गुजरना

या जॉन[[58]](#footnote-58) की तरह रक्त-रंजित मार्ग पर हो दौड़ना

यदि तू जोसेफ जैसा मुझे कुएँ में भी डाल दे

या बंद कर दे कालकोठरी में

या फिर मरयम के बेटे की तरह बना दे मुझे दीन-अकिंचन

तो भी तुझसे दूर नहीं जाऊँगा मैं

बल्कि मेरी देह और आत्मा विनत रहेगी तेरी आज्ञा के आगे!

192

आज ’स्वर्गिक समूहों के स्वामी’ संविदा के संरक्षक हैं; प्रभु-साम्राज्य के सैन्य-समूह इसकी रक्षा में जुटे हैं, स्वर्गिक आत्माएँ अपनी सेवाएँ दे रही हैं, स्वर्ग के देवदूत इसके संदेश की घोषणा और प्रसार कर रहे हैं। यदि इसे अंतर्दृष्टि के साथ समझा जाए तो यह देखने को मिलेगा कि अंतिम विश्लेषण के तौर पर ब्रह्माण्ड की समस्त शक्तियाँ संविदा की सेवा में लगी हैं। भविष्य में यह स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष हो जाएगा। इस तथ्य के मद्देनजर, ये दुर्बल एवं शक्तिहीन लोग भला क्या हासिल कर पाएंगे? बड़े-बड़े पेड़ भी यदि जड़ से कटे और दया की बरखा से वंचित हों तो वे टिक नहीं सकेंगे, तो फिर इन तुच्छ घास-फूसों से क्या अपेक्षा की जा सकती है?

193

यह प्रभात बेला है और परमात्मा के अदृश्य लोकों के उदयस्थल से एकता के प्रकाश का अरुणोदय हो रहा है, और एकता के साम्राज्य के निगूढ़ लोक से प्रचुर कृपा का प्रवाह उमड़ने लगा है। हर ओर से प्रभु-साम्राज्य का शुभ समाचार सुनाई पड़ रहा है, और हर दिशा से ईश्वरीय वाणी की स्तुति और उसके धर्म के अभ्युत्थान के उषाकाल के प्रथम संकेत प्रस्फुटित होने लगे हैं। एकता का शब्द प्रसरित हो रहा है, एकमेवता के श्लोक गाए जा रहे हैं, परमेश्वर के अनुदानों के महासिंधु की लहरें तरंगित हो रही हैं और बहते हुए प्रपातों से उसकी कृपाएँ प्रवाहित हो रही हैं। वह जो कि सदा-क्षमाशील है, उसकी पुष्टियों ने समस्त भूमण्डल को प्रकाश से आच्छादित कर रखा है, उच्च लोक के सैन्य-समूह प्रभु के सखाओं की ओर से लड़ने और उन्हें विजयी बनाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं, पुरातन सौन्दर्य - काश उनके प्रियजनों पर मेरे प्राण न्यौछावर हों - की कीर्ति धरती के ओर-छोर तक फैल गई है और पवित्र धर्म की वाणी पूरब से पश्चिम तक फैल चुकी है। इन सभी बातों से हृदय आनन्दित हो उठता है किन्तु फिर भी अब्दुल बहा दुःख के अथाह सागर में निमग्न हैं, और कष्ट एवं पीड़ा ने मेरे अंग-प्रत्यंग को इस तरह जकड़ रखा है कि मेरा पूरा शरीर अत्यंत अशक्तता के वशीभूत हो गया है। तुम यह ध्यान दो कि जब अकेला ही, बिना किसी की सहायता के, मैंने पूरी दुनिया में ईश्वर का आह्वान प्रतिगुंजित किया तो लोग विरोध और विवाद करने, इसे अस्वीकार करने, उठ खड़े हुए। एक ओर तो यह स्पष्ट है कि अतीत के धार्मिकों ने किस तरह सभी मुहानों पर हमला किया; और फिर उसके बाद झूठे उपहासकर्ताओं की आवाज उठ रही है और देखो कि किस हद तक वे ’दिव्य वृक्ष’ की जड़ काटने पर तुले हैं। ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ के खिलाफ उन्होंने कैसे-कैसे विद्वेषपूर्ण और लांछना भरे आरोप लगाए हैं; ’महानतम नाम’ के खिलाफ दुष्टतापूर्ण और विकृति भरे आरोपों वाले कैसे-कैसे पर्चे लिखने और वितरित करने में वे लगातार व्यस्त हैं! और अब, अत्यंत छद्म तरीके से, वे इस धर्म पर घोर प्रहार करने के लिए वे जी-जान से अपनी कोशिश में जुटे हैं। एक बार फिर इन अहंकारियों ने प्रभुधर्म को पूरी तरह अक्षम करने और इस जीवन-रूपी पुस्तक से अब्दुल बहा का नामो-निशान मिटाने के लिए हर तरह के षडयंत्र रच रखे हैं। और अब इन तमाम यातनाओं, कष्टों और शत्रुओं के इन प्रहारों के साथ-साथ अब स्वयं धर्मानुयायियों के बीच विद्वेष की धूल भरी आंधी उठ खड़ी हुई है। और वो भी इस तथ्य के बावजूद कि ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ का धर्म स्वयं ही प्रेम का सार-तत्व है, एकता का मार्ग है, जिसके अस्तित्व का एकमात्र कारण यह है कि सब एक ही समुद्र की तरंगें बन जाएँ, एक ही असीम आकाश के प्रखर नक्षत्र बन जाएँ और एकमेवता की सीपी में पलने वाले मोती और एकता की खान से बाहर निकाले गए कांतिमान रत्न बन जाएँ; कि वे एक-दूसरे के सेवक बन जाएँ, एक-दूसरे के गुणगान में निरत हों, एक-दूसरे को आशीर्वादित करें; कि उनमें से प्रत्येक अपनी उन्मुक्त वाणी से निरपवाद रूप से बाकी सब के प्रति प्रशंसा प्रकट करे; कि वे सब गरिमा के क्षितिज की ओर अपनी दृष्टि डालें और यह याद रखें कि वे ’पवित्र दहलीज’ से जुड़े हुए हैं; कि वे एक-दूसरे में अच्छाई के सिवा और कुछ न देखें, एक-दूसरे की प्रशंसा के सिवा और कुछ न सुनें और एक-दूसरे के गुणगान के सिवा और कुछ भी न बोलें। वस्तुतः, ऐसे कई लोग हैं जो सच्चरित्रता के इस मार्ग पर चलते हैं और ईश्वर का धन्यवाद कि ऐसे लोगों को हर भूभाग में स्वर्गिक शक्ति से सहयोग और सुदृढ़ता प्राप्त होती है। लेकिन अन्य कई लोग इस उदात्त और गरिमामय उच्चता तक नहीं उठ पाए हैं जहाँ तक उन्हें उठना चाहिए था और इससे अब्दुल बहा के हृदय पर व्यथा का भारी बोझ पड़ा हुआ है, अकल्पनीय व्यथा का बोझ। क्योंकि प्रभुधर्म पर इससे बड़ा संकटपूर्ण कोई झंझावात नहीं टूट सकता था और न ही अन्य कुछ भी ’उसकी’ वाणी के प्रभाव को इस तरह धूमिल ही कर सकता था। ईश्वर के सभी प्रियजनों का कर्त्‍तव्‍य है कि वे एक वे हो जाएँ, एक ही ध्वजा के संरक्षण तले एकजुट हो जाएँ, सब एक ही समान विचार रखें, सब एक और समान पथ पर चलें और एक ही संकल्प के साथ उठ खड़े हों। वे अपने भिन्न सिद्धान्तों को भूल जाएँ और अपने परस्पर-विरोधी विचारों को दरकिनार कर दें क्योंकि, ईश्वर का गुणगान हो, हम सबका उद्देश्य एक ही है, हमारा लक्ष्य एक ही है। हम सब एक ही ’दहलीज’ के सेवक हैं, हम सब एक ही ’स्रोत’ से अपना पोषण पाते हैं, हम सब एक ही उच्च वितान की छाँह तले एकत्रित हैं, हम सब एक ही एक ही दिव्य वृक्ष के नीचे शरणागत हैं। हे प्रभु के प्रिय! यदि कोई व्यक्ति किसी अनुपस्थित व्यक्ति की बुराई करे तो उसका एकमात्र परिणाम बस यह होगाः वह मित्रों के उत्साह को धूमिल करेगा और उन्हें उदासीन कर देगा। क्योंकि चुगली लोगों के बीच फूट डालती है, यह समान स्वभाव वाले मित्रों के अलगाव का एक प्रमुख कारण है। यदि कोई भी व्यक्ति किसी अनुपस्थित जन की निंदा करे तो सुनने वालों का कर्त्‍तव्‍य है कि वे आध्यात्मिक और मित्रवत ढंग से उसे ऐसा करने से रोकें और उसे इस तरह से कहे कि क्या इस प्रलाप से कोई मकसद पूरा हो सकेगा? क्या इससे ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ प्रसन्न होंगे, क्या इससे मित्रों की चिर प्रतिष्ठा में कोई वृद्धि होगी, पवित्र धर्म की संवृद्धि होगी, संविदा को बल मिलेगा, या किसी भी व्यक्ति को इससे किसी लाभ की सम्भावना है? नहीं, कदापि नहीं। बल्कि इसके विपरीत इससे हृदय पर इतनी गहरी धूल जम जाएगी कि कान और कुछ भी सुन न सकेंगे और आँखें सत्य के प्रकाश को देख पाने से वंचित हो जाएँगी। लेकिन अगर व्यक्ति दूसरे के बारे में अच्छा कहना तय कर ले, एक-दूसरे की प्रशंसा के लिए अपने ओठ खोले तो अपने सुनने वालों में वह ’प्रत्युत्तर देने वाले तार’ का स्पर्श करने लगेगा और वे लोग परमात्मा के उच्छ्वास से आंदोलित हो उठेंगे। ईश्वर का धन्यवाद! उनके हृदय और उनकी आत्मा यह जानकर उल्लसित हो उठेंगे कि प्रभुधर्म में एक ऐसा व्यक्ति भी है जो मनुष्य की पूर्णताओं पर केन्द्रित है, जो प्रभु की उदार कृपाओं का मूर्त रूप है, वह जिसकी वाणी प्रवाहपूर्ण है, जिसका मुखड़ा ज्योतिर्मय है। वह जिस किसी सभा में हो उसके ललाट पर विजय की लालिमा होगी और वह परमात्मा की मोहक सुरभि से अनुप्राणित होगा। अब इन दोनों में से कौन-सा तरीका बेहतर है? मैं प्रभु के सौन्दर्य की सौगन्ध खाकर कहता हूं : जब कभी मैं मित्रों के बारे में अच्छा सुनता हूं, मेरा हृदय आनन्द से भर उठता है और जब कभी मुझे इसका संकेत मात्र भी मिलता है कि उनके बीच अनबन है तो मैं दुःख से भर उठता हूं। ऐसी ही दशा है अब्दुल बहा की। तो इसी से यह निर्णय कर लो कि तुम्हारा कर्त्‍तव्‍य क्या है। ईश्वर की स्तुति हो, हम जिधर भी उन्मुख होते हैं, ’पुरातन सौन्दर्य’ ने हर दिशा में कृपा के कपाट खोल दिए हैं, और प्रभु की जीवन्तकारी सहायता से विजय के शुभ समाचार की निर्विवाद शब्दों में घोषणा की है। उन्होंने अनुयायियों के हृदयों को प्रेम से आप्लावित कर दिया है और उन्होंने उच्च लोक के सेनानियों को उनकी विजय का दायित्व सौंपा है। अब प्रभु-प्रेमियों को चाहिए कि दिवानक्षत्र जैसा हृदय लिए हुए, सुदृढ़ आंतरिक प्रेरणा के साथ, ज्योतिर्मय ललाट से, कस्तूरी सुरभि लिए हुए, सदा ईश्वर का गुणगान करने वाली वाणी और स्फटिक-स्वच्छ विश्लेशण के साथ, दृढ़प्रतिज्ञता, स्वर्गिक शक्ति, आध्यात्मिक चरित्र से सम्पन्न और परम दिव्य संपुष्टि के साथ वे दुनिया के लोगों के बीच उठ खड़े हों। उनमें से प्रत्येक स्वर्ग के क्षितिज पर एक आभा की तरह प्रज्योतित हो और दुनिया के आकाश में एक प्रदीप्त नक्षत्र। वे स्वर्गिक तरु-वाटिका में फलदायक वृक्ष बनें, दिव्य उद्यानों में सुरभित फूल। वे ब्रह्माण्ड के पृष्ठ पर परिपूर्णता के श्लोक बनें, जीवन की पुस्तक में एकता के शब्द। यह प्रथम युग है और ’परम महान प्रकाश’ के धर्मयुग की आरम्भिक शुरुआत, अतः इस शताब्दी में सद्गुणों को अर्जित कर लिया जाना चाहिए, इसकी अवधि में अच्छे गुणों को पूर्णता प्रदान कर दी जानी चाहिए। इन दिनों में ’आभा’ साम्राज्य के शिविरों को विश्व के मैदानों में तान दिया जाना चाहिए। अब यथार्थ के प्रकाश प्रकट हो जाने चाहिए और परमात्मा के अनुदानों के रहस्यों को उजागर कर दिया जाना चाहिए और अब पुरातन कृपा को चमक उठना चाहिए और यह संसार स्वर्ग की आह्लाद-स्थली, ईश्वरीय वाटिका में बदल जाना चाहिए। और विशुद्ध हृदयों से और स्वर्गिक उदारताओं के माध्यम से, उस दिव्य की सभी पूर्णताएँ, उसके गुण और विभूषण अब प्रकट कर दिए जाने चाहिए। अब्दुल बहा हर समय यही याचना करते हैं और अश्रुपूर्ण नेत्रों से उस सर्वशक्तिमान की पावन दहलीज पर प्रार्थना करते हैं और पुकारते हुए यह कहते हैं: हे तू दयालु स्वामी! हम तेरी देहलीज के सेवक हैं, तेरे पवित्र द्वार पर शरण लिए हुए हैं। इस सुदृढ़ स्तम्भ के सिवा हमें और किसी भी शरण की चाह नहीं है, तेरी सुरक्षा से बढ़कर किसी अन्य आश्रय की ओर उन्मुख होने की इच्छा नहीं है। हमारी रक्षा कर, हमें आशीर्वाद दे, हमें ऐसा बना दे कि हम सिर्फ तेरी सदिच्छा के लिए ललकें, केवल तेरी स्तुति करें, केवल सत्य-मार्ग का अनुसरण करें, कि हम इतने समृद्ध हो जाएँ कि तेरे सिवा अन्य सबसे मुक्त हो सकें और तेरी करुणा के सिंधु से अपने उपहार प्राप्त करें, कि हम सदा तेरे धर्म को उन्नत बनाने और दूर-दिगन्त तक तेरी मधुर सुरभियों के प्रसार के लिए प्रयासरत रहें, कि हम स्वयं को भूल जाएँ और केवल तुझमें निरत रहें और अन्य सबकुछ का परित्याग कर सिर्फ तुझमें निमग्न हो जाएँ। हे तू प्रदाता, हे तू क्षमादाता! हमें अपनी कृपा और स्नेहिल दयालुता, अपने उपहार और अनुदान प्रदान कर और हमें सहारा दे ताकि हम अपना लक्ष्य पा सकें। तू शक्तिमान है, सक्षम है, ज्ञाता है, द्रष्टा है और तू सत्य ही उदार है और तू सत्य ही सर्वदयालु है और तू सत्य ही सदा क्षमाशील है वह जिसके सम्मुख पश्चात्ताप किया जाना है वह जो घोरतम पापों को भी क्षमा कर देता है।

194

हे ’आभा सौन्दर्य’ के सत्यनिष्ठ प्रियजनों! इन दिनों में पूरे विश्व में प्रभुधर्म की शक्ति तेजी से बढ़ रही है और दिन-प्रतिदिन धरती के सुदूर छोरों तक इसका प्रसार हो रहा है। अतः धरती के सभी लोगों और स्वजनों के बीच से इसके दुश्मन आक्रामक हो रहे हैं, वे द्वेष, ईर्ष्‍या और घोर शत्रुता से आक्रान्त हो उठे हैं। ईश्वर के प्रियजनों का कर्त्‍तव्‍य है कि वे छोटी-बड़ी सभी बातों में अत्यंत सावधानी बरतें, मिलजुल कर परामर्श करें और संघर्ष उत्पन्न करने वालों एवं उपद्रव फैलाने वालों के हमलों का एकजुट होकर प्रतिकार करें। उन्हें हर किसी के साथ मित्रतापूर्ण भावना से घुलमिल कर रहने का प्रयास करना चाहिए, अपने आचरण की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए, एक-दूसरे के प्रति सम्मान और विचारशीलता की झलक दिखानी चाहिए और दुनिया के सभी लोगों के प्रति स्नेहिल दयालुता एवं मृदुल आदर-भावना का परिचय देना चाहिए। उन्हें धैर्यवान और दीर्घ-सहिष्णु होना चाहिए ताकि वे आगे चलकर ’आभा-साम्राज्य’ के दिव्य चुम्बक बन सकें और उच्च लोक के सहचरों की गतिमान शक्ति अर्जित कर सकें। इस धरती पर मनुष्य के जीवन की क्षणभंगुर घड़ियाँ बड़ी तेजी से बीत जाती हैं और जो थोड़ा-बहुत बचा रह जाता है उसका भी अंत हो जाएगा। लेकिन वह जो कि शाश्वत है और जो सदा अक्षुण्ण रहेगा वह है दिव्य देहरी पर मनुष्य की सेवा का प्रतिफल। इस कथन का सत्य परखो, इस अस्तित्व के संसार में इसका प्रमाण कितना प्रचुर और भव्य है! महिमाओं की महिमा विराजती है बहा के लोगों पर !

195

हे तू दिव्य ’कल्पतरु’ के उदात्त शाख! ...जब दुष्ट लोग तुझे अवनिंदित और अस्वीकृत कर दें तो निराश न हो, और अहंकारियों की ताकत और उनके अड़ियलपने से तंग मत हो और न ही हृदय में खिन्नता का अनुभव कर, क्योंकि अनादि काल से असावधान लोगों का यही तरीका रहा है। “कितना दुःखद है मनुष्य के लिए! ऐसा कोई भी ईश्वरीय संदेशवाहक नहीं आया जिसकी उन्होंने खिल्ली न उड़ाई हो।“[[59]](#footnote-59)

वस्तुतः, नासमझ लोगों द्वारा किए गए हमले और उनके द्वारा उत्पन्न की गई बाधाएँ ईश्वर की वाणी को और अधिक उदात्त बनाती हैं और दूर-दराज़ तक उसके चिह्नों और संकेतों को फैला देते हैं। अगर निंदा करने वाले लोगों का विरोध, लांछन लगाने वालों का यह अड़ियलपन, उपदेश-मंच से मचाई गई यह चिल्ल-पों, बड़े और छोटे हर तबके के लोगों की यह चीख-पुकार, अज्ञानियों द्वारा लगाए गए ये अविश्वास भरे आरोप, मूर्खों का यह प्रलाप - ये सब नहीं होते तो ’आदि-बिंदु’ के अवतरण का सुसमाचार और ’बहा के दिवानक्षत्र’ का यह प्रखर अभ्युदय पूरब और पश्चिम तक कैसे पहुंच पाता? यह धरती इस छोर से उस छोर तक कैसे आंदोलित होती? फारस छिटकती हुई आभाओं का केंद्रबिंदु कैसे बनता और एशिया माइनर उस प्रभु के सौन्दर्य को परावर्तित करने वाला हृदय कैसे हो पाता? अन्य किस तरीके से भला ’धर्म-प्रकटीकरण’ की लपट दक्षिण तक कैसे फैलती? और किस माध्यम से ईश्वर की पुकार सुदूर उत्तर तक सुनाई पड़ती? उसके आह्वान भला अन्य किस तरीके से अमेरिका और अंधकार से आच्छन्न अफ्रीका में सुने जाते? स्वर्ग की प्रतिध्वनि उन कानों को कैसे गुंजायमान करती? भारत के मधुर शुक इस माधुर्य की ओर कैसे खिंचे आते या इराक की भूमि से बुलबुलें अपने आलाप कैसे छेड़तीं? और किस विधि से भला पूरब और पश्चिम खुशी से नाच उठते, यह ’पवित्र स्थली’ ईश्वर के सौन्दर्य का सिंहासन कैसे बन पाती? अन्य किस प्रकार भला सिनाय पर्वत इस प्रज्ज्वलित प्रखरता को देख पाता, भला किस तरह ’प्रकटावतार’ की ज्वाला उस पर्वत को विभूषित कर पाती? यदि ऐसा न होता तो ’पवित्र भूमि’ भला ईश्वर के सौन्दर्य की आधार-स्थली कैसे बन पाती और तोवा[[60]](#footnote-60) की पावन घाटी उत्कृष्टता और महिमा की भूमि कैसे बन पाती - वह पवित्र स्थली जहाँ प्रभुदूत मूसा ने अपनी पादुकाएँ उतारी थीं? स्वर्ग के उच्छवास पवित्रता की घाटी से होकर कैसे प्रवाहित हो पाते, आभा-उद्यान से प्रवाहित होने वाले हवा के सुरभित झकोरों का भान उन्हें कैसे हो पाता जो ’हरियाली के द्वीप’ पर निवास करते हैं? अवतारों के वचन, अतीत के पवित्र द्रष्टाओं के शुभ समाचार, ईश्वर के प्रकटावतारों द्वारा इस ’पवित्र स्थल’ के बारे में की गईं प्रतिज्ञाएँ अन्य किस रूप में पूरा हो पातीं?

’अनीसा’ का तरुवर भला कैसे इस जगह रोपा जा सकता था, ’प्रमाण’ की ध्वजा लहराई जा सकती थी, ’संविदा’ की मादक प्याली इन ओठों तक पहुंचाई जा सकती थी? ये समस्त आशीर्वाद और अनुदान, प्रभुधर्म की घोषणा करने के ये खास साधन, अज्ञानियों के उपहास, मूर्खों के अड़ियलपने, नासमझों के विरोध, आक्रामकों की हिंसक हमलों से ही तो सामने आए हैं। यदि ये बातें न होतीं तो आजतक बाब के अवतरण का समाचार भूभागों तक नहीं पहुंच पाता। इसलिए हमें नासमझों के अंधेपन, मूर्खों के हमलों, तुच्छ-अधम लोगों की शत्रुता, धर्मगुरुओं की लापरवाही, विचारहीन लोगों द्वारा हम पर लगाए गए विद्रोह के आरोपों - इन तमाम बातों से दुःखी नहीं होना चाहिए। पिछले युगों में भी उनके ऐसे ही तौर-तरीके रहे हैं। यदि वे जानते-समझते होते तो ऐसा कदापि नहीं करते, लेकिन वे अंधे हो चुके हैं और उन्हें जो बताया जाता है उसे वे समझ ही नहीं पाते। अतः हे ’ईश्वर के पवित्र तरुवर’ के शाख जो कि उस शक्तिशाली ’धड़’ से प्रस्फुटित हुआ है, तेरे और हम सबके लिए यही उपयुक्त है कि ’पुरातन सौन्दर्य’ - काश उनकी ’परम पवित्र समाधि’ के लिए मेरा जीवन उत्सर्ग हो जाए - की सहायताकारी कृपा से हम स्वर्ग से उत्पन्न इस प्रज्ज्वलित ज्वाला से धरती के इस छोर से उस छोर तक ईश्वर के प्रेम का प्रदीप जगमगा दें। हमें अपने आदर्श के रूप में दिव्यात्मा बाब - मेरा जीवन उन पर न्यौछावर हो जाए - रूपी महान और पवित्र ’वृक्ष’ को अपनाना चाहिए। हमें उन्हीं की तरह दुःख की बरछियों के सामने अपना सीना खोल देना चाहिए, और उन्हीं की तरह हमें परमात्मा द्वारा नियत भालों को अपनी छाती पर झेल लेना चाहिए। हम मोमबत्तियों की तरह जलें, शलभ (फतिंगे) की तरह अपने पंखों को जला डालें, लवा पक्षी की तरह चीत्कार कर उठें और बुलबुल की तरह विलाप से भर उठें। हम बादलों की तरह आँसू बहाएं, और कड़कती हुई बिजलियों की तरह हम पूरब से लेकर पश्चिम तक अपने अभिशापों पर अट्टहास कर उठें। दिन-रात हम सिर्फ ईश्वर की मधुर सुरभि के प्रसार के बारे में सोचें। हम सदा अपनी कपोल-कल्पनाओं में, अपने विश्लेषण और अर्थ-विन्यास और जटिल दुविधाओं में ही न उलझे रहें। हम स्वार्थ के सभी विचारों को दरकिनार कर दें, हम धरती पर विद्यमान सभी वस्तुओं से अपनी आँख मूंद लें, अपने दुःखों के बारे में हम किसी को न जानने दें और न ही हमें जो छलावे मिले हैं उनकी शिकायत ही करें। बल्कि हम अपने ’स्व’ को बिल्कुल भुला दें, और स्वर्गिक कृपा की मदिरा का आस्वाद करते हुए हम आनन्द से विह्वल होकर पुकार उठें और ’सर्व-महिमामय’ परमात्मा के सौन्दर्य में निमग्न हो जाएँ।[[61]](#footnote-61)

हे तू स्वर्गिक कल्पवृक्ष के अफ़नान (सगे-सम्बंधी)! हममें से प्रत्येक को फल देने वाला शाख बनना चाहिए ताकि हम मधुर से मधुरतर और अधिक से अधिक स्वस्थ फल उत्पन्न कर सकें ताकि वह शाख अपनी जड़ की निरंतरता को बरकरार रखने वाला साबित हो सके और खंड अपने अखण्ड का हिस्सा बन सके। मैं आशा करता हूँ कि ’महानतम नाम’ की उदार कृपा से और ’आदि-बिंदु’ - मेरी आत्मा उन दोनों पर उत्सर्ग हो जाए - हम इस समस्त संसार में ईश्वर की वाणी को उदात्त बनाने का माध्यम बन सकेंगे; कि हम अपने धर्म के ’स्रोत’ की सेवा कर सकेंगे और सबके ऊपर उस प्रभु के सच्चे और पावन उत्साह का चँदोवा टांग सकेंगे। ताकि कृपा के मैदानों के ऊपर हम बयारों को बहने दे सकें और ईश्वर की वाटिका से आने वाली मोहक सुरभि मानव तक पहुंचा सकें। ताकि हम इस संसार को ’आभा-स्वर्ग’ में बदल सकें और इस निम्न जगत को ’स्वर्ग के साम्राज्य’ में परिवर्तित कर सकें। यह सच है कि ईश्वर के सेवकों में से प्रत्येक को और खास तौर पर उन्हें जिनमें धर्म की अग्नि सुलग रही है, सर्वशक्तिमान परमात्मा की सेवा का दायित्व सौंपा गया है। फिर भी जो कर्त्‍तव्‍य हमें सौंपा गया है वह अन्यों के दायित्व से कहीं बढ़कर है। कृपा, करुणा और शक्ति के लिए हमारी दृष्टि ’उस’ पर है। अपने ’आभा-साम्राज्य’ की सेनाओं को सक्रिय करने और हम सबके प्रति अडिग नक्षत्रों की तरह अपनी अनवरत सहायता भेजने के लिए सर्वस्तुति हो ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ की और आभार हो उनके प्रति। उन्होंने अपने इस एकल, एकाकी सेवक को धरती के हर प्रदेश में अपनी सहायता उपलब्ध कराई है, अपने प्रेम के चिह्नों और संकेतों से उन्होंने हर क्षण मुझे अवगत कराया है। जो कोई भी अपने मिथ्या भ्रमों से चिपके हुए हैं उन सबको उन्होंने जड़वत बना दिया है और उच्च एवं निम्न हर तबके के लोगों में उन्हें बदनाम करके रख छोड़ा है। जो कोई भी अपनी निरर्थक कल्पनाओं के पीछे दौड़ते आए हैं उन सबको उन्होंने लोगों की अवनिंदा का पात्र बना दिया है और अहंकारियों का सबके सामने पर्दाफाश किया है। बंधुओं में से वे लोग जो धर्म में सुदृढ़ नहीं थे उन सबको उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के सम्मुख दूसरों के लिए चेतावनी देने वाला उदाहरण बना दिया और अपनी निष्ठा में विचलित होने वालों के अग्रनायकों को आत्म-मोह एवं दम्भ में निमग्न कर छोड़ा है। और अपनी शक्ति के दम पर उन्होंने इस पंख-टूटे पक्षी को धरती के सभी निवासियों के ऊपर उड़ान भरने योग्य बनाया है। विद्रोहियों की पंक्तिबद्ध कतारों को उन्होंने छिन्न-भिन्न कर दिया है और मुक्ति के सेनानियों को विजय प्रदान की है और जो संविदा तथा प्रमाणों में दृढ़ रहते हैं उनमें अनन्त जीवन की सांस फूंक दी है। ’पवित्र वृक्ष’ से प्रशाखित प्रत्येक अफ़नान को तू ’आभा’ की शुभकामनाएँ सुना। गरिमा विराजती है तुझ पर और उस प्रत्येक अफ़नान पर जो संविदा के प्रति सच्चा और निष्ठावान बना रहता है।

196

हे तू जो कि संविदा में सुदृढ़ है! तुम्हारा 9 सितंबर 1909 का पत्र प्राप्त हुआ। जो भी हुआ है उसके लिए तुम दुःखी और निराश न हो। यह विपदा तुझपर इसलिए टूटी क्योंकि तुमने परमात्मा के पथ का अनुगमन किया, इसलिए तुझे आनंदित होना चाहिए। इससे पहले हमने लिखित रूप से मित्रों को सम्बोधित किया था और मौखिक रूप से भी बयान दिया था जिसमें यह कहा गया था कि निर्विवाद रूप से पश्चिम के मित्रों को भी उन संकटों का भागी बनना होगा जो पूरब के मित्रों पर टूटे हैं। यह अपरिहार्य है कि बहाउल्लाह के मार्ग पर चलते हुए उन्हें भी अत्याचारियों की यातनाओं का शिकार बनना पड़ेगा। विचार करो कि ईसाई धर्म के आरम्भिक युग में धर्मदूतों को किस तरह से प्रताड़ित किया गया और मसीहा के मार्ग पर उन्होणे क्या-क्या यातनाएँ नहीं सहीं। अपने जीवन के प्रत्येक दिन उन्हें फरीसियों के उपहास, आलोचना और अपशब्दों का सामना करना पड़ा। उन्होंने बड़ी-बड़ी मुसीबतें झेलीं, उन्हें कैद किया गया और उनमें से ज्यादातर को अपने ओठों से शहादत का मधुर प्याला चखना पड़ा। अब तुम लोगों को भी कुछ हद तक निश्चित रूप से मेरा भागीदार बनना होगा और तुम्हें भी परीक्षाओं और दुःखों का अपना अंशभाग ग्रहण करना होगा। लेकिन ये बातें खत्म हो जाएँगी जबकि वह शाश्वत गरिमा और अनन्त जीवन सदा अक्षुण्ण बने रहेंगे। और फिर, ये यातनाएँ महान उन्नति का कारण बनेंगी। मैं ईश्वर से याचना करता हूँ कि तुम सब, उसके सेवक, कठिन और पथरीली जमीन को जोतोगे, उसे सींचोगे, उसमें बीज बोओगे - क्योंकि इसी से पता चलेगा कि किसान कितना कुशल है, क्योंकि जहाँ जमीन मुलायम और झाड़-झंखाड़ों से मुक्त हो वहाँ तो कोई भी जुताई और बुआई कर सकता है।

197

हे ईश्वर के सेवक! तुझपर जो कष्ट और संकट टूट पड़े हैं उनसे दुःखी न हो। ये सभी संकट और कष्ट मनुष्य के लिए इसलिए बनाए गए हैं कि वह इस नाशवान संसार से मुक्त हो सके जिससे कि वह अत्यंत ही आसक्त है। जब उसे कठिन परीक्षाओं और मुसीबतों का अनुभव होता है तो उसका स्वभाव करबट लेता है और उसके मन में अनन्त लोक के प्रति अभिलाषा जगती है - उस लोक के प्रति जो सभी संकटों और कष्टों से मुक्त है। जो बुद्धिमान मनुष्य है उसके साथ ऐसा ही होता है। वह ऐसे प्याले से कभी नहीं पिएगा जिसमें अंततः कोई स्वाद ही नहीं है, बल्कि इसके विपरीत वह विशुद्ध एवं स्वच्छ जल की प्याली ग्रहण करना चाहेगा। वह जहर मिले शहद का स्वाद चखना नहीं चाहेगा। तू ईश्वर का गुणगान कर कि तुझे आजमाया गया है और तूने ऐसी परीक्षा का अनुभव प्राप्त किया है। धीरज रख और कृतज्ञ बन। दिव्य साम्राज्य की ओर उन्मुख हो और प्रयास कर कि तू दयालुता के गुणों से सम्पन्न हो सके, तू प्रकाशित हो सके और प्रभु-साम्राज्य और परमात्मा के विभूषणों को अर्जित कर सके। इस संसार की खुशियों और सुख-विलास के प्रति उदासीन बनने, संविदा में सुदृढ़ रहने और प्रभुधर्म की घोषणा करने का प्रयत्न कर। यह मनुष्य को उदात्त बनाने वाला धर्म है, उसकी गरिमा और उसकी मुक्ति का धर्म।

198

हे तुम जो कि परमात्मा के उच्छवासों के प्रेम में पगे हो! मैंने तुम्हारा पत्र पढ़ा है जो ईश्वर के प्रति तुम्हारे प्रेम और उसके सौन्दर्य के प्रति तुम्हारे अदम्य आकर्षण से आप्लावित था और उसकी अदभुत विषयवस्तु ने मेरे हृदय को हर्ष-विभोर कर दिया। अपने पिछले पत्र में मैंने तुम्हें जो लिखा था वह यह था कि ईश्वर की वाणी को उदात्त बनाने के कार्य में संकटों और अग्नि-परीक्षाओं का सामना करना ही पड़ता है और यह कि उससे प्रेम करने के क्रम में हर क्षण कठिनाइयाँ, यातनाएँ और मुसीबतें सामने आती ही हैं। व्यक्तियों का कर्त्‍तव्‍य यह है कि पहले वे इन परीक्षाओं का मूल्य समझ लें, उन्हें स्वेच्छा से स्वीकार करें, उत्सुकतापूर्वक उनका स्वागत करें, उसके बाद ही उन्हें प्रभुधर्म की शिक्षा और ईश्वर की वाणी को उदात्त बनाने के कार्य में जुटना चाहिए। ऐसी स्थिति में, ईश्वर के प्रति उनके प्रेम के मार्ग में चाहे जो भी मुसीबत आ पड़े - यातना, अपशब्द, निंदा, कलंक, अभिशाप, प्रताड़ना, कैद, या मौत - वह कभी खिन्न नहीं होगा और ’दिव्य सौन्दर्य’ के प्रति उसकी उत्कंठा और प्रबल होती जाएगी। मेरा यही अभिप्राय था। अन्यथा, विपदा और मुसीबत टूटे उस व्यक्ति पर जिसे आराम और भौतिक सुख की चाह है और जिसने ईश्वर के आह्वान को भुला बैठा है। क्योंकि अब्दुल बहा के लिए, ईश्वर के पथ पर सही गई विपदाएँ और कुछ नहीं बल्कि उसकी कृपा और अनुकम्पा हैं और अपनी एक पाती में सर्वमहिमामय ’सौन्दर्य’ ने यह घोषणा की हैः “मैं ऐसे किसी पेड़ के पास से नहीं गुजरा जिसे मेरे हृदय ने यह कहकर सम्बोधित न किया हो: ’काश कि तुझे मेरे नाम से काट दिया जाता और मेरी देह को तुझ पर सूली चढ़ा दी जाती!” ऐसे शब्द थे ’महानतम नाम’ के। यही उनका मार्ग है। उनकी सामर्थ्‍य के लोक का यही रास्ता है।

199

हे निष्ठावान जनों, हे उत्कंठित लोगों, हे तुम लोग जो चुम्बक की तरह खिंचे आए हो, तुम लोग जो प्रभुधर्म की सेवा के लिए, उसकी वाणी को उदात्त बनाने और दूर-दूर तक उसकी मधुर सुरभि फैलाने उठ खड़े हुए हो! मैंने तुम्हारे उकृष्ट पत्र को पढ़ा है जिसकी शैली अति सुन्दर है, जिसके शब्द उदात्त हैं, जिसका अर्थ गम्भीर है और मैंने ईश्वर की स्तुति की और उसे धन्यवाद दिया कि उसने तुम्हारी सहायता की और अपनी विशाल अंगूर-वाटिका में तुझे सेवा करने में समर्थ बनाया। बहुत ही जल्द तुम्हारे मुखड़े तुम्हारी प्रार्थनाओं और परमात्मा की आराधना की कांति से तथा मित्रों के समक्ष तुम्हारी विनम्रता और निःस्वार्थता से प्रदीप्त हो उठेंगे। वह तुम्हारी सभा को परमात्मा की गरिमा के साम्राज्य से प्रकाशित होती दिव्य सम्पुष्टियों की प्रखर किरणों को आकर्षित वाला चुम्बक बना देगा। तुम्हारा कर्त्‍तव्‍य है कि तुम अपने हृदय में विचार करो और उसके शब्दों पर मनन करो और विनम्रभाव से उसका आह्वान करो और उसके स्वर्गिक धर्म में अपने ’स्व’ को परे हटा ले। ये ही वो बातें हैं जो तुम्हें समस्त मानवजाति के लिए मार्गदर्शक संकेत और सर्वोच्च क्षितिज से जगमगाते प्रखर नक्षत्र बनाएंगे और आभा-स्वर्ग में उच्च वृक्षों के समान। तुम लोग यह जान लो कि अब्दुल बहा निरंतर खुशी से फूले नहीं समा रहे। दूर के इस कारागार में कैद रहना मेरे लिए अत्यधिक आनन्द की बात है। बहा के जीवन की सौगन्ध! यह कारागार मेरा महान स्वर्ग है, यह मेरा अभिलषित लक्ष्य है, मेरे हृदय की सांत्वना और उल्लास है, यह मेरा आश्रय, मेरी शरण-स्थली, मेरा अभयारण्य, मेरा सुरक्षित स्थान है और इसके दायरे में मैं स्वर्ग के सहचरों और उच्च लोक के सखाओं के बीच उल्लसित हूं। हे ईश्वर के बन्धुओं, मेरी इस दासता से आनन्दित हो क्योंकि यह स्वतंत्रता के बीज बो रहा है, मेरी कैद की खुशी मनाओ क्योंकि यह मुक्ति का स्रोत है, मेरी यातना के कारण प्रसन्न हो क्योंकि यह अनन्त विश्रान्ति की ओर ले जा रही है। परमात्मा की सौगन्ध! इस कारागार के बदले मैं समस्त संसार का राज-सिंहासन भी नहीं लेना चाहूंगा और न ही धरती की सभी सुन्दर वाटिकाओं में आनन्द और अवकाश मनाने के बदले इस कैद का ही परित्याग करना चाहूंगा। मेरी यह आशा है कि प्रभु परमात्मा की असीम कृपा, उसकी उदारता और स्नेहपूर्ण दयालुता से, मैं उसके पथ पर आकाश में लटका दिया जाऊँ, कि मेरा वक्षस्थल हजारों गोलियों का निशाना बन जाए, या मुझे समुद्र की गहराइयों में फेंक दिया जाए, या रेगिस्तान की बालुका पर मुझे नष्ट होने के लिए छोड़ दिया जाएँ यही मेरी सबसे बड़ी इच्छा है, यही मेरी सर्वोच्च अभिलाषा है, इसी से मेरी आत्मा को नवजीवन मिलता है, मेरे सीने के लिए यह मलहम की तरह है, यह मेरी आँखों की खास सांत्वना है। जहां तक तुम्हारा प्रश्न है, हे ईश्वर के प्रेमियों, उसके धर्म में अपने पगों को अडिग बनाओ, इतनी दृढ़ता से कि भले ही इस दुनिया को घोरतम संकट आक्रान्त कर लें लेकिन तुम डिगो नहीं। किसी भी स्थिति में, किसी भी बात से, तुम बेचैन न हो। तुम उच्च पर्वतों की तरह अपनी जगह सुदृढ़ रहो, ऐसे सितारों की तरह बनो जो जीवन के क्षितिज पर उदित होते हैं, एकता के सम्मिलन में प्रखर दीपक बनो, मित्रों की उपस्थिति में विनम्र और विनीत व्यक्ति बनो, अपने हृदय को निर्दोष रखो। तुम सब मार्गदर्शन के संकेत और देवत्व के प्रकाश बनो जो इस संसार से विरक्त हैं, जिन्होंने एक सुनिश्चित और सुदृढ़ सहारे को थाम रखा है, देश-विदेश में जो जीवन की चेतना का प्रसार कर रहे हैं, जो मुक्ति की नौका में आरूढ़ हो रहे हैं। तुम सब उदारता के दिवास्रोत बनो, अस्तित्व के रहस्यों के उदय-बिंदु बनो, ऐसे स्थल बनो जहां प्रेरणा अवतरित होती है, आभाओं के उदय-स्थल बनो, ऐसी आत्माएं बनो जो ’पवित्र चेतना’ से अनुप्राणित हैं, जो परमेश्वर के प्रेम से आप्लावित हैं, ’उसके’ सिवा अन्य सबसे अनासक्त हैं, जो मानवीय लक्षणों से परे पवित्र हैं, जो स्वर्ग के देवदूतों के विभूषणों से सुसज्जित हैं, ताकि इस नए काल में, इस विलक्षण युग में तुम उच्चतम अनुदानों को प्राप्त करने वाले बन सको। बहा के जीवन की सौगन्ध! इस परम करुणा को सिर्फ वही पा सकेगा जो इस संसार से अनासक्त है, वह जो दिव्य प्रेम का कैदी है, जो स्वार्थ और वासना से मुक्त है, जो हर दृष्टि से अपने परमेश्वर के प्रति सच्चा है, विनम्र और विनीत है, याचना-युक्त और अश्रुपूर्ण है, अपने प्रभु की उपस्थिति में समर्पित है।

200

हे मेरे आध्यात्मिक प्रियजनों! ऐसे समय जबकि परीक्षाओं और संकटों के महासिंधु में ज्वार उठ रहे थे और उसकी लहरें आकाश तक उठ रही थीं, जन असंख्य लोग हम पर आक्रमण कर रहे थे और आततायी लोग हमारे साथ घोर प्रपंच रच रहे थे। ऐसे समय में हमें बदनाम करने पर आमादा लोगों के एक समूह ने हमारे निर्दय भाई के साथ संधी करके एक ऐसा विस्तृत लेख प्रस्तुत किया जो कलंकित करने वाले आरोपों से भरा था और जिसमें हमें अभियोग और अवनिंदा का पात्र बनाया गया।

इस तरह उन्होंने सरकारी प्राधिकारियों के कान खड़े कर दिए और उन्हें भ्रमित कर दिया और स्पष्ट है कि उसके बाद, इस जर्जर किले में, इस कैदी की क्या हालत हुई और उसे कैसी घोर और अवर्णनीय हानि पहुंचाई गई। इन सबके होते हुए भी, यह बेघर कैदी अपने अंतर्मन में शांत बना रहा, अनुपम परमेश्वर में अपनी आस्था रखे हुए और इस उत्कंठा के साथ कि ईश्वर के प्रेम के पथ पर और कितनी यातनाएँ आ सकती हैं। क्योंकि हमारी दृष्टि में, घृणा के आघात उस परमात्मा की ओर से मोतियों के उपहार हैं और इस संसार का जहर आरोग्यकारी घूंट।

जब अमेरिकी मित्रों[[62]](#footnote-62) के पास से हमारे पास उनका पत्र पहुंचा तो हमारी ऐसी ही स्थिति थी। वे एक साथ संविदा से बंधे थे, जैसाकि उन्होंने लिखा, कि वे हर विषय में एक बने रहेंगे और सभी हस्ताक्षरकर्ताओं ने वचन दिया था कि वे ईश्वर के प्रेम के मार्ग पर हर त्याग करेंगे और इस तरह अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे। उसी क्षण जब यह पत्र और उसके अंत में दिए गए हस्ताक्षरों को पढ़ा गया, अब्दुल बहा को ऐसे अपार आनन्द की अनुभूति हुई जिसका वर्णन कोई लेखनी नहीं कर सकती और उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि मित्रों का पोषण एक ऐसे देश में हुआ है जो परस्पर पूर्ण प्रेम के साथ रहेंगे, अत्यन्त बंधुता के साथ, पूर्ण सहमति के साथ, एक-दूसरे के साथ घनिष्ठ रूप से, अपने प्रयासों में एकताबद्ध।

यह घनिष्ठता जितनी ही प्रबल होगी, हर चीज उतनी ही खुशनुमा और बेहतर हो जाएगी, क्योंकि वह परमात्मा की सम्पुष्टियों को आकर्षित करेगी। यदि प्रभु परमेश्वर के सखाओं को उच्च लोक के सहचरों की कृपा प्राप्त करने की आशा है तो इस घनिष्ठता को और अधिक मजबूत बनाने के लिए उन्हें हर सम्भव प्रयास करना होगा, क्योंकि बंधुत्व और एकता के लिए की गई ऐसी संधि ’जीवन के वृक्ष’ को सींचने के समान है: यह अनन्त जीवन है।

हे ईश्वर के प्रेमियों! अपने कदमों को अडिग बनाओ, एक-दूसरे को दिए गए वचन को पूरा करो, ईश्वर के प्रेम की मधुर सुरभि को देश-विदेश में फैलाने और उसकी शिक्षा के संस्थापन के लिए सौहार्द के साथ आगे बढ़ते रहो, जब तक कि तुम इस संसार की मृतप्राय काया में आत्मा की सांस न फूंक दो और हर बीमार व्यक्ति के भौतिक और आध्यात्मिक दायरों में तुम सच्चा आरोग्य न उत्पन्न कर दो। हे ईश्वर के प्रेमियों! यह संसार एक मानव की तरह है जो ब्याधिग्रस्त और निःशक्त हो चुका है, जिसके नेत्र अब देखने में समर्थ नहीं रहे, जिसके कान बहरे हो चुके हैं, जिसकी समस्त शक्तियाँ जा चुकी हैं। इसलिए ईश्वर के सखाओं को चाहिए कि वे सक्षम वैद्य की तरह हों जो, पवित्र शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए, इस रोगी को पुनः स्वस्थ कर सकें। ईश्वर ने चाहा तो सम्भवतः यह दुनिया ठीक हो जाएगी और सदा-सदा के लिए स्वस्थ, और इसकी निस्पंद हो चुकी क्षमताएँ वापस आ जाएँगी और इसके व्यक्तित्व में ऐसी ऊर्जा, ऐसी ताजगी और ऐसी हरियाली छा जाएगी कि वह सौम्यता और भव्यता से कांतिमान हो उठेगा।

सबसे पहला इलाज है लोगों को सही मार्गदर्शन देना ताकि वे ईश्वर की ओर उन्मुख हो सकें और उसके परामर्शों को सुन सकें और सुनने में सक्षम कानों और देखने में सक्षम आंखों के साथ आगे बढ़ सकें। जब यह तेजी से असर करने वाली घूंट उनको पिला दी जाएगी तो उसके बाद, दिव्य शिक्षाओं के अनुसार उन्हें उच्च लोक के सहचरों के गुणों और व्यवहारों को अर्जित करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए और आभा-साम्राज्य की समस्त उदार कृपाओं को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें चाहिए कि अपने हृदय में वे घृणा और वैमनस्य का लेश मात्र भी न रहने दें, और उन्हें सत्यनिष्ठ और ईमानदार होने का प्रयास करना चाहिए, समस्त मानवजाति के प्रति शांति के प्रतीक और स्नेहपूर्ण - ताकि पूरब और पश्चिम ये दोनों ही दो प्रेमियों की तरह एक-दूसरे को आलिंगन में ले लें, ताकि इस धरती पर से घृणा और शत्रुता का नामो-निशान मिट जाए और उनकी जगह विश्वव्यापी शांति की सुदृढ़ स्थापना हो जाएँ।

हे ईश्वर के प्रेमियों! सभी लोगों के प्रति दयालु बनो, हर व्यक्ति का ध्यान रखो, लोगों के मनो-मस्तिष्क को शुद्ध बनाने के लिए हरसम्भव प्रयास करो, हर आत्मा को प्रफुल्लित करने का प्रयत्न करो। हर शस्य-भूमि के लिए कृपा की फुहार बनो, हर वृक्ष के लिए जीवनदायी जल, मानवजाति की इन्द्रियों के लिए मोहक कस्तूरी बनो और ब्याधिग्रस्त लोगों के लिए ताजी, नवजीवनकारी बयार। सभी प्यासों के लिए सुमधुर जल बनो, दिग्भ्रमितों के लिए स्नेहिल मार्गदर्शक, अनाथों के लिए माता-पिता बनो, वयोवृद्धों के लिए प्रेम से भरे बेटे और बेटियाँ, और गरीबों के लिए प्रचुर खजाना बनो। प्रेम और सौहार्दपूर्ण बंधुता को स्वर्ग का आह्लाद समझो और घृणा एवं शत्रुता को नरक की यातना के सदृश।

अपने शरीर को विलासिता में मग्न मत करो, बल्कि अपनी सम्पूर्ण आत्मा से कार्य में जुट जाओ, और हृदय की सम्पूर्णता से पुकार करते हुए ईश्वर से सहायता और दया की याचना करो। इस तरह तुम इस संसार को ’आभा-स्वर्ग’ में बदल सकोगे और इस भूमण्डल को उच्च लोक की लीला-भूमि। बस अगर तुम केवल अपना प्रयास आरंभ कर दो तो यह सुनिश्चित है कि ये आभाएँ प्रकाशित हो उठेंगी, दया के ये बादल अपनी फुहारें बरसाने लगेंगे, ये जीवनदायिनी बयारे बह उठेंगी, मोहक सुरभि वाली इस कस्तूरी का दूर-दूर तक प्रसार हो सकेगा।

हे ईश्वर के प्रेमियों! इस पवित्र स्थल पर क्या होने जा रहा है इसका विचार मत करो और जरा भी चिन्तित न हो। जो भी होगा उसका परिणाम उत्तम ही होगा, क्योंकि कष्ट उदारता का सार-तत्व है और दुःख एवं मुसीबत विशुद्ध दया हैं और वेदना मन की शांति है और त्याग करने का अर्थ है कुछ प्राप्त करना और जो कुछ भी सामने आने वाला है वह ईश्वर की कृपा से ही निर्गत हुआ है।

इसलिए, अपने दायित्व पर ध्यान दो, लोगों का मार्गदर्शन करो और उन्हें अब्दुल बहा के तौर-तरीकों की शिक्षा दो। मानवजाति को आभा-साम्राज्य से प्राप्त यह आनंददायक समाचार दो। रात हो या दिन, विराम न करो। सुख की क्षणभर भी तलाश न करो। अपनी पूरी शक्ति से ये शुभ समाचार लोगों के कानों तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत रहो। ईश्वर के प्रति अपने प्रेम और अब्दुल बहा के प्रति अपने स्नेह के निमित्त, हर कष्ट, हर दुःख, को स्वीकार करो। आक्रामक व्यक्ति के ताने सहो, शत्रुओं की गालियाँ बर्दाश्त करो। अब्दुल बहा के चरण-चिह्नों पर चलो और ’आभा सौन्दर्य’ के पथ का अनुगमन करो और हर क्षण अपने जीवन को उत्सर्ग करने की उत्कंठा से भरे रहो। दिवानक्षत्र की तरह जगमगाओ, समुद्र की तरह उद्वेलित रहो, स्वर्ग के बादलों की तरह मैदानों और पहाड़ियों पर जीवन का अभिसिंचन करते रहो, बासन्ती हवा की तरह मानव रूपी वृक्षों को ताजगी देते रहो और उन्हें फलने-फूलने योग्य बनाओ।

201

हे तू परमात्मा के प्रेम से स्फूर्जित! ’सत्य का सूर्य’ इस विश्व के क्षितिज पर उदित हो चुका है और उसने मार्गदर्शन की अपनी किरणें बिखेर दी हैं। अनन्त कृपा के प्रवाह में कोई बाधा नहीं है और उस असीम कृपा का एक फल है विश्वव्यापी शांति। तुम आश्वस्त रहो कि चेतना के इस युग में ’शांति का साम्राज्य’ विश्व के शिखर पर अवश्य ही अपना वितान तानेगा और ’शांति के राजकुमार’ के आदेश हर व्यक्ति की नसों और धमनियों पर ऐसा प्रभुत्व जमाएंगे कि धरती के सभी राष्ट्र उसकी शरणदायिनी छाँह तले आ जाएँगे। वह सच्चा ’गड़ेरिया’ अपनी भेड़ों को प्रेम और सत्य और एकता के फव्वारों से पान करने को देगा। हे ईश्वर की सेविका! सबसे पहले लोगों के बीच शांति की स्थापना आवश्यक है और अंततः वह राष्ट्रों के बीच शांति की ओर ले जाएगी। अतः, हे बहाई लोगों, अपनी पूरी शक्ति से, ईश्वर की वाणी की सामर्थ्‍य के माध्यम से, सच्चे प्रेम, आध्यात्मिक संवाद और लोगों के बीच स्थायी बंधुत्व की स्थापना के लिए प्रयासरत हो जाओ।

202

हे सत्य के प्रेमीजनों, हे मानवजाति के सेवकों! तुम्हारे विचारों और तुम्हारी आशाओं के पालन के माध्यम से मुझे मोहक भावाभिव्यक्तियाँ प्राप्त हुई हैं और इसलिए मैं अपने भीतर से इन शब्दों को अंकित करने के लिए उत्प्रेरित हुआ हूँ।

तुम देख रहे हो कि दुनिया किस तरह अपने आप में विभक्त हो चुकी है, कितने भूभाग रक्तरंजित हो चुके हैं और उसकी धूल के ऊपर मानव-लहू की परतें जम गई हैं। संघर्ष की ज्वालाएँ इतनी ऊँची उठ चुकी हैं जितनी कि प्राचीन युग में कभी नहीं उठीं और न ही कभी मध्य युग में और न ही हाल की शताब्दियों में ही कभी ऐसा घृणित युद्ध हुआ है - एक ऐसा युद्ध जो एक चक्की की तरह है जिसमें अनाज की जगह मानव की खोपड़ियां पीसी जा रही हैं। नहीं, बल्कि इससे भी बुरा, क्योंकि इसमें फलते-फूलते राष्ट्र जलकर राख हो गए हैं, शहरों को नेस्तनाबूद कर दिया गया है और ऐसे कई गांव जो पहले समृद्ध बने हुए थे अब खण्डहर में तब्दील हो चुके हैं। कई पिताओं ने अपने बेटों को खो दिया है और कई बेटों ने अपने पिताओं को। माताओं ने अपने मरे हुए बच्चों के लिए जी भर विलाप किया है। बच्चे अनाथ हो गए हैं, औरतों को बेघर होकर भटकने पर मजबूर कर दिया गया है। हर पहलू से, मानवजाति काफी नीचे गिर चुकी है। पिता से रहित बच्चों का उच्च स्वर में विलाप सुनाई पड़ रहा है, माताएँ जोर-जोर से दहाड़ें मारकर रो रही हैं जिसकी आवाज आकाश को भेद रही है।

और इन सभी त्रासदियों का जन्‍म हुआ है पूर्वाग्रह सेः नस्ल और राष्ट्र का पूर्वाग्रह, धर्म का, राजनीतिक विचारधारा का पूर्वाग्रह और इस पूर्वाग्रह के मूल में है अतीत का अंधानुकरण - धर्म का अनुकरण, नस्लीय विचारधाराओं का अनुकरण, राष्ट्रीय पक्षधारिता की नकल, राजनीतिक अनुकरण। जबतक अतीत की यह अंधी नकल चलती रहेगी तबतक सामाजिक व्यवस्था की आधारशिलाएं हवाओं में बिखरती रहेंगी, तब तक मानवजाति निरंतर घोरतम संकट का सामना करती रहेगी।

हमारे इस प्रकाशित युग में, जबकि वे सच्चाइयाँ जो अभी तक ज्ञात नहीं थीं खुलकर सामने आ चुकी हैं, और रचित वस्तुओं के भेद उजागर कर दिए गए हैं और जब ’सत्य का प्रभात’ उदित हो चुका है और उसने विश्व को प्रकाशित कर दिया है, तो क्या यह स्वीकार किया जा सकता है कि मनुष्य ऐसे भयावह युद्धों में निरत रहे जो मानवजाति को विनाश के कगार पर ला रहे हैं? नहीं, प्रभु परमात्मा की सौगन्ध! ईसा मसीह ने समस्त मानवजाति को शांति और सौहार्द का आह्वान सुनाया थाः “अपनी तलवार को म्यान में रख लो।“

ऐसा ही परामर्श और आदेश था प्रभु यीशु का और फिर भी आज ईसाई लोगों ने तलवारों को अपनी म्यानों[[63]](#footnote-63) से बाहर निकाला है। ऐसे कृत्यों और ’ईशवाणी’ (गॉस्पेल) के सुस्पष्ट पाठ के बीच यह कितना बड़ा अन्तर है!

आज से साठ साल पहले, फारस के आकाश के ऊपर बहाउल्लाह एक ’दिवानक्षत्र’ की तरह उदित हुए। उन्होंने यह घोषणा की कि विश्व के आकाश पर अंधकार छाया हुआ है, और कहा कि यह अंधेरा किसी अपशकुन का संकेत है, और यह कि भीषण युद्ध आने वाला है। अक्का के बंदीगृह से उन्होंने जर्मनी के सम्राट को अत्यंत स्पष्ट शब्दों में सम्बोधित किया और उसे कहा कि एक भयंकर युद्ध आने वाला है और उसका शहर बर्लिन चीख और विलाप से भर उठेगा। इसी तरह उन्होंने तुर्की के सम्राट को लिखा, हालाँकि वे उसी सुल्तान के कारागार में - अक्का के कैदखाने में - बंद थे और उसे उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि एक आकस्मिक और क्रांतिकारी बदलाव के जरिये कॉस्टैंटिनोपल पर कब्जा कर लिया जाएगा - एक ऐसी घोर क्रांति के माध्यम से कि उस शहर के बच्चे और औरतें जोर-जोर से विलाप कर उठेंगी। संक्षेप में, उन्होंने सभी सम्राटों और राष्ट्राध्यक्षों को ऐसे ही शब्दों में सम्बोधित किया, और वे सारी बातें ठीक वैसे ही घटित हुईं जैसा उन्होंने पहले से बतलाया था।

उनकी सशक्त लेखनी से युद्ध की रोकथाम के लिए अनेक शिक्षाएँ प्रस्फुटित हुई हैं और उनका प्रसार दूर-दूर तक हुआ है।

पहला है सत्य की स्वतंत्र खोज, क्योंकि अतीत का अंधानुकरण मस्तिष्क को पंगु बनाकर रख देगा। लेकिन जब हर कोई सत्य के बारे में जिज्ञासा करेगा तो समाज अतीत को निरंतर दोहराते रहने के अंधकार से मुक्त हो जाएगा।

उनका दूसरा सिद्धान्त है मानवजाति की एकता का सिद्धान्तः यह कि सभी लोग ईश्वर की भेड़ों की तरह हैं और ईश्वर उनका प्रेम भरा गड़ेरिया है जो किसी के भी साथ पक्षपात किए बिना हर किसी की सुकोमल देखभाल करता है। “दयालु ईश्वर[[64]](#footnote-64) की सृष्टि में तुम कोई भी भेदभाव नहीं देख सकते;” सब उसके सेवक हैं, सब उसी की दया की याचना करते हैं।

उनकी तीसरी शिक्षा यह है कि धर्म एक सुदृढ़ दुर्ग है, लेकिन उसे चाहिए कि वह प्रेम उत्पन्न करे न कि द्वेष और घृणा। यदि यह दुर्भावना, विद्वेष और घृणा की दिशा में ले जाए तो उसका कोई मूल्य नहीं है। धर्म एक उपचार है और यदि उपचार ही रोग का संवाहक बन जाए तो उसे एक तरफ रख दो। और फिर, जहाँ तक धार्मिक, नस्लीय, राष्ट्रीय और राजनीतिक पक्षपात की बात हैः ये सभी पूर्वाग्रह मानव जीवन के चरम मूल पर प्रहार करने वाले हैं, उनमें से प्रत्येक रक्तपात तथा विश्व के विनाश का संवाहक है। जब तक ये पूर्वाग्रह बने रहेंगे तब तक लगातार एक से एक भीषण युद्ध होते रहेंगे। इस स्थिति से बचने के लिए विश्वव्यापी शांति आवश्यक है। इसकी स्थापना के लिए एक वैश्विक न्यायालय संस्थापित होना चाहिए जो सभी सरकारों और राष्ट्रों का प्रतिनिधि होगा। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के सभी मुद्दे उसके पास अग्रेषित किए जाएँगे और सभी इस न्यायालय के निर्णय का पालन करेंगे। यदि कोई भी सरकार या राष्ट उसकी अवज्ञा करे तो सम्पूर्ण विश्व उसके खिलाफ उठ खड़ा हो जाएँ बहाउल्लाह की एक अन्य शिक्षा है स्त्री और पुरुष की एकता और सभी अधिकारों में उनकी समान भागीदारी। और ऐसी ही अनेक शिक्षाएँ हैं। अब यह स्पष्ट हो चुका है कि ये शिक्षाएँ संसार की आत्मा और प्राण हैं। तुम लोग जो कि मानवजाति के सेवक हो, मानवजाति को इस अंधकार और इन पूर्वाग्रहों से बाहर लाने का पूरे हृदय से प्रयास करो जो मानवीय स्थिति और प्राकृतिक जगत से सम्बंधित हैं, ताकि मानवजाति ईश्वर के प्रकाश के लोक में अपना मार्ग ढूंढ़ सके। ईश्वर की स्तुति हो, तुम संसार के विभिन्न विधानों, संस्थाओं और सिद्धान्तों से सुपरिचित हो, आज के युग में इन दिव्य शिक्षाओं से कम कुछ भी मानवजाति की शांति और सुस्थिरता सुनिश्चित नहीं कर सकती। इन शिक्षाओं के बिना, यह अंधकार कभी खत्म नहीं होगा, ये जीर्ण बीमारियाँ कभी समाप्त नहीं होंगी। नहीं, बल्कि दिनानुदिन वे बढ़ते ही जाएँगे। पराजित शक्तियां आक्रोशित करती रहेंगी। वे ऐसे सभी उपाय करेंगी जिनसे युद्ध की ज्वाला फिर से सुलगाई जा सके। आंदोलन, चाहे वे नए हों या विश्वव्यापी, अपनी रूपरेखा को और प्रबल बनाने का भरसक प्रयास करेंगी। वामपंथी आंदोलन और अधिक महत्व ग्रहण करेगा। उसके प्रभाव का विस्तार होगा। अतः परमात्मा की सहायता से, प्रकाशित दिलो-दिमाग से, स्वर्गिक शक्ति से सम्पन्न होकर, तू प्रयास कर कि तू मनुष्य के लिए ईश्वर का अनुदान बन सके और सभी मनुष्यों को शांति और सांत्वना का आह्वान सुना सके।

203

हे तू जो संविदा के प्रति मोहित है! ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ ने इस सेवक को वचन दिया है कि ऐसी आत्माओं को खड़ा कर दिया जाएगा जो मार्गदर्शन के मूर्त रूप होंगे और उच्च लोक की सभा की ध्वजाएँ, ईश्वर की एकमेवता के प्रदीप और उन स्वर्गों में जहाँ केवल परमेश्वर का साम्राज्य है, वे उसके विशुद्ध सत्य के नक्षत्र होंगे। वे नेत्रहीनों को दृष्टि देने वाले होंगे, वे मृतकों में नवजीवन का संचार करेंगे। वे धरती के सभी लोगों का सामना करेंगे, वे सात आसमानों के प्रभु के प्रमाणों के साथ अपने धर्म की वकालत करेंगे। मेरी आशा है कि अपनी कृपालुता से वे शीघ्र ही ऐसे लोगों को खड़ा करेंगे ताकि उनके धर्म को उदात्त बनाया जा सके। इस कृपा को आकर्षित करने वाला चुम्बक है संविदा में दृढ़ता। ईश्वर का धन्यवाद कर कि तुम अत्यंत सुदृढ़ हो। हे ईश्वर, अपनी वाणी को उन्नत बनाने और जो भी असत्य और भ्रामक है उसका खण्डन करने, सत्य के संस्थापन, पवित्र श्लोकों देश-विदेश तक फैलाने, आभाओं को प्रकट करने और सच्चरित्र लोगों के हृदयों में प्रभात के प्रकाश को उदित करने में अपने सेवक की सहायता कर। तू सत्य ही उदार है, क्षमाशील है।

204

हे पवित्र ’वृक्ष’ में प्रज्‍वलित अविनाशी ज्वाला के अमरपक्षी! बहाउल्लाह, ऐसा हो कि मेरा जीवन, मेरी आत्मा, मेरी चेतना उनके विनम्र सेवकों पर बलि हो जाए ने, इस धरती पर अपने जीवन के अन्तिम दिनों में, एक अत्यंत ही मुखर वचन दिया था कि परमात्मा की कृपा के प्रवाह से और उच्च लोक में स्थित उनके साम्राज्य की सहायता से ऐसे लोग उठ खड़े होंगे और ऐसी पावन चेतनाओं का उदय होगा जो, नक्षत्रों की तरह, दिव्य मार्गदर्शन के आकाश को विभूषित करेंगे, स्नेहिल दयालुता और उदारता के दिवानक्षत्र को प्रकाशित करेंगे, ईश्वर की एकता के संकेतों को झलकाएंगे, विशुद्धता और पवित्रता के प्रकाश से जगमगाएंगे, जिन्हें दिव्य प्रेरणा का पूर्ण अंशदान प्राप्त होगा, जो धर्म की पावन मशाल को उन्नत करेंगे, जो चट्टान की तरह सुदृढ़ और पर्वत की तरह अडिग होकर खड़े होंगे और जो उस प्रभु के प्रकटीकरण के आकाश में नक्षत्र बनकर उभरेंगे, उसकी कृपा के सशक्त माध्यम होंगे, ईश्वर के उदार स्नेह के अनुदान के साधन होंगे, जो एकमेव सत्य ईश्वर के नाम को बुलन्द करने वाले अग्रदूत होंगे और जो विश्व की सर्वश्रेष्ठ आधारशिला के संस्थापक होंगे। वे लोग अहर्निश प्रयास करेंगे, न उन्हें परीक्षाओं की चिंता होगी न दुःखों की, जो अनवरत रूप से कार्य करेंगे, हर आराम और सुख-चैन की तिलांजलि देने वाले होंगे, अनासक्त और पवित्र होंगे और जो अपने जीवन के इन नाशवान क्षणों को दिव्य सुरभि के प्रसार और ईश्वर के पावन शब्दों को उदात्त बनाने में खपा देंगे। उनके मुखड़े स्वर्गिक आह्लाद की झलक दिखाएंगे और उनके हृदय आनन्द से भरे होंगे। उनकी आत्माएँ प्रेरित आत्माएँ होंगी और उनका आधार सुरक्षित। वे इस पूरी दुनिया में फैल जाएँगे और देश-प्रदेशों की यात्राएँ करेंगे। वे हर सभा में अपनी आवाज बुलन्द करेंगे और हर सम्मिलन को विभूषित एवं नवजीवित करेंगे। वे हर भाषा में बोलेंगे और हर निगूढ़ अर्थ की व्याख्या करेंगे। वे प्रभु-साम्राज्य के रहस्यों को उजागर करेंगे और हर किसी के समक्ष ईश्वर के संकेतों को झलकाएंगे। हर सभा के बीच वे एक मोमबत्ती की तरह प्रकाशित होंगे और हर क्षितिज के ऊपर एक तारे की तरह जगमगाएँगे। उनके हृदय रूपी फुलवारी से प्रवाहित होने वाली मृदुल बयारें लोगों की आत्माओं को सुवासित करेंगी और उन्हें नवजीवन देंगी और उनके मस्तिष्क के प्रकटीकरण फव्वारों की तरह इस विश्व के लोगों और राष्टों में नई शक्ति का संचार करेंगे। मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं, बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहा हूं कि ये पवित्र आत्माएँ अवतरित हों और इसके बावजूद पता नहीं उनके आने में अभी कितना विलम्ब होगा? हर सुबह, हर शाम यही मेरी प्रार्थना और भावप्रवण याचना है कि ये जगमगाते हुए सितारे शीघ्र ही इस संसार पर अपनी कांति बिखेरें, कि उनकी पावन मुखमुद्राएँ नाशवान आँखों को शीघ्र ही देखने को मिलें, कि दिव्य सहायता के सेनानी अपनी विजय प्राप्त करें, और उच्च लोक में परमात्मा के महासिंधु से आलोड़ित होती कृपा की लहरें समस्त मानवजाति के ऊपर प्रवाहित हों। तुम लोग भी प्रार्थना करो और परमात्मा से याचना करो कि ’पुरातन सौन्दर्य’ की उदारतापूर्ण सहायता से ये आत्माएँ इस संसार में प्रकट हों। ईश्वर की महिमा तुझ पर विराजती है, और उस पर जिसका मुखड़ा उस अनन्त ज्योति से आलोकित है जो उस प्रभु की गरिमा के साम्राज्य से प्रकाशित होती है।

205

हे सम्मानित जनों! प्राचीन और जीर्ण हो चुके तौर-तरीकों का सतत अनुकरण करके यह संसार घोर अंधेरी रात की तरह अंधकारमय हो चुका है। दिव्य शिक्षाओं की बुनियादी बातें स्मृति के पार जा चुकी हैं, उनकी मूलभूत बातों को बिल्कुल भुला दिया गया है और लोग भूसों को लिए बैठे रहे। बहुत पहले जीर्ण-जर्जर हो चुके वस्त्रों की तरह, राष्ट्र दयनीय दशा में पहुंच चुके थे। इस घोर अंधकार में, बहाउल्लाह की शिक्षाओं की आभा प्रकट हुई। उन्होंने संसार को नए और सुन्दर वस्त्र पहनाएँ और वे नए वस्त्र हैं वे सिद्धान्त जो ईश्वर से हमें प्राप्त हुए हैं। अब एक नया युग आ चुका है और सृष्टि का नया जन्म हुआ है। मानवजाति को एक नया जीवन मिला है। पतझड़ बीत चुका है और नवजीवनकारी बसन्त आ चुका है। अब सभी वस्तुओं को नया बना दिया गया है। कलाओं और उद्योगों का नया जन्म हुआ है। विज्ञान के क्षेत्र में नए आविष्कार हुए हैं, नए अनुसंधान किए गए हैं। यहां तक कि मनुष्य की कई छोटी-मोटी बातें, जैसेकि उनके पहनावे और व्यक्तिगत हाव-भाव और यहां तक कि उनके अस्त्र-शस्त्र भी, नए हो चुके हैं। हर सरकार ने अपने कानूनों और प्रक्रियाओं की समीक्षा की है। आज हर चीज में नयापन आ रहा है। और इस समस्त नवीनता का स्रोत है ’साम्राज्य के प्रभु’ की विलक्षण कृपा और दया का नूतन प्रवाह जिसने पूरे विश्व को नया बना डाला है। इसलिए लोगों को चाहिए कि वे अपने पुराने ढर्रों और विचारों से बिल्कुल मुक्त हो जाएँ ताकि उनका पूरा ध्यान इन सिद्धान्तों पर केन्द्रित हो सके, क्योकि ये सिद्धान्त ही इस समय की रोशनी हैं और इस युग की सच्ची चेतना। जब तक इन शिक्षाओं को लोगों के बीच प्रभावी तरीके से नहीं फैलाया जाएगा, जब तक पुराने तरीके, पुरानी धारणाओं को भुलाया नहीं जाएगा, तब तक यह अस्तित्व का संसार शांति प्राप्त नहीं करेगा और न ही ’स्वर्गिक साम्राज्य’ की पूर्णताओं को ही प्रतिबिंबित कर सकेगा। असावधान लोगों को सजग बनाने, सोए हुओं को जगाने, अज्ञानियों को ज्ञान देने, नेत्रहीनों को देखने में सक्षम बनाने, बहरों को सुनने और मृतकों को पुनर्जीवित करने के लिए तुम सब पूरे हृदय से प्रयास करो। तुम्हारे योग्य यह है कि तुम ऐसी शक्ति, ऐसी सहिष्णुता दर्शाओ कि देखने वाले आश्चर्यचकित रह जाएँ। प्रभु-साम्राज्य की सम्पुष्टियां तुम्हारे साथ हैं। तुझ पर उस सर्व-गरिमामय की गरिमा विराजे!

206

स्तुति हो ’उसकी’ जिसने अंधकार को छिन्न-भिन्न कर दिया है, जिसने रात्रि का निशान मिटा डाला है, जिसने आवरणों को खिसका दिया है और पर्दों को फाड़ डाले हैं और तब ’जिसका’ प्रकाश जगमगा उठा, ’जिसके’ चिह्न और संकेत दूर-दूर तक प्रसारित हुए और उसके रहस्य उजागर हुए। तब ’उसके’ बादल फटे और धरती को ’उसकी’ उदार कृपाओं और उसके अनुदानों से सराबोर कर गए और सभी वस्तुओं को बरखा की फुहार में नहा दिया और ज्ञान की हरियाली तथा निश्चयात्मकता के कुमुद फूलों को प्रस्फुटित होने और आनन्द से झूम उठने को प्रेरित किया है, तब तक जब तक कि यह समस्त संसार उसकी पावनता से सुरभित न हो जाएँ नमन और स्तुति उन दिव्य यथार्थों के प्रति, उन पावन वन्य पुष्पों के प्रति, और उन पर आशीर्वाद एवं गरिमा विराजे, जो इस परमोच्च अनुदान, इस अपार कृपा, से प्रस्फुटित हुए हैं जो कि उपहारों और उदारताओं के उमड़ते हुए महासागर की तरह तरंगित हुए हैं जिसकी लहरें उच्च स्वर्गों तक प्रवाहित हो रही हैं।

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! परमोच्च पर्वत पर स्थित ’पावन वृक्ष’ में दिव्य प्रेम की अग्नि प्रज्ज्वलित करने के लिए स्तुति हो तुम्हारीः उस ’महावृक्ष’ में “जो न पूरब का है, न पश्चिम का”।[[65]](#footnote-65) वह अग्नि जो तब तक धधकती रही जब तक कि उसकी ज्वालाएँ उच्च लोक के ’समूह’ तक न पहुंच गई, और उससे उन यथार्थों को मार्गदर्शन का प्रकाश मिला और वे पुकार उठेः “हमने सत्य ही सिनाय पर्वत[[66]](#footnote-66) की ढलान पर एक अग्नि का बोध प्राप्त किया है।“

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! तू इस अग्नि को दिनानुदिन और अधिक प्रखर कर जब तक कि इसका विस्फोट इस पूरी धरती को स्पंदित न कर दे। हे मेरे स्वामी! अपने प्रेम का प्रकाश हर हृदय में प्रदीप्त कर लोगों की आत्माओं में अपने ज्ञान की चेतना का उच्छ्वास भर दे, अपनी एकमेवता के श्लोकों से उनके वक्षों को आह्लादित कर। उन्हें पुनर्जीवित कर जो अपनी कब्रों में दफन पड़े हैं, अहंकारियों को चेतावनी दे, पूरे विश्व में आनन्द का संचार कर, अपनी स्फटिक-स्वच्छ जलधाराएँ भेज और प्रकट आभाओं की सभा में वह प्याली प्रदान कर जो “कर्पूरी स्रोत[[67]](#footnote-67) से आसवित किया गया है।“ वस्तुतः, तू दाता है, क्षमाशील है, सदा दातार। तू सत्य ही दयालु है, करुणावान है।

हे ईश्वर के प्रेमियों! ’स्वर्ग’ की मदिरा-प्याली लबालब भरी है, ईश्वर की संविदा का भोज उत्सवी आलोक से आलोकित है, सभी अनुदानों का प्रभात उदित हो रहा है, कृपा की मृदुल बयारें बह रही हैं, और अदृश्य लोक से कृपाओं और उपहारों के शुभ समाचार आ रहे हैं। फूलों से जगमगाते मैदानों में दिव्य बसन्त ऋतु ने अपना खेमा गाड़ दिया है और जो आध्यात्मिक लोग हैं वे पूरबी बयारों द्वारा लाई गई चेतना की ’शबा’ से उठती सुमधुर सुगन्धों को ग्रहण कर रहे हैं। अब रहस्यमय बुलबुल अपना मधुर गान गा रही है और आभ्यंतरिक अर्थ की कलियाँ सौन्दर्य और लावण्य के साथ प्रस्फुटित हो रही हैं। मैदानी लवा पक्षी इस उत्सव के संगीतकार बने हुए हैं और अपनी विलक्षण आवाज बुलन्द करके वे आलाप कर रहे हैं और उच्च लोक के ’सहचरों’ को यह माधुर्य सुना रहे हैं: “आशीर्वादित हो तुम सब! शुभ समाचार! शुभ समाचार!” और वे आभा स्वर्ग के हर्षित दीवानों को छक कर पीने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, वे अलंकृत रूप से स्वर्गिक वृक्ष पर विराजमान हैं और अपने पावन आलाप सुना रहे हैं। यह सब इसलिए कि असावधानी के रेगिस्तान में भटकते हुए थके-मांदे लोग और बेपरवाही की मरुभूमियों में राह भूल बैठे निष्प्रभ जन एक बार फिर से जीवन के स्पंदन से भर सकें और प्रभु परमात्मा के सहभोजों में उपस्थित हो सकें, आनन्द मना सकें। स्तुति हो उसकी! उसके धर्म की ख्याति पूरब और पश्चिम तक पहुंच चुकी है, और ’आभा-सौन्दर्य’ की शक्ति के शब्दों ने उत्तर और दक्षिण को स्फूर्त किया है। अमेरिकी महाद्वीप से उठी वह पुकार पवित्रता का समूह-गीत है, निकट और दूर-दूर से उठने वाला वह उच्च नाद जो उच्च लोक के सहचरों तक भी पहुंच रहा है वह है “या बहा उल आभा!” अब पूरब एक गौरव से प्रकाशित हो चुका है और पश्चिम गुलाब की तरह मधुर हो गया है, और सारी धरती कच्चे अम्बर (एम्बरग्रिस) से सुवासित हो उठी है और पवित्र समाधि पर बहने वाली हवाएँ कस्तूरी-गंध से भर उठी हैं। बहुत ही जल्द तुम सब यह देखोगे कि घोर अंधेरे में डूबे भूभाग भी प्रकाशित हो उठे हैं और यूरोप एवं अफ्रीका के महाद्वीप फुलबगिया तथा पुष्पित वृक्षों के वनों में बदल गए हैं। किन्तु इस ’दिवानक्षत्र’ का उदय फारस में हुआ था, और चूंकि सूर्य की आभा उस पूरब से पश्चिम पर फैली, अतः हमारी यह उत्कट आशा है कि प्रेम की अग्नि की लपटें उस भूभाग में और अधिक प्रबलता से उठनी चाहिए और वहां इस पवित्र धर्म की आभा और अधिक प्रखर होनी चाहिए। प्रभुधर्म का आंदोलन उस भूभाग की आधारशिलाओं को हिला कर रख दे, ’उनकी’ वाणी की आध्यात्मिक शक्ति स्वयं को इस तरह प्रकट करे कि ईरान विश्व-कल्याण और शांति की धुरी और केंद्र बन जाएँ ईरान से उत्पन्न दृढ़ता और सद्भाव, प्रेम और विश्वास धरती के सभी जनों को अमरता प्रदान करे। काश कि वह देश लोक सुव्यवस्था, विशुद्धतम आध्यात्मिकता, विश्व-शांति की ध्वजा उच्चतम शिखरों पर फहराए। हे परमात्मा के प्रियजनों! इस बहाई धर्मयुग में ईश्वर का धर्म विशुद्ध चेतना है। उसका धर्म इस भौतिक विश्व का नहीं है। यह धर्म संघर्ष या युद्ध के लिए नहीं आया है, न ही उपद्रव या शर्मनाक हरकतों के लिए, न ही यह अन्य धर्मों के साथ लड़ाई-झगड़े के मकसद से है और न ही राष्ट्रों के साथ किसी संघर्ष के लिए। इसकी एकमात्र सेना है ईश्वर का प्रेम, इसका एकमात्र आनन्द ’उसके’ प्रेम की स्वच्छ मदिरा, उसका एकमात्र युद्ध ’सत्य’ की व्याख्या, उसका एकमात्र धर्मयुद्ध अड़ियल ’स्व’ के खिलाफ, मानव-हृदय के शैतानी प्रलोभनों के विरुद्ध। इसकी विजय है समर्पित होना और मान जाना और निःस्वार्थ होना ही इसकी अनन्त गरिमा है। संक्षेप में कहें तो यह चेतना-दर-चेतना हैः जब तक जरूरी न हो तब तक मिट्टी पर पड़े सांप को भी घायल न करो, मनुष्य को घायल करना तो दूर की बात है। और यदि तुम ऐसा कर सको तो यह करो कि तुझसे एक चींटी को भी खतरा न हो, अपने बंधु-बांधवों को हानि पहुँचाने की बात ही क्या है। तुम्हारा हर प्रयास सिर्फ इस कार्य के लिए होः जीवन और अमरता का स्रोत बनना, हर मानव-आत्मा के लिए शांति, तसल्ली और खुशी की प्रेरणा बनना - चाहे वह सुपरिचित हो या अजनबी, तुम्हारा विरोधी हो या पक्षधर। तुम उसके स्वभाव की पवित्रता या अपवित्रता का विचार न करो: तुम परमेश्वर की उस दया पर दृष्टि डालो जो सबको अपने दायरे में समेट लेती है - वह परमात्मा जिसकी कृपा के प्रकाश ने समस्त धरती और उसके सभी निवासियों को अपना लिया है और जिसकी उदार कृपा की अपारता में मूर्ख और ज्ञानी दोनों ही निमग्न हैं। अजनबी और मित्र दोनों ही उसकी कृपा की मेज के पास बैठे हैं। अनुयायियों की तरह ही, ईश्वर से इन्कार करने वाला उससे विमुख हुआ व्यक्ति भी - ये दोनों ही - एक ही समय अपनी अंजलि में उसके अनुदानों के सागर से पान करते हैं। ईश्वर के प्रियजनों का कर्त्‍तव्‍य है कि वे उस प्रभु की सर्वव्यापी करुणा के चिह्न और संकेत बनें तथा उसकी उत्कृष्ट कृपा के मूर्त रूप। सूर्य की तरह, उन्हें उद्यान और कचरे के ढेर दोनों पर ही अपनी किरणें बिखेरनी चाहिए और बासन्ती बादलों की तरह उन्हें फूल और कांटों दोनों को ही अपनी बरखा की फुहारों से नहला देना चाहिए। उन्हें सिर्फ प्रेम और निष्ठा के लिए प्रयास करना चाहिए, उन्हें दयाहीनता के मार्ग का अनुसरण नहीं करना चाहिए, उनका वार्तालाप मैत्री और शांति के रहस्यों में निबद्ध होना चाहिए। सदाचारी लोगों के ये ही आभूषण होते हैं, ये ही उन लोगों के विशिष्ट गुण हैं जो ’उसकी’ दहलीज के सेवक हैं। ’आभा सौन्दर्य’ ने अत्यंत कष्टदायक संकटों को झेला। उन्होंने अनगिनत पीड़ाएँ और बुराइयाँ झेलीं। उन्हें पल भर को भी शांति नहीं मिली, कभी उन्होंने चैन की सांस नहीं ली। वे रेगिस्तानी बालुकाओं, पहाड़ों की ढलानों पर बेघर भटकते रहे, उन्हें एक किले में बंद रखा गया, उन्हें कालकोठरी में कैद किया गया। लेकिन उनके लिए एक मामूली चटाई भी गरिमा की अनन्त सिंहासन-स्थली थी और उनकी भारी जंजीरें किसी सम्राट के गलहार की तरह। दिन-रात उनके सिर पर तलवार घूमती रहती थी और हर क्षण वे सलीब पर अपने प्राण न्यौछावर करने के लिए प्रस्तुत थे। उन्होंने यह सबकुछ इसलिए सहन किया कि वे इस संसार को शुद्ध बना सकें और इसे प्रभु परमेश्वर की सुकोमल दया से अलंकृत कर सकें, ताकि वे इसे अमन-चैन की स्थिति में ला सकें, ताकि संघर्ष और आक्रमण समाप्त हो सकें, बरछियों और कटारों की जगह प्रेमपूर्ण बंधुता ले सके, युद्ध और विद्वेश सुरक्षा, सौम्यता और प्रेम में बदला जा सके, ताकि घृणा और क्रोध की रणभूमियाँ आनन्द के उद्यान बन सकें और वे जगहें जहाँ रक्तरंजित सेनाएँ आपस में भिड़ती थीं वे आनन्द की सुरभित भूमियों में तब्दील हो सकें, ताकि युद्ध को लज्जास्पद समझा जाए और हथियार उठाने को घृणास्पद बीमारी माना जाए और हर कोई उनसे परहेज़ करे, ताकि विश्वव्यापी शांति उच्चतम पर्वतों पर अपने वितान तान सके और युद्ध का सदा-सदा के लिए इस धरती से विनाश हो जाएँ इसलिए ईश्वर के प्रियजनों को चाहिए कि वे श्रमपूर्वक, अपने प्रयासों के जल से सिंचित करके, आशा के इस तरुवर को पोषित और परिवर्द्धित करें। वे चाहे जिस भूभाग में रहते हों, उन्हें चाहिए कि वे पूरे हृदय से उन सभी लोगों को अपने मित्र बनाएँ, उनके सखा बनें, जो चाहे उनके निकट रहते हों या बहुत दूर। उन्हें चाहिए कि स्वर्गिक गुणों से विभूषित होकर वे परमात्मा की संस्थाओं और उसके धर्म का संवर्द्धन करें। वे कभी भी धैर्य न खोएँ, कभी निराश न हों, कभी स्वयं को कष्टों से उत्पीड़ित न समझें। उन्हें जितना ज्यादा विरोध मिले वे उतना ही अधिक अपनी सद्भावना दर्शाएँ। उन्हें जितनी अधिक यातना और संकटों का सामना करना पड़े, उन्हें उतनी ही उदारतापूर्वक कृपालुता की प्याली प्रदान करनी चाहिए। ऐसी ही है वह चेतना जो इस विश्व का जीवन बनेगी, उसके मूल में ऐसी ही प्रभा प्रसारित होती है: और जो कोई भी अन्य प्रकार का होगा और इससे अलग कुछ करेगा वह प्रभु की पावन दहलीज पर सेवा करने के योग्य नहीं है।

हे ईश्वर के प्रियजनों! सत्य का सूर्य अदृश्य आकाशों से प्रकाशित हो रहा है, तू इन दिनों का मोल समझ। अपने सिर ऊँचा कर और इन तेजी से बहते स्रोतों के बीच साइप्रस जैसा लम्बे पेड़ों की तरह उठ खड़ा हो। तू नज़्द के नरगिस फूलों की सुन्दरता से आह्लादित हो क्योंकि जब शाम हो जाएगी तो फिर वे फूल नहीं होंगे। हे तू ईश्वर के प्रियजनों! गुणगान हो उसका, संविदा की प्रखर ध्वजा दिनोंदिन ऊंचे से ऊँचे फहराती जा रही है और विश्वासघात का झंडा पलट दिया गया है और वह आधे पर झुक गया है। अभागे आक्रमणकारियों की चूलें हिला दी गई हैं, अब वे धूलिसात कब्रों की तरह हैं और उन अंधे कीड़े-मकोड़ों की तरह जो धरती के नीचे समाधि के एक कोने में रेंगते फिरते हैं और कभी-कभार उसकी सुराख से बाहर जंगली जानवरों की तरह अपनी गुर्राहट सुना कर चले जाते हैं। महिमा हो तेरी, हे परमेश्वर! अंधकार कभी प्रकाश पर विजय पाने की आशा कैसे कर सकता है, किसी जादूगर की डोरियाँ “खुलेआम सांप का नजारा कैसे दिखा” सकती हैं? “देखो, उसने उनके झूठे चमत्कारों[[68]](#footnote-68) को निगल लिया।“ अफसोस है उन पर! उन्होंने एक काल्पनिक कथा से स्वयं को भ्रमित कर रखा है और अपनी क्षुधा के मारे उन्होंने स्वयं अपना ही भक्षण कर डाला है। मानवीय अहंकार के बदले उन्होंने अनन्त गरिमा का त्याग किया है और अपने अड़ियल स्वार्थ की मांग पर उन्होंने दोनों ही लोकों में प्राप्त होने वाली महानता को तिलांजलि दे दी है। यह वह बात है जिसकी पूर्व-चेतावनी हमने तुम्हें दे दी है। बहुत ही जल्द तुम मूर्खों को अपूरर्णीय क्षति की स्थिति में देखोगे।

हे मेरे स्वामी और मेरी आशा! अपनी सामर्थ्‍यशाली संविदा में अडिग रहने, अपने प्रकट धर्म के प्रति निष्ठावान बने रहने और ’आभाओं की पुस्तक’ में तुमने उनके लिए जो आदेश विहित किए हैं उन्हें पूरा करने में तू अपने प्रियजनों की सहायता कर ताकि वे मार्गदर्शन की ध्वजाएँ और उच्च लोक के सहचरों के प्रदीप, तेरे असीम विवेक के निर्झरस्रोत और उच्च आकाश से जगमगाते पथदर्शक सितारे बन सकें।

तू, सत्य ही, अजेय है, सर्वसामर्थ्‍यमय, सर्वशक्तिमान है।

207

हे ’उदात्त सौन्दर्य’ की ओर उन्मुख होने वालों! दिन हो या रात, उषाकाल या अंधकार को आकर्षित करने वाला सूर्यास्त, और रात्रि के प्रथम प्रहर, अपने हृदय और मस्तिष्क के दायरे में मैं प्रभु के प्रियजनों को याद करता हूँ और सदा करता आया हूं। मैं उस प्रभु से याचना करता हूँ कि वह उन प्रियजनों को, जो उस शुद्ध और पवित्र भूमि में निवास करते हैं, अपनी सम्पुष्टियाँ और सभी वस्तुओं में उन्हें सफल परिणाम प्रदान करें ताकि अपने चरित्र, अपने व्यवहार, अपने शब्दों, अपनी जीवन-शैली, वे जो कुछ भी हैं और करते हैं उन सबमें ’वह’ उन्हें लोगों के बीच विशिष्टता प्राप्त करने में सहायता दे, कि ’वह’ उनके आनन्द-पूरित हृदयों और भाव-प्रवण एवं उत्कट प्रेम के साथ, ज्ञान और निश्चयात्मकता के साथ, दृढ़ता और एकता के साथ, उनके सौन्दर्यपूर्ण और प्रभासित मुखड़ों के साथ, विश्व समुदाय में उन्हें एकत्रित करे।

हे तुम प्रभु के प्रियजनों! यह दिवस एकता का दिवस है, समस्त मानवजाति को एक जगह एकत्रित करने का दिवस। “सत्य ही, ईश्वर उन्हें प्यार करता है जो एक सुदृढ़ दीवार की तरह, पंक्तिबद्ध कतारों में प्रभुधर्म के लिए युद्ध करते हैं। ध्यान दो, उसने कहा है “पंक्तिबद्ध कतारों में”[[69]](#footnote-69) अर्थात एकजुट और एक-दूसरे से सटे हुए, हर कोई एक-दूसरे को आबद्ध किए हुए, हर कोई अपने बंधुओं की सहायता करते हुए। पवित्र श्लोक में ’युद्ध करने’ की जो बात कही गई है उसका अर्थ इस महानतम धर्मयुग में यह नहीं है कि तलवार और भालों, बरछियों और तीरों के साथ निकल जाया जाए, बल्कि सच्चे इरादे, सच्चरित्रतापूर्ण नीयत, सहायक एवं प्रभावी परामर्श, दिव्य गुणों, सर्वशक्तिमान परमेश्वर को प्रिय लगने वाले कर्मों, स्वर्गिक विशेषताओं के हथियारों से लैस होकर ’युद्ध करना’। यह समस्त मानवजाति की शिक्षा, सबके लिए मार्गदर्शन, दूर-दूर तक चेतना की मधुर सुरभि के प्रसार, ईश्वर के प्रमाणों की घोषणा, निर्णायक और दिव्य दलीलों की प्रस्तुति, परोपकार के कार्यों में निरत होने की ओर संकेत देता है। जब कभी भी स्वर्ग की शक्तियों को आकर्षित करते हुए, पवित्र आत्माएँ ऐसे गुणों से विभूषित होकर उठ खड़ी होंगी और दल बनाकर एकता के साथ प्रयाण करेंगी तो उनमें से हर व्यक्ति एक हजार के बराबर होगा और उस महाशक्तिशाली समुद्र का उफान उच्च लोक के सहचरों की सैन्य-टुकड़ी के समान होगा। वह कितना बड़ा आशीर्वाद होगा कि जब सब एकजुट होंगे! जैसे कभी अलग-अलग बहती हुई जलधाराएँ, नदियाँ और स्रोत, बहते हुए फव्वारे और अकेली बूंदें एक जगह एकत्रित होंगी और सबको मिलाकर एक विशाल समुद्र बन जाएगा। और सबकी अंतर्निहित एकता इतनी प्रबल हो उठेगी कि जैसे ही एकता का वह महासागर उमड़ेगा, उसके ज्वार उठेंगे तो इन लोगों के काल्पनिक जीवन में व्याप्त परम्पराएँ, नियम, रीति-रिवाज, भेदभाव अकेली बूंदों की मिट जाएँगे। मैं ’पुरातन सौन्दर्य’ की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि उस समय अपार कृपा हर किसी को इस तरह परिव्याप्त कर लेगी और गरिमा का महासिंधु अपने तटों को इस तरह सराबोर कर देगा कि एक तुच्छ जलाशय भी सागर बन जाएगा और एक-एक बूंद अथाहता को प्राप्त कर लेगी।

हे ईश्वर के प्रियजनों! उस उच्च पद को पाने के लिए संघर्ष और प्रयास करो और एक ऐसी आभा तैयार करने के लिए जुट जाओ जो कि इस धरती के लोकों से भी सुदूर इस तरह प्रकाशित हो उठे कि उसकी किरणें उदय-बिंदु से अनन्तता के क्षितिज पर प्रतिबिंबित हों। यह प्रभुधर्म की मूल आधारशिला है। यह ईश्वर के विधान का ’रस’ है। यह परमेश्वर के प्रकटावतारों द्वारा खड़ी की गई सशक्त संरचना है। ईश्वर के लोक के सूर्य के उदित होने का यही कारण है। यही वह कारण है जिसके निमित्त परमात्मा स्वयं को अपने मानव-शरीर रूपी सिंहासन पर आरूढ़ करते हैं।

हे ईश्वर के प्रियजनों! देखो कि किस तरह उस ’परम उदात्त’[[70]](#footnote-70) ने - ऐसा हो कि धरती पर की सभी आत्माएँ उसके लिए उद्धार-मूल्य बन जाएँ - इस महान उद्देश्य के लिए अपने आशीर्वादित हृदय को संकटों की बरछियों का निशाना बना लिया, और चूंकि ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ ऐसा हो कि उच्च लोक के समूहों की आत्माएँ उन पर उत्सर्ग हो जाएँ, वास्तविक अभिप्राय इसी अत्युच्च लक्ष्य को प्राप्त करना था अतः उस ’परम उदात्त’ (बाब) ने अपने पावन वक्षस्थल को उन असंख्य गोलियों का निशाना बन जाने दिया जो द्वेष और घृणा से भरे लोगों ने उनपर बरसाए थे और जो अत्यंत विनम्रतापूर्वक एक शहीद की मौत मरे। इस पथ पर हजारों-हजार पावन आत्माओं का पवित्र लहू प्रवाहित हुआ, और अनेक बार परमात्मा के किसी निष्ठावान प्रेमी की आशीर्वादित देह को पेड़ से लटकाकर फांसी दे दी गई। स्वयं ’आभा सौन्दर्य’ ने - काश अस्तित्व की सभी वस्तुओं की चेतना उनके प्रियजनों के लिए उत्सर्ग हो जाए! - हर तरह की अग्नि-परीक्षा झेली और जान-बूझकर अपने लिए घोर कष्टों को स्वीकार किया। ऐसी कोई यातना नहीं थी जो उनके पवित्र स्वरूप को न सहनी पड़ी हो और ऐसी कोई मुसीबत नहीं थी जो उनपर नहीं टूटी। जब वे जंजीरों में जकड़े थे तो न जाने कितनी रातें वे अपनी गर्दन पर लदी जंजीर के भार के कारण सो नहीं सके, न जाने कितने दिन उनकी बेड़ियों के कारण होने वाली घोर पीड़ा ने उन्हें एक क्षण का भी चैन नहीं दिया। उन्होंने उन्हें नियावरान से तेहरान तक दौड़ाया। उसे जो कि चेतना का साक्षात स्वरूप था, जो रेशम के अलंकृत तकियों पर सिर रख कर आराम किया करता था, जंजीरों में जकड़ा गया, पहनने को जूते नहीं दिए गए, सिर पर कुछ भी नहीं और फिर उसे एक संकरे अंधेरे तहखाने में हत्यारों, बागियों और चोरों के साथ कैद करके रख दिया गया। उसके बाद भी उन्होंने उन्हें नई यातनाओं का शिकार बनाया और यह पक्का समझ बैठे कि वे एक शहीद की मौत मर जाएँगे। उसके कुछ समय बाद उन्होंने उन्हें अपनी ही मातृभूमि से निकाल दिया और उन्हें बहुत दूर एक अजनबी देश में भेज दिया गया। इराक में उनके रहते हुए कई वर्षों तक ऐसा एक क्षण नहीं बीता जब उनके पवित्र हृदय को किसी नई वेदना के तीर ने नहीं छलनी किया हो। हर सांस के साथ उस पवित्र शरीर को किसी न किसी तलवार का आघात सहना पड़ा, और उन्हें आराम और सुरक्षा की कहीं कोई आशा न थी। अनथक घृणा के साथ उनके शत्रुओं ने हर ओर से घात किया और उन्होंने अकेले ही उन सबको झेला। इन सभी कष्टों, इन शारीरिक प्रहारों के बाद, उन्होंने उन्हें इराक से बाहर एशिया महाद्वीप में, यूरोप महाद्वीप में फेंक दिया और उन्हें कटु निर्वासन एवं घोर कठिनाइयों की उस स्थली में छोड़ दिया जहाँ कुरान के लोगों के द्वारा उन्हें जिन घोर प्रवंचनाओं का शिकार बनाया गया उनमें बयान के लोगों द्वारा किए गए भीषण उत्पीड़न, प्रबल आक्रमण, षडयंत्र, अवनिंदा, सतत शत्रुता, द्वेष और घृणा भी शामिल हो गए। यह सब कुछ बखान करने में मेरी लेखनी निःशक्त है, मगर तुम्हें निश्चित रूप से यह सबकुछ पता है। उसके बाद, इस ’महानतम कारागार’ में रहने के चौबीस सालों बाद, घोर कष्ट और वेदना में, उनके दिनों का अंत आने लगा। सारांश यह कि इस नाशवान संसार में अपनी जीवन-यात्रा के दौरान ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ या तो जंजीरों में जकड़े हुए एक कैदी रहे या हमेशा उनके सिर पर तलवार लटकती रही, या फिर उन्हें घोर कष्टों और यातनाओं में रखा गया अथवा इस ’महानतम कारागार’ में। इन यातनाओं से उत्पन्न शारीरिक दुर्बलता के कारण उनकी आशीर्वादित काया की सांस टूट गई। लम्बे उत्पीड़न से वह एक मकड़ी के जाले की तरह क्षीण हो गई। और यह भीषण भार उठाने, ऊँचे आसमान तक उमड़ती समुद्र की लहरों की भाँति इन तीव्र वेदनाओं को सहने - भारी जंजीरों और बेड़ियों से जकड़े रहने और अत्यंत विनीतता और त्याग की प्रतिमूर्ति बने रहने - के पीछे उनका सिर्फ यह उद्देश्य था कि धरती का हर व्यक्ति सद्भाव के मार्ग पर चले, बंधुता और एकता के पथ का अनुसरण करे। और वह उद्देश्य यह था कि सभी लोग ईश्वर की एकमेवता के संकेतों को जान सकें, ताकि सभी रचित वस्तुओं के हृदय में निहित ’आदि एकता’ अपना नियत फल उत्पन्न कर सके और “कृपालु परमात्मा[[71]](#footnote-71) की सृष्टि में तुम कोई भी अन्तर नहीं देख सकते” की आभा दूर-दूर तक अपनी किरणें बिखेर सके।

हे ईश्वर के प्रियतम! अब प्रबल प्रयास की घड़ी आ गई है। संघर्ष कर और प्रयासरत हो जा। और चूंकि ’पुरातन सौन्दर्य’ को दिन-रात शहादत की रंगभूमि में रखा गया था, तो अब जब हमारी बारी है तो हम कठोर प्रयास करें और परमात्मा के परामर्शों को सुनें और उन पर ध्यान दें। हम अपने जीवन को दरकिनार करके रख दें और अपने इन गिने-चुने नश्वर दिनों की परवाह न करें। इस दुनिया के विभिन्न प्रकार की कोरी कल्पनाओं से अपनी दृष्टि हटाकर हम इस परम महत्वपूर्ण उद्देश्य, इस भव्य प्रायोजन, को पूरा करें। ऐसा न हो कि अपनी कोरी कल्पनाओं के कारण हम इस पेड़ को ही काट डालें जिसे स्वर्गिक कृपा के हाथों ने रोपा है। ऐसा न हो कि अपने भ्रमों के काले बादलों, अपने स्वार्थपूर्ण हितों, से हम उस गरिमा को ही मिटा डालें जो कि ’आभा लोक’ से प्रज्योतित होती है। सर्वशक्तिमान परमात्मा के उमड़ते हुए महासागर के मार्ग में हम अवरोधक दीवार न बन जाएँ। ’सर्व-महिमामय सौन्दर्य’ की वाटिका से प्रवाहित होने वाली मधुर सुरभियों को दूर-दूर तक प्रसारित होने से हम रोक न दें। इस पुनर्मिलन के दिवस में, हम उच्च लोक से आने वाले आशीर्वादों की बासन्ती वर्षा की फुहारों को कहीं रोक न दें। ’सत्य के सूर्य’ की आभाएँ मुर्झा जाएँ और ओझल हो जाएँ हम कहीं यह न स्वीकार कर बैठें। ये परमात्मा की चेतावनियाँ हैं जो उसके परम पवित्र ग्रंथों और उसकी पातियों में विहित हैं जो हमें निष्ठावान लोगों के प्रति उसके परामर्शों के बारे में बताती हैं। तुझ पर गरिमा विराजे, और ईश्वर की दया, और उसके आशीर्वाद।

208

हे ’पवित्र दहलीज’ के सेवकों! ’स्वर्गिक प्रांगण’ के विजयी सैन्य-समूह जिन्हें ’उच्च लोक’ में सुसज्जित और सुगठित किया गया है, उस बहादुर घुड़सवार को सहायता देने और उसकी विजय सुनिश्चित करने के लिए तत्पर खड़े हैं जो सेवा की रणभूमि में आत्मविश्वासपूर्वक अपने अश्व पर आरूढ़ होता है। धन्य है वह निर्भीक योद्धा जो सच्चे ज्ञान की शक्ति से सुसज्जित होकर उस रणभूमि की ओर शीघ्रता से चल पड़ता है, अज्ञान की सेनाओं को छिन्न-भिन्न कर देता है, त्रुटियों के समूहों को तितर-बितर कर देता है, जो दिव्य मार्गदर्शन की ध्वजा को उन्नत करता है और विजय का शंखनाद करता है। प्रभु की धर्मपरायणता की सौगन्ध! उसने भव्य विजय प्राप्त की है और उसे ही सच्ची जीत मिली है।

209

हे ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ के सेवको! ....यह स्पष्ट है कि इस युग में अदृश्य लोक की सम्पुष्टियाँ उन सबको प्राप्त हैं जो दिव्य संदेश के प्रसार कार्य में जुटे हुए हैं। यदि शिक्षण का कार्य नहीं होगा तो इन सम्पुष्टियाँ का प्रवाह भी पूरी तरह रुक जाएगा, क्योंकि ईश्वर के प्रियजन यदि शिक्षण नहीं करेंगे तो उनके लिए सहायता पाना भी असम्भव हो जाएगा।

शिक्षण का कार्य सभी परिस्थितियों में किया जाना चाहिए लेकिन बुद्धिमत्ता के साथ। यदि यह कार्य खुले तौर पर नहीं किया जा सकता तो उन्हें निजी तौर पर शिक्षण का कार्य करना चाहिए और इस तरह उन्हें मानव-सन्तानों के बीच आध्यात्मिकता और बंधुता की भावना उत्पन्न करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि धर्मानुयायियों में से प्रत्येक व्यक्ति किसी असावधान व्यक्ति का सच्चा दोस्त बन जाए और पूर्ण चारित्रिक दृढ़ता का प्रमाण देते हुए उस व्यक्ति की संगत करे, उसके साथ अत्यंत दयालुता का व्यवहार करे, स्वयं को प्राप्त दिव्य मार्गदर्शनों, सद्गुणों और अच्छे व्यवहार का आदर्श बन जाए और हर समय ईश्वर की शिक्षाओं के अनुरूप आचरण करे तो यह निश्चित है कि धीरे-धीरे वह उस व्यक्ति को, जो पहले असावधान था, जागृत करने तथा उसके अज्ञान को सत्य के ज्ञान में परिवर्तित करने में सक्षम हो जाएगा।

लोग अजनबीपन की ओर प्रवृत्त होते हैं। सर्वप्रथम इस अजनबीपन को दूर करने के लिए कदम उठाया जाना चाहिए क्योंकि ईश्वरीय शब्द का प्रभाव तभी पड़ सकेगा। यदि कोई धर्मानुयायी किसी असावधान व्यक्ति के प्रति दया दिखाता है और अत्यंत प्रेम के साथ उसे धीरे-धीरे पवित्र धर्म की प्रामाणिकता की दिशा में मार्गदर्शित करता है, ताकि वह प्रभु के धर्म की बुनियादी बातों और उनके अभिप्रायों को समझ सके, तो उस व्यक्ति में अवश्य ही परिवर्तन होगा - सिवाय कभी-कभार मिल जाने वाले ऐसे व्यक्ति के जो राख की तरह बन चुके हैं, जिनके हृदय “चट्टान की तरह कठोर, बल्कि उससे भी कठोर”[[72]](#footnote-72) हो चुके हैं।

यदि मित्रों में से सभी लोग किसी व्यक्ति के सही मार्गदर्शन के लिए इस तरह प्रयास करने लग जाएं तो हर साल धर्मानुयायियों की संख्या दोगुनी होती चली जाएगी और यह कार्य बुद्धि एवं विवेक के साथ किया जा सकता है, और इससे कोई भी हानि उत्पन्न नहीं होगी।

उसके अलावा, शिक्षकों को भ्रमण करना चाहिए और यदि धर्म की खुलेआम शिक्षा देने से कोई बाधा उत्पन्न होती हो तो उन्हें चाहिए कि वे धर्मानुयायियों को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करें, उनके मन को आनंदित करें, उनके हृदय में आह्लाद भरें, पावना की मधुर सुरभियों से उनमें नवजीवन और स्फूर्ति का संचार करें।

210

हे ईश्वर की प्रेम-वाटिका के गुलाबों! हे उसकी ज्ञान-सभा के प्रखर प्रदीपों! परमात्मा के उच्छ्वास तेरे ऊपर से गुजरें, परमेश्वर की गरिमा तेरे हृदय-क्षितिज को आलोकित करे। तुम सब ज्ञान के गहन सिंधु की लहरें हो, तुम सब निश्चयात्मकता के मैदानों में एकत्रित सेनाएँ हो, तुम सब ईश्वर के गगन के सितारे हो, तुम वे पत्थर हो जो विद्रोह करने वालों के समूहों को खदेड़ भगाते हैं, तुम जीवन की वाटिकाओं के ऊपर छाए हुए स्वर्गिक दया के बादल हो, तुम परमेश्वर की एकमेवता की वह अपार कृपा हो जिसे सभी रचित वस्तुओं के सार-तत्वों पर आच्छादित किया गया है।

 इस संसार की फैली हुई पाटी पर तुम उस परमात्मा की एकलता के श्लोक हो और महल की उत्तुंग मीनारों पर फहराते तुम उस प्रभु की ध्वजाएँ हो। उसके लता-मंडप में तुम बहार की तरह हो और मधुर सुरभि वाली बूटियाँ, चेतना की गुलाब-वाटिका में तुम हृदय की गहराई से उठती हुई कोकिल की कूक हो। तुम ज्ञान के विषद आकाश में उड़ान भरने वाले पक्षी, परमात्मा की बाजू पर बैठे हुए राजसी बाज हो।

 तो फिर तुम बुझे हुए क्यों हो, खामोश, धूमिल, निस्तेज क्यों हो? तुम्हें तो बिजली की तरह चमकना चाहिए, और समुद्र की तरह गर्जना करना चाहिए। तुम्हें मोमबत्ती की तरह अपना प्रकाश बिखेरना चाहिए और परमेश्वर की मृदुल बयारों की तरह तुम्हें इस विश्व के इस छोर से उस छोर तक प्रवाहित होना चाहिए। स्वर्गिक लता-कुंजों से उठते हुए मधुर उच्छवास की तरह, प्रभु की वाटिकाओं से उठती कस्तूरी-मोहक बयारों की तरह, तुम्हें तो ज्ञान वाले लोगों के लिए हवा को सुरभित करना चाहिए और सच्चे ’सूर्य’ द्वारा बिखेरी गई आभाओं की तरह तुम्हें मानवजाति के हृदयों को आलोकित करना चाहिए। क्योंकि तुम जीवन से भरे समीर हो, तुम संरक्षित उद्यानों से उभरे चमेली के सुवास हो। अतः तू मृतकों में नवजीवन का संचार कर और जो सोए पड़े हैं उन्हें जगा। संसार की कालिमा में तू ज्योतिर्मय ज्वाला बन जा, विद्रोह की मरुभूमि में तू जीवन-जल के स्रोत बन, तू प्रभु-परमेश्वर का मार्गदर्शन बन। अब सेवा का समय आ चुका है, अब आग पर तपने का समय आ चुका है। इसके पहले कि यह तेरे हाथ से खिसक जाए, इस अवसर, इस अनुकूल बेला का मोल समझ।

 शीघ्र ही हमारे ये गिने-चुने दिन, हमारा यह जीवन खत्म हो जाएगा और हम खाली हाथ उस गुहा में समा जाएंगे जो उन लोगों के लिए खोदे गए हैं जो अब बोल नहीं सकते, अतः हमें चाहिए कि हम अपने हृदय को उस प्रकट ’सौन्दर्य’ के प्रति आसक्त कर लें और उस अचूक जीवन-रेखा से संसक्त हो जाएँ। हम स्वयं को सेवा के लिए सन्नद्ध कर लें, प्रेम की लौ जला लें और उसकी ज्वाला में भस्‍मीभूत हो जाएँ। हम अपनी वाणी को निर्मुक्त करें - तब तक जब तक कि हम इस बृहद विश्व के हृदय को प्रदीप्त करके न रख दें, और मार्गदर्शन की प्रखर किरणों से रात्रि की सेनाओं को मिटा न दें, और फिर ’उसके’ निमित्त त्याग के मैदान में अपना जीवन न उत्सर्ग कर दें।

 इस तरह हम सभी लोगों के समक्ष परमात्मा के अभिज्ञान के बेशकीमती रत्न बिखेर दें और अपनी वाणी की निर्णायक धार से तथा ज्ञान के सुनिश्चित तीरों से, स्वार्थ एवं वासना की सेनाओं को पराजित कर दें, और शहादत की स्थली की ओर शीघ्रता से बढ़ चलें - उस स्थली की ओर जहाँ परमात्मा के लिए हमारे प्राण न्यौछाबर हों। और तब लहराती हुई ध्वजाएँ लिए, धौंसे की धमक के साथ, हम उस सर्व-गरिमामय के लोक में प्रवेश करें और उच्च लोक के सहचरों का सान्निध्य प्राप्त करें।

 धन्य हैं वे जो महान कार्यों के प्रणेता हैं।

211

जब लोग प्रभु-संदेश फैलाने का प्रयास नहीं करते तो ईश्वर का समुचित स्मरण करने में वे विफल रह जाते हैं, और उन्हें आभा-साम्राज्य की सहायता और संपुष्टि के संकेतों का अनुभव नहीं होगा और न ही वे दिव्य रहस्यों को ही समझ पाएंगे। तथापि, जब शिक्षक की वाणी शिक्षण के कार्य में तल्लीन होती है, तो स्वाभाविक रूप से वह स्वयं भी उत्प्रेरित महसूस करेगा, दिव्य सहायता तथा प्रभु-साम्राज्य की उदार कृपाओं को आकर्षित करने वाला चुम्बक बन जाएगा, और उषा-काल के पक्षी की तरह बन जाएगा जो अपने गायन, अपने कलरव और माधुर्य से स्वयं ही हर्षित हो उठता है।

212

ऐसे ही समयों में प्रभु के मित्र अवसर का लाभ उठाते हैं, आगे बढ़ते और पुरस्कार जीतते हैं। यदि उनका कार्य सदाचार और सलाह तक ही सीमित रहे तो कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। वे बोलें, प्रमाणों की व्याख्या करें, स्पष्ट दलील दें, ’सत्य के सूर्य’ के प्रकटीकरण की सच्चाई को स्थापित करते हुए अकाट्य निष्कर्ष निकालें।

213

धर्मानुयायियों द्वारा शिक्षण का कार्य सभी परिस्थितियों में किया जाना चाहिए क्योंकि दिव्य सम्पुष्टियाँ इसी पर आश्रित हैं। यदि कोई बहाई शिक्षण के कार्य में पूर्णतः, पूरी शक्ति से और सम्पूर्ण हृदय से शामिल नहीं होगा तो वह निश्चय ही आभा-साम्राज्य की कृपाओं से वंचित रहेगा। इसलिए, इस कार्य में बुद्धिमत्ता का स्पर्श होना चाहिए - वह बुद्धिमत्ता नहीं जो कि व्यक्ति को इस अनिवार्य कर्त्‍तव्‍य को भुला देने और चुप रहने के लिए प्रेरित करे, बल्कि वह बुद्धिमत्ता जो उसे दिव्य सहिष्णुता, प्रेम, धैर्य, अच्छे चरित्र और पवित्र कार्यों की ओर प्रवृत्त करे। संक्षेप में, मित्रों को व्यक्तिगत रूप से प्रभुधर्म का संदेश देने और बहाई लेखों में उल्लिखित बुद्धिमत्ता के इस अर्थ की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करो - किंतु यह सब अत्यंत सहिष्णुता के साथ किया जाना चाहिए, ताकि मित्रों को स्वर्गिक सहायता और दिव्य सम्पुष्टि प्राप्त हो सके।

214

तुम अपने प्रभु के पथ का अनुगमन करो और वह न कहो जो लोगों के कान सुन नहीं सकते क्योंकि ऐसी वाणी छोटे बच्चों को दिए जाने वाले रसीले भोजन की तरह है। भोजन चाहे कितना भी सुस्वादु, अनूठा और समृद्ध हो लेकिन दूध पीते बच्चे का पाचनतंत्र उसे हजम नहीं कर सकता। इसलिए जिस किसी को अधिकार प्राप्त हो उसे उसका निर्धारित माप ही दिया जाना चाहिए।

“मनुष्य जो कुछ भी जानता है वह सबकुछ प्रकट नहीं किया जा सकता, न ही सबकुछ जो वह प्रकट कर सकता है सामयिक कहा जा सकता है, न ही समय पर कही गई हर बात सुनने वाले की क्षमता के उपयुक्त समझी जा सकती है।“ तेरे सभी प्रयासों में इसी परम विवेक का ध्यान रखा जाना चाहिए। यदि तू हर परिस्थिति में कार्यशील व्यक्ति बनना चाहे तो इसे भूल मत। पहले रोग का निदान कर और बीमारी पहचान, फिर उसका उपचार निर्धारित कर क्योंकि कुशल वैद्य का यही तरीका होता है।

215

एकमेव सत्य परमेश्वर की अनुकम्पा से मेरी यह आशा है कि उन प्रजातियों के बीच तुम ईश्वर की सुरभि का प्रसार करने में सक्षम बनोगे। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है......

यदि इस सेवा कार्य में तुम सफल हो गए तो तुम्हें उत्कृष्टता हासिल होगी और तुम इस क्षेत्र के नायक बन जाओगे।

216

आश्वस्त रहो कि ’पवित्र चेतना’ के उच्छ्वास तुम्हारी वाणी को मुक्त करेंगे। अतः बोलो, प्रत्येक सभा में अत्यंत साहस के साथ अपनी बात कहो। जब तुम लोगों को सम्बोधित करने लगो तो सर्वप्रथम बहाउल्लाह की ओर उन्मुख हो और पावन चेतना की सम्पुष्टियों की याचना करो, फिर अपनी आवाज बुलन्द करो और जो कुछ भी तेरे हृदय को प्रेरणा मिले, बोलो - अत्यंत साहस, सम्मान और विश्वास के साथ। मेरी आशा है कि दिन-प्रतिदिन तुम्हारी सभाएँ विकसित और फलीभूत होंगी और जो लोग सत्य की तलाश में हैं वे तर्कसम्मत दलीलों और निर्णायक प्रमाणों पर ध्यान देंगे। हर सभा में मैं पूरे प्राणपण से तुम्हारे साथ हूँ, यह भरोसा रखो।

217

शिक्षण का कार्य करते समय, शिक्षक को चाहिए कि वह स्वयं पूर्णतया दीप्त हो ताकि उसकी वाणी अग्नि की ज्वाला की तरह प्रभाव डाल सके और स्वार्थ एवं वासना के पर्दे को जला कर राख कर दे। साथ ही उसे अत्यंत विनम्र भी होना चाहिए ताकि अन्य लोग समुन्नत हो सकें, और उसे स्वयं को महत्व न देने वाला, अत्यंत विनीत होना चाहिए ताकि वह उच्च लोक के सहचरों के माधुर्य के साथ शिक्षण कर सके - अन्यथा उसके शिक्षण का कोई प्रभाव नहीं होगा।

218

हे तुम अब्दुल बहा के घनिष्ठ और प्रिय मित्रों!

पूरब में सुरभियाँ बिखेरो

पश्चिम को कर दो आलोकित

’बल्गर’ में आभा छिटकाओ

करो ’स्लाव’ पर जीवन सिंचित।

बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण के एक साल बाद, ’संविदा के केंद्र’ के अधरों से यह श्लोक स्फुरित हुआ। संविदा-भंजकों को यह वाकई विचित्र लगा और उन्होंने इसकी खिल्ली उड़ाई। तथापि, ईश्वर का गुणगान हो, अब इसके प्रभाव प्रत्यक्ष हो चुके हैं, इसकी शक्ति प्रकट हो गई है, क्योंकि ईश्वर की कृपा से आज ’पूरब’ और ’पश्चिम’ दोनों ही आनन्द से प्रकम्पित हैं और अब पवित्रता के मधुर उच्छवास से पूरी धरती कस्तूरी-सुरभि से भर उठी है।

अपनी अचूक भाषा में, ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ ने अपनी ’पुस्तक’ में यह वचन अंकित किया हैः “हम निहार रहे हैं तुझे अपनी गरिमा के लोक से, और जो कोई भी हमारे धर्म की विजय के लिए उठ खड़ा होगा हम उच्च लोक के सैन्य-समूहों और अपने प्रिय देवदूतों की सेना के माध्यम से उसकी सहायता करेंगे।“

ईश्वर का धन्यवाद हो कि वह प्रतिज्ञापित सहायता सुनिश्चित कर दी गई है, जैसाकि हर व्यक्ति स्पष्ट रूप से देख सकता है, और यह स्वर्गों में जगमगाते सूर्य की तरह बिल्कुल साफ है।

 अतः हे ईश्वर के मित्रों, अपने प्रयासों को दोगुना करो, अत्यंत प्रयास करो जब तक कि तुम ’पुरातन सौन्दर्य’, उस ’प्रत्यक्ष प्रकाश’, की सेवा में विजयी न हो जाओ, और दूर-दराज़ तक उस ’सत्य के दिवानक्षत्र’ की किरणों को बिखेरने के कारक न बन जाओ। संसार के जीर्ण-शीर्ण शरीर में जीवन की ताजी सांस भर दो, और प्रत्येक क्षेत्र के जोतों में पवित्र बीज बो दो। इस धर्म की विजय के लिए उठ खड़े हो, अपने अधरों को खोलो और संदेश दो। जीवन की मिलन-स्थली में तुम सब मार्गदर्शक मोमबत्ती की तरह बनो, इस विश्व के आकाश में देदीप्यमान सितारे बनो, एकता की वाटिकाओं में आभ्यांतरिक सत्यों और रहस्यों का गायन करने वाले चेतना के पक्षी बनो।[[73]](#footnote-73)

 अपने जीवन की हर सांस इस महान धर्म में खपा दो और अपना हर दिन बहा की सेवा के लिए समर्पित कर दो ताकि अंत में, हर क्षति और अभाव से बचते हुए, तुम उच्च लोकों की संचित निधियाँ प्राप्त कर सको। लोगों के दिन संकटों से भरे हुए हैं और कोई भी व्यक्ति जीवन से क्षण मात्र पर भी निर्भर नहीं हो सकता और फिर भी लोग, जो कि भ्रम की रंग बदलती मरीचिका की भाँति हैं, अपने आप से यह कहते हैं कि अंत में वे ऊँचाइयों को प्राप्त कर लेंगे। अफसोस है उनपर! अतीत के लोग भी ऐसी ही कपोल-कल्पनाओं से चिपके हुए थे और सहसा उन पर एक लहर छा गई और वे वापस धूल में समा गए और उन्होंने स्वयं को वंचित पाया - सिवाय उन लोगों के जिन्होंने स्वयं को स्वार्थ से मुक्त कर लिया था और अपने जीवन को ईश्वर के पथ पर न्यौछावर कर दिया था। उनका प्रदीप्त सितारा प्राचीन गरिमा के आसमानों में चमक उठा। सभी युगों की स्मृतियों की विरासत मेरे कथन का प्रमाण है।

अतः, तू रात या दिन कभी विराम न कर, सुख की कामना न कर। तू दासता के रहस्य बता, जब तक तुझे वह प्रतिज्ञापित सहायता न मिल जाए जो ईश्वर के लोकों से आती है, तब तक तू सेवा के पथ पर चल।

हे मित्रों! यह सारी धरती काले बादलों से आच्छादित हो गई है तथा घृणा और विद्वेश, निर्ममता, आक्रमण और मैल का अंधकार दूर-दूर तक फैल रहा है। सभी लोग असावधान तन्द्रा में अपने जीवन जी रहे हैं और मनुष्य के मुख्य गुण हो गए हैं उनकी घोर लोलुपता और रक्त-पिपासा। सभी मनुष्यों के बीच से ईश्वर ने मित्रों का चयन किया है और उन्हें अपने मार्गदर्शन और अपनी अनन्त कृपा का वरदान दिया है। उसका उद्देश्य यह है कि हम सब अपने पूरे हृदय से अपने आप को समर्पित कर देने का प्रयास करें, दूसरों के उसके पथ पर मार्गदर्शित करें और लोगों की आत्माओं को प्रशिक्षित करें - तब तक जब तक कि मदमत्त पशु एकता की शस्यभूमि के हरिण न बन जाएँ और ये भेड़िए ईश्वर के मेमने न बन जाएँ, और ये बर्बर जीव देवदूतों के समूह में न बदल जाएँ, तब तक जब तक कि घृणा की ज्वालाओं को बुझा न दिया जाए, और ’पवित्र समाधि’ की संरक्षित घाटी से उठने वाली लपटें अपनी आभाएँ न बिखेरने लगें, तब तक जब तक कि आततायियों के मल-मूत्र की बदबू उड़ न जाए और उसकी जगह विश्वास और निष्ठा की गुलाब-क्यारियों से उठने वाली शुद्ध, सुमधुर बयार न बहने लगे। उस दिन कम बुद्धि वाले लोग भी दिव्य, ’विश्वव्यापी मन’ की उदार कृपा पर निर्भर होंगे और जिन लोगों का जीवन घृणा से भरा हुआ है वे भी इन पवित्र, विशुद्ध उच्छ्वासों की कामना करने लगेंगे।

लेकिन इसके लिए ऐसे लोगों की जरूरत है जो ऐसे अनुदानों की झलक दिखाएँ, इन क्षेत्रों की जुताई के लिए ऐसे कृषकों की आवश्यकता है, उन वाटिकाओं के लिए मालियों की जरूरत है, उस समुद्र में तैर सकने वाली मछलियों की जरूरत है, उन आकाशों में चमक सकने वाले सितारों की। इन व्याधिग्रस्त लोगों को आध्यात्मिक चिकित्सकों की देखभाल की जरूरत है, जो भ्रमित हो चुके हैं उन्हें सौम्य पथप्रदर्शकों की आवश्यकता है ताकि ऐसे लोगों से उन जनों को अंशदान प्राप्त हो सके जो वंचित रहे हैं और अभावग्रस्तों को उनका हिस्सा मिल सके और गरीबों को अकूत सम्पदा मिल सके, और जिज्ञासुओं को उनसे अकाट्य प्रमाण प्राप्त हो सके।

हे मेरे प्रभो, मेरे रक्षक, संकटों में मेरे सहायक! मैं विनीत होकर तुझसे याचना करता हूं, व्याधिग्रस्त होकर मैं आरोग्य के लिए तेरी शरण में आता हूँ, दीन भाव से मैं अपनी जिह्वा, अपनी आत्मा और अपनी चेतना से तुझे पुकारता हूँ।

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! रात्रि के अंधकार ने हर क्षेत्र को आच्छादित कर रखा है और सारी धरती घने बादलों के पीछे छिप गई है। दुनिया के लोग निरर्थक भ्रमों की काली गहराइयों में निमग्न हैं जबकि उन पर अत्याचार करने वाले घृणा और निर्ममता से चीख रहे हैं। मुझे अताल पाताल से ऊपर तक उठती झुलसा देने वाली अग्नि की लपट के सिवा और कुछ नहीं दिखाई पड़ता, मुझे आक्रमण के हजारों भयावह हथियारों से उठने वाली गर्जना के सिवा और कुछ सुनाई नहीं पड़ता, जबकि हर भूभाग अपनी गुह्य वाणी में विलाप कर रहा हैः “मेरी धन-सम्पदा मेरे किसी काम की नहीं, और मेरा साम्राज्य विनष्ट हो चुका है!”

हे मेरे ईश्वर, मार्गदर्शन के दिये बुझ चुके हैं। वासना की ऊँची लपटें उठ रही हैं और दुनिया में दिनोंदिन विद्वेष का साम्राज्य फैलता जा रहा है। घृणा और वैमनस्य ने समस्त धरती के मुखड़े को आच्छादित कर रखा है और स्वयं तेरे अत्याचार-पीड़ित छोटे-से जत्थे के सिवाय यह पुकार करने वाला मुझे और कोई नहीं मिलता:

 शीघ्रता से प्रेम कर! विश्वास करने की शीघ्रता दिखा! देने की शीघ्रता कर! मार्गदर्शन की ओर आ!

 सद्भाव के लिए आ! ’दिवानक्षत्र’ को देखने! आ इधर दयालुता हेतु, सांत्वना हेतु! आ इधर शांति और मैत्री के लिए!

 आ और जब तक एकता स्थापित न हो जाए, क्रोध के अपने हथियार फेंक दे! आ, प्रभु के सच्चे पथ पर एक-दूसरे की सहायता कर।

 सत्य ही, अत्यधिक आनन्द से, पूरे मन और हृदय से, तेरे ये अत्याचार-पीड़ित जन हर भूभाग में स्वयं को समस्त मानवता के लिए समर्पित करते हैं। हे प्रभो, तू देखता है उन्हें कि वे तेरे जनों द्वारा बहाए गए अश्रु पर विलाप कर रहे हैं, तेरी सन्तानों के दुख पर शोकाकुल हैं, मानवजाति के साथ शोक मना रहे हैं, उन संकटों के कारण दुःख भोग रहे हैं जो धरती के सभी निवासियों को घेरे हुए हैं।

 हे मेरे ईश्वर, उन्हें विजय के पंख प्रदान कर ताकि वे मुक्ति के उच्चाकाश में उड़ान भर सकें, अपने लोगों की सेवा के लिए उन्हें कृतसंकल्प कर और उनकी रीढ़ को तेरी पावनता की दहलीज पर सेवा के लिए सुदृढ़ कर।

 सत्य ही तू उदार है, सत्य ही तू दयालु है! तेरे सिवा अन्य कोई परमेश्वर नहीं है, तू जो है सौम्य, करुणावान, दिवसाधिक प्राचीन!

219

हे तू प्रभु-साम्राज्य के बेटों और बेटियों! तुम्हारा पत्र, जो कि निश्चित रूप से स्वर्गिक प्रेरणा से सम्पन्न था, प्राप्त हुआ है। उसकी विषय-वस्तुएँ बहुत ही आह्लादकारी थीं, उसकी भावनाएँ ज्योतिर्मय हृदयों से उत्पन्न थीं।

लन्दन में रहने वाले धर्मानुयायी सचमुच दृढ़ एवं सत्यनिष्ठ हैं, वे कृतसंकल्प हैं, सेवा में अडिग हैं, परीक्षा की घड़ी में वे विचलित नहीं होते और न ही समय बीतने के साथ उनका जोश ही ढंडा होता है, बल्कि वे बहाई हैं। वे स्वर्गिक हैं, वे प्रकाशित हैं, वे ईश्वर के हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे ईश्वर की वाणी को उदात्त बनाने और मानव-जगत की एकता को उन्नत करने तथा मानवजाति के सभी सदस्यों की समानता को दूर-दूर तक प्रसारित करने के कारक बनेंगे।

’स्वर्गिक साम्राज्य’ तक पहुँचना आसान है किंतु उसमें सुदृढ़ एवं अटूट बने रहना कठिन है, क्योंकि परीक्षाएँ बड़ी कठिन है जिन्हें सह पाना आसान नहीं है। लेकिन अंग्रेज लोग सभी परिस्थितियों में अडिग बने रहते हैं, न कि संकट के पहले आघात से ही विचलित हो जाते हैं। उन्हें बदला नहीं जा सकता, वे ऐसे नहीं कि किसी परियोजना पर आधे-अधूरे ढंग से काम करें और फिर उसे छोड़ दें। वे किसी भी मामूली कारण से अपने उत्साह और उमंग में विफल नहीं होते, न ही उनकी अभिरुचि समाप्त हो जाती है। नहीं, बल्कि वे जो कुछ भी करते हैं उसमें वे स्थिर बने रहते हैं, चट्टान की तरह अडिग और अटूट।

हालाँकि तुम सब पश्चिमी भूभाग के निवासी हो किन्तु, ईश्वर का गुणगान हो, तुमने पूरब से उठी उसकी पुकार सुनी और, मूसा की तरह, ईश्वर ने ’एशिया के वृक्ष’ में प्रज्‍वलित अग्नि से तुम्हारे हाथों को गर्माहट दी। तुमने सच्चे पथ को पाया, तुम दीपों की तरह प्रकाशित हुए और तुम सब ’ईश्वर के साम्राज्य’ में प्रविष्ट हुए हो। और अब तुम इन कृपाओं के प्रति अपने आभार-स्वरूप, उठ खड़े हुए हो और धरती के समस्त लोगों के लिए ईश्वर की सहायता की याचना कर रहे हो, ताकि उनकी आँखें भी आभा लोक की आभाओं को निहार सकें और उनके हृदय, दर्पण की तरह, ’सत्य के सूर्य’ की प्रखर किरणों को प्रतिबिम्बित कर सकें।

मेरी आशा है कि तुम्हारे हृदयों में ’पवित्र चेतना’ की सांसें इस तरह फूंक दी जाएंगी कि तुम्हारी वाणी ’पवित्र ग्रंथों’ के रहस्यों को उजागर करने लगेगी और उनके आंतरिक अर्थों की व्याख्या और निरूपण करने में सक्षम होगी, ताकि मित्रगण चिकित्सक बन जाएंगे और, स्वर्गिक शिक्षाओं की शक्तिशाली औषधि के माध्यम से, इस संसार की काया को व्याधिग्रस्त करने वाले जीर्ण रोगों को आरोग्य प्रदान कर सकेंगे, ताकि वे नेत्रहीनों को दृष्टि प्रदान कर सकेंगे, मृतकों को पुनर्जीवन देंगे और जो गहन निद्रा में निमग्न हैं उन्हें जगाएंगे।

आश्वस्त रहो कि ’पवित्र चेतना’ की सम्पुष्टियाँ तुझपर अवतरित होंगी और आभा साम्राज्य की सेनाएँ तुम्हें विजय प्रदान करेंगी।

 220

समस्त मानवजाति के प्रभु ने इस मानव-लोक को ’अदन की वाटिका’, एक पार्थिव स्वर्ग, बनाया है। यदि यह शांति और सद्भाव, प्रेम और आपसी विश्वास, का मार्ग ढूंढ़ेगा - और यही इसे करना भी चाहिए - तो यह आनन्द का सच्चा निवास-स्थल, अनगिनत आशीर्वादों और अनन्त आनन्द का स्थल बन जाएगा जिसमें मानवजाति की उत्ष्टता प्रकट होगी और जिसमें सर्वत्र ’सत्य के सूर्य’ की किरणें अपना प्रकाश बिखेरेंगी।

याद करो कि कैसे कभी आदम और अन्य लोग अदन के स्वर्ग में साथ मिलकर रहते थे। जैसे ही आदम और शैतान के बीच झगड़ा उत्पन्न हुआ, उन सबको उस ’वाटिका’ से निकाल बाहर किया गया, और यह मानवजाति के लिए एक चेतावनी के रूप में था, मनुष्य को यह बताने का एक माध्यम था कि विभेद - चाहे वह शैतान से ही क्यों न हो - घोर क्षति का मार्ग है। यही कारण है कि हमारे इस प्रकाशित युग में ईश्वर ने हमें यह शिक्षा दी है कि संघर्ष और विवाद की कोई अनुमति नहीं है, शैतान के साथ भी नहीं।

दयालु परमेश्वर! ऐसी सीख के बावजूद, मनुष्य कितना असावधान है! इसके बावजूद उसकी दुनिया इस छोर से उस छोर तक युद्ध में ही निरत है। धर्मों के बीच युद्ध है, राष्ट्रों के बीच युद्ध है, लोगों के बीच युद्ध है, शासकों के बीच युद्ध है। वह परिवर्तन कितना स्वागत-योग्य होगा जबकि दुनिया के आकाश से ये काले बादल छंट जाएंगे, ताकि यथार्थ का प्रकाश दूर-दूर तक फैल सके। काश कि इस अनवरत युद्ध और रक्तपात की घटाटोप धूल का उड़ना सदा के लिए बंद हो जाए और शांति के स्रोत से ईश्वर की स्नेहमयी दयालुता की सुमधुर बयारें प्रवाहित हो जाएँ। तब यह दुनिया एक दूसरी ही दुनिया बन जाएगी और यह धरती अपने प्रभु के प्रकाश से नहा उठेगी।

यदि कोई आशा है तो वह केवल ईश्वर की उदार कृपाओं में है: यह कि उसकी शक्तिकारी कृपा का अभ्युदय होगा और यह संघर्ष और विवाद थम जाएगा और खून टपकते इस्पात की तेजाबी धार मित्रता, भलाई और विश्वास की मधु-बूंदों में बदल जाएगी। उस दिवस का आस्वाद कितना मधुर होगा, उसकी कस्तूरी सुरभि कितनी मोहक होगी!

ईश्वर करे कि नया वर्ष नई शांति का वचन लेकर आए। प्रभु इस विशिष्ट सभा को एक सुन्दर संधि सुनिश्चित करने और एक समुचित संविदा स्थापित करने में सक्षम बनाए, ताकि समय के अजन्मे विस्तार तक तुम सदा-सर्वदा के लिए आशीर्वादित हो सको।

(क्रिश्चन कॉमनवेल्थ के रीडरों को सम्बोधित, 1 जनवरी 1913)

221

हे संविदा में सुदृढ़ जनों! तीर्थयात्री ने तुममें से प्रत्येक का उल्लेख किया है, और प्रत्येक के लिए अलग-अलग पत्र लिखे जाने के लिए निवेदन किया है, किंतु प्रभु के प्रेम के बियावान में भटकता हुआ यह यात्री हजारों व्यस्तताओं और कार्यों के कारण पत्र लिख पाने में असमर्थ है और चूंकि पूरब और पश्चिम से उसके पास पत्रों के सैलाब उमड़ रहे हैं. इसलिए प्रत्येक के लिए अलग-अलग पत्र लिख पाना सम्भव नहीं हो सकेगा। अतः यह एक पत्र तुझमें से प्रत्येक को सम्बोधित किया जा रहा है ताकि यह विशुद्ध मदिरा की तरह तुम्हारी आत्माओं को आह्लादित कर सके और तुम्हारे हृदयों में उत्साह भर सके।

हे सुदृढ़ एवं प्रिय लोगों! बसन्त काल की बरखा की तरह लोगों पर ईश्वर की कृपा उमड़ रही है, और सुप्रकट ’प्रकाश’ की किरणों ने इस धरती को स्वर्ग के लिए भी स्पृहणीय बना दिया है। किन्तु अफसोस, नेत्रहीन लोग इस कृपालुता से वंचित हैं, असावधान लोगों के लिए इस कृपा के द्वार बंद हैं, मुरझाए हुओं को निराशा ही हाथ लग रही है और जो कुम्हला चुके हैं वे मृतप्राय पड़े हैं - इस तरह कि उमड़ती हुई जलधाराओं की तरह, कृपा की यह असीम सरिता निगूढ़ महासागर के अपने मूल स्रोत में वापस लौट रही है। केवल चंद लोग ही इसकी कृपा प्राप्त करने में सक्षम हैं और अपना अंश ग्रहण कर रहे हैं। अतः, उस ’प्रियतम’ की सशक्त भुजा जो भी परिणाम प्रस्तुत करे, आओ, हम उसी की आशा करें।

हमें विश्वास है कि आने वाले समय में ये सोए हुए लोग जाग उठेंगे, जो असावधान हैं वे सावधान हो उठेंगे और जो अलग-थलग हैं वे रहस्यों के अंतरंग बन सकेंगे। अब मित्रों को चाहिए कि वे पूरे हृदय-प्राण से काम करें, तब तक जब तक कि विभेद के किले न ढह जाएँ और मानवता की एकमेवता की महिमा सबको एकता की ओर न ले जाए।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है ईश्वर के प्रियजनों के बीच एकता और सौहार्द का होना, क्योंकि उनका हृदय और उनकी आत्मा एक होनी चाहिए और जहाँ तक हो सके उन्हें एकजुट होकर दुनिया के सभी लोगों की शत्रुता का सामना करना चाहिए, उन्हें चाहिए कि वे सभी राष्ट्रों और धर्मों के प्रबल पूर्वाग्रहों को समाप्त कर दें और मानवजाति के हर सदस्य को यह ज्ञात करा दें कि सब एक ही शाख की पत्तियाँ, एक ही डाली के फल हैं।

लेकिन जब तक मित्र लोग स्वयं अपने बीच पूर्ण एकता स्थापित नहीं कर लेंगे तब तक वे दूसरे लोगों को शांति और सौहार्द का आह्वान कैसे सुना सकेंगे?

जिस आत्मा में नहीं है स्वयं जीवन का स्पंदन

वह कैसे आशा करे कि औरों को मिले जीवन?

तुम मानवीय स्वरूपों से परे, जीवन के अन्य स्वरूपों पर विचार करो और सीख ग्रहण करो: वे बादल जो तितर-बितर हो जाते हैं, वर्षा का अनुदान नहीं उड़ेल सकते और वे शीघ्र ही बिखर जाते हैं। भेड़ों का झुण्ड बिखर जाने पर भेड़ियों का शिकार हो जाता है और जो पक्षी अकेले उड़ान भरते हैं वे बहुत ही जल्द चील के चंगुल में आ जाएंगे। इससे बढ़कर इस बात की झलक क्या मिल सकती है कि एकता सुविकसित जीवन की ओर ले जाती है जबकि विभेद और दूसरों से अलगाव केवल दुःख का कारण बनेगा, क्योंकि ये घोर खिन्नता और विनाश के पक्के रास्ते हैं।

ईश्वर के पवित्र प्रकटावतारों को मानवजाति की एकता की झलक दिखाने के लिए भेजा गया था। इस कारण उन्होंने असंख्य बुराइयाँ और मुसीबतें झेलीं, ताकि मानवजाति के विभिन्न लोगों से निकल कर उभरा हुआ समुदाय ईश्वर की वाणी की छाया में एकत्रित हों और वे प्रसन्नता एवं भव्यता के साथ एक बनकर रहें और इस धरती पर मानवजाति की एकता की झलक दिखाएँ। इसलिए मित्रों की अभिलाषा यह होनी चाहिए कि वे सभी लोगों को एकजुट करें और एकता के सूत्र में पिरोएँ, ताकि सब लोग इस विशुद्ध मदिरा का उदारतापूर्वक पान कर सकें ...उस प्याली से जो “कर्पूरी स्रोत[[74]](#footnote-74) से परिपक्व बनाया गया है। वे विभेदमूलक लोगों को एक करके रख दें और धरती के परस्पर शत्रु बने और बर्बर जनों को एक-दूसरे से प्यार करने के काबिल बना दें। वे लालसा की जंजीरों में जकड़े हुओं को मुक्त कर दें और अलग-थलग पड़े हुओं को रहस्यों के अंतरंग सखा बना दें। वंचितों को वे इन दिवसों की कृपाओं का अंश प्रदान करें, वे अभावग्रस्तों को इस अपार सम्पदा की ओर मार्गदर्शित करें। यह कृपा ’अदृश्य साम्राज्य’ के शब्दों और तरीकों और कर्मों से ही प्राप्त हो सकती है, उनके बिना कतई नहीं।

ईश्वर की सम्पुष्टियाँ इन कृपाओं का आश्वासन हैं। ईश्वर की पावन उदारता ही ये अनुदान प्रदान करती है। परमात्मा के मित्रों को उच्च लोक के ’साम्राज्य’ की सहायता प्राप्त है और वे महानतम मार्गदर्शन की समेकित सेनाओं के माध्यम से विजय प्राप्त करते हैं। इसलिए उनके निमित्त हर कठिनाई सरल हो जाएगी, हर समस्या चुटकी में सुलझा ली जाएगी।

ध्यान दो कि जिस किसी परिवार में एकता है, जहाँ उस परिवार के मामलों का निष्पादन किया जाता है, उस परिवार के लोग कैसी प्रगति प्राप्त करते हैं, संसार में किस तरह वे उन्नति करते हैं। उनके घर की हर बात सुव्यवस्थित होती है, उन्हें सुख-चैन और शांति प्राप्त होती है, वे सुरक्षित होते हैं, उनकी स्थिति सुनिश्चित रहती है, हर कोई उनके समान बनना चाहता है। ऐसा परिवार दिन-प्रतिदिन अपने रुतबे, अपने चिरस्थायी सम्मान को और अधिक बढ़ाता है। और इसी तरह जब हम एकता के इस दायरे का और अधिक विस्तार करके उसमें ऐसे गांव को भी शामिल कर लेते हैं जो प्रेम और एकता के वातावरण में रहना चाहता है, जिसके निवासी एक-दूसरे के साथ सहयोग करते और परस्पर दयालुता झलकाते हैं, तो उनकी कितनी प्रगति होगी, वे कितने सुरक्षित और संरक्षित होंगे। उसके बाद, इस दायरे को हम थोड़ा और व्यापक कर लें और किसी शहर के समस्त निवासियों को उसमें शामिल कर लें। यदि वे अपने बीच एकता का अत्यंत सशक्त बंधन कायम कर लें तो थोड़े ही समय में उनकी कितनी ज्यादा प्रगति होगी और उनकी शक्ति कितनी बढ़ जाएगी। इसी तरह, यदि एकता के इस दायरे का और अधिक विस्तार किया जाए और देश भर के निवासियों के शांतिप्रिय हृदयों का समावेश कर लिया जाए और वे सब अपने सम्पूर्ण हृदय और आत्मा से एक-दूसरे को सहायता देने और एकता की भावना से रहने की उत्कंठा से भर जाएँ, और यदि वे परस्पर स्नेह करने और एक-दूसरे के प्रति दयालुता रखने वाले बन जाएँ तो वह देश अमिट आनन्द एवं शाश्वत गरिमा प्राप्त करने वाला बन जाएगा। उसे शांति और अपार सम्पदाओं का सौभाग्य प्राप्त होगा।

अतः ध्यान दो: यदि धरती पर हर वंश, कबीला, समुदाय, राष्ट्र, देश, प्रदेश मानवजाति की एकता के एकरंगी वितान तले एकत्र हो जाएँ, और ’सत्य के सूर्य’ की चकाचौंध भरी किरणों के माध्यम से मानव की विश्व-व्यापकता की घोषणा करने लग जाएँ, यदि वे सभी राष्ट्रों और समस्त मान्यताओं के लोगों को एक-दूसरे के प्रति अपनी बांहें फैलाने के लिए प्रेरित करें, एक विश्व परिषद की स्थापना करें, और समाज के सदस्यों को परस्पर सशक्त बंधन में बांधने के लिए आगे बढ़ें तो क्या होगा? इसमें कोई संदेह नहीं कि अपने सम्पूर्ण आकर्षक सौन्दर्य के साथ तथा अपने साथ स्वर्गिक सम्पुष्टियों एवं मानवीय कृपाओं और अनुदानों की विशाल सेना लेकर, दिव्य ’प्रियतम’ इस दुनिया की सभा के सम्मुख अपनी पूर्ण गरिमा के साथ प्रकट होगा।

अतः, हे ईश्वर के प्रियजन, स्वयं को स्फूर्त करो, एकजुट होने,एक-दूसरे के साथ शांतिपूर्वक रहने के लिए शक्तिभर प्रयास करो, क्योंकि तुम सब एक ही महासागर की बूंदें हो, एक ही पेड़ के पात हो, एक ही सीपी के मोती हो, एक ही वाटिका के फूल और मधुर बूटियाँ हो। और यह उपलब्धि प्राप्त करने के साथ ही, अन्य धर्मों को मानने वाले लोगों के हृदयों को एक करने का भी प्रयास करो।

एक-दूसरे के लिए तुम अपना जीवन भी दान कर दो। प्रत्येक मनुष्य के लिए तुम्हें असीमित रूप से दयालु होना चाहिए। किसी को भी अजनबी मत कहो, किसी को भी अपना शत्रु मत समझो। इस तरह रहो कि सभी लोग तुम्हारे आत्मीय और सम्मानित मित्र हैं। इस तरह आचरण करो कि यह नाशवान संसार एक आभा में बदल जाए और धूल का यह खिन्न लोक आनन्द का महल बन जाए। इस अभागे सेवक, अब्दुल बहा, का यही परामर्श है।

222

हे परमात्मा के पथ पर बेघर और भटकते हुए लोगों! समृद्धि, संतुष्टि और स्वतंत्रता चाहे कितनी भी अभिलषित और हृदय के लिए प्रसन्नतादायक वस्तुएँ हों, लेकिन ईश्वर के पथ पर घर-बार छोड़कर संकट एवं अग्नि-परीक्षाएँ झेलने से उनकी कोई तुलना नहीं हो सकती, क्योंकि ऐसे निर्वासन दिव्य कृपा से सम्पन्न हैं, और उन्हें उस ’शुभंकर’ की दया प्राप्त है। घर के सुख-चैन का आनन्द और सभी चिन्ताओं से मुक्त रहने की मधुरता एकदिन खत्म हो जाएगी जबकि बेघर होने की कृपा सदा बनी रहेगी और उसके दूरगामी परिणाम प्रकट होंगे।

अपने निवास-स्थान से अब्राहम का प्रवास परम-भव्य परमात्मा के उदार उपहारों का कारक बना और कैनान के परम प्रखर सितारे के अस्त होने के साथ ही नेत्रों के समक्ष जोसेफ की कांति प्रत्यक्ष हुई। सिनाय के ईश्वरावतार, मूसा, की यात्रा ने प्रभु की ’ज्वलंत अग्नि’ की ’लपट’ को प्रकट किया और यीशु के अभ्युदय ने विश्व में ’पवित्र चेतना’ की सांस फूंक दी। अपनी जन्मस्थली से ईश्वर के प्रियतम, मुहम्मद, का प्रयाण परमात्मा के पवित्र शब्द को उदात्त बनाए जाने का कारण बना, और ’पवित्र सौन्दर्य’ के निर्वासन ने दुनिया के सभी देशों-प्रदेशों में उनके दिव्य प्रकटीकरण के प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया। अतः सावधानी से सोचो, हे अंतर्दृष्टि-सम्पन्न लोगों!

223

हे ’साम्राज्य’ के बेटे-बेटियों! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। ईश्वर की स्तुति हो, उसकी विषय-वस्तु से यह ज्ञात हुआ कि तुम्हारे हृदय अत्यंत शुद्ध हैं और तुम्हारी आत्मा परमात्मा के सुसमाचार से आह्लादित हैं। ज्यादातर लोग स्वार्थ और सांसारिक लालसा में लिप्त हैं, इस निम्न जगत के महासिंधु में निमग्न हैं और प्रकृति-जगत के गुलाम बने हुए हैं, सिवाय उन लोगों के जो भौतिक विश्व की बेड़ियों और जंजीरों से मुक्त हो चुके हैं और जो तेज उड़ान भरने वाले पक्षियों की तरह असीमित लोक में विचरण कर रहे हैं। वे जाग्रत एवं सजग हैं, वे प्रकृति-जगत की कालिमा से बचते हैं, उनकी उच्चतम आकांक्षा इस बात पर केन्द्रित है कि वे लोगों के बीच से अस्तित्व के संघर्ष को उखाड़ फेंकें, आध्यात्मिकता के प्रकाश को जगमगाएँ और उच्च लोक के प्रति प्रेम प्रदीप्त करें, लोगों के बीच अत्यंत दयालुता का परिचय दें, धर्मों के बीच अंतरंग एवं घनिष्ठ सम्बन्ध को प्रगाढ़ करें तथा आत्म-त्याग के आदर्श का पालन करें। तभी यह मानव-जगत ईश्वर के साम्राज्य में परिणत हो सकेगा।

हे मित्रों, प्रयास करो। हर व्यय के लिए एक आय होनी चाहिए। इस युग में, इस मानव-विश्व में, लोग हर समय केवल खर्च कर रहे हैं, क्योंकि युद्ध लोगो और धन की बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं है। कम से कम तुम लोग इस मानव-जगत के लाभ के कार्य में निरत हो जाओ ताकि आंशिक रूप से तुम उस कमी को पूरा कर सको। कदाचित, दिव्य सम्पुष्टियों के सहारे, तुम लोगों के सौहार्द और समरसता की घोषणा करने, शत्रुता की जगह प्रेम लाने, विश्वव्यापी युद्ध के बदले विश्व-शांति कायम करने और क्षति एवं विद्वेश को लाभ और प्रेम में बदलने में सफल हो सको। यह इच्छा ’साम्राज्य’ की शक्ति से ही फलीभूत हो सकेगी।

224

हे ईश्वर के सेवक! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। उसकी विषय-वस्तु अत्यन्त ही उच्च और उदात्त थी, और उसका लक्ष्य महान एवं दूरगामी। मनुष्य के इस संसार को बेहतर बनाए जाने की जरूरत है क्योंकि अभी यह एक भौतिक जंगल की तरह है जिसमें फलहीन वृक्ष उगे हुए हैं और घास-फूस पनप रहे हैं। अगर कोई फल देने वाला वृक्ष है भी तो वह फलहीन वृक्षों से घिरा हुआ है। और यदि इस जंगल में कोई फूल उगता भी है तो वह लोगों की नजरों के सामने नहीं आ पाता। मानवजाति के इस संसार को कुशल माली की जरूरत है जो इन वनों को सरस गुलाब-वाटिका में बदल सके, इन फलहीन वृक्षों की जगह फलवान वृक्षों को उगा सके, इन घास-फूसों की जगह गुलाब और सुगंधित बूटियाँ पनपा सके। इसलिए सक्रिय और सजग लोगों को दिन-रात कभी भी आराम करने की जरूरत नहीं है, वे दिव्य साम्राज्य से घनिष्ठ रूप से जुड़ने और इस तरह इन वनों के लिए असीम कृपा और आदर्श माली बनने के लिए प्रयासरत हैं। इस तरह मानव-संसार बिल्कुल रूपांतरित हो सकेगा और उदार कृपाएँ प्रत्यक्ष हो सकेंगी।

225

हे आभा-साम्राज्य के समूहो! मानवजाति की प्रसन्नता के उत्तुंग शिखरों से सफलता और समृद्धि के दो आह्वान सुनाए जा रहे हैं - सोए हुओं को जगाते हुए, अंधों को दृष्टि प्रदान करते हुए, असावधानों को सजग करते हुए, बहरों को सुनने की शक्ति देते हुए, गूंगों की वाणी को मुक्त करते हुए और मृतकों को पुनर्जीवन देते हुए।

एक आह्वान है सभ्यता का, भौतिक संसार की प्रगति का। इसका सम्बन्ध इस नाशवान संसार से है, यह भौतिक उपलब्धि के सिद्धान्त को उत्प्रेरित करता है और मनुष्य जाति की भौतिक उपलब्धियों का प्रशिक्षक है। इसके अंतर्गत वे विधान, नियम-कायदे, कला और विज्ञान हैं जिनके माध्यम से मानव-संसार का विकास हुआ है, वे नियम-कायदे जो उच्च कोटि के आदर्शों और स्वस्थ सोच के परिणाम हैं और जो आतीत में तथा आने वाले युगों में बुद्धिमान एवं सुसंस्कृत लोगों के प्रयास से इस अस्तित्व के लोक में आए हैं। इस आह्वान का प्रसारक और उसकी कार्यकारिणी शक्ति है न्याययुक्त सरकार।

दूसरा है आत्मा को स्फूर्त करने वाला परमात्मा का आह्वान जिसकी आध्यात्मिक शिक्षाएं अनन्त गरिमा, असीम आनन्द तथा मानव-लोक के प्रकाशन की संरक्षक हैं और जो इस मानव संसार तथा इसके बाद के जीवन में दयालुता के गुणों को प्रकट करती हैं।

यह दूसरा आह्वान परमात्मा के निर्देशों और उपदेशों तथा इस नश्वर लोक से सम्बन्धित आदेशों एवं परोपकारी भावनाओं पर आधारित है जो कि एक प्रखर प्रकाश की तरह मनुष्य के यथार्थ के प्रदीप को उज्ज्वल एवं प्रकाशित करती हैं। उसकी भेदक शक्ति है ईश्वर के शब्द।

लेकिन जब तक भौतिक उपलब्धियाँ, शारीरिक कार्य-निष्पादन और मानवीय गुण आध्यात्मिक पूर्णताओं, प्रकाशमय गुणों और दयालुता की विषेशताओं से पुष्ट नहीं हो जाते तब तक उनसे कोई भी सुफल या परिणाम हासिल नहीं हो सकते और न ही मानव-जगत की प्रसन्नता - जो कि उसका चरम ध्येय है - ही प्राप्त की जा सकती है। हालाँकि भौतिक उपलब्धियाँ और पार्थिव जगत के विकास एक ओर तो समृद्धि उत्पन्न करते हैं जो स्पष्ट रूप से अपने प्रकट उद्देश्यों को परिणामित करते हैं किंतु दूसरी ओर खतरे, गम्भीर संकट और घोर उत्पीड़न भी आसन्न होते हैं।

परिणामतः, जब तुम राज्यों, शहरों और गांवों की साज-सज्जा के आकर्षण, उनके प्राकृतिक संसाधनों की ताजगी, उनके साजो-सामान की उत्कृष्टता, उनके परिवहन साधनों की सुगमता, प्रकृति-जगत के बारे में उपलब्ध अपार ज्ञान, बड़े-बड़े आविष्कारों, विशालकाय उद्योगों, अच्छी-अच्छी खोजों और वैज्ञानिक शोधों के नजरिये से देखोगे तो इस निष्कर्ष पर पहुंचोगे कि वह सभ्यता मानव लोक की प्रसन्नता और प्रगति की संवाहक है। लेकिन जब तुम अपनी दृष्टि जीवन के वृक्ष को उखाड़ फेंक देने वाले विध्वंसक एवं नारकीय यंत्रों, विनाशकारी शक्तियों और भयावह उपकरणों के विकास की ओर डालोगे तो यह प्रकट और प्रत्यक्ष हो जाएगा कि वह सभ्यता बर्बरता से जुड़ी हुई है। प्रगति और नृशंसता साथ-साथ चलती हैं, बशर्ते कि भौतिक सभ्यता दिव्य मार्गदर्शन, परम कृपालु परमेश्वर के प्रकटीकरणों और दिव्य गुणों से सम्पुष्ट न हो और उसे आध्यात्मिक आचरण, प्रभु-साम्राज्य के आदर्शों तथा ’सम्प्रभुता के लोक’ की शक्ति प्राप्त न हो।

अब तुम यह विचार करो कि दुनिया के सर्वाधिक उन्नत एवं सभ्य देश विस्फोटक हथियारों के शस्त्रागार में तब्दील हो चुके हैं, कि इस दुनिया के महादेश बड़े-बड़े शिविरों और रणभूमियों में बदल गए हैं, कि दुनिया के लोगों ने स्वयं को हथियारों से लैस राष्ट्रों में बदल लिया है और यह कि दुनिया भर की सरकारें इस बात के लिए एक-दूसरे से होड़ कर रही हैं कि कौन सबसे पहले नरसंहार और रक्तपात की रणभूमि में कदम रखेगा और इस तरह मानवजाति को घोर उत्पीड़न का शिकार बना सकेगा।

इसलिए जरूरी है कि यह सभ्यता और भौतिक प्रगति ’परम महान मार्गदर्शन’ से युक्त हो जाए ताकि यह निम्न लोक ईश्वरीय साम्राज्य के उदार अनुदानों के प्रकट होने की स्थली बन सके और भौतिक उपलब्धियों को उस ’परम दयालु’ की ज्योति से सम्मिश्रित किया जा सके। वह इसलिए कि मनुष्य के लोक की सुन्दरता और परिपूर्णता सबके समक्ष अपनी पूरी गरिमा और आभा के साथ उजागर और प्रत्यक्ष हो सके। इस तरह अनन्त गरिमा और प्रसन्नता प्रकट होगी।

ईश्वर की स्तुति हो, एक के बाद एक आने वाली सभी शताब्दियों और युगों में सभ्यता की पुकार बुलन्द की गई है, दिन-प्रतिदिन मानव-जगत की प्रगति होती आई है, विभिन्न देश दिन दूनी रात चौगुनी विकसित होते गए हैं और भौतिक विकास की तब तक अभिवृद्धि होती आई है जब तक अस्तित्व के संसार ने आध्यात्मिक शिक्षाओं को प्राप्त करने और दिव्य आह्वान पर ध्यान देने की विश्वव्यापी क्षमता हासिल नहीं कर ली है। दूध पीता शिशु विभिन्न शारीरिक अवस्थाओं से गुजरता है, हर अवस्था में उसका विकास होता है, तब तक जब तक कि वह परिपक्वता की अवस्था को प्राप्त न कर ले। इस अवस्था को प्राप्त कर लेने के बाद, वह आध्यात्मिक एवं बौद्धिक पूर्णताओं को झलकाने की क्षमता हासिल कर लेता है। समझ, बुद्धि और ज्ञान के प्रकाश उसमें बोधगम्य हो जाते हैं और उसकी आत्मा की शक्ति प्रकट हो जाती है। इसी तरह, इस पराश्रित संसार में मानव-प्रजातियां प्रगतिशील भौतिक परिवर्तनों से होकर गुजरी हैं और एक धीमी प्रक्रिया के माध्यम से, वे सभ्यता की सीढ़ियों पर चढ़ सकी हैं और इस क्रम में उन्होंने अपने अन्दर मानवजाति के आश्चर्यों, उत्कृष्टताओं और उपहारों को भव्यतम रूप में प्रकट किया है ...तब तक जब तक कि उसने आध्यात्मिक पूर्णताओं की आभाओं और दिव्य आदर्शों को अभिव्यक्त करने की क्षमता नहीं प्राप्त कर ली और ईश्वर का आह्वान सुनने में सक्षम नहीं हो गया। और अंत में, ’साम्राज्य’ पुकार उठा, आध्यात्मिक गुणों और पूर्णताओं को प्रकट कर दिया गया, ’यथार्थ का सूर्य’ उदित हुआ और ’परम महान शांति’, मानव-जगत की एकता और मनुष्य की वैश्विकता की शिक्षाओं का संवर्द्धन किया गया। हमारी आशा है कि इन किरणों की प्रखरता और अधिक प्रबल होगी, और आदर्श सद्गुणों की आभा और बढ़ेगी ताकि इस विश्वव्यापी मानवीय प्रक्रिया का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा और परमात्मा का प्रेम अत्यंत कृपालुता और सौन्दर्य के साथ प्रकट होगा एवं सभी हृदयों को विमोहित कर देगा।

हे ईश्वर के प्रियजनों! तू, सत्य ही, यह जान ले कि मानवजाति की प्रसन्नता सम्पूर्ण मनुष्य प्रजाति की एकता और समरसता में निहित है और यह कि आध्यात्मिक और भौतिक विकास सभी लोगों के बीच प्रेम और सौहार्द पर निर्भर है। जीव-जन्तुओं के बारे में विचार करो, धरती पर विचरण करने वाले जीवों के बारे में और उनके बारे में जो हवा में उड़ान भरते हैं, वे जो भक्षण करते हैं। शिकारी जानवरों में से प्रत्येक प्रजाति अपने प्रकार की अन्य प्रजातियों से अलग-थलग रहती है और परस्पर घोर शत्रुता बरतते हैं और जब कभी परस्पर उनकी मुठभेड़ होती है उनमें तुरन्त लड़ाई शुरू हो जाती है, वे एक-दूसरे का खून बहाते हैं, दाँत पीसते हैं, अपने पंजे पजाने लगते हैं। हिंसक जानवरों और रक्त-पिपासु भेड़ियों, अपनी ही दुनिया में रहने वाले और अपने जीवन के लिए लड़ने-भिड़ने वाले परभक्षी जंतुओं के व्यवहार का यही तरीका है। लेकिन पालतू, अच्छे स्वभाव के और सौम्य जीव-जंतु - चाहे वे उड़ने वाले हों या घास चरने वाली प्रजाति के - एक-दूसरे के साथ अत्यंत प्रेम के साथ सहयोग करते हैं, अपने झुंड में एकत्र होकर रहते हैं और अपना जीवन आनन्द एवं संतोष के साथ बिताते हैं। इसी कोटि में वे पक्षी आते हैं जो कुछ दाने पाकर संतुष्ट एवं कृतज्ञ हो जाते हैं, वे अत्यन्त खुशी से रहते हैं, और शस्यभूमियों, मैदानों, पहाड़ियों एवं पर्वतों के ऊपर उड़ान भरते हुए मधुर कलरव करते हैं। उसी तरह, भेड़, हरिण और बारहसिंगे जैसे चरने वाले जानवर मैदानों और तृणभूमियों में संतुष्ट भाव से विचरण करते हुए अत्यंत मैत्री, सुहृदयता और एकता के साथ निवास करते हैं। लेकिन दूसरी ओर कुत्ते, भेड़िये, बाघ, लकड़बग्घे और ऐसे ही अन्य शिकारी जानवर एक-दूसरे से अलग-थलग रहते हैं और अलग रहकर शिकार एवं विचरण करते हैं। मैदानों में चरने वाले जीव और हवा में उड़ने वाले पक्षी अपने विचरण या विश्राम के क्रम में दूसरे जानवर या पक्षी के सामने आ जाने पर उनसे बचने या उन्हें तंग करने का प्रयास नहीं करते, बल्कि परभक्षी जीवों के विपरीत - जो कि अपनी गुफा या मांद में दूसरे के प्रवेश करने पर उसे फाड़ कर रख देते हैं - वे मित्रता के साथ दूसरे को स्वीकार करते हैं। इन परभक्षी जीवों की हालत तो यह है कि यदि कोई दूसरा जानवर किसी के निवास के पास से यूं ही गुजर जाए तो भी वह तुरन्त उस पर आक्रमण कर देता है और सम्भव हो तो उसे मार डालता है।

इसलिए यह स्पष्ट हो चुका है कि जीव-जगत में भी प्रेम और सौहार्द सौम्य स्वभाव, शुद्ध प्रकृति और प्रशंसनीय चरित्र के प्रतिफल हैं जबकि लड़ाई-झगड़े और अलगाव जंगल के हिंसक पशुओं के गुण हैं।

सर्वशक्तिमान परमात्मा ने मनुष्य को हिंसक पशुओं की तरह धारदार पंजे और दांत नहीं दिए हैं, नहीं, बल्कि मनुष्य के स्वरूप को अत्यंत सौम्य प्रकृति से रचा गया है और पूर्णतम गुणों विभूषित किया गया है। अतः इस रूप-रचना के सम्मान और इस (शरीर रूपी) परिधान की सुयोग्यता के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपनी जाति के प्रति प्रेम और सद्भाव प्रदर्शित करे, नहीं, बल्कि सभी जीव-जन्तुओं के प्रति न्याय और समता की भावना के साथ व्यवहार करे।

इसी तरह, यह विचार करो कि किस तरह मनुष्य के कल्याण, उसकी प्रसन्नता और उसके सुख-चैन का कारण है उसकी एकता और मैत्री-भावना, जबकि विवाद और अनेकता कठिनाइयाँ, अनादर, आक्रोश और विफलता की जनक हैं।

लेकिन हजारों बार अफसोस है कि मनुष्य लापरवाह है और इन तथ्यों से आँख मूंदे हुए है और हर रोज वह इस संसार में जंगली जानवरों के लक्षणों के साथ अपनी यात्रा आरम्भ करता है। यह देखो, एक ही क्षण में वह हिंसक बाघ बन जाता है और अगले ही क्षण जमीन पर रेंगता हुआ विषैला सांप। लेकिन मनुष्य की उच्चतम उपलब्धियाँ उन गुणों और विभूषणों में निहित हैं जो विशुद्ध रूप से परमोच्च लोक के देवदूतों के हैं। इसलिए, जब मनुष्य के अन्दर से प्रशंसनीय गुण और उच्च नैतिक मूल्य बाहर झलकते हैं तो वह एक स्वर्गिक प्राणी बन जाता है, स्वर्ग का देवदूत, एक दिव्य यथार्थ और एक स्वर्गीय आभा। किन्तु इसके विपरीत, जब वह युद्ध, लड़ाई-झगड़े और रक्तपात में निमग्न हो जाता है तो वह अत्यंत बर्बर जीव-जंतुओं से भी अधिक निकृष्ट बन जाता है, क्योंकि कोई रक्त-पिपासु भेड़िया एक रात में शायद किसी एक ही मेमने को मार कर खा जाता है जबकि युद्धभूमि में मनुष्य सैकड़ों-हजारों के खून बहा देता है, जमीन पर उनकी लाशें बिछा देता है और उनके रक्त से धरती को सान देता है।

संक्षेप में, मनुष्य दो प्रकृतियों से सम्पन्न हैः एक वह स्वभाव जो उसे नैतिक उच्चता एवं बौद्धिक परिपूर्णता की ओर ले जाता है और दूसरा वह स्वभाव जो उसे हिंसक पशुओं की तरह पतन की गर्तों और सांसारिक अपूर्णताओं की दिशा में धकेलता है। यदि तुम लोग इस धरती के देशों की यात्रा पर निकलो तो एक ओर तुम्हें विनाश और बर्बादियों के अवशेष देखने को मिलेंगे और दूसरी ओर सभ्यता और विकास के चिह्न। ये विध्वंस और बर्बादियाँ युद्ध, संघर्ष तथा झगड़े-फसाद के नतीजे हैं और ये समस्त विकास एवं प्रगतियाँ सद्गुण, सहयोग और सौहार्द के नतीजे हैं।

यदि कोई व्यक्ति मध्य एशिया के रेगिस्तानों से होकर यात्रा करता तो वह यह देखता कि न जाने कितने शहर, जो कभी पेरिस और लन्दन की तरह महान और वैभवशाली थे, अब विनष्ट और धराशायी किए जा चुके हैं। कैस्पियन सागर से लेकर ऑक्सस नदी तक, जंगल और बियावान का विस्तार फैला हुआ है, रेगिस्तान और बस घाटियां ही घाटियाँ हैं। दो दिन और दो रात लगातार रशियन रेलवे इस विनष्ट भूमि के विनष्ट शहरों और बिना आबादी वाले गाँवों से होकर गुजरता है। उसी मैदान भाग ने कभी अतीत की एक उत्कृष्टतम सभ्यता का सुफल उपजाया था। उस विकास और उत्कृष्टता के चिह्न चारों ओर दिख रहे थे, कला और विज्ञान को संरक्षण मिला था, उन्हें संवर्द्धित किया गया था, कई व्यवसाय और उद्योग-धंधे फल-फूल रहे थे, कृषि एवं वाणिज्य अपनी क्षमता के चरम पर पहुंचे हुए थे, और सरकार एवं राजनय की आधारशिलाएँ एक सुदृढ़ एवं ठोस बुनियाद पर रखी गई थीं। आज वही विस्तृत भूभाग ज्यादातर तुर्कमान कबीलों का पनाहगाह बना हुआ है और जंगली जानवरों के हिंसक कारनामों का मैदान। उस मैदान के प्राचीन नगर ....जैसे गुरगान, नीसा, अवीवर्द और सहारिस्तान .....जो पूरे विश्व में अपनी कला, ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति और उद्योग-धंधों के लिए विख्यात थे और जिन्हें उनके वैभव, उनकी महानता, समृद्धि और विशिष्टता के कारण जाना जाता था, अब ऐसे बियावान में बदल चुके हैं जिसमें जंगली जानवरों की गर्जना के सिवा और कुछ सुनाई नहीं देता और जहां खून के प्यासे भेड़िये स्वच्छंद विचरण किया करते हैं। इस विध्वंस, इस निर्जनता के वाहक थे पर्शियन और तुर्क लोगों के बीच उभरे युद्ध और संघर्ष, मतभेद और विवाद। उनके धर्म अलग थे, उनके रीति-रिवाज भिन्न थे। धार्मिक पूर्वाग्रह की भावना इतनी कट्टर थी कि निष्ठाहीन नेताओं ने निर्दोष लोगों के खून बहाने का फतवा जारी कर दिया, सम्पत्तियों को बर्बाद करने का हुक्म दिया और परिवारों की इज्जत को तार-तार करने का फरमान सुनाया। यह तो केवल एक ही उदाहरण है।

और फिर, जब तुम विश्व के प्रदेशों से होकर यात्रा करोगे तो तुम इस निष्कर्ष पर पहुंचोगे कि समस्त प्रगति आपसी सहयोग का नतीजा है जबकि विध्वंस विद्वेष एवं घृणा का परिणाम। इसके बावजूद, यह मानव-संसार इससे सबक नहीं ले रहा और न ही वह असावधानी की निद्रा से जाग ही रहा है। युद्ध के उन्मादियों को उकसाने के लिए और नरसंहार एवं रक्तपात की रणभूमि में अपनी सेनाएँ भेजने को आतुर मनुष्य अभी भी मतभेदों, संघर्षों और लड़ाई-झगड़ों को जन्म दे रहा है।

पुनः तुम जरा संघटन और विघटन, अस्तित्व और अनस्तित्व के परिदृश्य पर विचार करो। इस नाशवान संसार में हर रचित वस्तु अनेक एवं विविध प्रकार के परमाणुओं से बनी हुई है और उसका अस्तित्व उन परमाणुओं के संघटन पर निर्भर है। दूसरे शब्दों में, दिव्य रचनात्मक शक्ति के माध्यम से, सरल तत्वों का योग घटित होता है ताकि उस संघटन से एक विशिष्ट अवयव उत्पन्न हो सके। सभी वस्तुओं का अस्तित्व इस सिद्धान्त पर आधारित है। लेकिन जब इस क्रम को बिगाड़ दिया जाता है तो विघटन होता है और विखंडन की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है, और तब उस वस्तु का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। अर्थात, सभी वस्तुओं का विनाश विखंडन और एकीकरण के समाप्त होने के कारण होता है। अतः, विभिन्न तत्वों के बीच आकर्षण और संघटन जीवन का साधन है और असहमति, विखंडन एवं विभाजन मृत्यु का कारक है। इस तरह, सभी वस्तुओं की संसक्तकारी एवं आकर्षणकारी शक्तियाँ ही वे कारण हैं जो सफल परिणामों और प्रभावों को जन्म देती हैं, जबकि वस्तुओं में विलगाव और पृथकता विकृति और विनाश के वाहक हैं। संसक्ति और आकर्षण के माध्यम से पेड़-पौधे, जीव-जंतु और मनुष्य जैसी सजीव रचनाएँ अस्तित्व ग्रहण करती हैं जबकि विभाजन और विभेद अपखंडन और विनाश लाते हैं।

अतः, मनुष्य-पुत्रों के बीच जो भी सहयोग, आकर्षण और एकता के अनुरूप है वही मानव-संसार के जीवन का हेतु है और जो कुछ भी विभाजन, अनाकर्षण और दुराव उत्पन्न करता है, वह मानवजाति की मृत्यु का कारक है।

और यदि, मैदानों एवं पेड़-पौधों के बीच से गुजरते हुए, तुम यह देखोगे कि पेड़-पौधे, फूल और सुरभित बूटियाँ प्रचुरता से एक जगह पुष्पित-पल्लवित हो रही हैं और वे एकता की रूपरेखा प्रस्तुत कर रही हैं, तो यह इस तथ्य का प्रमाण है कि वे वनस्पतियाँ और उद्यान एक कुशल माली की देखरेख में पुष्पित हो रहे हैं। लेकिन जब तुम उन्हें अव्यवस्थित एवं अनियमित रूप-रंग में देखोगे तो तुम यही अनुमान लगाओगे कि उन्हें कुशल कृषक द्वारा प्रशिक्षित नहीं किया गया है और इसलिए वहाँ घास-फूस उग आए हैं।

इसलिए यह स्पष्ट हो जाता है कि सौहार्द और संसक्ति ’सच्चे शिक्षक’ के प्रशिक्षण के सूचक हैं और बिखराव तथा विलगाव बर्बरता एवं दिव्य शिक्षा से वंचित रह जाने के प्रमाण हैं।

कोई आलोचक यह कहकर आपत्ति उठा सकता है कि लोग, प्रजातियाँ, कबीले और दुनिया भर के समुदाय अलग-अलग एवं विविध किस्म की परम्पराओं, आदतों, अभिरुचियों, चरित्र, रुझानों और विचारों से सम्पन्न हैं, कि विचारों और मतों में एक-दूसरे से भिन्नता है और इसलिए सच्ची एकता हासिल कर सकना भला कैसे सम्भव है और मानवों के बीच पूर्ण सहमति भला कैसे हो सकती है?

इसके उत्तर में हम यह कहते हैं कि अन्तर दो किस्म के होते हैं। एक अन्तर वह है जो विनाश का कारण है और जो एक-दूसरे का विनाश चाहने वाले, एक-दूसरे के परिवारों की जड़ उखाड़ फेंकने वाले, एक-दूसरे की नींद और चैन उड़ा देने वाले और रक्तपात में निरत युद्धरत राष्ट्रों एवं आपस में संघर्षरत कबीलों के बीच व्याप्त घृणा की तरह है। एक दूसरे किस्म का अन्तर जो कि विविधता का सूचक है वह पूर्णता का सार-तत्व है और परम महिमामय प्रभु के अनुदानों के प्रकटीकरण का हेतु।

किसी बगीचे में लगे फूलों के बारे में विचार करो: हालाँकि उनके रंग और आकार-प्रकार भिन्न हैं किन्तु चूंकि वे एक ही बासन्ती फुहार से ताजगी पाते हैं, एक ही हवा के झोंकों से नवजीवन पाते हैं, एक ही सूर्य की किरणों से स्फूर्त होते हैं, अतः यह विविधता उनके आकर्षण को बढ़ाती है और उनके सौन्दर्य में चार चांद लगाती है। इसी तरह, जब ’ईश्वर के शब्द’ का सर्वबेधक प्रभाव उत्पन्न होता है तो परम्पराओं, तौर-तरीकों, आदतों, विचारों और विशिष्टताओं का अन्तर इस मानव-जगत को अलंकृत कर उठता है। यह विविधता, यह अन्तर, प्राकृतिक रूप से सृजित मानव शरीर के अंगों और अवयवों की असमानता और विविधता की तरह है, क्योंकि उनमें से प्रत्येक सम्पूर्ण शरीर के सौन्दर्य, उसकी प्रभावशीलता और परिपूर्णता में योगदान देता है। जब ये विभिन्न अंग-प्रत्यंग मनुष्य की सार्वभौम आत्मा के प्रभाव तले आते हैं, और जब आत्मा की शक्ति इन अंग-प्रत्यंगों, शरीर की शिराओं और धमनियों में व्याप्त होती है तो यह भिन्नता समरसता को बल देती है, यह विविधता प्रेम को सशक्त करती है, और यह अनेकता संयोजन का सबसे बड़ा कारक बन जाती है।

 यदि पौधों के सभी फूल, पत्तियाँ और बहारें, उनके फल और शाखाएँ और बगीचे के सारे पेड़ एक ही रंग और आकार के हों तो यह आँखों को कितना अप्रिय लगेगा! रंगों और आकार-प्रकारों की विविधता बगीचे को समृद्ध और सुशोभित करती है और उसकी प्रभावशीलता को बढ़ाते हैं। इसी तरह. जब विचारों, मिजाज और प्रकृति के विभिन्न रंग-रूप एक केन्द्रीय एजेन्सी के प्रभाव और नियंत्रण के अधीन एकजुट होते हैं तो इससे मानवीय परिपूर्णता की सुन्दरता और महिमा प्रकट होगी। ’ईश्वर के शब्द’, जो सभी वस्तुओं के यथार्थ को नियंत्रित करते और उनसे भी श्रेष्ठ हैं, की स्वर्गिक शक्ति के अलावा अन्य कुछ भी ऐसा नही है जो मानव-सन्तान के विविध विचारों, भावनाओं और धारणाओं को समरस बनाने में सक्षम हो। वस्तुतः, यह सभी वस्तुओं की गहराइयों में जाने वाली शक्ति है, आत्माओं को स्पंदित करने वाली तथा मानव-जगत में सबको नियंत्रित एवं बांधकर रखने वाली शक्ति।

स्तुति हो परमात्मा की, आज ’ईश्वर के शब्द’ की आभा ने हर क्षितिज को जगमगा दिया है और सभी सम्प्रदायों, प्रजातियों, कबीलों, राष्ट्रों और समुदायों से लोग उस ’शब्द’ की छाँह में एकत्रित हुए हैं, एकता के सूत्र में बंधकर, पूर्ण समरसता के साथ सहमति के बिंदु पर आ जुटे हैं। अहा! विभिन्न प्रजातियों और विविध सम्प्रदायों के लोगों से सुसज्जित कितनी बड़ी संख्या में लोगों का सम्मिलन हुआ है! इनमें भाग लेने वाला कोई भी व्यक्ति आश्चर्यचकित रह जाएगा और यह मानेगा कि ये सब लोग एक ही भूभाग, एक ही राष्ट्रीयता, एक ही समुदाय, विचार, विश्वास और मान्यता से जुड़े लोग हैं जबकि सच्चाई यह है कि उनमें से कोई अमेरिकी है, दूसरा अफ्रीकी, कोई एशिया का है तो कोई यूरोप का, कोई भारत का निवासी है और कोई तुर्कमान का, कोई अरब है तो कोई ताज़िक, कोई फारसी, कोई ग्रीक। ऐसी विविधता के बावजूद, वे पूर्ण सौहार्द एवं एकता, प्रेम और स्वतंत्रता के साथ एक-दूसरे के साथ रहते हैं। उनकी एक ही आवाज होती है, एक ही विचार और एक ही उद्देश्य। सत्य ही, यह ईश्वर के शब्द की बेधकारी शक्ति के कारण ही है! यदि ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियाँ एकजुट हो जाएँ तो भी वे इस तरह का एक सम्मिलन प्रतिफलित नहीं कर सकतीं जो कि प्रेम, स्नेह, आकर्षण और दीप्ति की ऐसी भावनाओं से संवलित हो कि विभिन्न प्रजातियों के सदस्यों को एक कर सके, और विश्व के मध्य-बिंदु से ऐसी आवाज मुखरित कर सके जो युद्ध और संघर्ष को मिटा सके, मतभेद और विवाद का उन्मूलन कर सके, विश्व शांति के युग में ले जा सके और लोगों के बीच एकता एवं सहमति स्थापित कर सके।

क्या कोई भी शक्ति ईश्वर के शब्द के बेधक प्रभाव को रोक सकतीं है? नहीं, ईश्वर की सौगन्ध! प्रमाण स्पष्ट है और साक्ष्य पूरा हो चुका है। यदि कोई न्याय की दृष्टि से देखे तो वह आश्चर्यचकित रह जाएगा और इस बात को प्रमाणित करेगा कि दुनिया के सभी लोगों, सम्प्रदायों और प्रजातियों को बहाउल्लाह की शिक्षाओं और आज्ञाओं के लिए प्रसन्न, संतुष्ट और कृतज्ञ होना चाहिए। क्योंकि ये दिव्य विधान हर हिंस्र जानवर को पालतू, रेंगते हुए कीड़े को उड़ान भरते पक्षी, मानवों को ’साम्राज्य’ के देवदूत और मानव-जगत को दया के सद्गुणों का केंद्र बनाते हैं।

इसके अलावा, हर किसी को चाहिए कि वह अपनी सरकार के प्रति आज्ञाकारिता, विनम्रता और वफादारी झलकाए। आज दुनिया का कोई भी राज्य शांति और अमन-चैन की दशा में नहीं है, क्योंकि लोगों के बीच से सुरक्षा और विश्वास खो गया है। शासित और शासक दोनों ही समान रूप से खतरे में हैं। लोगों का एकमात्र समूह जो वर्तमान समय में शांति और वफादारी के साथ सरकार के नियमों और अध्यादेशों का पालन कर रहा है और लोगों के साथ स्पष्टता एवं ईमानदारी के साथ बर्ताव कर रहा है वह यही एक प्रवंचित समुदाय है। फारस और तुर्किस्तान के सभी सम्प्रदाय जबकि स्वयं अपने हितों को बढ़ावा देने में जुटे हुए हैं और अपनी सरकार की आज्ञा का पालन या तो किसी पुरस्कार की आशा में या किसी दण्ड के डर से कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर बहाई लोग सरकार के शुभचिंतक हैं, उसके कानूनों के प्रति आज्ञाकारी और सभी लोगों के प्रति प्रेम दर्शाने वाले।

’आभा सौन्दर्य’ के एक स्पष्ट पाठ के द्वारा ऐसा आज्ञापालन और समर्पण हर किसी के लिए अनिवार्य और बाध्यकारी है। अतः, उस ’एकमेव सत्य’ की आज्ञा के पालन में, धर्मानुयायी सभी राष्ट्रों के प्रति अत्यंत निष्ठा और सद्भाव झलकाते हैं, और यदि कोई व्यक्ति सरकार के कानूनों के विपरीत आचरण करे तो उसे स्वयं को ईश्वर के प्रति उत्तरदायी समझना चाहिए और अपने पाप एवं कदाचार के लिए दिव्य कोप एवं सजा का हकदार मानना चाहिए। यह आश्चर्यजनक बात है कि इसके बावजूद सरकार के कुछ अधिकारी बहाइयों को विद्वेशी मानते हैं तथा अन्य समुदायों के सदस्यों को अपना हितैषी। भव्य परमात्मन! हाल ही में जब तेहरान तथा फारस के अन्य राज्यों में एक जनक्रांति और आंदोलन का विस्फोट हुआ तो यह स्पष्ट हो गया कि उसमें कोई भी बहाई शामिल नहीं था और न ही इन मामलों में उन्होंने कोई दखल ही दी थी। इसी कारण अज्ञानियों ने उनकी भत्र्सना भी की थी क्योंकि उन्होंने ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ की आज्ञा का पालन किया था और राजनीतिक मामलों में कोई भी हस्तक्षेप करने से बचते रहे थे। उनका किसी भी दल से कोई सम्बन्ध नहीं था, बल्कि वे अपने ही व्यवसाय और कार्यकलापों में व्यस्त थे और अपना कर्त्‍तव्‍य पालन कर रहे थे।

ईश्वर के सभी सखा इस बात के गवाह हैं कि हर दृष्टिकोण से अब्दुल बहा सभी सरकारों और राष्ट्रों के हितैषी हैं, और वे पूरी निष्ठा से उनकी प्रगति और उन्नति के लिए प्रार्थना करते हैं, खासतौर पर पूरब के दो बड़े राज्यों के लिए, क्योंकि ये दो देश बहाउल्लाह की जन्मभूमि और उनके निर्वासन की भूमि रहे हैं। अपने सभी पत्रों और लेखों में उन्होंने इन दोनों ही सरकारों की प्रशंसा की है और एकमेव सत्य ईश्वर की दहलीज पर उनके लिए दिव्य सम्पुष्टियों की याचना की है। ’आभा सौन्दर्य’ - काश कि मेरा जीवन उनके प्रियजनों के लिए उत्सर्ग हो जाए - ने अपने इन सम्राटों की ओर से प्रार्थनाएँ की हैं। भव्य परमात्मा! यह कितनी अजीब बात है कि इन स्पष्ट प्रमाणों के बावजूद कोई न कोई दुष्चक्र रचा जाता है और कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं। लेकिन हमें और ईश्वर के सखाओं को किसी भी हाल में विश्वासपात्र, वफादार और सदिच्छा से सम्पन्न मनुष्य बनने के अपने प्रयासों में शिथिलता नहीं लानी चाहिए। हमें हर समय अपनी सच्चाई और निष्ठा झलकानी चाहिए, नहीं, बल्कि हमें अपनी वफादारी और विश्वासपात्रता में अडिग रहना चाहिए और स्वयं को सबकी भलाई के लिए प्रार्थनाएँ अर्पित करने में निरत रहना चाहिए।

हे ईश्वर के प्रिय, ये अडिग आस्था के दिवस हैं, प्रभुधर्म में दृढ़ता और सतत परिश्रम के दिन। तुम्हें अपना ध्यान एक व्यक्ति के रूप में अब्दुल बहा पर केन्द्रित नहीं करना चाहिए, क्योंकि शीघ्र ही वे आपको अलविदा कहकर चले जाएंगे। बल्कि आपको अपना ध्यान ’ईश्वर के शब्द’ पर केन्द्रित करना चाहिए। यदि ईश्वर के शब्द को आगे बढ़ाया जा रहा है तो आनन्दित हो जाइए और कृतज्ञ बनिए, भले ही स्वयं अब्दुल बहा को तलवार से काट डाले जाने की धमकियाँ मिल रही हों या उन्हें जंजीरों और बेड़ियों के भार से जकड़ दिया जाए। प्रभुधर्म रूपी ’पवित्र मन्दिर’ महत्वपूर्ण है, न कि अब्दुल बहा का भौतिक शरीर। ईश्वर के सखाओं को ऐसी दृढ़ता से उठ खड़ा होना चाहिए कि यदि किसी क्षण अब्दुल बहा जैसी सैकड़ों आत्माओं को कष्टों के वाणों का निशाना बना दिया जाए तो भी वे अपनी दृढ़ता, अपने संकल्प, से न डिगें, अपनी दीप्त भावना न त्यागें और न ही प्रभुधर्म के प्रति अपने त्याग और अपनी सेवा को ही तिलांजलि दें। अब्दुल बहा स्वयं ही ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ की दहलीज पर एक सेवक हैं और उस सर्वशक्तिमान की देहली पर शुद्ध एवं सर्वस्व सेवा के प्रकट रूप। उनका और कोई भी दर्ज़ा और कोई भी उपाधि नहीं है। यही मेरा अन्तिम उद्देश्य, मेरा अनन्त स्वर्ग, मेरा पवित्रतम ’मन्दिर’ और मेरा ’अन्तिम बिंदु’ (सद्रतुल-मुन्तहा) है। ’आभा’ के साथ ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ और उस ’उदात्त आत्मा’, उनके अग्रदूत - मेरा जीवन उन दोनों के लिए बलिदान हो जाए - ने ईश्वर के स्वतंत्र एवं विश्वव्यापी प्रकटावतार के आविर्भाव का अंत कर दिया है। और आगामी हजार वर्षों तक सब ’उनके’ ही प्रकाश से आलोकित होंगे और ’उनकी’ ही कृपाओं से पोषित होंगे।

हे ईश्वर के प्रेमियों! वस्तुतः, यही मेरी अन्तिम इच्छा है और यही तुम्हें मेरी आज्ञा है। अतः धन्य है वह जिसे इस पाती पर जो कुछ भी अंकित है उसका अनुपालन करने में परमात्मा की सहायता प्राप्त है - वह पाती जिसके शब्द लोगों के बीच लोकप्रिय संकेतों से मुक्त, उनसे कहीं ऊपर हैं।

226

हे ईश्वर के सेवक! तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ और उससे प्रसन्नता प्राप्त हुई। तुमने अपनी उत्कट अभिलाषा प्रकट की है कि मुझे शांति अधिवेशन में भाग लेना चाहिए। ऐसे राजनीतिक अधिवेशनों में मैं उपस्थित नहीं होता, क्योंकि ’ईश्वर के शब्द’ की शक्ति के अलावा अन्य किसी भी तरह से शांति की स्थापना सम्भव नहीं है। जब कोई ऐसा अधिवेशन आयोजित किया जाएगा जिसमें सभी राष्ट्रों के प्रतिनिधि ’ईश्वर के शब्द’ के प्रभाव तले क्रियाशील होंगे तभी विश्व शांति की स्थापना हो सकेगी, अन्यथा नहीं।

वर्तमान समय में यह स्पष्ट हो चुका है कि अस्थायी शांति स्थापित है किंतु वह टिकाऊ नहीं है। सभी सरकारें और राष्ट्र युद्ध से, यात्रा की कठिनाइयों, भारी-भरकम खर्चों, जन-हानि, औरतों के कष्टों, भारी संख्या में अनाथ बच्चों - इन सबसे थक चुके हैं और उन्हें शांति के लिए तैयार होना पड़ा है। लेकिन यह शांति स्थायी नहीं है, यह शांति अस्थायी है।

हम आशा करते हैं कि ईश्वर के शब्द की शक्ति से ऐसी शांति की स्थापना होगी जो अनन्त काल तक प्रभावी और सुरक्षित होगी।

227[[75]](#footnote-75)

हे सम्मानित जनो जो कि मानव-जगत के हितैशियों के बीच अग्रनायक हो!

युद्ध के दौरान तुमने जो पत्र भेजा था वह नहीं मिल सका लेकिन 11 फरवरी 1916 का एक पत्र अभी-अभी प्राप्त हुआ है और तुरन्त ही उसका उत्तर लिखा जा रहा है। तुम्हारा अभिप्रेत लक्ष्य हजारों प्रशंसा के योग्य है, क्योंकि तुम मानव-जगत की सेवा कर रहे हो और यह सबके लिए प्रसन्नता और कल्याण का वाहक है। हाल के इस युद्ध ने दुनिया और लोगों के सामने साबित कर दिया है कि युद्ध विनाश है जबकि विश्वव्यापी शांति जीवन है, युद्ध मृत्यु है जबकि शांति जीवन है, युद्ध लोलुपता और रक्त-पिपासा है जबकि शांति है करुणा और मानवता, युद्ध प्राकृतिक जगत की वस्तु है जबकि शांति ईश्वर के धर्म की आधारशिला, युद्ध अंधेरा ही अंधेरा है जबकि शांति है स्वर्गिक प्रकाश, युद्ध मानवता के भवन का विध्वंसकर्ता है जबकि शांति मानव-लोक का अनन्त जीवन, युद्ध खा जाने वाला भेड़िया है जबकि शांति स्वर्ग के देवदूतों की तरह है, युद्ध अस्तिव के लिए किया जाने वाला संघर्ष है जबकि शांति है दुनिया के लोगों के बीच आपसी सहायता और एक-दूसरे का सहयोग और स्वर्गिक लोक में उस ’एकमेव सत्य’ की सत्कृपा का हेतु।

ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं है जिसकी अंतर्रात्मा यह प्रमाणित न करती हो कि आज के युग में विश्व शांति से बढ़कर और कोई भी महत्वपूर्ण विषय नहीं है। हर न्यायप्रिय व्यक्ति इसका गवाह है और उस सम्मानित ’सभा’ की प्रशंसा करता है क्योंकि इसका उद्देश्य यह है कि यह अंधकार प्रकाश में बदल जाए, यह रक्तपिपासा दयालुता में, यह यातना आनन्द में, यह कठिनाई आराम में और यह घृणा एवं शत्रुता प्रेम और बंधुता में। अतः, उन सम्मानित जनों का प्रयास सराहना और प्रशंसा के योग्य है।

लेकिन वे विवेक-सम्पन्न लोग जो वस्तुओं के यथार्थ से उत्पन्न अनिवार्य सम्बंधों से अवगत हैं वे यह विचार करते हैं कि कोई भी एक पदार्थ, अपने आप में, मानव यथार्थ को उस तरह प्रभावित नहीं कर सकता जैसाकि उसे करना चाहिए, क्योंकि जब तक लोगों के मनो-मस्तिष्क एक नहीं हो जाएंगे तब तक कोई भी महत्वपूर्ण चीज हासिल नहीं की जा सकती। वर्तमान समय में, विश्वव्यापी शांति अत्यधिक महत्वपूर्ण है, लेकिन अंतःकरण की एकता जरूरी है ताकि इस बात की आधारशिला मजबूत की जा सके, उसे सुदृढ़ आधार पर स्थापित किया जा सके और भवन मजबूत बनाया जा सके।

इसलिए, पचास साल पहले, बहाउल्लाह ने एक ऐसे समय में विश्व शांति के इस प्रश्न की व्याख्या की जब वे अक्का के किले में बंदी थे और एक प्रवंचित के रूप में कारागार भोग रहे थे। विश्व शांति के इस महत्वपूर्ण विषय के बारे में उन्होंने दुनिया के सभी महान शासकों को लिखा और उसे पूरब में अपने मित्रों के बीच संस्थापित किया। पूरब का क्षितिज अत्यंत अंधकारमय था, राष्ट्र एक-दूसरे के प्रति घोर घृणा के भाव झलका रहे थे, धर्म एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए थे और घनघोर अंधेरा छाया था। ऐसे समय में, पूरब के क्षितिज से बहाउल्लाह एक सूर्य की तरह जगमगा उठे और इन शिक्षाओं के प्रकाश से उन्होंने पूरे फारस को प्रकाशित कर दिया।

उनकी शिक्षाओं में से एक थी विश्व शांति की घोषणा। उनका अनुसरण करने वाले विभिन्न राष्ट्रों, धर्मों और पंथों के लोग इस हद तक एकजुट हुए कि पूरब के अनेक राष्ट्रों और धर्मों के बड़े-बड़े सम्मिलन स्थापित हुए। उन सम्मिलनों में प्रवेश करने वाले हर व्यक्ति ने बस एक ही राष्ट्र, एक ही शिक्षा, एक ही मार्ग, एक ही व्यवस्था के दर्शन किए क्योंकि बहाउल्लाह की शिक्षाएँ विश्व शांति की स्थापना तक ही सीमित नहीं थीं। उन शिक्षाओं में विश्व शांति को समर्थित करने वाली अनेक शिक्षाएँ शामिल थीं।

 उन शिक्षाओं में से एक थी सत्य की स्वतंत्र खोज ताकि इस मानव-जगत को अनुकरण के अंधकार से बचाया जा सके और सत्य तक पहुंच सके, ताकि वह अपने हजारों वर्ष पुराने जीर्ण-जर्जर परिधान को छिन्न-भिन्न कर सके, उसे त्याग सके और अत्यंत शुद्धता एवं पवित्रता के साथ यथार्थ के करघे से निर्मित वस्त्र को धारण कर सके। चूंकि सत्य एक है और उसमें अनेकरूपता नहीं हो सकती, इसलिए विभिन्न मत-मतांतरों का अंततः एक में विलय हो जाना चाहिए।

 और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक है मानव-जगत की एकता। यह कि सभी मनुष्य ईश्वर के मेमने हैं और वह दयालु गड़ेरिया है। गड़ेरिया सभी मेमनों के प्रति दयावान होता है क्योंकि उसने उन्हें रचा है, उन्हें प्रशिक्षित किया है, उनका पालन-पोषण किया है और उनकी रक्षा की है। इसमें कोई संदेह नहीं कि गड़ेरिया सभी मेमनों के प्रति दयावान है और यदि मेमनों में कुछ अज्ञानी मेमने हों तो उन्हें शिक्षित किया जाना चाहिए, यदि उनमें कुछ बच्चे हों तो प्रौढ़ता प्राप्त होने तक उन्हें प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, यदि उनमें से कुछ बीमार हों तो उन्हें स्वस्थ किया जाना चाहिए। कोई भी घृणा और शत्रुता नहीं होनी चाहिए और इन अज्ञानी, बीमारजनों के साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए जैसे किसी दयालु चिकित्सक द्वारा किया जाता है।

 और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक यह है कि धर्म को प्रेम और बंधुता का कारण होना चाहिए। यदि वह अलगाव का कारण बन जाए तो फिर उसकी कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि धर्म एक उपचार की तरह है और यदि वह रोग को और ज्यादा उग्र बना दे तो उसकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती।

और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक यह है कि धर्म तथा विज्ञान एवं तर्क के बीच समन्वय होना चाहिए, ताकि वह मानव-हृदयों को प्रभावित कर सके। आधार ठोस होना चाहिए और लकीर का फकीर बनने की कोई गुंजाईश नहीं होनी चाहिए।

और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक यह है कि धार्मिक, नस्लीय, राजनैतिक, आर्थिक एवं राष्‍ट्रीय पूर्वाग्रह मानवता के भवन को नष्ट कर देते हैं। जब तक इन पूर्वाग्रहों का वर्चस्व बना रहेगा तब तक इस मानव-जगत को सुख-चैन नहीं मिलेगा। 6,000 वर्षों के इतिहास की अवधि हमें मानव-जगत के बारे में सूचित करती है। इन 6,000 वर्षों में भी मनुष्य का संसार युद्ध, संघर्ष, हत्या और रक्तपिपासा से मुक्त नहीं हो सका। हर कालखंड में किसी न किसी देश में युद्ध किया गया है और वह युद्ध धार्मिक पूर्वाग्रह, नस्लीय पूर्वाग्रह, राजनैतिक या राष्‍ट्रीय पूर्वाग्रह के कारण हुआ है। इसलिए यह प्रमाणित और सुनिश्चित हो जाता है कि सभी तरह के पूर्वाग्रह मनुष्यों की इमारत को ध्वस्त करने वाले हैं। जब तक ये पूर्वाग्रह बने रहेंगे तब तक अस्तित्व का संघर्ष सिर उभारता रहेगा और रक्त-पिपासा एवं लोलुपता जारी रहेगी। इसलिए, जैसा कि अतीत में भी हुआ है, पूर्वाग्रहों को त्यागे और ईश्वरीय साम्राज्य के नैतिक गुणों को अर्जित किए बिना मानवजाति प्रकृति के अंधकार से नहीं उबर सकती और प्रकाशित नहीं हो सकती।

यदि इस पूर्वाग्रह और शत्रुता का मूल धर्म में है तो यह विचार करो कि धर्म को बंधुता का कारण होना चाहिए, अन्यथा वह निष्फल है। और यदि यह पूर्वाग्रह राष्‍ट्रीयता का पूर्वाग्रह हो तो यह विचार करो कि समस्त मानवजाति एक ही राष्‍ट्र की है। सभी की उत्पत्ति आदम के वंश से हुई है और आदम उस वंश-वृक्ष की जड़ है। वह एक ही वृक्ष है और ये सभी राष्‍ट्र उसकी शाखाओं की तरह हैं और सभी मनुष्य एक व्यक्ति के रूप में पत्तियों, फूलों और फलों की तरह हैं। इसलिए, विभिन्न राष्ट्रों की स्थापना और उसके बाद रक्तपात करना और मानवता की इमारत को ध्वस्त करना मनुष्य के अज्ञान और उसकी स्वार्थी प्रवृत्तियों का परिणाम है।

जहाँ तक राष्‍ट्रीय पूर्वाग्रह का सवाल है, यह भी घोर अज्ञान के कारण है क्योंकि इस धरती की सतह सबकी एक मातृभूमि है। हर कोई इस धरती पर कहीं भी रह सकता है। इसलिए यह समस्त संसार मनुष्य का जन्मस्थल है। ये सीमाएँ और निर्गम मनुष्य द्वारा निर्मित हैं। सृष्टि के प्रारूप में इस तरह की सीमाएँ और निर्गम निर्धारित नहीं किए गए थे। यूरोप एक महादेश है, एशिया दूसरा महादेश, अफ्रीका एक और दूसरा महादेश और ऑस्ट्रेलिया एक अन्य महादेश किन्तु व्यक्तिगत इरादों और स्वार्थपूर्ण हितों के कारण कुछ लोगों ने इनमें से प्रत्येक महादेश को विभाजित कर दिया है और एक खास हिस्से को अपना देश मान लिया। फ्रांस और जर्मनी के बीच ईश्वर ने कोई सीमा निर्धारित नहीं की है, वे एक सतत भूखण्ड हैं। तथापि, प्रथम शताब्दियों में, स्वार्थी लोगों ने अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए सीमाओं और निर्गमों का निर्धारण कर दिया और दिनोंदिन उन्हें और महत्वपूर्ण बनाते चले गए - तब तक जब तक कि आने वाली शताब्दियों में यह घोर शत्रुता, रक्तपात और लोलुपता की ओर नहीं लेता चला गया। इसी तरह से यह अनिश्चित रूप से जारी रहेगा और यदि राष्‍ट्रीयता की यह अवधारणा एक खास परिधि तक ही सीमित रहेगी तो यह विश्व के विनाश का एक प्रमुख कारण बनेगा। कोई भी बुद्धिमान और न्यायनिष्ठ व्यक्ति इन काल्पनिक विभेदों को स्वीकार नहीं करेगा। उस हर सीमित क्षेत्र को जिसे हम अपना जन्म-स्थान मानते हैं, उसे हम अपनी मातृभूमि की संज्ञा देते हैं, जबकि यह सम्पूर्ण धरती ही हम सबकी मातृभूमि है, न कि कोई परिसीमित स्थान। संक्षेप में, हम थोड़े दिनों के लिए इस धरती पर निवास करते हैं और अंत में इसी धरती में दफना दिए जाते हैं। यह हमारी अनन्त समाधि है। तो क्या यह सुयोग्य है कि हम एक-दूसरे का खून बहाने में जुट जाएँ और इस अनन्त समाधि के लिए एक-दूसरे के शरीर को छिन्न-भिन्न करके रख दें? नहीं, बल्कि ऐसे आचरण से ईश्वर कभी प्रसन्न नहीं होता और न ही कोई गम्भीर व्यक्ति इसका अनुमोदन करेगा।

विचार करो! आशीर्वादित जीव-जंतु किसी भी राष्‍ट्रवादी युद्ध में निरत नहीं होते। वे एक-दूसरे के साथ अत्यंत मैत्री भाव से और घुलमिल कर रहते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई कबूतर पूरब से, एक अन्य कबूतर पश्चिम से, एक और कबूतर उत्तर से और एक अन्य कबूतर दक्षिण से, यदि एक ही समय, एक ही स्थान पर आ मिलें तो वे तुरन्त एक-दूसरे के साथ घुलमिल जाते हैं। सभी आशीर्वादित जानवरों और पक्षियों के साथ ऐसा ही होता है। लेकिन हिंसक जानवर जैसे ही एक-दूसरे के सामने आते हैं, वे उनपर हमला कर देते हैं, लड़ते हैं और एक-दूसरे को चीड़-फाड़ कर रख देते हैं। उनके लिए एक स्थान पर शांतिपूर्वक रह पाना असम्भव है। वे सब असामाजिक और हिंसक हैं, बर्बर और घोर लड़ाकू हैं।

आर्थिक पूर्वाग्रह के सम्बंध में, यह स्पष्ट है कि जब कभी राष्ट्रों के बीच के बंधन मजबूत होते हैं और वस्तुओं के विनिमय में तेजी आती है और किसी देश में किसी आर्थिक सिद्धान्त को स्थापित किया जाता है तो अंततः उससे अन्य देश भी प्रभावित होंगे और उसका लाभ सबको मिलेगा। तो फिर यह पूर्वाग्रह क्यों?

जहाँ तक राजनैतिक पूर्वाग्रह का प्रश्न है, ईश्वर की नीति का अनुसरण किया जाना चाहिए और यह निर्विवाद है कि ईश्वर की नीति मनुष्य की नीति से ज्यादा महान है। हमें दिव्य नीति का अनुसरण करना चाहिए और वह सभी व्यक्तियों पर एक समान लागू होना चाहिए। वह सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करता है, कोई भी भेदभाव नहीं किया जाता, और यही दिव्य धर्मों की आधारशिला है।

और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक है एक भाषा का सृजन जिसे पूरे विश्व में लोगों के बीच प्रसारित किया जा सके। बहाउल्लाह की लेखनी से यह शिक्षा इसलिए प्रसारित की गई ताकि यह विश्वव्यापी भाषा मनुष्यों के बीच से भ्रांतियों को दूर कर सके।

और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक है स्त्री और पुरुष की समानता। मनुष्य के संसार के दो डैने हैं -- एक है स्त्री और दूसरा पुरुष । जब तक दोनों पंख समान रूप से विकसित नहीं हो जाते तब तक पक्षी उड़ान नहीं भर सकता। यदि एक भी डैना कमजोर रहेगा तो उड़ान भर पाना सम्भव नहीं हो सकेगा। जब तक गुणों और पूर्णताओं को हासिल करने में स्त्रियों का संसार पुरुषों के संसार के बराबर नहीं हो जाता तब तक वैसी सफलता और समृद्धि प्राप्त नहीं हो सकती जैसी कि प्राप्त होनी चाहिए।

और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक है अन्य मनुष्यों के साथ स्वेच्छापूर्वक अपनी सम्पत्ति साझा करना। स्वैच्छिक रूप से साझा करने का यह काम समानता से बढ़कर है और इसमें यह बात निहित है कि मनुष्य स्वयं को दूसरों से बढ़कर न समझे, बल्कि अपना जीवन और अपनी सम्पत्ति दूसरों पर उत्सर्ग कर दे। लेकिन इसे ऐसे जबर्दस्ती नहीं थोपा जाना चाहिए कि वह कानून बन जाए और मनुष्य उसका पालन करने के लिए बाध्य हो जाए। नहीं, बल्कि मनुष्य को चाहिए कि वह स्वेच्छा से, अपनी चाहत से, दूसरों के लिए अपने जीवन और अपनी सम्पदा का त्याग करे और गरीबों के लिए स्वयं अपनी प्रेरणा से खर्च करे, ठीक वैसे ही जैसे फारस में बहाई लोग करते हैं।

 और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक है मानव की स्वतंत्रता, ताकि एक आदर्श ’शक्ति’ के माध्यम से वह प्रकृति-लोक की दासता से मुक्त और स्वतंत्र हो जाए, क्योंकि जब तक मनुष्य प्रकृति का दास बना रहेगा तब तक वह एक हिंसक जीव बना रहेगा, क्योंकि प्रकृति-जगत की एक आकस्मिक आवश्यकता है अस्तित्व के लिए संघर्ष। अस्तित्व के संघर्ष का यह विषय सभी संकटों का मूल आधार है और यही घोर यातना है।

 बहाउल्लाह की एक शिक्षा यह है कि धर्म एक शक्तिशाली दुर्ग है। यदि धर्म की बुनियाद हिल जाए, कम्पित हो उठे तो खलबली और अराजकता फैल जाएगी और हर व्यवस्था गड़बड़ा जाएगी, क्योंकि मानव-जगत में सुरक्षा के दो ही उपाय हैं जो लोगों को गलत करने से रोकते हैं। एक है कानून जो अपराधियों को दण्डित करता है लेकिन यह केवल प्रकट अपराध के लिए ही दण्ड देता है, नजरों से ओझल अपराधों के लिए नहीं। दूसरी ओर सुरक्षा का आदर्श उपाय, यानी धर्म, प्रकट और ओझल दोनों ही अपराधों की रोकथाम करता है, मनुष्य को प्रशिक्षित करता है, उसे नैतिकता का पाठ पढ़ाता है, सद्गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है और वह सर्व-समाहारी शक्ति है जो मानव-संसार की सच्ची खुशी की गारंटी देता है। लेकिन धर्म से तात्पर्य है वह सत्य जिसे अनुसंधान के माध्यम से सुनिश्चित किया गया है, वह नहीं जो कोरे अंधानुकरण पर आधारित हो, जो दिव्य धर्मों की आधारशिलाएँ हों न कि मानव-निर्मित सीमाएँ।

और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक यह है कि हालाँकि भौतिक सभ्यता मानव-जगत की प्रगति के साधनों में से एक है लेकिन जब तक दिव्य सभ्यता से उसका संगम नहीं हो जाता तब तक वांछित परिणाम, अर्थात मानव-जगत की वास्तविक प्रसन्नता, प्राप्त नहीं की जा सकती। विचार करो! ये युद्धक जहाज जो एक घण्टे में ही किसी शहर को खण्डहर में बदल सकते हैं, वे भौतिक सभ्यता के ही परिणाम हैं। इसी तरह क्रुप बन्दूकें, माउजर राइफलें, डायनामाइट, पनडुब्बियाँ, टॉर्पिडो बोट, हथियारबंद एयरक्राफ्ट और बॉम्बर - युद्ध के ये सारे शस्त्रास्त्र भौतिक सभ्यता के ही तो घृणास्पद फल हैं! यदि भौतिक सभ्यता का आध्यात्मिक सभ्यता से मेल हुआ होता तो इन विध्वंसक आयुधों का कभी आविष्कार नहीं किया जाता। नहीं, बल्कि मनुष्य अपनी ऊर्जा उपयोगी आविष्कारों में लगाता और उसका ध्यान प्रशंसनीय खोजों की ओर केन्द्रित होता। भौतिक सभ्यता लैम्प के शीशे की तरह है। दिव्य सभ्यता स्वयं लैम्प है। भौतिक सभ्यता शरीर की तरह है। वह चाहे कितना भी असीमित रूप से महिमामय, भव्य और सुन्दर हो किन्तु प्रकाश के बिना वह अंधकारमय है। दिव्य सभ्यता चेतना की तरह है और शरीर को इसी चेतना से जीवन मिलता है, अन्यथा वह लाश बन जाएगा। इस तरह यह स्पष्ट है कि मनुष्य के संसार को ’पवित्र चेतना’ की सांसों की जरूरत है। चेतना के बिना मानव-संसार निर्जीव है और इस प्रकाश के बिना मानव-लोक घोर अंधकार में है। क्योंकि प्रकृति का संसार पशुता का संसार है। जब तक प्रकृति के संसार से मनुष्य का नया जन्म नहीं हो जाता, अर्थात, प्रकृति-जगत से वह अनासक्त नहीं हो जाता, वह अनिवार्यतः एक जानवर की तरह है। ईश्वर की शिक्षाएँ ही उस जानवर को मानव-आत्मा में परिवर्तित करती हैं।

और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में से एक है शिक्षा का प्रोत्साहन। यथा आवश्यक, हर बच्चे को विज्ञानों में शिक्षित किया जाना चाहिए। यदि इस शिक्षा का व्यय माता-पिता उठा सकें तो बहुत अच्छा, अन्यथा उस बच्चे की शिक्षा की व्यवस्था समुदाय को करनी चाहिए।

और बहाउल्लाह की शिक्षाओं में हैं न्याय और अधिकार। जब तक उन्हें अस्तित्व के धरातल पर स्वीकार नहीं किया जाता तब तक सबकुछ अव्यवस्था और अपूर्णता की स्थिति में बना रहेगा। मानव-जगत अत्याचार और निर्दयता का संसार है और आक्रमण एवं त्रुटि का लोक।

संक्षेप में, ऐसी अनगिनत शिक्षाएँ हैं। ये अनेक सिद्धान्त, जो कि मानवजाति की प्रसन्नता के महानतम आधार की रचना करते हैं और जो उस ’दयालु’ परमात्मा की कृपाएँ हैं, उन्हें विश्वव्यापी शांति के संदर्भ में शामिल और उनसे समेकित किया जाना चाहिए ताकि परिणाम सामने आ सकें। अन्यथा, मानव-जगत में विश्व-शांति का अपने आप में स्थापित होना कठिन है। जब बहाउल्लाह की शिक्षाओं को विश्व-शांति में सम्मिलित किया जाता है तो वे एक ऐसी मेज की तरह होते हैं जिस पर हर तरह के ताजे और स्वादिष्ट भोजन रखे हों। असीम कृपा की उस मेज पर, उसे अपनी अभिलषित वस्तु मिल सकती है। यदि इस प्रश्न को केवल विश्व-शांति तक ही परिसीमित कर दिया जाए तो जिन उल्लेखनीय परिणामों की अपेक्षा और अभिलाषा की जाती है उन्हें प्राप्त नहीं किया जा सकता। विश्व-शांति का दायरा ऐसा होना चाहिए कि सभी समुदायों और धर्मों को उसमें अपनी उच्चतम अभिलाषा की प्राप्ति हो सके। बहाउल्लाह की शिक्षाएँ ऐसी हैं कि दुनिया के सभी समुदायों को.... चाहे वे धार्मिक हों, राजनैतिक या नैतिक, प्राचीन या आधुनिक - उनमें अपनी महानतम इच्छा की अभिव्यक्ति मिलती है।

उदाहरण के लिए, धर्म के लोगों को बहाउल्लाह की शिक्षाओं में विश्वधर्म की संस्थापना सम्बंधी शिक्षाएँ मिलती हैं - एक ऐसे धर्म की जो वर्तमान स्थितियों के सर्वथा अनुरूप है, जो वास्तव में असाध्य रोगों के त्वरित निदान को प्रभावित करता है, जो हर वेदना से मुक्त करता है और हर घातक जहर के विरुद्ध अचूक विषहारी औषधि प्रदान करता है। क्योंकि यदि हम मानव संसार को मौजूदा धार्मिक अनुकरणों के अनुसार व्यवस्थित और सुगठित करना और उस माध्यम से मानव लोक की प्रसन्नता स्थापित करना चाहें तो यह असम्भव और अव्यावहारिक होगा - उदाहरण के लिए, वर्तमान अनुकरणों के अनुसार ’टोराह’ तथा अन्य धर्मों के विधानों को लागू करना। लेकिन सभी दिव्य धर्मों का वह आवश्यक आधार जो मानव-जगत के सद्गुणों से सम्बन्धित है और जो मानव लोक के कल्याण की आधारशिला है, वह बहाउल्लाह की शिक्षाओं में अत्यंत पूर्ण प्रस्तुति के साथ मौजूद है।

यही बात राजनीतिक दलों के संदर्भ में है: मानव-जगत को मार्गदर्शित करने वाली महानतम नीति, नहीं, बल्कि दिव्य नीति, बहाउल्लाह की शिक्षाओं में पाई जाती है।

इसी तरह, “समानता” के दल के संदर्भ में जिसे आर्थिक समस्याओं के समाधान की तलाश है; अभी तक सभी प्रस्तावित समाधान अव्यावहारिक सिद्ध हुए हैं, सिवाय उन आर्थिक प्रस्तावों के जो बहाउल्लाह की शिक्षाओं में निहित हैं जो कि व्यावहारिक हैं और जिनसे समाज के सामने कोई संकट उपस्थित नहीं होता।

इसी तरह अन्य दलों के प्रसंग में; जब तुम गहराई से इस विशय पर दृष्टि डालोगे तो तुम्हें पता चलेगा कि उन दलों के उच्चतम लक्ष्यों को बहाउल्लाह की शिक्षाओं में प्राप्त किया जा सकता है। इन शिक्षाओं में सभी लोगों के मध्य सबको समाहित करने वाली शक्ति की रचना करते हैं और वे व्यावहारिक हैं। लेकिन कुछ शिक्षाएँ अतीत की हैं, जैसे कि ’टोराह’ की शिक्षाएँ जिनका वर्तमान समय में पालन नहीं किया जा सकता। अन्य धर्मों एवं विभिन्न पंथों और विभिन्न पक्षों के सिद्धान्तों के साथ भी यही बात है।

उदाहरण के लिए, विश्व-शांति का विषय, जिसके बारे में बहाउल्लाह कहते हैं कि एक ’सर्वोच्च न्यायालय’ की स्थापना की जानी चाहिए: हालाँकि एक ’राष्‍ट्रमण्डल’ (लीग ऑफ नेशन्स) को अस्तित्व में लाया गया है किंतु यह विश्व-शांति स्थापित करने में असफल रहा है। लेकिन बहाउल्लाह ने जिस ’सर्वोच्च न्यायालय’ का वर्णन किया है वह अत्यंत ही शक्ति और सामर्थ्य के साथ इस पवित्र दायित्व को पूरा करेगा। और उनकी योजना यह है; हर मनुष्य और राष्‍ट्र की राष्‍ट्रीय संसद को चाहिए कि वह ऐसे दो या तीन व्यक्तियों का चयन करे जो उनकी राष्‍ट्र की पसन्द हैं और जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय कानूनों और सरकारों के बीच के सम्बंधों का ज्ञान है और जो मानव-जगत की वर्तमान आवश्यक बातों से सुपरिचित हैं। उन प्रतिनिधियों की संख्या उस मनुष्य की जनसंख्या के अनुपात में होनी चाहिए। इन राष्‍ट्रीय संसदों द्वारा चयनित इन व्यक्तियों का निर्वाचन उच्च सभा, कांग्रेस और मंत्रिमंडल द्वारा पुष्ट होना चाहिए, और साथ ही राष्‍ट्रपति और शासनाध्यक्ष द्वारा ताकि वे व्यक्ति समग्र राष्‍ट्र और सरकार द्वारा निर्वाचित व्यक्ति हों। ’सर्वोच्च न्यायालय’ इन्हीं व्यक्तियों से बना होगा और इस तरह उसमें सभी लोगों की हिस्सेदारी होगी, क्योंकि इनमें से प्रत्येक प्रतिनिधि पूर्णतया अपने राष्‍ट्र का प्रतिनिधि होगा। जब यह ’सर्वोच्च न्यायालय’ किसी भी अंतर्राष्ट्रीय सवाल पर, सर्वसम्मति या बहुमत से, अपना नियमन देगा तो वादी या प्रतिवादी को उस पर आपत्ति करने का कोई आधार या बहाना नहीं होगा। ’सर्वोच्च न्यायालय’ के अकाट्य निर्णय को क्रियान्वित करने में किसी भी सरकार या राष्‍ट्र द्वारा उपेक्षा या सुस्ती दिखाए जाने पर बाकी सारे राष्‍ट्र उसके खिलाफ उठ खड़े होंगे, क्योंकि दुनिया के सभी राष्‍ट्र और उसकी सभी सरकारें ’सर्वोच्च न्यायालय’ को समर्थन देने वाले होंगे। विचार करो कि यह कितना सुदृढ़ आधार है! लेकिन एक सीमित राष्‍ट्रमण्डल (लीग) के माध्यम से इस उद्देश्य को वांछित रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकेगा। यही स्थिति की सच्चाई है जिसके बारे में बताया गया है.....

228

हे बहाउल्लाह की दहलीज के सेवक! तुम्हारा 14 जून 1920 का पत्र प्राप्त हुआ। ’शांति समिति’ के कुछ सदस्यों की ओर से भी एक पत्र प्राप्त हुआ है और उनके लिए एक उत्तर लिखा गया है। कृपया उन्हें दे दें।

स्पष्ट है कि यह मीटिंग वह नहीं है जिसके लिए वह प्रसिद्ध है और उपयुक्त एवं आवश्यक ढंग से मामलों को सुव्यवस्थित करने में सक्षम नहीं है। अब यह चाहे जैसा भी हो, लेकिन वे लोग जिस विषय में संलग्न हैं वह अत्यधिक महत्व का है। हेग में सम्पन्न हुई मीटिंग में ऐसी शक्ति और ऐसा प्रभाव होना चाहिए था कि उसके शब्दों का सरकारों और राष्ट्रों पर असर पड़ता। वहाँ उपस्थित समानित सदस्यों को यह बताओ कि युद्ध से पहले जो हेग कॉन्फ्रेंस हुआ था उसके अध्यक्ष के रूप में रूस के सम्राट थे और उसके सदस्य अत्यंत ही उत्कृष्ट व्यक्ति थे। इसके बावजूद वह उस भीषण युद्ध को नहीं रोक सका। अब यह कैसे हो जाएगा? क्योंकि भविष्य में एक और युद्ध - उससे भी भीषण -- निश्चित रूप से शुरु होगा। बिल्कुल, इसमें कोई संदेह नहीं है। हेग मीटिंग से क्या हो जाएगा?

लेकिन बहाउल्लाह द्वारा निरूपित बुनियादी सिद्धान्तों का दिनानुदिन प्रसार हो रहा है। उनके पत्र का उत्तर उन्हें बता दो और अत्यंत प्रेम और दयालुता प्रकट करो और उन्हें उनके मामले में छोड़ दो। कुछ भी हो, वे तुमसे जरूर प्रसन्न होंगे, और यदि उनकी स्वीकृति प्राप्त हो तो तुम मेरे उस विस्तृत पत्र को मुद्रित करके बांट सकते हो जिसका पहले ही अंग्रेजी में अनुवाद हो चुका है।

जहाँ तक एस्पेरेंटोवादियों का सवाल है, उनसे मिलो-जुलो। जब भी तुम्हें कोई क्षमतावान व्यक्ति मिले तो उसे जीवन की सुरभियों के बारे में बताओ। सभी सम्मिलनों में, बहाउल्लाह की शिक्षाओं के बारे में बातचीत करो, क्योंकि वर्तमान समय में यह पश्चिमी मनुष्यों में प्रभावी होगा। और यदि वे बहाउल्लाह में तुम्हारी आस्था के बारे में पूछें तो तुम्हें यह जवाब देना चाहिए कि हम ’उन्हें’ इस युग में सबसे प्रथम ’शिक्षक’ के रूप में मानते हैं, और विस्तार से समझाते हुए यह स्पष्ट कर दो कि विश्व-शांति एवं अन्य विषयों के बारे में ये शिक्षाएँ पचास साल पहले बहाउल्लाह की लेखनी से प्रकट हुई थीं और फारस एवं भारत में प्रकाशित हो चुकी हैं और समस्त विश्व में उनका प्रसार हो चुका है। आरम्भ में, विश्व शांति के विचार के बारे में सब लोक शंका करते थे और उसे असम्भव मानते थे। उसके बाद, बहाउल्लाह की महानता के बारे में चर्चा करो, उन घटनाओं के बारे में जो फारस और तुर्की में घटित हुई, उनके द्वारा डाले गए अद्भुत प्रभाव के बारे में, उन पत्रों की विषय वस्तुओं के बारे में जो उन्होंने राज्यों के शासकों को लिखे थे और उनके फलीभूत होने के बारे में। बहाई धर्म के प्रसार के बारे में भी बताओ। यथासम्भव हेग स्थित विश्व शांति समिति से भी सहयोग करो और उनके प्रति हर तरह का सौजन्य दर्शाओ।

यह स्पष्ट है कि एस्पेरेंटोवादी लोग ग्रहणशील स्वभाव के हैं और तुम उनकी भाषा से सुपरिचित और उसके विशेषज्ञ हो। जर्मनी एवं अन्य जगहों के एस्पेरेंटोवादियों से भी संवाद करो। तुम जिस साहित्य का वितरण कर रहे हो उसकी विवेचना का विषय केवल शिक्षाएँ ही होनी चाहिए। वर्तमान समय में, अन्य किसी साहित्य के वितरण की सलाह नहीं दी जाती। मेरी आशा है कि दिव्य सम्पुष्टियाँ सतत रूप से तुम्हारी सहायता करेंगी......

हेग मीटिंग की उदासीनता और निरुत्साह से दुःखी न हो। ईश्वर में अपना विश्वास रखो। हमारी आशा है कि लोगों के बीच एस्पेरेंटो भाषा का अभी के बाद से जोरदार असर होगा। तुमने बीज बो दिया है। वह निश्चित रूप से विकसित होगा। उसका विकास ईश्वर पर निर्भर है।

229

हे एकमेव सत्य (ईश्वर) के निष्ठावान सेवक! मैंने सुना है कि दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, जो उलटफेर हो रहे हैं, उनसे तुम खिन्न और दुःखी हो। यह भय और दुःख किसलिए? आभा सौन्दर्य के सच्चे प्रेमी और वे लोग जिन्होंने ’संविदा की प्याली’ का पान किया है, किसी संकट से भयभीत नहीं होते और न ही परीक्षा की घड़ी में अवसाद से ही ग्रस्त होते हैं। वे विपत्ति की ज्वाला को अपनी आनन्द-वाटिका मानते हैं और समुद्र की गहराई को आकाश का विस्तार।

तुम जो कि परमात्मा की शरण तले हो, उसकी संविदा के वृक्ष की छांह के नीचे हो, उदास और चिन्तित क्यों हो? तुम आश्वस्त रहो और आत्म-विश्वास धारण करो। आनन्द और शांति की भावना के साथ, उत्सुकता और निष्ठा से, अपने प्रभु के लिखित आदेशों का पालन करो, और तुम अपने देश और अपनी सरकार के हितैषी बनो। उसकी कृपा सर्वदा तुम्हारी सहायता करेगी, तुझे उसके आशीष प्राप्त होंगे, और तुम्हारे हृदय की अभिलाषा पूरी होगी।

’प्राचीनतम सौन्दर्य’ की सौगन्ध! -- मेरा जीवन उनके प्रियजनों के लिए न्यौछावर हो जाए -- यदि मित्रों को यह महसूस हो पाता कि परमात्मा ने उनके लिए कौन-सा महिमामय साम्राज्य नियत किया है तो निस्संदेह वे अतिशय आनन्द से भर उठते, स्वयं को अमर महिमा के मुकुट से विभूषित देखते और आनन्द के संवाहकों के साथ उड़ान भरते। बहुत ही शीघ्र यह प्रकट हो जाएगा कि किस तरह उसकी उदारतापूर्ण देखभाल और करुणा का प्रकाश उसके प्रियजनों के ऊपर जगमगाया है, और उनके हृदयों में कैसा तरंगित समुद्र उछाहें भरने लगा है! तब कहीं वे पुकार उठेंगे और कह उठेंगे: प्रसन्न हैं हम, यह सम्पूर्ण विश्व आनन्दित हो!

230

हे सम्मानित व्यक्ति! 19 दिसंबर 1918 का तुम्हारा दूसरा पत्र प्राप्त हुआ। वह अपार आनन्द और प्रसन्नता का हेतु था, क्योंकि उससे ’संविदा’ और ’प्रमाण’ में तुम्हारी दृढ़ता और अडिगता तथा परमात्मा के साम्राज्य के आह्वान को गुंजरित करने की तुम्हारी उत्कंठा की झलक मिली। आज प्रभु-साम्राज्य का आह्वान वह चुम्बकीय शक्ति है जो मानव-जगत को अपनी ओर आकर्षित करती है, क्योंकि मनुष्य में महान क्षमता है। दिव्य शिक्षाएँ इस युग की चेतना की घटक हैं, नहीं, बल्कि वे इस युग के सूर्य हैं। हर व्यक्ति को यह प्रयास करना चाहिए कि मनुष्य के नेत्रों पर जो आवरण पड़े हुए हैं वे छिन्न-भिन्न हो जाएँ और सूर्य को अविलम्ब देखा जा सके और हृदय एवं दृष्टि उससे आलोकित हो उठें।

और अब, परमात्मा की सहायता और उदार कृपा से, मार्गदर्शन की यह शक्ति और यह दयालु अनुदान तुझमें दृष्टिगोचर हैं। अतः, अत्यंत ऊर्जा के साथ उठ खड़े हो ताकि तुम जर्जर अस्थियों में चेतना का संचार कर सको, नेत्रहीनों को दृष्टि प्रदान कर सको, खिन्न जनों को मलहम और ताजगी, निरुत्साहितों को जीवन्तता और दया। साम्राज्य के दीप के सिवा - जिसकी आभा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाएगी - अन्य सभी दीप अंततः बुझ जाएंगे। प्रभु-साम्राज्य की ओर किए गए आह्वान के सिवा - जिसकी पुकार दिनोंदिन बढ़ती चली जाएगी - अंततः सभी आह्वान मंद पड़ जाएंगे। ईश्वर के साम्राज्य की ओर जाने वाले पथ के सिवा - जो दिनानुदिन विस्तृत होता जाएगा - अंततः अन्य सभी पथ मुड़ जाएंगे। निस्संदेह, पार्थिव मधुरता स्वर्गिक माधुर्य का पैमाना नहीं हो सकती और कृत्रिम प्रकाशों की तुलना स्वर्गिक ’सूर्य’ से नहीं की जा सकती। इसलिए, व्यक्ति को चाहिए कि वह उसके लिए प्रयास करे जो शाश्वत और चिरस्थायी है ताकि वह अधिक से अधिक प्रकाशित हो सके, सीधा और पुनर्जीवित हो सके......

मैं ’दिव्य साम्राज्य’ से प्रार्थना और अभ्यर्थना करता हूं कि तुम्हारे पिता, माता और भाई मार्गदर्शन के प्रकाश के माध्यम से ईश्वर के साम्राज्य में प्रवेश कर सकें।

231

हे ’जीवन-तरुवर’ की बहार! धन्य हो तुम कि तुम सेवा के लिए कटिबद्ध हुए हो, दिव्य शिक्षाओं के प्रचार के लिए अपनी पूरी शक्ति से उठ खड़े हुए हो, तुमने सम्मिलनों का आयोजन किया है, और ’ईश्वर के शब्द’ के उन्नयन के लिए प्रयासरत हुए हो।

इस नाशवान संसार में हर महत्वपूर्ण विषय का एकदिन अंत हो जाता है और हर उल्लेखनीय उपलब्धि एकदिन समाप्त हो जाती है, किसी का भी स्थायी अस्तित्व नहीं रहता। उदाहरण के लिए, यह विचार करो कि प्राचीन विश्व की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ आज बिल्कुल ही विनष्ट हो चुकी हैं, और ईश्वरीय साम्राज्य के महान धर्म के सिवा, जिनकी न कोई आदि थी और न जिनका कोई अंत होगा, उनका कोई नामो-निशान नहीं बचा है। ईश्वरीय धर्म ज्यादा से ज्यादा सिर्फ नवीकृत किया गया है। प्रत्येक नवीकरण के आरंभ में वह लोगों का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाता लेकिन एक बार निश्चित रूप से स्थापित हो जाने पर उसका दिनानुदिन विकास होता जाएगा और अपने दैनिक अभ्युत्थान के साथ वह सर्वोच्च स्वर्गों तक पहुंचेगा।

उदाहरण के लिए, ईसा मसीह के दिवस का विचार करो, जो कि ईश्वरीय साम्राज्य के नवीकरण का दिवस था। दुनिया के लोगों ने उसे कोई महत्व नहीं दिया और उसकी महत्ता का अनुभव ही नहीं किया - इस कदर कि तीन सौ वर्षों तक ईसा मसीह की समाधि का भी अता-पता नहीं रहा तब तक जब तक कि कौंस्टेन्टाइन की ’माता’, ईश्वर की सेविका, हेलेन, वहाँ नहीं पहुंची जिसने उस पवित्र स्थल को खोज निकाला।

इस सबके पीछे मेरा उद्देश्य यह बताना है कि दुनिया के लोग कितने असावधान और कितने अज्ञानी हैं और ’साम्राज्य’ की संस्थापना के दिवस में वे असावधान और लापरवाह रहते हैं।

शीघ्र ही, ’साम्राज्य’ की शक्ति सम्पूर्ण विश्व को आच्छादित कर लेगी, और तब वे जाग उठेंगे और उन लोगों पर क्रन्दन एवं विलाप करेंगे जिन्हें सताया गया था, शहीद कर दिया गया था। वे उन पर आहें भरेंगे, रोएंगे। ऐसा ही स्वभाव है लोगों का।

232

जहाँ तक राष्‍ट्रपति विल्सन की बात है, उन्होंने जिन चौदह सिद्धान्तों का प्रणयन किया है वे ज्यादातर बहाई शिक्षाओं में पाए जाते हैं और इसलिए मेरी आशा है कि उन्हें सम्पुष्टि और सहायता प्राप्त होगी। यह विश्व शांति का उषाकाल है, मेरी आशा है कि इसकी सुबह भी पूरी तरह से आएगी, और लोगों के बीच जारी युद्ध, संघर्ष और कलह की परिणति एकता, सद्भाव और स्नेह में होगी।

 233

हे निष्ठावान मित्रों, हे बहाउल्लाह के सच्चे सेवकों! अब रात्रि के इस मध्यकाल में, जब आँखें निद्रा में निमग्न हैं और हर कोई विश्रांति एवं गहन निद्रा की शैय्या पर सिर रखे सोया है, ’पवित्र समाधि’ के प्रांगण में अब्दुल बहा जगे हुए हैं और अपने आह्वान की उत्कंठा में इस प्रार्थना का उच्चार कर रहे हैं:

हे तू दयालु और स्नेहिल नियंता! पूरब आंदोलित है और पश्चिम समुद्र की असीम तरंगों की तरह उछाहें मार रहा है। पवित्रता की मधुर बयारें संचरित हो रही हैं और ’अदृश्य साम्राज्य’ से ’सत्य के प्रकाश-नक्षत्र’ की किरणें प्रखरता से जगमगा रही हैं। दिव्य एकता के गान गाए जा रहे हैं और स्वर्गिक शक्ति की ध्वजाएँ लहरा रही हैं। देवदूत-सदृश ’स्वर’ पुकार उठा है और तिमिंगल की गर्जना की तरह निःस्वार्थता एवं क्षणभंगुरता का आह्वान सुना रहा है। हर ओर “या बहा उल आभा” का विजय-घोष गूंज रहा है, और “या अली-उल-आला” की पुकार सभी क्षेत्रों में प्रतिगुंजित हो रही है। ’हृदयों के उस एकमेव सम्मोहक’ की महिमा के सिवा संसार में और कोई भी हलचल नहीं है, और उस अनुपमेय, सर्व-प्रियतम के प्रेम के आलोड़न के अतिरिक्त अन्य कोई स्पंदन नहीं है।

अपनी कस्तूरी-सुरभित सांस के साथ, ईश्वर के प्रियतम हर परिवेश में प्रखर मोमबत्तियों की तरह जल रहे हैं, और ’सर्वदयालु’ के सखा, खिलते हुए फूलों की तरह, सभी क्षेत्रों में पाए जा सकते हैं। वे एक पल के लिए भी आराम नहीं करते, वे ’तेरे’ स्मरण के सिवा अन्य कोई उच्छ्वास नहीं छोड़ते और तेरे धर्म की सेवा के सिवा अन्य कोई कामना नहीं करते। सत्य की शस्यभूमि में वे मधुर आलाप वाले कोकिल की तरह हैं, और मार्गदर्शन की पुष्प-वाटिका में वे प्रखर रंगों की बहार जैसे हैं। वे रहस्यमय फूलों से ’यथार्थ के उद्यान’ के पथ को विभूषित करते हैं, सायप्रस के झूमते हुए पेड़ों की तरह वे ’दिव्य इच्छा’ के नटी-तटों पर कतार बांधे खड़े हैं। अस्तित्व के क्षितिज पर वे देदीप्यमान सितारों की तरह जगमगाते हैं, विश्व के आकाश पर वे ज्योतिर्मय प्रकाश-नक्षत्रों की भाँति झिलमिलाते हैं। वे हैं स्वर्गिक करुणा के प्रकट-स्वरूप और दिव्य सहायता के प्रकाश के दिवास्रोत।

हे स्नेहिल स्वामी! यह वरदान दो कि सब कोई दृढ़ता और अडिगता से खड़े रहें, अनन्त आभा से जगमगाते रहें ताकि, हर सांस पर, तेरी स्नेहिल दयालुता के कुंज से मृदुल बयारें बहती रहें, ताकि तेरी कृपा के सिंधु से एक धूमिका उठे, ताकि तेरे प्रेम की दया भरी फुहारें ताजगी प्रदान कर सकें, और शीतल हवा दिव्य एकता की गुलाब-वाटिका से अपनी सुरभि का संचार कर सके।

हे सर्वोत्तम प्रेमी! अपनी आभा से एक किरण हमारे लिए सुनिश्चित कर। हे मानवजाति के सर्व-प्रियतम, हम पर अपनी मुखमुद्रा का प्रकाश उड़ेल।

हे सर्वशक्तिमान परमात्मन! तू हमें सुरक्षा प्रदान कर और हमारे आश्रय बन, और हे अस्तित्व के प्रभो, अपनी सामर्थ्‍य और अपने साम्राज्य के दर्शन करा।

हे तू स्नेहिल परमेश्वर, कुछ क्षेत्रों में विद्रोह भड़काने वाले सक्रिय और अपनी हलचल में निरत हैं, और दिन-रात घोर उत्पीड़न ढा रहे हैं।

भेड़ियों की तरह, ये आततायी घात लगाए बैठे हैं और प्रवंचित एवं निर्दोष समूहों को न तो सहायता प्राप्त है न सांत्वना। शिकारी कुत्ते दिव्य एकता के चरागाहों के हिरणों के पीछे पड़े हैं, और स्वर्गिक मार्गदर्शन के पर्वतों के निवासी तीतरों का पीछा कर रहे हैं ईर्ष्‍या के काले कौए।

हे दिव्य शुभंकर! हमें बचा और हमें संरक्षण दे। हे तू जो हमारा कवच है, हमारी रक्षा कर और हमें सुरक्षा दे। हमें अपनी शरण तल रहने दे, और अपनी सहायता के माध्यम से हर बुराई से हमें बचा। तू, वस्तुतः, सच्चा रक्षणहार है, अदृश्य अभिभावक है, स्वर्गिक संरक्षणदाता है, और तू है स्वर्गिक स्नेहिल प्रभु।

हे ईश्वर के प्रियतमों! एक ओर ’एकमेव सत्य ईश्वर’ की ध्वजा लहराई गई है और प्रभु-साम्राज्य का स्वर मुखरित किया गया है। प्रभुधर्म का प्रसार हो रहा है और उच्च लोक के कौतुक आभा में प्रत्यक्ष हो रहे हैं। पूरब आलोकित हो गया है और पश्चिम सुरभित, उत्तर कच्चे अम्बर (एम्बरग्रिस) से सुवासित है और दक्षिण कस्तूरी सुगंध से।

दूसरी ओर, निष्ठाहीन लोग घृणा और विद्वेष से भरे बैठे हैं, वे अनथक रूप से घोर विद्रोह और उपद्रव उकसा रहे हैं। ऐसा एक भी दिन नहीं होता जब कोई न कोई विद्रोह का झण्डा नहीं बुलंद करता और विवाद की रणभूमि में अपने घोड़े को एड़ नहीं लगाता। ऐसी कोई घड़ी नहीं गुजरती जबकि विद्वेष अपने फनों को नहीं काढ़ता और अपने घातक विष का वमन नहीं करता।

परमात्मा के प्रियजन घोर निष्ठा और भक्ति-भावना में निमग्न हैं और उन्हें इस घृणा और विद्वेष की सुध ही नहीं है। ये सांप बड़े चिकने और छलिया स्वभाव के हैं। ये बुराई फैलाने वाले बड़े धूर्त और चालाक हैं। तुम लोग सावधान रहो, हमेशा सतर्क रहो। निष्ठावान लोग तीव्र बुद्धि के और तेज लोग होते हैं और वे जो आश्वस्त लोग हैं वे सुदृढ़ होते हैं। अतः पूरी तरह चौकन्ना होकर काम करो।

“तुमलोग निष्ठावान व्यक्ति के बुद्धि-गाम्भीर्य से भय खाओ, क्योंकि वह दिव्य प्रकाश से देखता है।“

सावधान रहो कि कहीं कोई व्यक्ति गुपचुप रूप से विभेद न फैला दे या कलह न उत्पन्न कर दे। अभेद्य ’दुर्ग’ में तुम लोग बहादुर योद्धा बनो, और ’शक्तिशाली महल’ के शूर सेनानी। अत्यंत सावधानी बरतो और दिन-रात चौकसी रखो, ताकि इस तरह आततायी कोई हानि न पहुँचा सके।

’पावन नाविक की पाती’ पढ़ो, ताकि तुम सत्य को जान सको और यह विचार करो कि ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ ने भावी घटनाओं के बारे में पहले ही बतला दिया था। वे जो समझदार लोग हैं वे सावधान हो जाएं। सत्य ही, इसमें निष्ठावान लोगों के लिए एक उदार कृपा छुपी है।

’पवित्र दहलीज’ पर पड़ी धूल की तरह, अत्यंत विनम्र और विनीत भाव से, अब्दुल बहा दिन-रात ’उसके’ चिह्नों की घोषणा में तल्लीन हैं। उन्हें जब कभी समय मिलता है, अश्रुपूर्ण नेत्र से और भाव-प्रवणता के साथ यह कहते हुए वे उत्कट भाव से प्रार्थना करते हैं:

हे दिव्य शुभंकर! दयनीय हैं हम, हमें अपनी सहायता प्रदान कर। हम बेघर आवारा हैं, हमें अपना आश्रय दे। हम बिखर गए हैं, तू हमें एकजुट कर। हम भटके हुए हैं, हमें अपने बाड़े में एकत्रित कर। हम वंचित हैं, हमें अपना अंशदान प्रदान कर। हम प्यासे हैं, हमें जीवन के स्रोत तक ले चल। हम दुर्बल हैं, हमें सशक्त बना ताकि हम तुम्हारे धर्म की सहायता के लिए उठ खड़े हों और तेरे मार्गदर्शन के पथ पर स्वयं को एक जीवित उत्सर्ग की तरह न्यौछावर कर सकें।

लेकिन जो निष्ठाहीन लोग हैं वे दिन-रात, खुलकर और छुप-छुप कर, प्रभुधर्म की आधारशिला को हिला डालने, ’आशीर्वादित वृक्ष’ की जड़ काट डालने, इस सेवक को सेवा-कार्य से वंचित करने, गुप्त रूप से विद्रोह भड़काने और कलह उत्पन्न करने, तथा अब्दुल बहा का सर्वनाश कर देने के लिए अपना पूरा जोर लगा रहे हैं। बाहर से तो वे भेड़ों की तरह दिखते हैं लेकिन भीतर से वे खूंखार भेड़ियों से कम नहीं हैं। उनके शब्द बड़े मधुर हैं लेकिन उनके अन्दर घातक जहर भरा हुआ है।

हे प्रियजनों, ईश्वर के धर्म की रक्षा करो! मीठी बोलियों से भ्रमित न हो... नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के इरादे पर विचार करो और वह क्या सोचता है उस पर ध्यान दो। तुम सब अत्यंत सजग और सतर्क रहो। उससे बचो, लेकिन आक्रामक मत बनो! आलोचना और अवनिंदा से परहेज करो और उसे ईश्वर के हाथ में छोड़ दो। तुझ पर ’महिमाओं की महिमा’ विराजे!

234

हे प्रभु के मधुर उच्छवास से आनन्द-विह्वल जन! तुम्हारे प्रवाहपूर्ण पत्र की विषयवस्तुओं पर मैंने ध्यान दिया है और यह जाना है कि अब्दुल बहा के कारावास के कारण तुम अश्रु बहाते हो और इस दुःख से तुम्हारा हृदय अतिशय उद्विग्न है।

हे ईश्वर की सेविका! यह कारागार मेरे लिए फूलों की वाटिका से भी अधिक मधुर और अभिलषित है, यह दासता मेरे अपने स्वच्छंद मार्ग से कहीं बेहतर है और इस संकीर्ण स्थल को मैं विस्तृत मैदानों से भी अधिक व्यापक मानता हूं। मेरी दशा से दुःखी न हो। और यदि मेरे प्रभु का यही आदेश हो कि मुझे शहादत का मधुर प्याला पीने का वरदान मिले तो वह मेरी सर्वाधिक प्रिय अभिलाषा होगी।

यदि यह ’शाख’ इस भौतिक जगत से टूट कर अलग हो जाए और उसकी पत्तियाँ झड़ जाएं तो भय मत करो। नहीं, बल्कि उसकी पत्तियाँ पल्लवित होंगी, क्योंकि इस निम्न जगत से कट जाने के बाद भी इस ’शाख’ का विकास जारी रहेगा। यह महिमा के उच्चतम शिखरों तक पहुंचेगा और ऐसे फलों को उत्पन्न करेगा जो अपनी सुरभि से पूरे विश्व को सुवासित कर देंगे।

235

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! अपने सच्चे प्रेमियों के ललाटों को दीप्त कर और उन्हें निश्चित विजय के सेनानी देवदूतों के माध्यम से सहायता दे। अपने सीधे पथ पर उनके चरणों को सुदृढ़ बना और अपने पुरातन सौन्दर्य से उनके समक्ष अपने आशीर्वादों के द्वार खोल, क्योंकि तेरे धर्म की रक्षा करते हुए, तेरे स्मरण में अपना विश्वास रखे हुए, तेरे प्रेम के निमित्त अपने हृदय को अर्पित करके और जो कुछ भी उनके पास है उस सर्वस्व को तेरे सौन्दर्य की आराधना में और तुझे सुप्रसन्न करने के मार्ग की साधना में समर्पित करते हुए, जो कुछ भी तूने उन्हें प्रदान किया है, उन्हें वे तेरे ही पथ पर न्यौछावर कर रहे हैं।

हे मेरे ईश्वर! उनके लिए प्रचुर अंशदान, एक नियत पुरस्कार और सुनिश्चित पारितोषिक निर्धारित कर।

तू, सत्य ही, जीवनदाता है, सहायक है, उदार है, कृपालु है, सदा-दातार है।

236

हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! जो साधक को वह राह दिखाता है जो सही दिशा में ले जाती है, जो भ्रष्ट और नेत्रहीन आत्मा को नरक से बाहर निकालता है, तू जो कि निष्ठावान जनों को अपनी महान कृपाएँ देता है, जो अपने अभेद्य आश्रय में डरे हुए जनों की रक्षा करता है, जो अपने परम-उच्च क्षितिज से उन लोगों की पुकार का उत्तर देता है जो तेरा आह्वान करते हैं। प्रशंसित है तू, हे मेरे परमात्मन! तूने भटके हुए जनों को अविश्वास की मृत्यु के गर्त से बाहर निकाला है, और जो तेरे निकट पहुंचे हैं उन्हें अपनी यात्रा के लक्ष्य तक पहुंचाया है, और तेरे सेवकों के बीच जो आश्वस्त जन हैं उनकी सर्वाधिक प्रिय अभिलाषाओं की पूर्ति की है और, अपने सौन्दर्य के साम्राज्य से, उन लोगों के सम्मुख जो तेरे लिए लालायित हैं पुनर्मिलन के द्वार खोले हैं, और उन्हें अभाव एवं क्षति की अग्नि से बचाया है ताकि वे शीघ्रता से तेरे पास आ सके और तेरी उपस्थिति पा सके और वे तेरे स्वागत-द्वार तक पहुंच सके और तेरे उपहारों से प्रचुर अंशदान प्राप्त कर सके।

हे मेरे ईश्वर, वे प्यासे थे, तूने उनके सूखे होठों तक पुनर्मिलन की जलधार पहुंचाई। हे सौम्य! हे दातार, अपनी उदारता और कृपा के मलहम से तूने उनकी वेदना शांत की और अपनी करुणा की सार्वभौम औषधि से उनकी व्याधियों को दूर किया। हे परमेश्वर! अपने सीधे पथ पर उनके चरणों को दृढ़ कर, सुई के छिद्र को उनके लिए व्यापक बना और, राजसी पोशाक में सुसज्जित, उन्हें सदा-सर्वदा के लिए महिमा के पथ पर विचरण करने दे।

सत्य ही, तू उदार है, सदा-दातार, अनमोल है, परम कृपालु है। तुझ शक्तिमान, सामर्थ्‍यवान, उदात्त, परम विजयी के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है।

हे मेरे आध्यात्मिक प्रियजनों, ईश्वर का गुणगान हो, तुमने पर्दों को छिन्न-भिन्न कर दिया है और परम दयालु ’प्रियतम’ को पहचाना है और इस घर से तुमने उस प्रशान्त लोक की ओर गमन किया है। तूने ईश्वर के शब्दों में अपना शिविर ताना है, और उस स्वयंजीवी के महिमा गान के लिए तुमने मधुर स्वर बुलन्द किए हैं और हृदयों को बेध देने वाले गीत गुंजारे हैं। शाबाश! हजारों बार शाबाशी मिले तुम्हें! क्योंकि तूने ’प्रकाश’ को प्रकट होते देखा है, और अपने नवजीवित अस्तित्व में तुमने अपनी यह पुकार उठाई है; “धन्य हो परमेश्वर, वह जो सभी सिरजनहारों में श्रेष्ठ है!” तुम सब गर्भ में स्थित शिशु मात्र थे, फिर तुम दूध पीते बच्चे बने और मूल्यवान वक्षस्थल से तूने ज्ञान का दुग्धपान किया, तब तुम पूरी तरह विकसित हुए और तुम्हें मोक्ष मिला। अब सेवा का वक्त आ गया है, प्रभु की दासता का समय। भटकाने वाले सभी विचारों से स्वयं को मुक्त कर लो, प्रवाहपूर्ण वाणी से संदेश दो, ’प्रियतम’ के गुणगान से अपनी सभाओं को तब तक विभूषित करो जब तक कृपालुता का सैलाब न उमड़ आए और वह इस विश्व को नई हरियाली, नई बहारों से न सुसज्जित कर दे। सर्वशक्तिमान परमात्मा के परामर्श, उसकी चेतावनियाँ, उसके निर्देश और आदेश ऐसी ही प्रवाहित होती कृपाएँ हैं।

हे मेरे प्रियजनों! यह संसार खुले विद्रोह के गहन अंधकार से ढका हुआ है और घृणा के बवंडर उसे उड़ाए जा रहे हैं। विद्वेष की ज्वालाओं की लपटें स्वर्ग के बादलों तक उठ रही हैं, एक रक्तरंजित सैलाब मैदानों और पहाड़ियों से होकर बहता जा रहा है, और धरती पर कोई भी अमन-चैन में नहीं है। इसलिए ईश्वर के सखाओं को चाहिए कि वे ऐसी सौम्यता उत्पन्न करें जो स्वर्गिक है और समस्त मानवजाति की चेतना में प्रेम का संचार करें। हर व्यक्ति के साथ वे वैसा ही व्यवहार करें जैसा दिव्य परामर्शों में बताया गया है, वे सबके प्रति सद्भाव और दयालुता दर्शाएं, वे सबके कल्याण की कामना करें। उन्हें चाहिए कि अपने मित्रों के लिए वे स्वयं का त्याग कर दें और अपने शत्रुओं के लिए भी अच्छा सोचें। बुरे स्वभाव के लोगों को वे सांत्वना दें और अपने पर अत्याचार करने वाले पर भी स्नेहिल दया का संचार करें। उन्हें चाहिए कि वे प्यासों के लिए ताजगी देने वाली जलधारा बनें, बीमारों के लिए त्वरित औषधि बनें, वेदना में पड़े लोगों के लिए आरोग्यकारी मलहम बनें और हर व्यथित हृदय के लिए सांत्वना। जो लोग भटक गए हैं उनके लिए वे मार्गदर्शक प्रकाश बनें, जो खो गए हैं उनके लिए एक सुनिश्चित नायक। नेत्रहीनों के लिए वे देखने वाली आँखें बनें, जो सुन नहीं सकते उनके लिए श्रवणेन्द्रिय और मृतकों के लिए अनन्त जीवन और खिन्नों के लिए चिरजीवी आनन्द।

वे स्वेच्छापूर्वक स्वयं को प्रत्येक न्यायनिष्ठ राजा के प्रति समर्पित करें और हर उदार शासक के लिए वे अच्छे नागरिक बनें। वे सरकार की आज्ञा का पालन करें और राजनीतिक मामलों में दखल न दें, बल्कि वे स्वयं को चरित्र एवं व्यवहार को अच्छा बनाने के लिए समर्पित करें, और अपनी दृष्टि विश्व के ’प्रकाश’ पर केन्द्रित करें।

237

**जो कोई भी विनीत भाव और उत्कंठा के साथ इस प्रार्थना का पाठ करेगा वह इस ’सेवक’ के हृदय को आनन्द और प्रसन्नता से भर देगा। यह ’उससे’ प्रत्यक्ष मुलाकात के समान होगा।**

वह सर्वमहिमामय है!

हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! दीन और अश्रुपूरित मैं अपने याचक हाथ तेरी ओर फैलाता हूँ और अपना मुखड़ा तेरे द्वार की उस धूल से मंडित करता हूं, जो विद्वानों के ज्ञान और उन सबकी स्तुति से परे है, जो तेरा महिमागान करते हैं। अपने द्वार पर खड़े अपने दीन और विनीत सेवक को अनुग्रहपूर्वक देख, उस पर अपनी करुणा भरी आँखों की दयादृष्टि डाल और उसे अपनी अनन्त कृपा के सागर में निमग्न कर दे।

हे नाथ! यह तेरा दीनहीन सेवक है, विनीत, पूरी आस्था के साथ तेरे ही हाथों में अपने आपको समर्पित करते हुए, अत्यन्त भक्तिभाव से, आँसू भरे नयन के साथ तुझे पुकार रहा है और कह रहा है:

हे नाथ, मेरे परमेश्वर! मुझे अपने प्रियजनों की सेवा करने की कृपा प्रदान कर, अपने प्रति मेरे सेवाभाव को दृढ़ कर, अपनी पावनता के दरबार और महिमामय भव्य साम्राज्य में स्तुति और प्रार्थना के प्रकाश से मेरा मस्तक आलोकित कर दे और अपनी महिमा के साम्राज्य की प्रार्थना की ज्योति प्रदीप्त कर दे। अपने स्वर्गिक प्रवेश द्वार पर स्वार्थविहीन बनने में मेरी सहायता कर और अपनी पवित्र सीमा में सभी वस्तुओं से अनासक्त रहने में मुझे समर्थ बना दे। हे नाथ, निःस्वार्थता के पात्र से मुझे पान करने दे, निःस्वार्थता का ही वस्त्र मुझे पहना और इसके महासिंधु में निमग्न कर दे मुझको। बना दे मुझे अपने प्रियजनों की राहों की धूल और मुझे ऐसा दान दे कि मैं, अपनी आत्मा उस धरती के लिये बलिदान कर सकूँ जिस पर, तेरी राह में तेरे प्रियजन चले हों, हे सर्वोच्च महिमा के स्वामी!

इस प्रार्थना के द्वारा तेरा यह सेवक तुझे दिन-रात पुकारता है, इसके हृदय की अभिलाषा पूरी कर दे, हे स्वामी! इसके हृदय को प्रकाशित कर दे, इसके अंतर को आनंदित कर दे, इसकी ज्योति जला दे, ताकि यह तेरे धर्म और तेरे सेवकों की सेवा कर सके।

तू ही दाता है, करुणामय है, परम दयालु, है कृपालु!

-अब्दुल बहा

अनुवाद सम्बंधी टिप्पणियाँ

वे अनुच्छेद जिनका अनुवाद शोग़ी एफे़न्दी ने किया था

जब कभी किसी पाती के किसी भी अंश का अनुवाद शोग़ी एफ़ेन्दी द्वारा किया गया है तो उनके ही अनुवाद का उपयोग किया गया है। उनकी पहचान नीचे दी गई है। खास तौर पर जिन खंडों का पुनःअनुवाद समिति द्वारा किया गया है उनके संदर्भ में शोग़ी एफ़ेन्दी द्वारा अत्यंत आरम्भ में, अब्दुल बहा के जीवनकाल में, किए गए अनुवादों और टिप्पणियों का व्यापक उपयोग किया गया है।

**खंड**

2 “आज के युग में तुम्हारा सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य...” से लेकर...”प्रत्येक मनुष्य के चरित्र को...” तक

5 “हे लोगो! जब मेरी उपस्थिति की गरिमा..” से लेकर “.....अपने प्रिय देवदूतों के माध्यम से...” तक

5 “जब मेरे सौन्दर्य का दिवानक्ष...” से लेकर “...मेरी वाणी के महिमा-गान ...” तक

12 पूरा खंड

15 “पिछले धर्मचक्रों में....” से लेकर....”एक हो गए हैं” तक

15 “इसी तरह....” से लेकर “...उन्हें साकार करने में मदद देगी” तक

20 पूरा खंड

35 “हे ईश्वर की सेना!” से लेकर “...तब तक तुम्हें ईश्वर के प्रमाण और उसकी संविदा....” तक

38 “ये आध्यात्मिक सभाएँ...” से लेकर “....जीवन की चेतना प्रवाहित होती है...” तक

42 “जब कभी तुम परिषद के कक्ष में प्रवेश करो......” से लेकर “...दयामय और करुणावान हो!” तक

43 पूरा खंड

44 पूरा खंड

45 “यह है कि आध्यात्मिक सभा के सदस्य एक होकर...” जिसका अनुवाद समिति द्वारा किया है, को छोड़कर शेष सभी

175 पूरा खंड

176 पूरा खंड

194 पूरा खंड

198 “मैं ऐसे किसी पेड़ के पास से नहीं गुजरा...” से लेकर “....मेरी देह को तुझपर सूली चढ़ा दी जाती!” तक

202 “बाल्कन लोग असंतुष्ट बने रहेंगे....” से लेकर “....प्रभाव का विस्तार होगा” तक

204 पूरा खंड

208 पूरा खंड

214 “मनुष्य जो कुछ भी जानता है...” से लेकर “....हर बात सुनने वाले की क्षमता...” तक

218 “हम निहार रहे हैं तुझे...” से लेकर “...प्रिय देवदूतों की सेना...” तक

222 पूरा खंड

225 “किसी बगीचे में लगे फूलों के बारे में विचार करो....” से लेकर “.... उनके सौन्दर्य में चार चांद....” तक

225 “यदि पौधों के सभी फूल, पत्तियां और......” से लेकर “.....मानव-सन्तान के विविध विचारों ......” तक

229 पूरा खंड

234 “यदि यह ’शाख’ इस भौतिक जगत से” से लेकर “पूरे विश्व को सुवासित कर देंगे” तक

237 पूरा खंड

**मार्जिया गेल द्वारा अनुवाद किए गए खंड**

1-4 76 148-163

6-10 79 174

15-17 84-87 181-182

19 90-92 188

21-29 94-97 190-191

31 99-111 193

33 113-114 195-196

35-42 118-119 198-203

47-51 121-123 205-207

53-61 129 209-210

64-65 134 216-221

72-74 137-146 234-236

पुराने अनुवादों के आधार पर विश्व न्याय मन्दिर में एक समिति द्वारा अनुवाद किए गए अंश

5 77-78 147

11 80-83 164-173

13-14 88-89 177-180

18 93 183-187

30 98 189

32 112 192

34 115-117 197

46 120 211-215

62-63 124-128 223-228

66-71 130-133 230-233

75 135-136

1. कुरान 60:13 [↑](#footnote-ref-1)
2. मैथ्‍यू 22:14 [↑](#footnote-ref-2)
3. कुरान 57:21 [↑](#footnote-ref-3)
4. कुरान 17:81 [↑](#footnote-ref-4)
5. कुरान 15:72 [↑](#footnote-ref-5)
6. कुरान 39:68 एपीस्‍टल टू द सन ऑफ वुल्‍फ [↑](#footnote-ref-6)
7. कुरान 74:8 [↑](#footnote-ref-7)
8. कुरान 19:68 [↑](#footnote-ref-8)
9. कुरान 79:6 [↑](#footnote-ref-9)
10. कुरान 22:2 [↑](#footnote-ref-10)
11. कुरान 34:38 [↑](#footnote-ref-11)
12. कुरान 20:19 [↑](#footnote-ref-12)
13. कुरान 79:34 [↑](#footnote-ref-13)
14. कुरान 52:12 [↑](#footnote-ref-14)
15. नेपोलियन III [↑](#footnote-ref-15)
16. माना जाता है कि यह एक देवदूत है जो कि ‘न्‍याय के दिन’ ईश्‍वर के आदेश पर मुर्दों को जगाने के लिए तुरही बजाता है। [↑](#footnote-ref-16)
17. हुकूकुल्‍लाह [↑](#footnote-ref-17)
18. कुरान 6:106 [↑](#footnote-ref-18)
19. कुरान 17:110 [↑](#footnote-ref-19)
20. जॉन 14:11 [↑](#footnote-ref-20)
21. जॉन 14:10 [↑](#footnote-ref-21)
22. कुरान 9:91 [↑](#footnote-ref-22)
23. डॉ. जे ई एजलमान्ट की पुस्तक, बहाउल्लाह एण्ड न्‍यू ऐरा में वर्णित [↑](#footnote-ref-23)
24. जॉन 6:51, 58 [↑](#footnote-ref-24)
25. सेंट जॉन 15:25, 16:12-13 [↑](#footnote-ref-25)
26. इस पाती के बारे में शोग़ी एफ़ेन्दी के सचिव ने उनकी ओर से 9 मई 1938 को लिखा थाः “....जैसाकि पाठ से स्पष्ट है, यह स्पष्टतः बाब की ओर संकेत देता है और किसी भी रूप में यह स्वीडनबर्ग की ओर संकेत नहीं देता। [↑](#footnote-ref-26)
27. ईसा मसीह [↑](#footnote-ref-27)
28. चीन के शहरों ने कस्तूरी उत्पन्न करने वाले अपने पशुओं के लिए समारोह मनाया [↑](#footnote-ref-28)
29. 1906 का भूकम्‍प [↑](#footnote-ref-29)
30. आध्‍यात्मिक सभा का [↑](#footnote-ref-30)
31. नज़फ आबाद के बहाई [↑](#footnote-ref-31)
32. मुहम्‍मद [↑](#footnote-ref-32)
33. इस पाती को प्राप्त करने वाली का नाम शहनाज है जो कि संगीत की एक विधा का भी नाम है [↑](#footnote-ref-33)
34. ऐंड्रू कार्नेगी की पुस्तक “दि गौस्पेल ऑफ वेल्थ” का प्रकाशन इंग्लैण्ड के ‘पॉल मौल बजट’ में इसी नाम से किया गया था। तुलना करें : ऐंड्रू कार्नेगी की आत्मकथा, 255 [↑](#footnote-ref-34)
35. कुरान 36:36 और तुलना करें 51:49 [↑](#footnote-ref-35)
36. कुरान 25:55, 35:13, 55:19-25. अब्दुल बहा द्वारा प्रकटित विवाह की प्रार्थना भी देखें जिसकी आरंभिक पंक्तियाँ है: “वह परमेश्वर है! हे अनुपम प्रभु, अपने सर्वशक्तिमान विवेक में तूने लोगों को विवाह करने की आज्ञा दी है। [↑](#footnote-ref-36)
37. पतन आरै उत्थान के आर्क के बारे में अब्दलु बहा की टिप्पणियों के सन्दर्भ में देखें: सम आन्सर्ड क्वेशचंस, पृ. 328-9 [↑](#footnote-ref-37)
38. कुरान 37:60 झक्कूम का पेड़ [↑](#footnote-ref-38)
39. तुलना करें कुरान 24:35 [↑](#footnote-ref-39)
40. जेनिसिस [↑](#footnote-ref-40)
41. किनोसा, विस्कॉन्सिन, में बच्चों की बहाई कक्षा [↑](#footnote-ref-41)
42. कुरान 25:50 [↑](#footnote-ref-42)
43. तुलना करें जॉन 3:5 [↑](#footnote-ref-43)
44. कुरान 39:57 [↑](#footnote-ref-44)
45. अब्दुल बहा सम्भवतः सिक्खों की ओर संकेत दे रहे थे, यह विवरण उनपर लागू होता प्रतीत होता है। [↑](#footnote-ref-45)
46. मैथ्यू 17:1-19; मार्क 9:2; लूके 9:28-36 [↑](#footnote-ref-46)
47. जॉन 6:28 [↑](#footnote-ref-47)
48. जॉन 3:13 [↑](#footnote-ref-48)
49. बाब, तुलना करें: सम आन्सर्ड क्वेशचंस, अध्याय XII [↑](#footnote-ref-49)
50. जर्मनी [↑](#footnote-ref-50)
51. तुलना करें कुरान 3:35, 2:254 [↑](#footnote-ref-51)
52. तुलना करें कुरान 36:25 [↑](#footnote-ref-52)
53. दि पैसिफिक [↑](#footnote-ref-53)
54. मैथ्यू 19:24; मार्क 10:25 [↑](#footnote-ref-54)
55. 30 सितम्‍बर 1912 [↑](#footnote-ref-55)
56. बहजी [↑](#footnote-ref-56)
57. कुरान 24:39 [↑](#footnote-ref-57)
58. जॉन द बैपटिस्ट [↑](#footnote-ref-58)
59. कुरान 36:29 [↑](#footnote-ref-59)
60. कुरान 20:12 इसे “पावन घाटी” भी कहा गया है। [↑](#footnote-ref-60)
61. कुरान 4:80 [↑](#footnote-ref-61)
62. इस पत्र पर अमेरिका में चार सौ बाईस धर्मानुयायियों ने हस्ताक्षर किया था और इसे 4 जुलाई 1905 को भेजा गया था। [↑](#footnote-ref-62)
63. जॉन 18:11 [↑](#footnote-ref-63)
64. कुरान 67:3 [↑](#footnote-ref-64)
65. कुरान 24:35 [↑](#footnote-ref-65)
66. तुलना करें कुरान 28:29 [↑](#footnote-ref-66)
67. कुरान 76: 5 [↑](#footnote-ref-67)
68. कुरान 26:31, 26:44, हजरत मूसा की छड़ी और जादूगरों की ओर संकेत है। [↑](#footnote-ref-68)
69. कुरान 61:4 [↑](#footnote-ref-69)
70. बाब [↑](#footnote-ref-70)
71. कुरान 67:3 [↑](#footnote-ref-71)
72. कुरान 2:69 [↑](#footnote-ref-72)
73. बहाउल्‍लाह के पावन लेखों का चयन, 72 [↑](#footnote-ref-73)
74. कुरान 76:5 [↑](#footnote-ref-74)
75. ’स्थायी शांति के लिए गठित केन्द्रीय संगठन की कार्यपालक समिति’ (एक्जेक्युटिव कमिटी ऑफ दि सेंट्रल ऑर्गेनाइजेशन फॉर अड्यूरेबल पीश) द्वारा अब्दलु बहा को लिखित पत्र का उनके (अब्दलु बहा) द्वारा दिए गए उत्तर का यह प्रथम भाग है। 17 दिसंबर 1919 को लिखित यह पत्र, जिसका वर्णन शोग़ी एफ़ेन्दी ने “गॉड पासेज बाइ” में ‘दूरगामी महत्व का’ पत्र कहकर किया है, एक खास प्रतिनिधिमण्डल के हाथों हेग स्थित ’समिति’ को भेजा गया था। [↑](#footnote-ref-75)